श्रीजीवनाथकृतं

भावकुतूहलम्

हिन्दीव्याख्यासंवलितम्

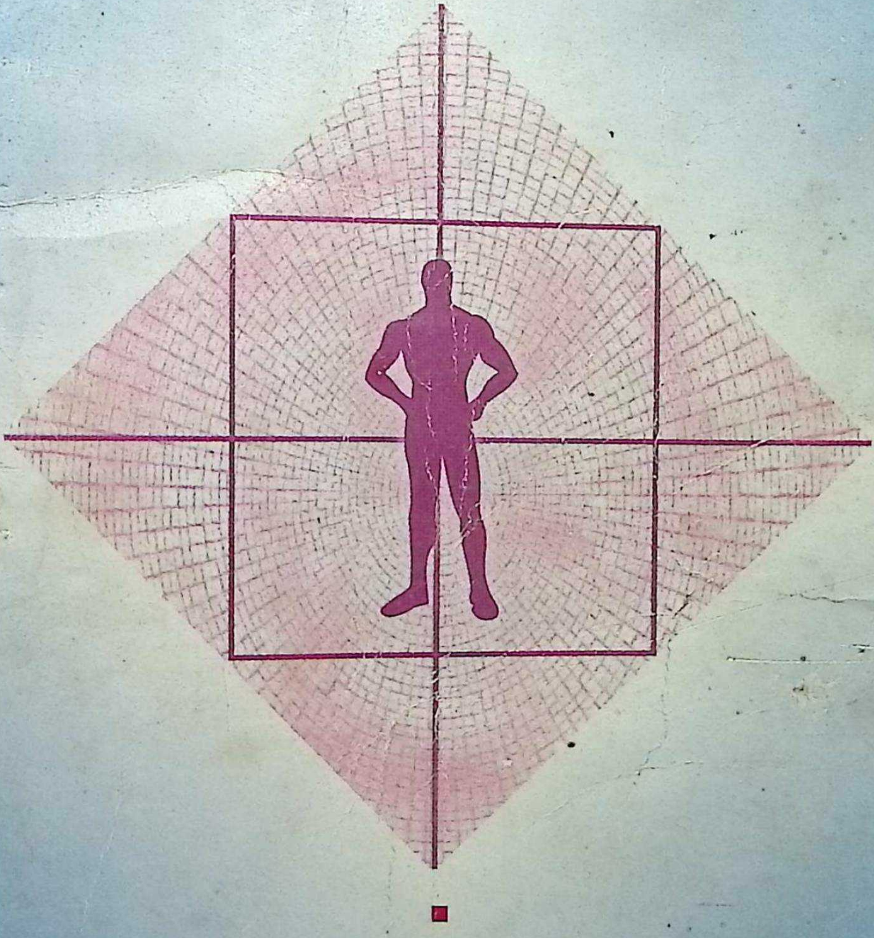

डॉ. हरिशंकर पाठक

|| श्रीः ||

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
३७९

श्रीजीवनाथकृतं

भावकुतूहलम्

हिन्दीव्याख्यासंवलितम्

पु. नं. 30905/30109

व्याख्याकार
डॉ. हरिशङ्कर पाठक
एम.ए., ज्यौतिषाचार्य
भू.पू. पञ्चाङ्गसम्पादक : ज्यौतिष विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

प्रकाशक

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन

पो. बा. नं. 1129, वाराणसी 221001

दूरभाष : 2335263

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संस्करण 2009

मूल्य : 80.00

अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान

38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर

पो. बा. नं. 2113, दिल्ली 110007

•

चौखम्बा विद्याभवन

चौक (बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे)

पो. बा. नं. 1069, वाराणसी 221001

•

चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस

4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)

गली नं. 21-ए, अंसारी रोड

दरियागंज, नई दिल्ली 110002

दूरभाष : 23286537

आमुख

ज्यौतिष जगत् में 'भावकुतूहलम्' एक जाना-पहचाना ग्रन्थ है। ज्यौतिष के जातक खण्ड में विद्यमान ग्रन्थों की शृङ्खला की यह एक अनुपम और महत्त्वपूर्ण कड़ी है। इसके प्रणेता पं० जीवनाथ मिथिला के मैथिल ब्राह्मण थे। इनके पिता ज्यौतिर्विद् स्वनामधन्य पं० शम्भुनाथ तथा पितामह पं० करुणाकर प्रभृत अपने समय के विख्यात दैवज्ञ थे।

इस ग्रन्थ के लघु कलेवर में ज्यौतिषसम्बन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण जानकारियों को समायोजित कर इस ग्रन्थ की महत्ता और गुणवत्ता की वृद्धि आचार्य ने की है। यह सम्पूर्ण ग्रन्थ सत्रह अध्यायों से सुसज्जित है, जिनमें सामान्यत: ज्यौतिषविषयक महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ संगृहीत हैं। अध्यायक्रम के अनुसार संगृहीत विषय निम्न प्रकार हैं—

प्रथम संज्ञाध्याय में द्वादश भावों की संज्ञा, राशियों के स्वामी, ग्रह और उनके मित्र, सम, शत्रु आदि कथन, उनकी दृष्टि, उनके उच्च-नीच-मूलत्रिकोण स्थान, उनके षड्वर्ग का निरूपण प्रभृत विषयों का वर्णन है। **द्वितीय** अध्याय में जन्माङ्ग में विद्यमान ग्रहयोगों से सम्बन्धित जातक के शरीर पर उभरने वाले तिल, मशक, व्रण आदि के चिह्नों का वर्णन है। **तृतीय** अध्याय में बालारिष्ट का विवरण प्रस्तुत किया गया है। **चतुर्थ** अध्याय में जातक के माता, पिता, भाई आदि के लिए अरिष्टकारक योगों की चर्चा की गयी है। **पञ्चम** अध्याय में उन कतिपय योगों की चर्चा की गई है, जिनसे जन्माङ्ग में विद्यमान अरिष्टकारक योग विफल हो जाते हैं। **षष्ठ** अध्याय में सन्तान-प्राप्ति, सन्तान-संख्या एवं उनके विनाश, नि:सन्तान की स्थितियों से सम्बन्धित योगों का समावेश किया गया है। **सप्तम** अध्याय में राजयोगों का निरूपण किया गया है। इस अध्याय में कतिपय उत्कृष्ट राजयोगों—चतुष्कमहोदधि योग, नृपमुकुट योग, चतुश्चक्रयोग आदि के साथ-साथ कतिपय राज्यविनाशक योगों—हृदयोग, फणियोग, काकयोग को भी निरूपित किया गया है। **अष्टम** अध्याय में सामुद्रिक शास्त्रानुसार शारीरिक एवं हाथ-पाँव में विद्यमान चिह्नों और रेखाओं की फलसहित चर्चा की गई है। **नवम** अध्याय स्त्रीजातक से सम्बन्धित विषयों के लिए समर्पित है। साथ ही स्त्रीजन्माङ्ग के राजयोग को भी स्थान दिया गया है। इसके अतिरिक्त सप्तम भावगत सभी ग्रहों के फलों को निर्देशित किया गया है। विभिन्न राशिगत ग्रहों के त्रिंशांश-फलों का विवेचन भी इस अध्याय में किया गया है। **दशम** अध्याय में स्त्री के अङ्ग-प्रत्यङ्ग के शुभाशुभ लक्षणों का सफल विवरण प्रस्तुत किया गया है। **एकादश** अध्याय में ग्रहों की शयनादि अवस्था का वर्णन तथा उनके जानने की विधि भी बतलायी गई है। **द्वादश** अध्याय में प्रत्येक ग्रहों की इन शयनादि अवस्थाओं के फल कहे गये हैं। **त्रयोदश** अध्याय बालादि अवस्थाओं तथा दीप्तादि अवस्थाओं के नाम समर्पित है। इस अध्यय में इन दोनों अवस्थाओं में स्थित ग्रहों के फलों को आचार्य ने निरूपित किया है। **चतुर्दश** अध्याय में जैसा कि अध्याय के नाम से ही स्पष्ट है, जातक के आयुष्य का विचार

तथा कारक स्थितियों का विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य राजयोगों, धनिक योगों एवं दारिद्र्य योगों की भी चर्चा की गई है। **पञ्चदश** अध्याय में भावफल का विवेचन है। इसमें द्वादश भावों से सम्बन्धित कतिपय महत्त्व के योगों को आचार्य ने बतलाया है। **षोडश** अध्याय में विंशोत्तरी दशा और अन्तर्दशा जानने की विधि के साथ-साथ प्रत्येक ग्रहों की महादशाओं के फल, प्रत्येक भावेशों की दशाओं के फल के साथ उच्चस्थ, स्वक्षेत्रीय, मित्रक्षेत्रीय, शत्रुक्षेत्रीय ग्रहों की महादशा के फल भी कहे गये हैं। **सप्तदश** अध्याय में एक-एक ग्रहों की अन्य प्रकार की अवस्थाओं का वर्णन है तथा उन अवस्थाओं के फल भी बतलाये गये हैं।

इस प्रकार यह ग्रन्थ १७ अध्यायों में समाप्त होता है। इन अध्यायों में वर्णित विषय- वस्तु के अध्ययन से सामान्य व्यक्ति भी फलादेश कर सकने में समर्थ हो सकेगा। इसकी टीका में आवश्यकता के अनुरूप विशेष चर्चा के साथ-साथ आवश्यकतानुसार उदाहरण भी दिये गये हैं। आशा है कि इस विषय के जिज्ञासु इससे लाभान्वित होंगे।

इति शुभम्

हरिशंकर पाठक

विषयानुक्रमणिका

प्रथमोऽध्यायः

संज्ञाकथनम्

मङ्गलाचरणम् १
ग्रन्थकार-प्रतिज्ञा १
द्वादशभावसंज्ञा २
द्वादश राशियों के स्वामी ४
ग्रहों की परस्पर मित्रता, शत्रुता, समत्व एवं तात्कालिक मैत्री ४
ग्रहों की तात्कालिक मैत्री, शत्रुता ७
उच्च-नीच, परमोच्च, परम नीच स्थान ९
षड्वर्ग-विचार १०
ग्रहों की दृष्टियाँ १५
राशियों के चरादि भेद १७
राशियों की दिशायें १८

द्वितीयोऽध्यायः

जातकचिह्नम्

शिरोभाग में चिह्न २०
वामाङ्ग में चिह्न २१
गुह्याङ्ग में चिह्न २१
उदरभाग में चिह्न २१
कटिप्रदेश में चिह्न २२
पादमूल में चिह्न २२
गुदामार्ग में चिह्न २२
भ्रातृ-मातृहन्ता योग २३
भगिनी-हन्ता योग २३
भ्रातृहन्ता योग २३

तृतीयोऽध्यायः

बालारिष्टम्

अरिष्ट-विचार २४
सद्यः मृत्युयोग, चार वर्ष-आठ वर्ष आयु योग २६
मासान्त आयुयोग २६
मातासहित मृत्युयोग २७
मातासहित मृत्युयोग २८
मृत्युसमय का निर्धारण २९
सन्ध्यालक्षण ३०
अन्य बालारिष्ट योग ३१

चतुर्थोऽध्यायः

पित्राद्यरिष्टम्

पित्राद्यरिष्ट-विचार ३३
मातृकष्ट-विचार ३५
भ्रातृकष्ट विचार ३६
मातुलकष्ट-विचार ३६
सन्ततिकष्ट-विचार ३६
स्त्रीकष्ट-विचार ३७

पञ्चमोऽध्यायः

अरिष्टभङ्गः

अरिष्टभङ्ग योग ३८-४१

षष्ठोऽध्यायः

सन्तानभावविचारः

सन्तानसंख्या ४३
सन्तानहानि योग ४४
क्लीब योग ४५
अनपत्यता योग ४६
साठवें वर्ष में सन्तान योग ४६
अनपत्यता योग ४६

सप्तमोऽध्यायः

राजयोग-तद्भङ्गदरिद्रयोग

राजयोग ५०
चतुष्कमहोदधि योग ५२
कीर्त्तिविस्तारक राजयोग ५३
बलात् राज्याप्ति योग ५३
महाराजाधिराज योग ५५
सिंहासन योग ५७
चतुश्चक्र योग ५७
एकावली योग ५८
शत्रुहन्ता योग ५८
नृबाल योग ५९

अन्य राजयोग ५९
कुबेरतुल्य राजयोग ६२
श्रीछत्र योग ६४
चन्द्रकृत राजयोग ६६
सुनफा-अनफा-दुरधरा योग ६६
अनफा योग-फल ६७
स्वनफा या सुनफा योगफल ६७
दुरुधरा योग-फल ६७
केमद्रुम योग-लक्षण ६७
केमद्रुम योग-फल ६८
केमद्रुम भङ्गयोग ७०
अन्य दारिद्र्य योग ७१
हृदयोग ७१
फणियोग ७१
काकयोग ७१
अन्य दारिद्र्य योग ७१
हुताशन योग ७२
अन्य दारिद्र्य योग ७२
राजभङ्ग योग ७२

अष्टमोऽध्याय:

सामुद्रिकलक्षणम्

सामुद्रिक विचार ७४

नवमोऽध्याय:

स्त्रीजातक:

वैधव्य योग ७८
स्त्रियों के राजयोग ७९
सप्तमभावस्थ सूर्यादि ग्रहफल ८०
सप्तमस्थ चन्द्रफल ८०
सप्तमस्थ बुधफल ८१
सप्तमस्थ बृहस्पतिफल ८१
सप्तमस्थ शुक्रफल ८१
सप्तमस्थ शनिफल ८२
सप्तमस्थ राहुफल ८२
अन्य योग ८२
वैधव्य योग ८३
बालविधवा योग ८६
अन्य वैधव्य योग ८६
मातासहित व्यभिचारिणी योग ८६
भौम राशि-त्रिंशांश फल ८६
शुक्र की राशि में त्रिंशांशस्थ चन्द्रमा और लग्नफल ८७
बुधकी राशि में त्रिंशांशस्थ चन्द्र और लग्नफल ८७
चन्द्रमा की राशि में त्रिंशांशस्थ लग्न चन्द्रफल ८७
सूर्यराशि और विभिन्न त्रिंशांशगत लग्न-चन्द्रफल ८८
बृहस्पति की राशि और विभिन्न त्रिंशांशगत लग्न चन्द्रफल ८८
शनि राशिगत विभिन्न त्रिंशांशस्थ लग्न-चन्द्रफल ८८
अन्यान्य योग ८९
अष्टम भाव-विचार ८९
पञ्चम भाव-विचार ९०
विषयोग ९०
विषाख्या योग ९१
विषयोग-भङ्ग ९२
वैधव्य योग-परिहार ९२

दशमोऽध्याय:

सामुद्रिकलक्षणम्

कन्या के अंग-लक्षण ९३
पादतल-लक्षण ९३
पादाङ्गुलि-लक्षण ९४
पादपृष्ठ-लक्षण ९५
गुल्फ-लक्षण ९६
पार्ष्णि (एड़ी) लक्षण ९६
जंघा-लक्षण ९६
रोम-लक्षण ९७
कटिनितम्ब-लक्षण ९७
भग-लक्षण ९८
बस्ति-लक्षण १००
नाभि-लक्षण १००
उदर-लक्षण १००
त्रिवली-लक्षण १०१
वक्ष-लक्षण १०२
स्तन-लक्षण १०२

स्कन्ध-लक्षण १०३
करांगुलि-लक्षण १०४
करतल-लक्षण १०४
रेखाफल १०५
अंगुलि-लक्षण १०७
नख-लक्षण १०८
पृष्ठ-लक्षण १०८
कण्ठ-लक्षण १०९
हनु-लक्षण ११०
कफोल-लक्षण ११०
अधरोष्ठ-लक्षण ११०
दन्त लक्षण १११
जिह्वा-लक्षण १११
तालु-लक्षण ११२
कण्ठमूल (घण्टिका)-लक्षण ११२
स्मित-लक्षण ११२
नासिका-लक्षण ११३
नेत्र-लक्षण ११३
बरौनी-लक्षण ११४
भ्रू-लक्षण ११५
कर्ण-लक्षण ११५
भाल-लक्षण ११५
केशु-लक्षण ११६
मशक (मस्सा)-लक्षण ११७
आवर्त (भँवरी)-लक्षण ११९

एकादशोऽध्याय:

स्थानवशेनावस्थाफलम्

शयनादि द्वादश अवस्थायें १२३
शयनाद्यवस्थानयन १२३
दृष्टि आदि अवस्था १२३
जाग्रत् अवस्था १२६
दीप्तादि अवस्था १२६
बालादि अवस्था १२६
प्रवासादि अवस्था १२७
लज्जितादि अवस्था १२८
द्वादश अवस्थाओं के फल १२८
सूर्य अवस्थाओं के भावपरक फल १२८
चन्द्रावस्था के भावपरक फल १२९
भौमावस्था के भावपरक फल १२९
बुधावस्था के भावपरक फल १३०
बृहस्पति-अवस्था के भावपरक फल १३०
शुक्र-अवस्था के भावपरक फल १३१
शनि-अवस्था के भावपरक फल १३१
राहु-केतु-अवस्था के भावपरक फल १३१
विशेष फल १३२
सन्तानहानि योग १३३
अपमृत्यु योग १३३
अरिष्टकृत तीर्थकृत मृत्युयोग १३३
पुण्य क्षेत्रलाभ योग १३४

द्वादशोऽध्याय:

ग्रहाणां शयनाद्यवस्थाविचार:

सूर्य-अवस्था-फल १३५
चन्द्रावस्था-फल १३८
भौम-अवस्था-फल १४१
बुध-अवस्था-फल १४३
बृहस्पति-अवस्था-फल १४६
शुक्र-अवस्था-फल १४९
शनि-अवस्था-फल १५२
राहु-अवस्था-फल १५५
केतु-अवस्था-फल १५७

त्रयोदशोऽध्याय:

ग्रहस्यावस्थाविचार:

ग्रहों की बाल आदि अवस्थायें और उनके फल १६१
ग्रहों की दीप्तादि अवस्थायें १६२
दीप्तादि-अवस्था-फल १६२

चतुर्दशोऽध्याय:

नानायोनिनिरूपणम्

मारक ग्रह-विचार १६६
योगज आयु-निर्णय १६९
आयुष्य और मारक स्थान १७०
मृत्युकाल-निर्णय १७०
राजयोग १७१
धनिक योग १७२
दारिद्र्य योग १७५
ऋणग्रस्तता योग १७५

पञ्चदशोऽध्याय:

भावविचार:

तनु भावविचार १७७
धन भावविचार १७८
तृतीय (सहज) भावविचार १७९
चतुर्थ भावविचार १८०
पञ्चम भावविचार १८१
अनपत्यता योग १८१
काकवन्ध्या योग १८१
कष्ट से सन्तानलाभ योग १८१
सन्तान योग १८२
षष्ठ भावविचार १८२
सप्तम भावविचार १८४
अष्टम भावविचार १८५
नवम भावविचार १८६
दशम भावविचार १८७
एकादश भावविचार १८९
द्वादश भावविचार १९०

षोडशोऽध्याय:

दशाफलम्

भुक्त-भोग्य दशानयन १९३
अन्तर्दशानयन १९५
सूर्य-दशाफल १९६
चन्द्र-दशाफल १९६
भौम-दशाफल १९६
राहु-दशाफल १९७
बृहस्पति-दशाफल १९७
शनि-दशाफल १९८
बुध-दशाफल १९८
केतु-महादशाफल १९८
शुक्र-महादशाफल १९९
उच्च राशिस्थ ग्रह-दशाफल १९९
स्वगृही ग्रह-दशाफल १९९
मित्रगृही ग्रह-दशाफल २००
शत्रुराशिगत ग्रह-दशाफल २००
रोगेश-दशाफल २००
अष्टम भावेश-दशाफल २०१
व्ययेश-महादशाफल २०१
सप्तमेश-महादशाफल २०१
अस्तङ्गत ग्रहदशाफल २०१
दशाफल के सम्बन्ध में सामान्य निर्देश २०२
लग्नादि द्वादश भावेशों के संक्षिप्त फल २०२

सप्तदशोऽध्याय:

गर्वितादिदशाफलम्

गर्वितादि अवस्था २०४
गर्वितादि अवस्था-फल २०५
गर्वित ग्रहदशा-फल २०६
मुदित ग्रहदशा-फल २०६
लज्जित ग्रहदशा-फल २०६
क्षोभित ग्रहदशा-फल २०७
क्षुधित ग्रहदशा-फल २०७
तृषित ग्रहदशा-फल २०७
ग्रन्थकार-परिचय २०८

चक्रानुक्रमणिका

ग्रह और उनकी राशियाँ ४
नैसर्गिक मित्र-सम-शत्रु ५
यवनाचार्य के मत से मित्रामित्र चक्र ६
तात्कालिक मैत्रीचक्र ८
पञ्चधा मैत्री ९
पञ्चधा मैत्री चक्र ९
होराबोधक चक्र १०
द्रेष्काणबोधक चक्र ११
नवांशबोधक चक्र १२
द्वादशांशबोधक चक्र १२
त्रिंशांश चक्र १४
सूर्यादि ग्रहों के पराशरोक्त चक्र १६
ग्रहों के नीचोच्च, गृह, मूल, त्रिकोण स्थान १९
ग्रहक्षेपकाङ्क १२४
स्वराङ्क १२४
नक्षत्रों के स्वामी और उनके दशावर्ष १९१

॥ श्रीः॥

श्रीजीवनाथविरचितं

भावकुतूहलम्

हिन्दीव्याख्यासंवलितम्

अथ प्रथमोऽध्यायः

संज्ञाकथनम्

मङ्गलाचरणम्

महः सेतुं हेतुं सकलजगतामङ्कुरतया
सदा शम्भोरम्भो भवभवभयत्राणजनकम्।
अहं वन्दे तस्यासुरसुरमनोमोदनिकरं
चिदानन्दं पादामलकमललावण्यमधिकम् ॥१॥

अन्वयः—सकलजगताम् अङ्कुरतया हेतुं महः सेतुं अम्भो भव भवभयत्राण-जनकम्, तस्य असुरसुरमनोमोदनिकरं चिदानन्दं पादामलकमललावण्यं अधिकं अहं वन्दे ॥१॥

समस्त चराचर जगत् के कारणरूप, जल से उद्भूत इस सृष्टि में व्याप्त आधिदैविक, आधिदैहिक और अधिभौतिक त्रिताप को पार करने के लिए तेजोमय सेतु-रूप, देवता और दानवों को समान रूप से प्रिय चिदानन्दस्वरूप सदाशिव शङ्कर के निर्मल (सद्यः प्रस्फुटित) कमल के समान शोभा वाले चरणों को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ ॥१॥

ग्रन्थकारप्रतिज्ञा

विचारसञ्चारचमत्कृतं यन्मतं मुनीनां प्रविलोक्य सारम्।
श्रीजीवनाथेन विदां हिताय प्रकाश्यते भावकुतूहलं तत् ॥२॥

अन्वयः—विचारसंचारचमत्कृतं यत् मुनीनां मतं तत् सारं प्रविलोक्य विदां हिताय श्रीजीवनाथेन भावकुतूहलं प्रकाश्यते ॥२॥

मुनियों के द्वारा सतत् गहन विचार-मन्थन से उत्पन्न चमत्कृत कर देने वाले सार-रूप वचनों का अवगाहन कर मैं जीवनाथ, विद्वज्जनों के लाभार्थ 'भावकुतूहल' नामक इस ग्रन्थ को प्रकाशित करता हूँ ॥२॥

धात्रोदितं यवनकर्कशशब्दसङ्घा-
दाधिव्यथाविदलितं परमं फलं यत्।
मत्कोमलामलरवामृतराशिधारा-
स्नानं करोतु जगतामपि मोदहेतोः ॥३॥

अन्वयः—धात्रोदितं यत् परमं फलं यवनकर्कशशब्दसङ्घाद् आधिव्यथाविदलितं जगतां हेतोः (तत्) मत्कोमलामलरवामृतराशिधारा स्नानं करोतु ॥३॥

ब्रह्मा के मुख से निकले यवनों के कर्कश शब्दजाल में उलझने से पीड़ित ज्योतिषशास्त्र का फलित खण्ड, मेरी अमल कोमल सुधामय स्निग्ध धारा से प्रक्षालित होकर जगती को तृप्त करे ॥३॥

द्वादशभावसंज्ञा

तनुकोशसहोदरबन्धुसुता रिपुकामविनाशशुभा विबुधैः।
पितृभं तत आप्तिरपाय इमे क्रमतः कथिता मिहिरप्रमुखैः ॥४॥

अन्वयः—तनु १ कोश २ सहोदर ३ बन्धु ४ सुत ५ रिपु ६ काम ७ विनाश ८ शुभ ९ पितृभं १० आप्ति ११ अपाय १२ इमे (द्वादशभावाः) क्रमतः मिहिरप्रमुखैः विबुधैः कथिता ॥४॥

तनु, कोश, सहोदर, बन्धु, सुत, रिपु, काम, विनाश, शुभ, पितृ, आय और व्यय—ये लग्न से प्रारम्भ कर क्रमशः द्वादश भावों की संज्ञायें मिहिरादि अनेक आचार्यों के द्वारा कही गयी हैं ॥४॥

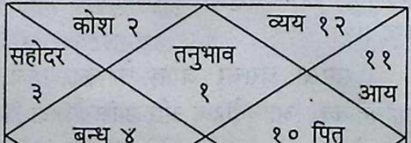

जन्माङ्ग के शीर्ष स्थान में मध्य कोष्ठक को परम्परया प्रथम भाव या तनु भाव कहा गया है। उस तनुभाव से वामावर्ती कोष्ठक क्रमशः कोश, सहोदरादि द्वादश भावों के होते हैं। इन भावों के नामानुरूप जातकसम्बन्धी विषयों का विचार फलित खण्ड में किया जाता है। तनुभाव या लग्न से जातक के शारीरिक सौष्ठव, वर्ण, स्वभावादि का विचार किया जाता है। द्वितीय भाव—इस भाव से धन, विद्या, नेत्रादि का विचार किया जाता है। तृतीय भाव—सहोदर से भ्रातृ-संख्या एवं उनकी आर्थिक, सामाजिक स्थिति का विचार किया जाता है। चतुर्थ भाव—बन्धु से बन्धु-बान्धव, गृह, वाहन, माता आदि का विचार होता है। पञ्चम भाव—सुत से पुत्र, बुद्धि आदि का विचार; छठे भाव—रिपु से शत्रु, रोगादि का विचार; सप्तम भाव—काम से स्त्री (पत्नी) के विषय में; अष्टम भाव—विनाश से मृत्यु और आयुष्य का विचार; नवम भाव से शुभ कार्य, भाग्य आदि का विचार; दशम भाव—पितृ से पिता, राज्य, वैभवादि का विचार; एकादश भाव—

आय से जातक की आमदनी, अनुज आदि का विचार तथा द्वादश भाव—व्यय से शारीरिक क्षरण, धन के व्ययादि का विचार किया जाता है।

द्वादश भावों के लिए इन संज्ञाओं के अतिरिक्त भी अनेक आचार्यों ने अन्य अनेक संज्ञाओं का प्रयोग अपने ग्रन्थों में किया है। उनका यहाँ उल्लेख आगे अध्ययन में सहायक होगा।

तन्वादि द्वादश भावों की अन्य संज्ञायें—

१. तनु — लग्न, मूर्त्ति, आद्य, अङ्ग, वपु, कल्प और उदय।
२. कोश — स्व, अर्थ, धन और कुटुम्ब।
३. सहोदर — सहज, भ्रातृ, दुश्चिक्य, पराक्रम, विक्रम।
४. बन्धु — अम्बा, पाताल, मित्र, तुर्य, हिबुक, गृह, वाहन, सुहृत्, सुख, अम्बु, जल।
५. सुत — तनय, बुद्धि, विद्या, आत्मज, मन्त्र।
६. रिपु — द्वेष्य, वैरि, क्षत, रोग, मातुल।
७. काम — यामित्र, अस्त, स्मर, मदन, गद, द्यून।
८. विनाश — रन्ध्र, आयुष्य, छिद्र, याम्य, निधन, लय, मृति, संग्राम।
९. शुभ — गुरु, मार्ग, भाग्य, धर्म।
१०. पितृ — राज्य, कर्म, मान, आकाश।
११. आय — आय, लाभ, भव।
१२. व्यय — रिष्फ, नाश।

इनके अतिरिक्त भी इन भावों की कुछ अन्य संज्ञायें कही गई हैं। जन्माङ्ग के मध्य भाग में अथवा केन्द्र में स्थित होने के कारण लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम—इन चार भावों को केन्द्र कहते हैं। लग्न, पञ्चम और नवम भावों को त्रिकोण कहते हैं। कतिपय आचार्य लग्न को त्रिकोण में शामिल नहीं करते; बल्कि वे केवल पञ्चम और नवम भाव को ही त्रिकोण मानते हैं। केन्द्रभावों (१,४,७,१०) के आगे के चार (२,५,८,११) को पणफर तथा उसके पीछे के चार (३,६,९,१२) भावों को आपोक्लिम कहते हैं। इनके अतिरिक्त तृतीय, षष्ठ और द्वादश भावों को त्रिक् और तृतीय, षष्ठ तथा एकादश भावों को त्रिषडाय भी कहते हैं।

केन्द्र — लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम भाव।
त्रिकोण — लग्न, पञ्चम और नवम भाव।
पणफर — द्वितीय, पञ्चम, अष्टम और एकादश भाव।
आपोक्लिम — तृतीय, षष्ठ, नवम और द्वादश भाव।
त्रिक् — षष्ठ, अष्टम और द्वादश भाव।
त्रिषडाय — तृतीय, षष्ठ और एकादश भाव।

द्वादश राशियों के स्वामी

कुजकवी बुधचन्द्रदिवाकरा बुधसितावनिजा गुरुसूर्यजौ ।
शनिगुरू च पुरातनपण्डितैरजमुखादुदिता भवनाधिपाः ॥५॥

अन्वयः—कुज-कवी-बुध-चन्द्र-दिवाकराः बुध-सित-अवनिजाः-गुरु-सूर्यजौ-शनि-गुरू (इमे) अजमुखात् भवनाधिपाः पुरातनपण्डितैः उदिताः ॥५॥

मंगल, शुक्र, बुध, चन्द्रमा, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, शनि और बृहस्पति मेषराशि से प्रारम्भ कर मीनपर्यन्त द्वादश राशियों के स्वामी होते हैं ॥५॥

मेष राशि के स्वामी मंगल, वृष के शुक्र, मिथुन के बुध, कर्क के चन्द्रमा, सिंह के सूर्य, कन्या के बुध आदि मीन के स्वामीपर्यन्त राशियों के स्वामी होते हैं। इनमें सूर्य और चन्द्रमा केवल एक-एक राशियों, क्रमशः सिंह और कर्क के स्वामी हैं। शेष मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि के अधिकार में दो-दो राशियाँ आती हैं। स्पष्टार्थ नीचे दी गई तालिका देखिये।

ग्रह और उनकी राशियाँ

स्वामी	राशियाँ
सूर्य	सिंह
चन्द्रमा	कर्क
मंगल	मेष और वृश्चिक
बुध	मिथुन और कन्या
बृहस्पति	धनु और मीन
शुक्र	वृष और तुला
शनि	मकर और कुम्भ

ग्रहों की परस्पर मित्रता, शत्रुता और समत्व एवं तात्कालिक मैत्री

अङ्गारकेन्दुगुरवो रविचन्द्रपुत्रा-
वादित्यचन्द्रगुरवः कविचण्डभानू ।
भौमार्करात्रिपतयो बुधसूर्यपुत्रौ
शुक्रेन्दुजौ दिनकरात्सुहृदो भवन्ति ॥६॥

अन्वयः—१. अङ्गारक-इन्दु-गुरवः, २. रवि-चन्द्रपुत्रौ, ३. आदित्य-चन्द्र-गुरवः, ४. कवि-चण्डभानू, ५. भौम-अर्क-रात्रिपतयः, ६. बुध-सूर्यपुत्रौ, ७. शुक्र-इन्दुजौ, दिनकरात् (क्रमशः) सुहृदः भवन्ति ॥६॥

सूर्य के मित्र मंगल, चन्द्रमा और बृहस्पति; चन्द्रमा के सूर्य और बुध; मंगल के सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति; बुध के सूर्य और शुक्र; बृहस्पति के मंगल, सूर्य और चन्द्रमा; शुक्र के बुध और शनि तथा शनि के शुक्र और बुध मित्र होते हैं ॥६॥

सौम्यः समा हि सकलाः कविभानुपुत्रौ
मन्देज्यभूमितनया रविजः क्रमेण ।
भौमेज्यकौ सुरगुरू रिपवेऽवशिष्टा-
स्तात्कालिका व्ययधनायदशत्रिबन्धौ ॥७॥

अन्वयः—सौम्यः सकलाः कवि-भानुपुत्रौ, मन्द-इज्य-भूमितनया, रविजः, भौम-इज्यकौ, सुर-गुरू क्रमेण हि समाः, अवशिष्टाः रिपवः (भवन्ति) । तथा स्थितग्रहात् व्यय-आय-धन-दश-त्रि-बन्धुभावस्थिताः ग्रहाः तात्कालिकाः (मित्राणि भवन्ति) ॥७॥

सूर्य के बुध; चन्द्रमा के (मित्रों को छोड़कर) सभी (मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि); मंगल के शुक्र और शनि; बुध के शनि, बृहस्पति और मंगल; बृहस्पति के शनि; शुक्र के मंगल और बृहस्पति तथा शनि के बृहस्पति सम (न मित्र और न शत्रु) ग्रह हैं। शेष ग्रह शत्रु होते हैं।

ग्रहस्थित राशि से द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, दशम, एकादश और द्वादश राशियों में स्थित ग्रह उसके तात्कालिक स्थितिजन्य मित्र होते हैं ॥७॥

नैसर्गिक मित्र-सम-शत्रु

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
मित्र	चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति	सूर्य, बुध	सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति	सूर्य, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल	बुध, शुक्र	बुध, शनि
सम	बुध	मंगल, गुरु, शुक्र शनि	शनि, शुक्र	मंगल बृहस्पति शनि	शनि	मंगल बृहस्पति	बृहस्पति
शत्रु	शुक्र, शनि	०	बुध	चन्द्र	बुध, शुक्र	सूर्य, चन्द्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल

उपर्युक्त श्लोक ६ और ७ के अनुसार सूर्य के चन्द्र, मंगल और बृहस्पति मित्र, बुध सम और शेष—शुक्र और शनि शत्रु हैं। चन्द्रमा के सूर्य और बुध मित्र एवं मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि सम हैं। चन्द्रमा का कोई शत्रु नहीं है। मंगल के सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति मित्र; शुक्र, शनि सम और शेष बुध शत्रु है। बुध के सूर्य और शुक्र मित्र; मंगल, बृहस्पति और शनि सम तथा चन्द्रमा शत्रु है। बृहस्पति के सूर्य, चन्द्रमा और मंगल मित्र तथा बुध और शुक्र शत्रु हैं। शुक्र के बुध और शनि मित्र; मंगल और बृहस्पति सम तथा सूर्य और चन्द्रमा शत्रु हैं। शनि के बुध और शुक्र मित्र, बृहस्पति सम तथा सूर्य, चन्द्रमा और मंगल शत्रु हैं। यह वराहमिहिर का मत है। उन्होंने कहा है—

शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा रवे-
स्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगो।
जीवेन्दूष्णकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोऽरिः सितार्की समौ
मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे ॥
सूरेः सौम्यसितावरी रविसुतो मध्योऽपरे त्वन्यथा
सौम्यार्की सुहृदौ समो कुजगुरु शुक्रस्य शेषावरी।
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरुः सौरस्य चान्येऽरयो
ये प्रोक्ता सुहृदस्त्रिकोणभवनात्तेऽमी मया कीर्तिताः ॥

यवनाचार्य का मत इससे भिन्न है। उनके अनुसार सूर्य के बृहस्पति; चन्द्रमा के बुध और बृहस्पति; मंगल के शुक्र और बुध; बुध के चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि; बृहस्पति के सूर्य, चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि; शुक्र के मंगल, बुध, बृहस्पति और शनि तथा शनि के बुध, बृहस्पति और शुक्र मित्र हैं। ग्रहों के इन मित्रों के अतिरिक्त अन्य शेष ग्रह शत्रु होते हैं। कहा भी है—

जीवो जीवबुधौ सितेन्दुतनयौ व्यर्का विभौमाः क्रमा-
द्वीन्द्वर्का विकुजेन्द्विनाश्च सुहृदः केषाञ्चिदेवं मतम्।

यवनाचार्य के मत से मित्रामित्र चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	भौम	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
मित्र	बृहस्पति	बुध, बृहस्पति	शुक्र, बुध,	चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि	सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शुक्र, शनि	मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि	बुध, बृहस्पति, शुक्र,
शत्रु	चन्द्रमा, मंगल, बुध, शुक्र, शनि	सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि	सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति, शनि	सूर्य	मंगल	सूर्य, चन्द्रमा	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल

सत्याचार्य के मतानुसार ग्रह के मूल त्रिकोण राशि से द्वितीय, द्वादश, पञ्चम, नवम, अष्टम और चतुर्थ राशियों के स्वामी तथा अपने उच्च राशि के स्वामी ग्रह मित्र होते हैं तथा इनसे इतर स्थानों के स्वामी शत्रु होते हैं। जैसा कि कहा भी गया है—

सत्योक्ते सुहृदस्त्रिकोणभवनात्स्वात्स्वान्त्यधीधर्मपाः।
स्वोच्चायुः सुखपाः स्वलक्षणविधेर्नान्यद्विरोधादिति ॥ (वराहमिहिर)

सूर्यादि ग्रहों की मूल राशियाँ क्रमशः सिंह, वृष, मेष, कन्या, धनु, तुला और कुम्भ हैं—

सिंहो वृषः प्रथमषष्ठहयाङ्गतौलि
कुम्भास्त्रिकोणभवनानि भवन्ति सूर्यात्। (बृहज्जातक)

सूर्य की सिंह, चन्द्रमा की वृष, मंगल की मेष, बुध की कन्या, बृहस्पति की धनु, शुक्र की तुला और शनि की कुम्भ मूल त्रिकोण राशियाँ हैं।

ग्रहों की उक्त त्रिकोण राशियों से स्व (द्वितीय), अन्त्य (द्वादश), धी (पञ्चम), धर्म (नवम), उच्च राशि, आयु (अष्टम), सुख (चतुर्थ) राशियों के स्वामी उसके मित्र होते हैं तथा अन्य राशियों के स्वामी शत्रु होते हैं। कुछ ग्रहों की दो राशियाँ हैं। ऐसे ग्रहों की दोनों राशियाँ यदि उपर्युक्त सत्याचार्य के वचन 'स्वान्त्यधीधर्म' में कथित हों तो वह मित्र होता है। यदि केवल एक ही राशि कथित है तो वह सम होता है तथा यदि उसकी दोनों राशियाँ अकथित हैं तो वह शत्रु होता है। उदाहरण के लिए सिंह राशि सूर्य की त्रिकोण राशि है। सिंह से दूसरी कन्या राशि है। कन्या का स्वामी बुध है। इसकी दूसरी राशि मिथुन है, जो सिंह से ग्यारहवीं राशि है। सत्याचार्य के उक्त वचन में त्रिकोण से द्वितीय स्थान कथित है, किन्तु एकादश राशि कथित नहीं है। अतः बुध सूर्य का सम ग्रह हुआ। त्रिकोण राशि सिंह से द्वादश राशि कर्क है, जो उक्त वचन में कथित है। इसका स्वामी चन्द्रमा केवल कर्क का ही स्वामी है। इसलिए चन्द्रमा सूर्य का मित्र हुआ। सिंह से पञ्चम राशि धनु है। इसका स्वामी मीन का भी स्वामी है, जो सिंह से आठवीं राशि है। पञ्चम और नवम दोनों स्थान कथित होने से इनके स्वामी बृहस्पति सूर्य के मित्र हुए। मेष राशि सूर्य की उच्च राशि है। इसके स्वामी मंगल हैं, जिनकी दूसरी राशि वृश्चिक है। वृश्चिक सिंह से चतुर्थ राशि है, जो कथित है। अतः मेष और वृश्चिक दोनों कथित होने से इनके स्वामी मंगल सूर्य के मित्र हुए। इस प्रकार चन्द्रमा, मंगल और बृहस्पति सूर्य के मित्र, बुध सम और शेष—शुक्र और शनि की राशियाँ कथित न होने से शत्रु हुए। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के मित्र-सम-शत्रु का ज्ञान करना चाहिए। इसी को वराहमिहिर ने 'शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो·····' श्लोक में कहा है। सत्याचार्य के मित्रामित्रसम की यही व्यवस्था प्रचलन में है।

ग्रहों की तात्कालिक मैत्री/शत्रुता

ग्रहों की इस नैसर्गिक मित्रता के अतिरिक्त उनमें परस्पर तात्कालिक मित्रता या शत्रुता भी होती है। ग्रहस्थान से पूर्वापर प्रथम तीन स्थानों में स्थित ग्रह उसके मित्र होते हैं। शेष स्थानों—चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम और नवम भावों में स्थित ग्रह उसके शत्रु होते हैं। उदाहरण के लिए संलग्न जन्माङ्ग को देखें।

श्री सं. २०३६ शाके १९०१ वैशाख कृ. ८ तिथौ १३।३० भृगुवासरे उ.षा.भे ५।५ परं श्रवणजन्मर्क्षे साध्ययोगे ३४।४८ कौलवकरणे श्रीसूर्योदयादिष्टं ११।३० एतत्समये मिथुनलग्नोदये यस्य कस्यचिज्जन्म। भयातं ६।२५ भभोगः ५६।२० श्रवणर्क्षे प्रथमचरणे जन्म तद्दिने दिनमानं ३१।४८ सूर्योदयः ५।३४।

स्पष्टग्रहाः

सूर्य—०।५।५६।४९
चन्द्रमा—९।११।३०।५५
मंगल—११।१६।३७।२४
बुध—११।८।४१।१०
गुरु—३।६।२५।१७
शुक्र—११।२।५१।१२
शनि—४।१३।५०।१२—वक्री
राहु—४।२१।५२।३७

अथ जन्माङ्गम्

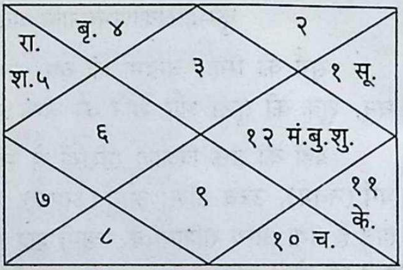

उपर्युक्त जन्माङ्ग के एकादश भाव में सूर्य स्थित है। सूर्यस्थित भाव से तृतीय भाव में बृहस्पति, द्वादश भाव में मंगल, बुध और शुक्र तथा दशम भाव में चन्द्रमा स्थित है। अतः ये सभी मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और चन्द्रमा सूर्य के तात्कालिक मित्र और शेष शनि उसका शत्रु हुआ।

चन्द्रमा अष्टम भाव में स्थित है। चन्द्रस्थित भाव से तृतीय भाव में मंगल, बुध, शुक्र और चतुर्थ भाव में सूर्य उसके मित्र होंगे। उससे द्वादश, एकादश और दशम भावों में कोई ग्रह नहीं है। चन्द्राधिष्ठित भाव से सप्तम और अष्टम भावों में स्थित वृहस्पति और शनि चन्द्रमा के तात्कालिक शत्रु होंगे। इसी प्रकार भौमाधिष्ठित राशि से द्वितीय भाव में चतुर्थ सूर्य उसका मित्र स्थित है और तृतीय भावों में ग्रह नहीं हैं। द्वादश, एकादश और दशम भाव में स्थित चन्द्रमा भी मंगल का मित्र होगा। भौमाधिष्ठित भाव में स्थित बुध और शुक्र तथा पंचम और षष्ठ भावों में स्थित बृहस्पति और शनि भौम के शत्रु होंगे। बुधाधिष्ठित भाव से द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, द्वादश, एकादश और दशम भावों में स्थित सूर्य और चन्द्रमा उसके मित्र एवं बुधाधिष्ठित भाव में स्थित मंगल और शुक्र तथा पंचम, षष्ठ स्थानस्थ बृहस्पति और शनि उसके शत्रु होंगे। गुर्वधिष्ठित भाव से द्वितीयादि कथित भावों में स्थित शनि और सूर्य बृहस्पति के मित्र तथा नवम और सप्तम भावों में स्थित मंगल, बुध, शुक्र और चन्द्रमा उसके शत्रु होंगे। शुक्र अधिष्ठित भाव से द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, द्वादश आदि भावों में स्थित सूर्य और चन्द्रमा उसके मित्र तथा शेष स्थानों में स्थित मंगल, बुध, बृहस्पति और शनि उसके शत्रु हुए। शनि अधिष्ठित भाव से, द्विर्द्वादश, तृतीयैकादश और चतुर्थ-दशम भावों में स्थित बृहस्पति उसके मित्र और शेष स्थानों में स्थित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि उसके शत्रु होंगे।

तात्कालिक मैत्रीचक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
मित्र	मं.बु.शु. बृ.चं.	सू.मं.बु. शु.	सू.चं.	सू.चं.	सू.श.	सू.चं.	बृ.
शत्रु	श.	बृ.श.	बु.बृ. शु.श.	मं.बृ.शु. श.	चं.मं.बु. शु.	मं.बु.बृ. श.	सू.चं.मं. बु.शु.

नैसर्गिक और तात्कालिक मैत्री के योग से पञ्चधा मैत्री बनती है। इसका नियम यह है कि किसी ग्रह का नैसर्गिक मित्र यदि तात्कालिक मित्र है तो वह उसका अधिमित्र होता है। नैसर्गिक मित्र यदि तात्कालिक शत्रु है तो वह उक्त ग्रह का सम होता है। नैसर्गिक सम ग्रह यदि तात्कालिक मित्र है तो मित्र और यदि शत्रु है तो शत्रु होता है। नैसर्गिक शत्रु यदि तात्कालिक मित्र है तो सम और यदि तात्कालिक शत्रु है तो अधिशत्रु होता है। इन सम्बन्धों को निम्न चक्र में स्पष्ट किया गया है—

पञ्चधा मैत्री

तात्कालिक	नैसर्गिक	फल
मित्र	मित्र	अधिमित्र
मित्र	सम	मित्र
शत्रु	मित्र	सम
शत्रु	सम	शत्रु
शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु

इसके अनुसार उपर्युक्त उदाहरण में नैसर्गिक और तात्कालिक मैत्रीचक्र के योग से पञ्चधा मैत्रीचक्र निम्नवत् होगा—

पञ्चधा मैत्रीचक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
अधिमित्र	चं.मं.बृ.	सू.बु.	सू.चं.	सू.	सू.	०	०
मित्र	बु.	मं.शु.	०	०	श.	०	बृ.
सम.	शु.	०	बृ.	चं.शु.	चं.मं.	बु.सू.श.चं.	बु.शु.
शत्रु	०	वृ.श.	शु.श.	मं.बृ.श.	०	मं.बृ.	०
अधिशत्रु	श.		बु.		बु.शु.	०	सू.चं.मं.

उच्च-नीच, परमोच्च-परमनीच स्थान

परमोच्चमजे दशभिर्वृषभे शिखिभिर्मकरे गजयुग्मलवैः ।
तिथिभिर्युवतीभवने विधुभे किल पञ्चभिरेव झषे त्रिघनैः ॥८॥
कृतिभिश्च तुलाभवने रवितः कथितं मदने खलु नीचमतः ।
मिथुने तमसः शिखिनो धनुषि प्रथमे बुधभे गुरुभे भवनम् ॥९॥

अन्वयः—अजे दशभिः, वृषभे शिखिभिः, मकरे गजयुग्मलवैः, युवतीभवने तिथिभिः, विधुभे किल पञ्चभिः, झषे त्रिघनैः, तुलाभवने कृतिभिः, रवितः परमोच्चं खलु कथितम्। अतो मदने (उक्तांशैः) नीचं (कथितम्)। मिथुने तमसः धनुषि शिखिनः स्थानं, तथा बुधभे गुरुभे प्रथमे क्रमेण राहु शिखिनः उच्चस्थानं (कथितम्) ॥८-९॥

मेष राशि के १०° अंश पर सूर्य; वृष राशि के ३° अंश पर चन्द्रमा, मकर राशि के २८° अंश पर मंगल, कन्या राशि के १५° अंश पर बुध; कर्क राशि के ५° अंश

पर गुरु; शुक्र मीन राशि के २७° अंश पर एवं तुला राशि के २०° अंश पर शनि परमोच्च होता है। इन परमोच्च स्थानों से सप्तम राशि के उन्हीं कथित अंशों पर ग्रह परम नीच होते हैं। मिथुन के १° पर और धनु के १° पर राहु और केतु परमोच्च होता है। इनसे भी सातवीं राशि में ये परम नीच होते हैं। राहु और केतु क्रमशः कन्या और मीन राशियों के स्वामी हैं ॥८-९॥

षड्वर्ग-विचार

होरा राशिदलं समे प्रथमतश्चन्द्रस्य भानोरतो
व्यत्यासादसमे दृकाणपतयः स्वाक्षाङ्कभावाधिपाः।
मेषादादिमभे वृषे तु मकराद्युग्मे घटादिन्दुभे
कर्कादेव नवांशकानि गदिताः स्युर्द्वादशांशाः स्वभात् ॥१०॥

अन्वयः—राशिदलं होरा, समे प्रथमतः चन्द्रस्य ततः भानोः, असमे अतो व्यत्यासात् (अर्थाद्विषमराशौ प्रथमतः सूर्यस्य ततश्चन्द्रस्य होरा भवति) स्व-अक्ष-अङ्कभावाधिपाः दृकाणपतयः (भवन्ति), आदिमभे मेषात्, वृषे मकरात्, युग्मे घटात्, तु इन्दुभे कर्कात्—इत्याद्येव नवांशकानि गदिताः। स्वभाद् द्वादशांशाः स्युः ॥१०॥

एक राशि के आधे भाग को होरा कहते हैं। सम राशि में राशि का पूर्वार्द्ध अर्थात् प्रथम होरा का स्वामी चन्द्रमा और द्वितीय होरा—राशि के उत्तरार्द्ध का स्वामी सूर्य होता है। विषम राशि में सम के विपरीत प्रथम होरा का स्वामी सूर्य और द्वितीय होरा का स्वामी चन्द्रमा होता है।

मेषादि चार-चार राशियों के प्रथम नवांश क्रमशः मेष, मकर, तुला और कर्क के होते हैं।

मेषादि राशियों में द्वादशांश उसी राशि से प्रारम्भ होते हैं ॥१०॥

उपर्युक्त श्लोक में षड्वर्ग के चार वर्गों होरा, द्रेष्काण, नवांश और द्वादशांश को पारिभाषित किया गया है। एक राशि में कुल ३०° अंश होते हैं। उसमें १५°-१५° अंशों की दो होरायें होती हैं। विषम राशि—मेष, मिथुन, सिंह आदि में प्रथम होरा ०°-१५° तक का स्वामी सूर्य और दूसरी होरा १५°-३०° का स्वामी चन्द्रमा होता है। इसके विपरीत सम राशियों—वृष, कर्क, कन्या आदि में पहली होरा ०°-१५° का स्वामी चन्द्रमा और दूसरी होरा—१५°-३०° का स्वामी सूर्य होता है।

होराबोधक चक्र

राशियाँ / द्रेष्काण	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
I ०-१५°	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.
II १५°-३०°	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.

कोष्ठकों में द्रेष्काण राशियों के क्रमाङ्क और उनके स्वामी ग्रह लिखे हैं।

द्रेष्काण—प्रत्येक राशि में १०°-१०° अंशों (३०°÷१०=३°) के तीन द्रेष्काण होते हैं। इनमें प्रथम द्रेष्काण उसी राशि का, दूसरा उस राशि से पञ्चम राशि का तथा तीसरा द्रेष्काण उस राशि से नवीं राशि का होता है। जैसे—मेष राशि में प्रथम १०° (०° से १०° तक) मेष राशि का, दूसरा १०° अंश (१०° से २०° तक) मेष से पाँचवीं राशि सिंह का और तीसरा द्रेष्काण (२०° से ३०° तक) मेष से नवीं राशि धनु का होता है। प्रथम द्रेष्काण मेष का होने से उसका स्वामी मंगल ही प्रथम द्रेष्काण का स्वामी होता है। दूसरा द्रेष्काण (१०°-२०°) सिंह का है। इसलिए सिंह का स्वामी सूर्य ही द्वितीय द्रेष्काणपति होगा। तृतीय द्रेष्काण (२०°-३०°) धनु राशि का होता है, इसलिए धनु का स्वामी बृहस्पति तृतीय द्रेष्काणेश होगा। इसी प्रकार अन्य वृषादि राशियों के द्रेष्काण और द्रेष्काणपति होते हैं।

द्रेष्काणबोधक चक्र

राशियाँ / द्रेष्काण	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
प्रथम ०-१०°	मेष मं.	वृष शु.	मिथुन बु.	कर्क चं.	सिंह सू.	कन्या बुध	तुला शु.	वृश्चिक मं.	धनु बृ.	मकर श.	कुम्भ श.	मीन बृ.
द्वितीय १०°-२०°	सिंह सू.	कन्या बु.	तुला शु.	वृश्चिक मं.	धनु बृ.	मकर श.	कुम्भ श.	मीन बृ.	मेष मं.	वृष शु.	मिथुन बु.	कर्क चं.
तृतीय २०°-३०°	धनु बृ.	मकर श.	कुम्भ श.	मीन बृ.	मेष मं.	वृष शु.	मिथुन बु.	कर्क चं.	सिंह सू.	कन्या बु.	तुला शु.	वृश्चिक मं.

नवांश—एक राशि (३०°) के नवें भाग को (३०÷९=३°२०′) नवांश कहते हैं। इस प्रकार ३°२०′ का एक नवांश होता है। एक राशि में कुल ९ नवांश होते हैं। मेष, वृष, मिथुन और कर्क राशियों के इन नौ नवांशों में पहला नवांश क्रम से मेष मकर, तुला और कर्क राशियों के होते हैं। जैसे—मेष राशि का प्रथम नवांश (०° से ३°२०′ तक) मेष राशि का, दूसरा नवांश—३°२०′ से ६°४०′ वृष राशि का, ६°४०′ से १०° तक तीसरा नवांश मिथुन राशि का, १०° से १३°२०′ तक चौथा नवांश कर्क राशि का, १३°२०′ से १६°४०′ तक पाँचवा नवांश सिंह राशि का, १६°४०′ से २०° तक छठा नवांश कन्या राशि का, २०° से २३°२०′ तक सातवाँ नवांश तुला राशि का, २३°२०′ से २६°४०′ तक आठवाँ नवांश वृश्चिक राशि का और २६°४०′ से ३०° तक अन्तिम नवाँ नवांश धनु राशि का होता है। इसी क्रम में सिंह, कन्या, तुला और वृश्चिक राशियों के प्रथम नवांश मेष, मकर, तुला और कर्क राशियों से प्रारम्भ होकर क्रम से धनु, कन्या, मिथुन और मीनपर्यन्त ९ नवांश होते हैं। इसी क्रम से धनु, मकर, कुम्भ और मीन राशियों में भी प्रथम नवांश मेष, मकर, तुला

और कर्क से प्रारम्भ होते हैं। जो नवांश जिस राशि का होता है, उस राशि का स्वामी ही उक्त नवांश का स्वामी होता है। जैसे—वृष राशि का पहला नवांश मकर राशि का होता है। मकर का स्वामी शनि ही वृष राशि के प्रथम नवांश का अधिपति होता है।

नवांशबोधक चक्र

नवांश \ राशियाँ	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
०° – ३°२०′	१ मं.	१० श.	७ शु.	४ चं.	१ मं.	१० श.	७ शु.	४ चं.	१ मं.	१० श.	७ शु.	४ चं.
३°२०′ – ६°४०′	२ शु.	११ श.	८ मं.	५ सू.	२ शु.	११ श.	८ मं.	५ सू.	२ शु.	११ श.	८ मं.	५ सू.
६°४०′ –१०°००′	३ बु.	१२ वृ.	९ वृ.	६ बु.	३ बु.	१२ वृ.	९ वृ.	६ बु.	३ बु.	१२ वृ.	९ वृ.	६ बु.
१०°००′-१३°२०′	४. चं.	१ मं.	१० श.	७ शु.	४ चं.	१ मं.	१० श.	७ शु.	४ चं.	१ मं.	१० श.	७ शु.
१३°२०′-१६°४०′	५ सू.	२ शु.	११ श.	८ मं.	५ सू.	२ शु.	११ श.	८ मं.	५ सू.	२ शु.	११ श.	८ मं.
१६°४०′-२०°००′	६ बु.	३ बु.	१२ वृ.	९ वृ.	६ बु.	३ बु.	१२ वृ.	९ वृ.	६ बु.	३ बु.	१२ वृ.	९ वृ.
२०°००′-२३°२०′	७ शु.	४ चं.	१ मं.	१० श.	७ शु.	४ चं.	१ मं.	१० श.	७ शु.	४ चं.	१ मं.	१० श.
२३°२०′-२६°४०′	८ मं.	५ सू.	२ शु.	११ श.	८ मं.	५ सू.	२· शु.	११ श.	८ मं.	५ सू.	२ शु.	११ श.
२६°४०′-३०°००′	९ बृ.	६ बु.	३ बु.	१२ बृ.	९ बृ.	६ बु.	३ बु.	१२ बृ.	९ बृ.	६ बु.	३ बु.	१२ बृ.

द्वादशांश—एक राशि = ३०° में २°३०′ के १२ द्वादशांश होते हैं। ये बारह द्वादशांश उसी राशि से प्रारम्भ होकर १२ राशियों के होते हैं। द्वादशांश राशि के स्वामी ही तत्तद् द्वादशांशों के स्वामी होते हैं। जैसे—मेष राशि में प्रथम २°३०′ स्वयं मेष का होता है। इसका स्वामी मंगल है। २°३०′ से ५° तक द्वितीय द्वादशांश वृष का, इसका स्वामी शुक्र: ५° से ७°३०′ तक तृतीय द्वादशांश मिथुन का, इसका स्वामी बुध होगा। इसी प्रकार आगे के प्रत्येक द्वादशांश क्रम से कर्कादि राशियों के मीनपर्यन्त द्वादशांश होते हैं। विषय के स्पष्ट बोध के लिए नीचे द्वादशांश-बोधक चक्र दिया गया है—

द्वादशांशबोधक चक्र

द्वादशांश \ राशियाँ	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
०°–२°३०′	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.
२°३०′–५°०′	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.

राशियाँ / द्वादशांश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
५°००'-७°३०'	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.
७°३०'-१०°०'	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.
१०°००'-१२°३०'	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.
१२°३०'-१५°००'	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.
१५°००'-१७°३०'	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.
१७°३०'-२०°००'	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.
२०°००'-२२°३०'	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.
२२°३०'-२५°००'	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.
२५°००'-२७°३०'	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.
२७°३०'-३०°००'	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.

उक्त तालिकाओं में सबसे ऊपर की पंक्ति में राशियाँ दी गई हैं। नवांश चक्र के प्रथम कालम में नव नवांशों के अंशादि विस्तार और द्वादशांश चक्र के प्रथम कालम में द्वादश द्वादशांशों के अंशादि विस्तार दिये गये हैं। ग्रह के राश्यादि भोग के अनुसार ग्रह जिस राशि में स्थित हो उस कालम में ग्रह के अंशादि प्रथम कालम के जिस नवांश या द्वादशांश के अन्तर्गत पड़ें, उस पंक्ति में ग्रह राशि के नीचे के कोष्ठक में नवांश या द्वादशांश की राशि और उसके स्वामी दिये गये हैं। उदाहरण के लिए दिन के किसी समय चन्द्रमा का भोग राश्यादि १।१२°।३८'।५७'' हैं। स्पष्ट है कि उक्त चन्द्रमा मेष राशि का भोग कर वृष राशि के १२°३८'५७'' पर स्थित है। स्पष्टतः चन्द्रमा वृष राशि के पूर्वार्द्ध में स्थित है। यतः वृष सम राशि है, इसलिए यह चन्द्रमा की ही होरा होगी। नवांश जानने के लिए नवांश चक्र में चन्द्रमा के अंशादि १२°३८'५७'' चक्र के प्रथम कालम में चौथे नवांश १०°-१३°२०' के अन्तर्गत पड़ेगा। अतः १०°-१३°२०' की पंक्ति में चन्द्रमा स्थित राशि वृष के नीचे के कोष्ठक के अनुसार यह भचक्र की पहली राशि मेष के नवांश में स्थित है, जिसका स्वामी मंगल है। इसी प्रकार उक्त चन्द्रमा छठे द्वादशांश (१२°३०'-१५°००') में वृष राशि के नीचे कोष्ठक के अनुसार भचक्र की सातवीं राशि तुला के द्वादशांश में स्थित है, जिसका स्वामी शुक्र है।

पञ्चपञ्चाष्टशैलाक्षास्त्रिंशांशा विषमे क्रमात्।
भौमभानुजजीवज्ञशुक्राणामुत्क्रमात् समे ॥११॥

अन्वयः—विषमे पञ्च-पञ्च-अष्ट-शैल-अक्षाः क्रमात्-भौम-भानुज-जीवज्ञ-शुक्राणां त्रिंशांशाः (स्युः) समे उत्क्रमात् (त्रिंशांशाः भवन्ति) ॥११॥

विषम राशि में ५,५,८,७ और ५ अंशों के ५ त्रिंशांश होते हैं तथा मंगल, शनि, बृहस्पति, बुध और शुक्र क्रमशः इनके स्वामी होते हैं। सम राशि में उत्क्रम से त्रिंशांश और त्रिंशांशपति होते हैं ॥११॥

राशि के त्रिंशांश की व्यवस्था अन्य वर्गों से भिन्न है। इस व्यवस्था के अनुसार राशि के ३०° अंशों को ५ खण्डों में विभक्त किया गया है। विषम राशि में ०° से ५° तक प्रथम विभाग होता है, जिसके स्वामी मंगल होते हैं; ५° से १०° तक दूसरा खण्ड होता है, जिसके स्वामी शनि होते हैं, १०° से १८° तक तीसरा खण्ड होता है, जिसके स्वामी बृहस्पति होते हैं; चतुर्थ खण्ड १८° से २५° तक विस्तृत होता है तथा बुध इस खण्ड के स्वामी होते हैं; शेष ५° का अर्थात् २५° से ३०° तक पंचम खण्ड होता है, जिसके शुक्र स्वामी होते हैं। सम राशियों में विभाजन का यह क्रम उलटा हो जाता है अर्थात् ०° से ५° तक प्रथम खण्ड—स्वामी शुक्र; ५° से १२° तक द्वितीय खण्ड—स्वामी बुध; १२° से २०° तक तृतीय खण्ड—स्वामी बृहस्पति; २०° से २५° तक चतुर्थ खण्ड—स्वामी शनि और २५° से ३०° तक पंचम खण्ड, जिसके स्वामी मंगल होते हैं। त्रिंशांश के इस वर्ग की एक और विशेषता होती है। मंगल, शनि, बृहस्पति, बुध और शुक्र—ये पाँच ग्रह ही क्रमोत्क्रम से विषम-सम राशियों में त्रिंशांशपति होते हैं। इन सभी त्रिंशांशों की दो-दो राशियाँ, एक सम और दूसरी विषम होती हैं। इसलिए विषम राशि में प्रथम त्रिंशांश मंगल की विषम राशि मेष का, द्वितीय त्रिंशांश शनि की विषम राशि कुम्भ का, तृतीय त्रिंशांश बृहस्पति की विषम राशि धनु का, चतुर्थ त्रिंशांश बुध की विषम राशि मिथुन का और पञ्चम त्रिंशांश शुक्र की विषम राशि तुला का होता है। सम राशि में इन त्रिंशांशपतियों की समराशियों वृष, कन्या, मीन, मकर और वृश्चिक के क्रम से प्रथमादि त्रिंशांश होते हैं। स्पष्टार्थ चक्र देखिए—

त्रिशांश चक्र

(विषम राशि)

राशि / त्रिंशांश	मेष	मिथुन	सिंह	तुला	धनु	कुम्भ	स्वामी
५	१	१	१	१	१	१	शुक्र
१०	११	११	११	११	११	११	बुध
१८	९	९	९	९	९	९	गुरु
२५	३	३	३	३	३	३	शनि
३०	७	७	७	७	७	७	मंगल

(समराशि)

राशि / त्रिंशांश	वृष	कर्क	कन्या	वृश्चिक	मकर	मीन	स्वामी
५°	२	२	२	२	२	२	शुक्र
१२°	६	६	६	६	६	६	बुध
२०°	१२	१२	१२	१२	१२	१२	गुरु
२५°	१०	१०	१०	१०	१०	१०	शनि
३०°	८	८	८	८	८	८	मंगल

उपर्युक्त चक्र की प्रथम पंक्ति में राशियाँ दी गई है। प्रथम कालम में प्रत्येक त्रिंशांश का विस्तार और अन्तिम कालम में उनके स्वामी ग्रह अङ्कित हैं। शेष कोष्ठकों में तत्तद् राशियों की त्रिंशांश राशियाँ दी गई हैं।

इन छः वर्गों—गृह, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश और त्रिशांश को षड्वर्ग कहते हैं। इनमें सप्तमांश को सम्मिलित करने से सप्तवर्ग बनता है। सप्तवर्ग में दशमांश, षोडशांश और षष्ठ्यंश को सम्मिलित करने से दशवर्ग बनता है।

विलग्नहोराद्रेष्काणनवांशद्वादशांशकाः ।
त्रिंशांशकश्च षड्वर्गः शुभकर्मसु शस्यते ॥
सप्तांशयुक्तः षड्वर्गः सप्तवर्गोऽभिधीयते ।
जातकेषु च सर्वेषु ग्रहाणां बलकारकम् ॥ (वैद्यनाथ)
दशवर्गा दिगंशाख्या कलांशाः षष्ठिनायकाः । (पराशर)

इन वर्गों की उपयोगिता फलादेश में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। स्ववर्ग अथवा अपने उच्च राशि के वर्ग में स्थित ग्रह अत्यन्त बली और शुभ फल देने वाला होता है। एकाधिक वर्ग यदि ग्रह की अपनी राशि या उच्च राशि का हो तो वह अत्यन्त शुभ फल-कर्त्ता होता है।

षड्वर्ग में दो या दो से अधिक वर्ग यदि स्वराशि या उच्च राशि के हों तो उनके योग से किंशुकादि योग बनते हैं। दो वर्ग यदि स्ववर्ग हों तो किंशुक, तीन वर्ग स्ववर्ग हों तो व्यञ्जन, चार स्ववर्ग हो तो चामर, पाँच स्ववर्ग हों तो छत्र, छः स्ववर्ग हों तो कुण्डल और सात स्ववर्ग हों तो मुकुट नामक योग बनता है।

भवन्ति वर्गसंयोगे षड्वर्गे किंशुकादयः ।
द्वाभ्यां किंशुकनामा च त्रिभिर्व्यञ्जनमुच्यते ॥
चतुर्भिश्चामराख्यं च छत्रं पञ्चभिरेव च ।
षड्भिः कुण्डलयोगः स्यान्मुकुटाख्यं च सप्तभिः ॥ (पराशर)

दशवर्ग में इन योगों की भिन्न संज्ञाएँ हैं—

सप्तवर्गेऽथ दिग्वर्गे परिजातादिसंज्ञकाः ।
पारिजातं भवेद्द्वाभ्यामुत्तमं त्रिभिरुच्यते ॥
चतुर्भिर्गोपुराख्यं स्याच्छरैः सिंहासनं तथा ।
पारावतं भवेत् षड्भिर्देवलोकं तु सप्तभिः ॥
वसुभिर्ब्रह्मलोकाख्यं नवभिः शक्रवाहनम् ।
दिग्भिः श्रीधामयोगं स्यादथ षोडशवर्गके ॥ (पराशर)

ग्रहों की दृष्टियाँ

चरणविवृद्ध्या खेटा दशमसहोत्थे त्रिकोणभे जनने ।
चतुरस्रेऽथ कलत्रे प्रयताः पश्यन्ति तत्फलं क्रमतः ॥१२॥

अन्वयः—जनने दशमसहोत्थे त्रिकोणभे चतुरस्रे कलत्रे चरणविवृद्ध्या खेटाः प्रयताः (क्रमेण) पश्यन्ति अथ तत्फलं च क्रमतः (दास्यन्ति) ॥१२॥

ग्रह जिस भाव में बैठा हो, उससे दशम और सहोत्थ (तृतीय भाव) को, त्रिकोण

(पंचम और नवम) भाव को, चतुरस्र (चतुर्थ और अष्टम) भाव को और कलत्र (सप्तम) भाव को चरणवृद्धि-क्रम से देखता है। इसी क्रम से दृष्टिफल में भी वृद्धि होती है ॥१२॥

ग्रहाधिष्ठित भाव से तृतीय और दशम भाव को और उसमें स्थित ग्रहों को १ चरण की दृष्टि से, पाँचवें और नवें भाव को और उनमें स्थित ग्रहों को २ चरण अर्थात् आधी दृष्टि से, चतुर्थ और अष्टम भाव को और उनमें स्थित ग्रहों को ३ चरण की दृष्टि से तथा सप्तम भाव को और उसमें स्थित ग्रहों को ४ चरण की या पूर्ण दृष्टि से देखता है।

लघुपाराशरी के मतानुसार सभी ग्रह अपने स्थान से केवल सातवें भाव को ही पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। शनि, बृहस्पति और मंगल की विशेष दृष्टि होती है। वे क्रमशः तीसरे और दसवें भाव को, पाँचवें और नवें भाव को तथा चौथे और आठवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। इस प्रकार शनि अपने स्थान से तीसरे, सातवें और दसवें स्थान को; बृहस्पति पाँचवें, सातवें और दसवें स्थान को एवं भौम अपने स्थान से चौथे, सातवें और आठवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं।

पश्यन्ति सप्तमं सर्वे शनिजीवकुजा पुनः।
विशेषतश्च त्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमानम् ॥ (लघुपाराशरी)

महर्षि पराशर के अनुसार ग्रहों की दृष्टि के अनेक भेद हैं—

होराशास्त्रे भिन्नदृष्टिः खेटानां च परस्परम्।
त्रिदशे च त्रिकोणे च चतुरस्त्रं च सप्तमे ॥
शनिर्देवगुरुर्भौमः परे च वीक्षणेऽधिकाः।
पदार्धं त्रिपदं पूर्णं वदन्ति गणकोत्तमाः ॥
शनिपादं त्रिकोणेषु चतुरस्त्रे द्विपादकम्।
त्रिपादं सप्तमे विप्र! त्रिदशे पूर्णमेव हि ॥
चतुरस्त्रे गुरुः पादं सप्तमे च द्विपादकम्।
त्रिपादं त्रिदशे विप्र! पूर्णं पश्यति कोणभे ॥
सप्तमे पादमेकं च द्विपादं त्रिदशे द्विज!।
त्रिपादं च त्रिकोणेषु भौमः पूर्णं चतुरस्त्रके ॥
अन्येषां त्रिदशे पादं द्विपादं च त्रिकोणगे।
चतुरस्त्रो त्रिपादं च पूर्णं पश्यति सप्तमे ॥ (पराशर)

सूर्यादि ग्रहों के पराशरोक्त दृष्टिचक्र

ग्रह / दृष्टि	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	केतु
१ चरण	३।१०	३।१०	७	३।१०	४।८	३।१०	५।९	
२ चरण	५।९	५।९	३।१०	५।९	७	५।९	४।८	
३ चरण	४।८	४।८	५।९	४।८	३।१०	४।८	७	
पूर्ण	७	७	४।८	७	५।९	७	३।१०	

अब राशियों के चरादि भेद कहते हैं—

राशियों के चरादि भेद

चरस्थिरद्विस्वभावाः क्रूराक्रूरावजादितः ।
नरनारी क्रमादेव विषमाख्यसमावपि ॥१३॥

अन्वयः—अजादितः क्रमात् एव चर-स्थिर-द्विःस्वभावाः क्रूर-अक्रूरौ, नर-नारी विषमसमौ आख्यः ॥१३॥

मेषादि राशियाँ क्रम से चर-स्थिर-द्विस्वभाव, क्रूर-शुभ, पुरुष-स्त्री, विषम-सम होती हैं ॥१३॥

उपर्युक्त वचनानुसार मेष, कर्क, तुला और मकर चर राशियाँ; वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ स्थिर राशियाँ तथा मिथुन, कन्या, धनु और मीन द्विस्वभाव राशियाँ होती हैं। मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ पुरुष विषम और क्रूर राशियाँ तथा शेष वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन स्त्री, शुभ और सम राशियाँ हैं।

मिथुनं धन्विपूर्वार्द्धं तुलाकन्याघटा नराः ।
चतुष्पदा धनुः सिंहवृषमेषा मृगादिमः ॥१४॥

अन्वयः—मिथुनं चतुष्पदाः धन्विपूर्वार्द्ध तुला-कन्या-कुम्भ-नराः तथा धनु (उत्तरार्द्धं)-सिंह-वृष-मेष-मृगादिमः (भवन्ति) ॥१४॥

मिथुन, धनु का पूर्वभाग, तुला, कन्या और कुम्भ राशियाँ मनुष्य एवं धनु का उत्तरभाग, सिंह, वृष, मेष और मकर का पूर्वभाग—ये चतुष्पद या पशु राशियाँ हैं ॥१४॥

शेष राशियों—मकर का उत्तर भाग, मीन, कर्क और वृश्चिक के विषय में आचार्य ने कुछ नहीं कहा है। अन्य जातकग्रन्थों में इनमें से मकर के उत्तर भाग, कर्क और मीन को जलचर तथा वृश्चिक राशि को कीट कहा गया है—

चापापरार्द्धहरिगोमकरादि येषा
मानस्थिता बलयुताश्च चतुष्पदाख्याः ।
कन्यानृयुग्मघटतौलिशरासनाद्या
लग्नान्विता यदि नरा द्विपदा बलाढ्या ॥
मृगापरार्द्धान्त्यकुलीरसंज्ञा जलाभिधाना बलिनश्चतुर्थे ।
जलाश्रयो वृश्चिकनामधेयः स सप्तमस्थानगतो बली स्यात् ॥

(जातकपारिजात)

उक्त वचन के अनुसार धनु का उत्तरार्द्ध, सिंह, वृष, मकर का पूर्वार्द्ध और मेष—चतुष्पद, दशमभाव में बली। कन्या, मिथुन, कुम्भ, तुला और धनु का पूर्वार्द्ध—नर या द्विपद, लग्न में बली। मकर का उत्तरार्द्ध, मीन और कर्क—जलचर—चतुर्थ भाव में बली। वृश्चिक—जलांश्रयी या कीट, सप्तम भाव में बली।

इनके अतिरिक्त वर्ण, द्रव्यादि अनेक पदार्थों की चर्चा अन्य जातकग्रन्थों में की गई है। मेरे द्वारा सम्पादित जातकपारिजात नामक ग्रन्थ में इनकी विशद व्याख्या की गई है।

मेषादि द्वादश राशियाँ चारो दिशाओं के स्वामी होते हैं।

पूर्व दिशा के स्वामी — मेष, सिंह और धनु राशि हैं।
दक्षिण दिशा के स्वामी — वृष, कन्या और मकर राशि हैं।
पश्चिम दिशा के स्वामी — मिथुन, तुला और कुम्भ राशि हैं।
उत्तर दिशा के स्वामी — कर्क, वृश्चिक और मीन राशि हैं।

राशियों की दिशायें

पूर्व दिशा में — मेष, सिंह, धनु राशियाँ बलवान होती हैं।
दक्षिण दिशा में — वृष, कन्या, मकर राशियाँ बलवान होती हैं।
पश्चिम दिशा में — मिथुन, तुला, कुम्भ राशियाँ बलवान होती हैं।
उत्तर दिशा में — कर्क, वृश्चिक, मीन राशियाँ बलवान होती हैं।

मूलत्रिकोणमर्कादेः सिंहो वृषभ आदिमः।
कन्याधनुस्तुलाकुम्भः प्रवदन्ति पुरातनाः ॥१५॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले संज्ञाध्यायः प्रथमः ॥१॥

अन्वयः—सिंहः वृषभः आदिमः कन्या-धनु-तुला-कुम्भः अर्कादेः मूलत्रिकोणं पुरातनाः प्रवदन्ति ॥१५॥

सिंह, वृष, मेष, कन्या, धनु, तुला और कुम्भ क्रमशः सूर्यादि ग्रहों के मूलत्रिकोण स्थान हैं ॥१५॥

सूर्य का सिंह गृह भी है और त्रिकोण राशि भी है। वृष राशि चन्द्रमा का उच्च स्थान और त्रिकोण स्थान है, मंगल का मेष गृह और त्रिकोण भी है; इस प्रकार हम देखते हैं कि जो राशि ग्रह की उच्च राशि या स्वगृह है, वह त्रिकोण भी है। एक ही राशि में ग्रह कब स्वगृही या उच्च का होगा और कब त्रिकोणस्थ होगा—इस सम्बन्ध में सारावली का निम्न वचन उपयोगी होगा—

विशंतिरंशाः सिंहे त्रिकोणमपरे स्वभवनमर्कस्य।
उच्चं भागत्रितयं वृषे इन्दोश्च त्रिकोणमपरेंऽशाः ॥
द्वादशभागा मेषे त्रिकोणमपरे स्वभं तु भौमस्य।
उच्चबलं कन्यायां बुधस्य तिथ्यंशकैः सदा चिन्त्यम् ॥
परतस्त्रिकोणजातं पञ्चभिरंशैः स्वराशिजं परतः।
दशभागा इज्यस्य च त्रिकोणमपरे स्वभं चापे ॥
शुक्रस्य तु त्रिकोणं पञ्चभिरपरे स्वभं जूके।
कुम्भे त्रिकोणनिजभे रविजस्य यथा रवेः सिंहे ॥ (सारावली)

सिंह राशि के प्रारम्भिक २०° तक सूर्य का मूल त्रिकोण और शेष १०° स्वगृह होता है। वृष के प्रारम्भिक ३° तक चन्द्रमा का उच्च स्थान और शेष २७° त्रिकोण होता है। मंगल का मेष राशि के प्रारम्भिक १२° तक मूल त्रिकोण और शेष १८° उसका स्वगृह होता है। कन्या राशि के प्रथम १५° तक उच्च, उसके बाद ५° तक मूल त्रिकोण और शेष १०° उसका स्वगृह होता है। धनु राशि में प्रारम्भ के १०° तक मूल त्रिकोण और शेष २०° उसका स्वगृह होता है। तुला राशि में आरम्भ के ५° तक शुक्र का मूल त्रिकोण और शेष २५° उसका स्वगृह होता है। इसी प्रकार कुम्भ राशि में प्रारम्भ के २०° तक मूल त्रिकोण और शेष १०° उसका स्वगृह होता है।

उपर्युक्त तथ्य को निम्न चक्र में दर्शाया गया है—

ग्रहों के नीचोच्च, गृह, मूल, त्रिकोण स्थान

उच्चादि / ग्रह	उच्च राशि	परमोच्चांश	नीच राशि	परम नीचांश	स्व गृह	अंशादि	मूल त्रिकोण अंशादि
सूर्य	मेष	०।१०°	तुला	६।१०°	सिंह	२१°-३०°	०°-२०°
चन्द्रमा	वृष	१।३°	वृश्चिक	७।३°	वृष	—	४°-३०°
मंगल	मकर	९।२८°	कर्क	३।२८°	मेष	१३°-३०°	०°-१२°
बुध	कन्या	५।१५°	मीन	११।१५°	कन्या	२५°-३०°	१६°-२०°
बृहस्पति	कर्क	३।५°	मकर	७।५°	धनु	२१°-३०°	१°-२०°
शुक्र	मीन	११।२७°	कन्या	५।२७°	कुम्भ	२१°-३०°	१°-२०°
शनि	तुला	०।२०°	मेष	०।२०°	कुम्भ	२१-३०°	१°-२०°

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का प्रथम अध्याय समाप्त ॥१॥

अथ द्वितीयोऽध्याय:

जातकचिह्नम्

जातक-चिह्नज्ञान

शिरोभाग में चिह्न

जनुषि लग्नगतो वसुधासुतो मदनगोऽपि गुरुः कविरेव वा।
भवति तस्य शिरो व्रणलाञ्छितं निगदितं यवनेन महात्मना ॥१॥

अन्वयः—यस्य जनुषि लग्नगत: वसुधासुत: मदनग: अपि गुरु: कवि: एव वा तस्य शिर: व्रणलाञ्छितं यवनेन महात्मना निगदितम् ॥१॥

जिस व्यक्ति के जन्माङ्ग के तनुभाव में मंगल और सप्तम भाव में बृहस्पति या शुक्र स्थित हों तो उसके मस्तक में व्रण या चोट का चिह्न होता है—ऐसा यवनपण्डितों का कथन है ॥१॥

भवति लग्नगते वसुधासुते भृगुसुतेऽपि विधाविह जन्मिनाम् ।
शिरसि चिह्नमुदाहृतमादिभिर्मुनिवरैर्द्विरसाब्दसमासतः ॥२॥

अन्वयः—यदा जन्मिनां लग्नगते वसुधासुते भृगुसुते विधौ अपि इह भवति तदा द्विरसाब्दसमासत: शिरसि चिह्नं मुनिवरै: उदाहृतम् ॥२॥

जिसके जन्मलग्न में चन्द्रमा और शुक्र के साथ मंगल स्थित हो तो दूसरे या छठे वर्ष में जातक के शिरोभाग में व्रणादि के लक्षण उत्पन्न होते हैं ॥२॥

यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि मंगल, चन्द्रमा और शुक्र में मंगल बली हो तो व्रण या चोट लगने से उक्त चिह्न होते हैं। यदि चन्द्रमा या शुक्र बली हो तो तिल या मस्सा होता है।

भार्गवे जनुरङ्गस्थे चाष्टमे सिंहिकासुते ।
मस्तके वामकर्णे वा चिह्नदर्शनमादिशेत् ॥३॥

अन्वयः—जनु: अङ्गस्थे भार्गवे च अष्टमे सिंहिकासुते मस्तके वामकर्णे वा चिह्नदर्शनं आदिशेत् ॥३॥

जन्माङ्ग के तनुभाव में शुक्र और अष्टम भाव में राहु स्थित हो तो जातक के मस्तक अथवा बाँयें कान पर चिह्न (तिल या मस्सा अथवा अन्य प्रकार के) होते हैं ॥३॥

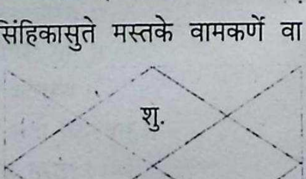

मस्तक में चिह्न

वामाङ्ग में चिह्न

मदनसदनमध्ये सिंहिकानन्दने वा
सुरपतिगुरुणा चेदङ्गराशौ युते नुः।
प्रकथितमिह चिह्नं चाष्टमे पापखेटे
कविरपि गुरुरङ्गे वामबाहौ मुनीन्द्रैः ॥४॥

अन्वयः—यदा मदनसदनमध्ये सिंहिकानन्दने, वा सुरपतिगुरुणा युते चेत् अङ्गराशौ च अष्टमे पापखेटे कविरपि गुरुरङ्गे युते तदा नुः वामबाहौ चिह्नं मुनीन्द्रैः प्रकथितम् ॥४॥

(i) सप्तम भाव में राहु और लग्न में बृहस्पति हो,

(ii) लग्न में राहु बृहस्पति से संयुक्त हो और अष्टम भाव पापाक्रान्त हो, अथवा

(iii) लग्न में शुक्र और बृहस्पति संयुक्त हो और अष्टम भाव में पाप ग्रह स्थित हो, उक्त तीनों स्थितियों में मुनिश्रेष्ठ. वामाङ्ग में अथवा बाँयीं भुजा में घाव या फोड़ा आदि के चिह्न कहते हैं ॥४॥

लाभारिसहजे भौमे व्यये वा शुक्रसंयुते।
वामपार्श्वे गतं चिह्नं विज्ञेयं व्रणजं बुधैः ॥५॥

अन्वयः—लाभारिसहजे व्यये वा भौमे शुक्रसंयुते वामपार्श्वे व्रणजं चिह्नं गतं बुधैः विज्ञेयम् ॥५॥

लग्न से एकादश, छठे, चतुर्थ और बारहवें भाव में यदि मंगल शुक्र के साथ संयुक्त होकर स्थित हो तो जातक के वामाङ्ग में व्रण के चिह्न होते हैं ॥५॥

गुह्याङ्ग में चिह्न

लग्ने क्षितिसुते मन्दे शुक्रदृष्टे त्रिकोणभे।
लिङ्गे गुदसमीपे वा तिलकं सन्दिशेद् बुधः ॥६॥

अन्वयः—लग्ने क्षितिसुते, त्रिकोणभे मन्दे शुक्रदृष्टे, लिङ्गे गुदसमीपे वा तिलकं बुधः संदिशेत् ॥६॥

लग्न में मंगल और त्रिकोण (पञ्चम, नवम) भावों में यदि शनि स्थित हो और शुक्र से देखा जाता हो तो जातक के गुदामार्ग के सन्निकट या लिङ्ग पर तिल होता है—ऐसा विद्वानों का कथन है ॥६॥

उदरभाग में चिह्न

सुतालये भाग्यनिकेतने वा कविर्यदा चाष्टमगौ ज्ञजीवौ।
शनौ चतुर्थे तनुभावगे वा तदा सचिह्नं जठरं नरस्य ॥७॥

अन्वयः—यदा सुतालये भाग्यनिकेतने वा कविः, च अष्टमगौ ज्ञजीवौ, चतुर्थे तनुभावगे वा शनौ, तदा नरस्य जठरं सचिह्नं भवति ।।७।।

लग्न से पञ्चम अथवा नवम भाव में यदि शुक्र स्थित हो, अष्टम भाव में बुध और बृहस्पति तथा लग्न अथवा चतुर्थ भाव में शनि स्थित हो तो जातक के उदरभाग में चिह्न होता है ।।७।।

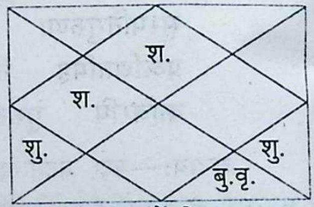

उदर में चिह्न

कटिप्रदेश में चिह्न

धने कवावष्टमलग्नभे वा दिवाकरे मन्दकुजौ तृतीये ।
कटिप्रदेशे प्रवदेन्नराणां चिह्नं विशेषादिह जातकज्ञः ।।८।।

अन्वयः—धने कवौ, अष्टम-लग्नगे वा दिवाकरे, तृतीये मन्दकुजौ, नराणां कटिप्रदेशे विशेषात् चिह्नं जातकज्ञं प्रवदेत् ।।८।।

धनभाव (द्वितीयभाव) में शुक्र, लग्न या अष्टम भाव में सूर्य तथा मंगल और शनि तृतीय भाव में संयुक्त हों तो जातकशास्त्र के जानकार कटि प्रदेश में चिह्न कहते हैं ।।८।।

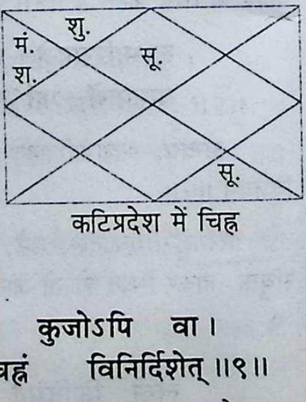

कटिप्रदेश में चिह्न

पादमूल में चिह्न

पातालस्थौ राहुशुक्रौ लग्ने मन्दः कुजोऽपि वा ।
पादमूलेऽथवा पादे वामे चिह्नं विनिर्दिशेत् ।।९।।

अन्वयः—पातालस्थौ राहुशुक्रौ, लग्ने मन्दः कुजः अपि वा पादमूले अथवा वामे पादे चिह्नं विनिर्दिशेत् ।।९।।

लग्न से चतुर्थ भाव में राहु और शुक्र युत हों अथवा लग्न में मंगल और शनि संयुक्त हों तो जातक के बाँयें पैर में अथवा पाँव के तलुवे में चिह्न का होना जातकज्ञों ने कहा है ।।९।।

पुनः गुदामार्ग में चिह्न

व्यये गुरौ विधौ भाग्ये लाभारिसहजे बुधे ।
गोलकं गुदमध्यस्थं व्रणं वा प्रवदेद् बुधः ।।१०।।

अन्वयः—व्यये गुरौ, विधौ भाग्ये, लाभारिसहजे बुधे, गुदमध्यस्थं व्रणं गोलकं वा बुधः प्रवदेत् ।।१०।।

लग्न से द्वादश भाव में बृहस्पति, नवम भाव में चन्द्रमा तथा त्रिषडाय (३,६,११वें) भावों में से किसी भाव में यदि बुध स्थित हो तो जातक के गुदप्रदेश में गोलाकार चिह्न या फोड़ा का चिह्न बुद्धिमानों को कहना चाहिए ॥१०॥

भ्रातृ-मातृ-हन्तायोग

दिनपतौ नवमे हरिभे यदा सहजहानिरवश्यमिहाङ्गिनाम् ।
धनगते रविजे तनुगे गुरावगुरुगे जननी नहि जीवति ॥११॥

अन्वयः—यदा हरिभे दिनपतौ नवमे तदा अङ्गिनां सहजहानिः अवश्यं, यदा धनगते रविजे, तनुगे अगुरुगे गुरौ, (तदा) जननी नहि जीवति ॥११॥

लग्न से नवमभाव में यदि सिंह राशि का सूर्य स्थित हो तो जातक के भाई की हानि करता है। लग्न से दूसरे भाव में यदि शनि और लग्न में पीडित (शत्रुराशि में अथवा अस्तंगत पाप ग्रहों से पराजित) राहु स्थित हो तो जातक के माता की हानि करता है ॥११॥

भगिनी-हन्तायोग

सुरगुरौ धनभावगते यदा कुजयुते शनिनापि च जन्मिनाम् ।
अगुयुते सहजे सहजासुखं निगदितं यवनैः प्रथमोदितम् ॥१२॥

अन्वयः—यदा शनिना कुजयुते अपि सुरगुरौ धनभावगते, (तथा) अगुयुते सहजे, (तदा) जन्मिनां सहजासुखं यवनैः प्रथमोदितं (निगदितम्) ॥१२॥

यदि धनभाव में बृहस्पति शनि और चन्द्रमा से संयुक्त हो तथा तृतीय भाव में राहु स्थित हो तो जातक को भगिनी का सुख नहीं होता ॥१२॥

भ्रातृ-हन्तायोग

अरिनिकेतनगेऽवनिनन्दने भवति राहुयुते निधने शनौ ।
निगदितं सहजो जनिमात्रतो यमपुरं व्रजतीति पुरातनैः ॥१३॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले जातकचिह्नाध्यायः द्वितीयः ॥२॥

अन्वयः—अरिनिकेतनगे अवनिनन्दने तथा राहुयुते शनौ निधने भवति तदा सहजः जनिमात्रतः यमपुरं व्रजतीति पुरातनैः निगदितम् ॥१३॥

यदि शत्रुस्थान (षष्ठ भाव) में मंगल हो और अष्टम भाव में राहु से युक्त शनि स्थित हो तो जातक के जन्म लेते ही उसके भाई की मृत्यु हो जाती है—ऐसा प्राचीन आचार्यों का कथन है ॥१३॥

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का द्वितीय अध्याय समाप्त ॥२॥

•

अथ तृतीयोऽध्यायः

बालारिष्टम्

अरिष्ट-विचार

तुहिनकिरणहोरिका च सन्ध्या भचरमगाः खलखेचरा जनौ चेत्।
मृतिरथ रजनीशपापखेटैरखिलचतुष्टयगैर्विनाशमेति ॥१॥

अन्वयः—चेत् जनौ तुहिनकिरणहोरिका च सन्ध्या भचरमगाः खलखेचराः सदामृतिः अथ रजनीशपापखेटैः अखिलचतुष्टयगैः तदा बालः विनाशम् एति ॥१॥

सन्ध्याकाल में जन्म हो और जन्मलग्न में चन्द्रमा की होरा हो तथा पापग्रह अपने-अपने अन्तिम (नवें) नवांश में स्थित हों तो जातक की मृत्यु होती है।

पाप ग्रह से युक्त चन्द्रमा यदि केन्द्र में स्थित हो और अन्य पाप ग्रह भी केन्द्र में स्थित हों तब भी जातक की शीघ्र मृत्यु होती है ॥१॥

उपर्युक्त योग में सन्ध्याकाल में जन्म कहा गया है। अहोरात्र में पूर्वापर दो संध्यायें होती हैं। सूर्योदयकाल में पूर्वसन्ध्या और सूर्यास्त के समय परसन्ध्या। सूर्योदय से १ घटी ३० पल पूर्व से प्रारम्भ होकर सूर्योदय के बाद १ घटी ३० पल अर्थात् कुल ३ घटी की पूर्वसन्ध्या और १ घटी ३० पल सूर्यास्तपूर्व से प्रारम्भ होकर १ घटी ३० पल सूर्यास्त से बाद तक ३ घटी परसन्ध्या होती है। इन दोनों सन्ध्याओं में यदि जातक का जन्म हो तो उक्त योग का विचार करना चाहिए।

अशुभेषु शुभेषु चक्रपूर्वापरभागेषु गतेषु कीटलग्ने।
विरतिं समुपैति बालकोऽयं खलखेटैरपि कामिनीतनुस्थैः ॥२॥

अन्वयः—(यदा) कीटलग्ने चक्रपूर्वापरभागेषु अशुभेषु शुभेषु गतेषु (अथवा) कामिनीतनुस्थैः खलखेटैः अपि (तदा) अयं बालकः विरतिं समुपैति ॥२॥

जन्माङ्ग के पूर्व भाग (लग्न से प्रारम्भ कर छठे भाव पर्यन्त छः भावों) में पाप ग्रह तथा परभाग (सप्तम भाव से द्वादश भाव पर्यन्त छः भावों) में सभी शुभ ग्रह स्थित हों तथा कर्क या वृश्चिक लग्न हो, तो जातक के लिए अरिष्टकारक होता है। सभी पापग्रह यदि स्त्रीसंज्ञक या सम राशियों में स्थित हों तब भी जातक के लिए मृत्यकारक होता है ॥२॥

बृहज्जातक में वराहमिहिर ने कहा भी है—

चक्रस्य पूर्वापरभागगेषु क्रूरेषु सौम्येषु च कीटलग्ने।
क्षिप्रं विनाशं समुपैति जातः पापैर्विलग्नास्तमयान्वितैश्च ॥

वादरायण ने भी कहा है—

पूर्वापरभागगते शुभाशुभैरलिनि कर्कटे लग्ने ।
जातस्य शिशोर्मरणं सद्यः कथयन्ति यवनेन्द्राः ॥

खलखगसहितो निशाकरोऽयं तनुमृतिमारगतो हि जन्मकाले ।
मृतिपदमुपयाति देवबालोऽपि च सकलैरवलोकितो न सौम्यैः ॥३॥

अन्वयः—जन्मकाले (हि) खलखगसहितः (पापग्रहेण संयुक्तः) निशाकरः (चन्द्रः) (यदा) तनुमृतिमारगतः (लग्न-अष्टम-सप्तम-भावस्थितः) सकलैः अवलोकितः न च सौम्यैः (तदा) देवबालः अपि अयं मृतिपदम् उपयाति ॥३॥

जन्मकाल में पापग्रहों से संयुक्त चन्द्रमा यदि लग्न, अष्टम या सप्तम भाव में पापदृष्ट किन्तु शुभग्रहों से अदृष्ट होकर स्थित हो, तो ऐसे योग में यदि देवपुत्र का जन्म हो, तो वह भी शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है ॥३॥

वराहमिहिर ने भी थोड़े अन्तर से इस योग को कहा है। उनके कथनानुसार यदि लग्न और सप्तम भाव पापाक्रान्त हो तथा पापग्रह से युक्त चन्द्रमा यदि शुभ दृग्विहीन हो, तो जातक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

पापावुदयास्तगतौ क्रूरेण युतश्च शशी ।
दृष्टश्च शुभैर्न यदा मृत्युश्च भवेदचिरात् ॥

अशुभावगोदयगतौ शुभदैरवलोकितो न खलु युक्तविधुः ।
मृतिरन्त्यगे कृशविधौ कुगजागभगैः खलैरपि विकेन्द्रशुभैः ॥४॥

अन्वयः—(यदा) अशुभौ अगोदयगतौ शुभदैः न अवलोकितः न युक्तविधुः किंवा कृशविधौ अन्त्यगे, खलैः अपि कुगजागभगैः विकेन्द्रशुभैः (तदा जातस्य) मृतिः (स्यात्) ॥४॥

स्थिर राशि के लग्न में स्थिर राशि से युक्त दो पापग्रह स्थित हों तथा चन्द्रमा पर शुभ ग्रहों की न दृष्टि हो और न पापग्रह संयुक्त हों तो जातक की मृत्यु होती है।

यदि क्षीण चन्द्रमा द्वादश भावगत हो, लग्न और अष्टम भावों में स्थिर राशि से युक्त पापग्रह स्थित हों तथा केन्द्र में कोई शुभग्रह न हो तो जातक शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है ॥४॥

पापावुदयास्तगतौ क्रूरेण युक्तश्च शशी ।
दृष्टश्च शुभैर्न यदा मृत्युश्च भवेदचिरात् ॥
क्षीणे हिमगौ व्ययगे पापैरुदयाष्टमगैः ।
केन्द्रेषु शुभाश्च न चेत्क्षिप्रं निधनं प्रवदेत् ॥ (बृहज्जातक)

बृहज्जातक के इन योगों में प्रथम उपर्युक्त योग से थोड़ा भिन्न है। भावकुतूहल के अनुसार लग्न में स्थिर राशि से युक्त दो पाप ग्रहों के होने की बात कही गई है; जबकि बृहज्जातक के मत से लग्न और सप्तम भावों में पापग्रह की स्थिति कही गई है। लग्न और सप्तम भावों में पापग्रह की स्थिति अरिष्टकारक होती है—यह अनुभवसिद्ध है। उसके साथ यदि चन्द्रमा शुभदृष्टि से हीन हो तो यह योग अधिक कष्टप्रद हो सकता है।

दूसरे योग के सम्बन्ध में दोनों ग्रन्थों में एकवाक्यता है।

क्षीणे चन्द्रे व्ययगते पापैरष्टमलग्नगैः।
केन्द्रबाह्यगतैः सौम्यैर्जातस्य निधनं भवेत्॥ (गार्गी)

सद्यः मृत्युयोग, चार वर्ष-आठ वर्ष आयुयोग

शीतांशावरिविरतिस्थिते विनाशः
पापैः स्यात्सपदि युतेक्षितेऽपि जन्तोः।
अष्टाब्दैः शुभखचरैश्च मिश्रखेटै-
र्वेदाब्दैरपि मुनिभिर्निरुक्तमेतत्॥५॥

अन्वयः—शीतांशौ अरि-विरति-स्थिते पापैः युतेक्षिते अपि जन्तोः सपदि विनाशः, (यद्युक्तशीतांशौ) शुभखेचरैः युतेक्षिते अष्टाब्दैः मिश्रखेटैरपि (युतेक्षिते) अपि वेदाब्दैः (तस्य जातस्य विनाशः स्यात्), एतत् मुनिभिः निरुक्तम्॥५॥

यदि पाप ग्रहों से युत या दृष्ट चन्द्रमा जन्माङ्ग के छठे या आठवें भाव में स्थित हो तो जातक की सद्यः मृत्यु होती है। यदि शुभग्रहों से युत या दृष्ट चन्द्रमा षष्ठाष्टम भावों में स्थित हो, तो आठवें वर्ष में एवं यदि शुभ और पाप दोनों प्रकार के ग्रहों से युत या दृष्ट हो; तो चौथे वर्ष में जातक की मृत्यु होती है—ऐसा प्राचीन आचार्यों का कथन है॥५॥

मासान्त आयुयोग

अरिविरतिगते शुभे च दृष्टे बलसहितेन खलेन मासमायुः।
मदनसदनगेऽपि लग्ननाथे खलविजिते ध्रुवमस्य मासमायुः॥६॥

अन्वयः—शुभे (शुभग्रहे) अरि (षष्ठभाव)-विरति-(अष्टमभाव)-गते बलसहितेन (बलयुतेन) खलेन (पापग्रहेण) दृष्टे च मासम् आयुः (स्यात्) खलविजिते (ग्रहयुद्धे पापग्रहेण विजिते) लग्ननाथे (यदा) मदनसदनगे (सप्तमभावस्थिते) अपि ध्रुवम् अस्य मासम् आयुः (स्यात्)॥६॥

छठे अथवा आठवें भाव में स्थित शुभग्रह यदि किसी पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक की मासपर्यन्त आयु होती है। सप्तम भाव में यदि ग्रहयुद्ध में हारा हुआ लग्नेश स्थित हो तो निश्चय ही जातक की आयु एक मास होती है॥६॥

इस श्लोक में मासान्त आयु के दो योग कहे गये हैं। प्रथम योग के अनुसार षष्ठ या अष्टम भावस्थ शुभग्रह पर यदि पापग्रह की दृष्टि हो तो मासान्तपर्यन्त जातक की आयु होती है। पूर्व श्लोक में तीन आयुष्य योग बतलाये गये हैं। षष्ठाष्टम भावस्थ चन्द्रमा यदि पाप-दृष्ट हो तो शीघ्र ही जातक की मृत्यु होती है। वह चन्द्रमा यदि शुभग्रह से दृष्ट हो तो आठ वर्ष और यदि शुभ-पाप दोनों ग्रहों से दृष्ट हो तो चार वर्ष जातक की आयु होती है। मिहिराचार्य ने भी कहा है—

शशिन्यरिविनाशगे निधनमाशु पापेक्षिते
शुभैरथ समाष्टकं दलमतश्च मिश्रैः स्थितिः।
असद्भिरवलोकिते बलिभिरत्र मासे शुभे
कलत्रसहिते च पापविजिते विलग्नाधिपे ॥

उपर्युक्त वचनों से स्पष्ट है कि षष्ठ और अष्टम भावस्थ चन्द्रमा पर शुभ या पाप या दोनों प्रकार के ग्रहों की दृष्टि ही अल्पायुकारक है। यदि षष्ठाष्टम भावों में स्थित चन्द्रमा पर ग्रहदृष्टि न हो तो जातक अल्पायु नहीं होता। इस सन्दर्भ में निम्न वचन भी द्रष्टव्य है—

पक्षे सिते भवति जन्म यदि क्षपायां कृष्णेऽथवाऽहनि शुभाशुभदृष्टमानः।
तं चन्द्रमा रिपुविनाशगतेऽपि यत्नादापत्सु रक्षति पितेव शिशुं न हन्ति ॥ (माण्डव्य)

मातासहित मृत्युयोग

कृशशशिनि तनौ खलेऽष्टकेन्द्रे मृतिरथ शीतरुचौ खलान्तराले।
मुनिहिबुकलयस्थितेऽपि लग्ने मुनिलयगैश्च सहाम्बया खलैः स्यात् ॥७॥

अन्वयः—कृशशशिनि (क्षीणचन्द्रमा) तनौ (लग्ने), खलः (दुष्टग्रहः) अष्टमे, केन्द्रे (लग्न-चतुर्थ-सप्तम-अष्टम-दशमेषु स्थिते) मृतिः (स्यात् मृतिः जातस्य)। अथ शीतरुचौ खलान्तराले (पापकर्तरियोगे गते), मुनि-हिबुक-लयस्थिते (सप्तम-चतुर्थ-अष्टम-भावस्थिते), (तथा च) लग्ने, मुनि-लयगैः च (सप्तम-अष्टमभावे), खलैः (पापग्रहैः), अम्बया सह (जातकस्य) मृतिः (स्यात्) ॥७॥

क्षीण चन्द्रमा यदि लग्न में स्थित हो तथा केन्द्र और अष्टम भावों में पापग्रह स्थित हो तो जातक शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

पापग्रहों के मध्यगत चन्द्रमा यदि सप्तम, चतुर्थ या अष्टम भावों में से किसी एक में स्थित हो और लग्न, सप्तम और अष्टम भावों में पापग्रह स्थित हो तो माता के सहित जातक की मृत्यु होती है ॥७॥

क्षीण चन्द्रमा के विषय में जातकपरिजात का निम्न वचन द्रष्टव्य है—

शुक्लादिरात्रिदशकेऽहनि मध्यवीर्य-
शाली द्वितीयदशकेऽतिशुभप्रदोऽसौ।
चन्द्रस्तृतीयदशके बलवर्जितस्तु
सौम्येक्षणादिसहितो यदि शोभनः स्यात् ॥

अर्थात् शुक्ल पक्ष के प्रारम्भ से दश रात्रिपर्यन्त चन्द्रमा मध्यम बली होता है। द्वितीय दशक में अर्थात् शुक्ल की दशमी से कृष्णपक्ष की पञ्चमी पर्यन्त चन्द्रमा पूर्ण अर्थात् परम बली होता है। तृतीय दशक में अर्थात् कृष्णपक्ष की षष्ठी से अमान्त पर्यन्त चन्द्रमा क्षीण या निर्बल होता है।

स्कन्दहोरा के अनुसार केवल चतुर्दशी और अमावास्या को ही चन्द्रमा क्षीण होता है।

इन्दुः कृष्णचतुर्दश्यां क्षीणो भवति नान्यथा।
अथ यावत्कुहूस्तावत्समे क्षीणतरो मतः ॥

मातासहित मृत्युयोग

भविरतिगतशोभनैरदृष्टे शशिनिनवेषु गतैः खलैर्मृतिः स्यात्।
तनुगतहिमगौ खले नगस्थे मृतिरुदिता मुनिभिः शिशोरवश्यम् ॥८॥

अन्वयः—भविरतिगतशोभनैः अदृष्टे शशिनि नवेषु गतैः खलैः मृतिः स्यात्, तनुगतहिमगौ खले नगस्थे शिशोः अवश्यं मृतिः (इति) मुनिभिः उदिता ॥८॥

लग्न या अष्टमभाव में स्थित चन्द्रमा यदि शुभग्रहों से अदृष्ट हो, पञ्चम और नवम भावों में पापग्रह स्थित हों, तो जातक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

लग्न में चन्द्रमा और दशम भाव में पापग्रह स्थित हो, तब भी जातक बाल्यावस्था में ही मृत्यु को प्राप्त होता है, ऐसा मुनियों का कथन है ॥८॥

उक्त योग में चन्द्रमा पर पापग्रहों की दृष्टि होने से ही मृत्युप्रद होगा।

असुरमुखगते खलेन युक्ते तनुगविधौ सममम्बया लयारे।
मृतिरथ तनुगे रवौ सशस्त्रं ग्रहणगते खलसंयुतेऽपि मृत्युः ॥९॥

अन्वयः—असुरमुखगते खलेन युक्ते विधौ तनुगे अम्बया समं मृतिः, लयारे तनुगे रवौ सशस्त्रं मृतिः, ग्रहणगते खलसंयुते विधौ अपि मृतिः (स्यात्) ॥९॥

चन्द्रग्रहण काल में यदि चन्द्रमा पापग्रहों के साथ लग्न में स्थित हो, आठवें भाव में भौम स्थित हो तो माता के साथ जातक की मृत्यु होती है। सूर्यग्रहण काल में पापग्रहों के साथ यदि सूर्य जन्मलग्न में स्थित हो, तो शस्त्राघात से माता के साथ-साथ जातक की भी मृत्यु होती है ॥९॥

सबलशुभखगैर्युते न दृष्टे तुहिनकरे दिनपेऽथवा तनौ चेत्।
निधननवसुताश्रिताः खलाः स्युर्निधनमिहाशु वदन्ति वै मुनीन्द्राः ॥

अन्वयः—सबलशुभखगैः न युते दृष्टे तुहिनकरे अथवा दिनपे चेत् तनौ, खलाः, निधन-नव-सुत-आश्रिताः स्युः, वै इह आशु निधनं मुनीन्द्राः वदन्ति ॥१०॥

बलवान शुभ ग्रहों से अयुत और अदृष्ट सूर्य अथवा चन्द्रमा यदि लग्न में स्थित हों, पापग्रह अष्टम, नवम और पंचम भावों में स्थित हों तो जातक शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है—ऐसा श्रेष्ठ मुनियों का कथन है ॥१०॥

शनिरविविधुभूमिजैः क्रमेण व्ययनवलग्नलयाश्रितैर्मृतिः स्यात्।
सबलसुरपुरोहितेन दृष्टैर्न हि मरणं गदितं तदा मुनीन्द्रैः ॥११॥

अन्वयः—शनिरविविधुभूमिजैः क्रमेण व्यय-नव-लग्न-लयाश्रितैः (तदा) मृतिः स्यात् (यदि) सबलसुरपुरोहितेन दृष्टैः तदा नहि मरणं मुनीन्द्रैः गदितम् ॥११॥

जन्माङ्ग के व्ययभाव में शनि, नवमभाव में सूर्य, लग्न में चन्द्रमा और अष्टम भाव में यदि मङ्गल स्थित हो, तो मृत्युकारक होता है। किन्तु कथित योग में यदि इन ग्रहों पर बलवान बृहस्पति और अन्य शुभग्रहों की दृष्टि हो तो मृत्यु नहीं होती ॥११॥

बृहज्जातक में भी कहा गया है—

असितरविशशाङ्कभूमिजैर्व्ययनवमोदयनैधनाश्रितः।
भवति मरणाशु देहिनां यदि बलिना गुरुणा न वीक्षिता ॥

लयमारलग्ननवधीव्यगः खलखेचरेण सहितः सितगुः।
अवलोकितो नहि युतश्च शुभैर्नियतं भवेत्स मरणाय तदा ॥१२॥

अन्वयः—लयमारलग्ननवधीव्ययगः खलखेचरेण सहितः सितगुः शुभैः न हि अवलोकितः युतश्च तदा स (बालः) मरणाय भवेत् ॥१२॥

जन्माङ्ग में यदि पापग्रहों के साथ चन्द्रमा अष्टम, सप्तम, तनु, नवम, पञ्चम और व्ययभावों में स्थित हो, शुभग्रह न तो उसके साथ हों और न ही उनकी दृष्टि उक्त चन्द्रमा पर हो, तो जातक का जन्म मरने के लिये ही होता है ॥१२॥

यह योग बृहज्जातक में भी कहा गया है—

सुतमदननवान्त्यलग्नरन्ध्रेष्वशुभयुतो मरणाय शीतरश्मिः।
भृगुसुतशशिपुत्रदेवपूज्यैर्यदि बलिभिर्न युतोऽवलोकितो वा ॥ (वराहमिहिर)

मृत्युसमय का निर्धारण

बलियोगकारकखगाश्रितभे जनिभे तनावपि यदास्ति विधुः।
बलसंयुतः खलजदृक्सहितः शरदन्तरेव मृतिदः स तदा ॥१३॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले बालारिष्टाध्यायस्तृतीयः ॥३॥

अन्वयः—बलियोगकारकखगाश्रितभे जनिभे तनौ अपि यदा विधुः अस्ति (तथा) बलसंयुतः खलजदृक् सहितः तदा स शरदन्तः एव मृतिदः ॥१३॥

जन्माङ्ग में बालारिष्टकारक ग्रह जिस राशि में स्थित हों, उस राशि में; जन्मलग्न में; जन्मराशि (जन्मकालिक चन्द्रराशि) में गोचर से बलवान पापग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा के आने पर जातक की मृत्यु होती है ॥१३॥

एक वर्षपर्यन्त ही यह योग फल देता है ॥

इनके अतिरिक्त और भी बालारिष्ट योग अन्य जातकग्रन्थों में संग्रहीत हैं। उनका अवलोकन भी करना चाहिए। उनमें से कुछ योग पाठकों के बोधार्थ यहाँ उद्धृत किये जाते हैं—

सन्ध्यायां हिमदीधितिहोरा पापैर्भान्तगतैर्निधनाय ।
प्रत्येकं शशिपापसमेतैः केन्द्रैर्वा स विनाशमुपैति ॥

सन्ध्या वेला में जन्म हो, लग्न में चन्द्रमा की होरा हो तथा सभी पापग्रह (सूर्य, मंगल, शनि) राशि के अन्तिम अंशों में हों, तो जातक के मृत्यु के कारण होते हैं।

केन्द्रगत चार राशियों में चन्द्रमा के साथ तीन पापग्रह स्थित हों तो जातक शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

सन्ध्यालक्षण

अर्धास्तमयात्सन्ध्या व्यक्तीभूता न तारकायावत् ।
तेजःपरिहानिमुखाद्भानोरर्द्धोदयो यावत् ॥

सूर्यविम्बार्ध के अस्तकाल से ताराओं के प्रकट होने तक का काल और सूर्यविम्बार्ध के उदयकाल से ताराओं के दिखलाई पड़ने तक के काल को सायं और प्रातः-सन्ध्या कहते हैं।

चक्रस्य पूवर्यापरभागेषु क्रूरेषु सौम्येषु च कीटलग्ने ।
क्षिप्रं विनाशं समुपैति जातः पापैर्विलग्नास्तमयान्वितैश्च ॥

भचक्र के पूर्वभाग में पापग्रह तथा परभाग अर्थात् पश्चिम भाग में यदि शुभग्रह स्थित हों और वृश्चिक राशि का लग्न हो, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है।

कर्क और वृश्चिक दोनों ही कीटराशियाँ हैं; अतः दोनों से विचार करना चाहिए।

चक्र में लग्न के भुक्तांशतुल्य चतुर्थ भाव के अंश से दशम भाव में लग्न भुक्तांशतुल्य अंशों तक भचक्र का परभाग या पश्चिम भाग और शेष पूर्वभाग होता है।

इस योग के सन्दर्भ में वादरायण कुछ भिन्न बात कहते हैं—

पूर्वापरभागगतैः शुभाशुभैरलिनि कर्कटे लग्ने ।
जातस्य शिशोर्मरणं सद्यः कथयन्ति यवनेन्द्राः ॥

गार्गी का कथन इस प्रकार है—

रिपुव्ययगतैः पापैर्यदि वा धनमृत्युगैः ।
लग्ने वा पापमध्यस्थे द्यूने वा मृत्युमाप्नुयात् ॥

लग्न से छठे और द्वादश भाव में अथवा द्वितीय और अष्टम भाव में पापग्रह हों, अथवा लग्न या सप्तम भाव पापग्रहों के मध्यगत हो तो जातक शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

क्षीणे चन्द्रे व्ययगते पापैरष्टमलग्नगैः ।
केन्द्रबाह्यगतैः सौम्यैर्जातस्य निधनं भवेत् ॥

व्ययभाव में क्षीण चन्द्रमा तथा लग्न, अष्टम भावों में पापग्रह स्थित हों और शुभग्रह केन्द्रेतर भावों में स्थित हों, तो जातक शीघ्र ही मृत्यु का ग्रास बनता है।

पर्यन्त

अन्य बालारिष्ट योग

क्षीणे शशिनि लग्नस्थे पापैः केन्द्राष्टमसंस्थितैः ।
यो जातो मृत्युमाप्नोति सोऽचिरायुर्न संशयः ।।१।।
पापद्वयमध्यगते चन्द्रे लग्नसमाश्रिते ।
सप्ताष्टमेन पापेन मात्रा सह मृतः शिशुः ।।२।।
निधनेशयुते चन्द्रे जातमात्रो न जीवति ।
रौद्रसार्पमुहूर्त्ते च प्राणांस्त्यजति बालकः ।।३।।
रवौ पापान्विते ग्रस्ते यदा लग्नं समाश्रिते ।
अष्टमस्थे कुजे शस्त्रान्मृतिः स्यान्मातृबालयोः ।।४।।
भास्करहिमकरसहितः शनैश्चरो मृत्युदः सूतौ ।
वर्षैर्नवभिर्जातैरित्याहुर्ब्रह्मशौण्डाख्याः ।।५।।
भौमदिवाकरसौराश्छिद्रे जातस्य यस्य रिपुगृहे ।
म्रियतेऽवश्यं स नरो यमकृतरक्षकोऽपि मासेन ।।६।।
एकः पापोऽष्टमगः शत्रुगृहे पापवीक्षिते वर्षात् ।
मारयति नरं जातं सुधारसो येन पीतोऽपि ।।७।।
लग्नस्थितो यदा राहुः केन्द्रे भवति चन्द्रमाः ।
बालस्य तदारिष्टं स्याद्रक्षिता यदि शङ्करः ।।८।।
चतुर्थे च यदा राहुः केन्द्रषष्टाष्टमगः शशी ।
दशमेऽब्दे भवेन्मृत्युर्जातकस्य न संशयः ।।९।।
सप्तमे च यदा राहुर्मूर्तौ भवति चन्द्रमाः ।
अष्टमे मङ्गलश्चैव स याति यममन्दिरम् ।।१०।।
लग्ने माने सप्तमे चाथ बन्धौ पापाः खेटा जन्मकाले तु सर्वे ।
तिष्ठन्त्येते स्वल्पमायुः प्रदिष्टं तेषामेको लग्नगो वा यदि स्यात् ।।११।।
व्यये सर्वे ग्रहाः नेष्टाः सूर्यशुक्रेन्दुराहवः ।
विशेषान्नाशकर्त्तारो दृष्या वा भङ्गकारिणः ।।१२।।

(१) यदि क्षीण चन्द्रमा लग्न में और पाप ग्रह केन्द्र या अष्टम भाव में स्थित हो, तो जातक अल्पायु होता है। (२) दो पापग्रहों के मध्यगत चन्द्रमा यदि लग्न में स्थित हो तथा सप्तम और अष्टम भाव में भी पापग्रह स्थित हों, तो माता के साथ जातक की मृत्यु होती है। (३) यदि चन्द्रमा अष्टमेश से युत हो, तो जन्म के तत्काल बाद ही जातक की मृत्यु होती है। यदि रौद्र और सार्पसंज्ञक मुहूर्त्त में जन्म हो तब भी जातक की तत्काल मृत्यु होती है (४) यदि सूर्य पाप ग्रहों से युत सूर्यग्रहण काल में लग्न में स्थित हो और अष्टम भाव में मंगल स्थित हो तो शस्त्राघात से माता के साथ बालक की मृत्यु होती है। (५) सूर्य अथवा चन्द्रमा के साथ युत शनि जातक के लिए नव वर्ष की आयु में मृत्युकारक होता है—ऐसा ब्रह्मशौण्ड ऋषि का कथन है। (६) सूर्य अथवा मंगल यदि शनि के साथ शत्रुगृही होकर अष्टम भाव में स्थित हों तो जातक यमराज द्वारा

रक्षित होने पर भी एक मास में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। (७) एक ही पाप ग्रह शत्रुगृही होकर यदि अष्टम भाव में पापदृष्ट हो तो अमृत पीने पर भी जातक की एक वर्ष में मृत्यु हो जाती है। (८) यदि लग्न में राहु और चन्द्रमा केन्द्र स्थान में स्थित हों तो जातक के लिए शङ्कर द्वारा रक्षित होने पर भी अरिष्टकर होता है। (९) यदि चतुर्थ भाव में राहु और केन्द्र या षष्ठ या अष्टम भाव में से किसी एक भाव में चन्द्रमा हो, तो निःसन्देह जातक की दसवें वर्ष में मृत्यु होती है। (१०) यदि सप्तम भाव में राहु, लग्न में चन्द्रमा और अष्टम भाव में मंगल स्थित हो तो जातक के लिए मृत्युकारक होता है। (११) लग्न, दशम, सप्तम और चतुर्थ भावों में सभी पापग्रह स्थित हों और उनमें से कोई लग्नेश भी हो तो जातक अल्पायु होता है। (१२) द्वादश भाव में स्थित होकर सभी ग्रह अनिष्ट फलकारक होते हैं; किन्तु सूर्य, शुक्र, चन्द्रमा और राहु विशेष रूप से कष्टप्रद होते हैं। कम से कम दृष्टिनाश तो करते ही हैं।

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का तृतीय अध्याय समाप्त ॥३॥

•

अथ चतुर्थोऽध्यायः

पित्राद्यरिष्टम्

पित्राद्यरिष्टविचार

आदित्याद्दशमे पापः पीड़ितो दशमाधिपः।
तदा पितुर्महत्कष्टं निधनं वेति कीर्त्तितम्॥१॥

अन्वयः—आदित्याद् दशमे पापः दशमाधिपः पीडितः तदा पितुः महत्कष्टं निधनं वेति कीर्त्तितम्॥१॥

जन्माङ्ग में सूर्य से दशम भाव में यदि पाप ग्रह स्थित हो तथा दशमेश शत्रुग्रहों द्वारा (शत्रुगृह में ग्रह पीड़ित होता है। एकादश अध्याय के चतुर्थ श्लोक की टीका देखिये।) पीड़ित हो, तो जातक के पिता को महाकष्ट अथवा मृत्यु होती है॥१॥

भवति यदि शशाङ्कः पापयोरन्तराले
जनुषि सुखनगस्थैः पापखेटैः शशाङ्कात्।
विधुरपि बलहीनो नष्टकान्तिर्जनन्या
निधनमपि विशेषादाहुराचार्यवर्याः॥२॥

अन्वयः—जनुषि यदि पापयोः अन्तराले शशाङ्कः भवति, शशाङ्कात् सुखनगस्थैः पापखेटैः विधुरपि बलहीनः नष्टकान्तिश्च (तदा) जनन्याः विशेषात् निधनं आचार्यवर्याः आहुः॥२॥

यदि बलहीन, क्षीण चन्द्रमा पाप ग्रहों के मध्य स्थित हो तथा उससे (चन्द्रमा से) चतुर्थ और सप्तम भावों में पापग्रह स्थित हो, तो जातक की माता के लिए अरिष्टकारक होता है॥२॥

पिता के अरिष्टसम्बन्धी अनेक योग अन्य जातकग्रन्थों में कहे गए हैं। पाठकों के बोधार्थ उनमें से कुछ को यहाँ उद्धृत करना उचित जान पड़ता है—

लग्ने सौरिर्मदे भौमः षष्ठस्थाने च चन्द्रमाः।
इति चेज्जन्मकाले स्यात्पिता तस्य न जीवति॥
लग्ने जीवो धने मन्दरविभौमबुधास्तथा।
विवाहसमये तस्य बालस्य म्रियते पिता॥
सूर्यः पापेन संयुक्तः सूर्यो वा पापमध्यगः।
सूर्यात्सप्तमगः पापस्तदा पितृवधो भवेत्॥
सप्तमे भवने सूर्यः कर्मस्थो भूमिनन्दनः।
राहुर्व्यये न यस्यैव पिता कष्टेन जीवति॥

दशमस्थो यदा भौमः शत्रुक्षेत्रसमाश्रितः ।
म्रियते तस्य जातस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥
रिपुस्थाने यदा चन्द्रो लग्नस्थाने शनैश्चरः ।
कुजश्च सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥
भौमांशकस्थिते भानौ स्वपुत्रेण निरीक्षिते ।
प्राग्जन्मनो निवृत्तिः स्यान्मृत्युर्वाऽपि शिशोः पितुः ॥
पाताले चाम्बरे पापौ द्वादशे च यदा स्थितौ ।
पितरं मातरं हत्वा देशाद्देशान्तरं व्रजेत् ॥
राहुर्जीवौ रिपुक्षेत्रे लग्ने वाऽथ चतुर्थके ।
त्रयोविंशतिमे वर्षे पुत्रस्तातं न पश्यति ॥
भानुः पिता च जन्तूनां चन्द्रो माता तथैव च ।
पापदृष्टियुतो भानुः पापमध्यगतोऽपि वा ॥
पित्रारिष्टं विजानीयाच्छिशोर्जातस्य निश्चितम् ।
भानोः षष्ठाष्टमर्क्षस्थैः पापैः सौम्यविवर्जितैः ॥
चतुरस्त्रगतैर्वाऽपि पित्रारिष्टं विनिर्दिशेत् । (पराशर)

लग्न में शनि, सप्तम भाव में मंगल और षष्ठ भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो जातक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है ।

लग्न में बृहस्पति तथा शनि, सूर्य, भौम और बुध द्वितीय भाव में स्थित हों, तो जातक के विवाह के समय उसके पिता का निधन होता है ।

यदि सूर्य पापग्रहों से संयुक्त हो अथवा पापग्रहों के मध्य स्थित हो और उससे सप्तम भाव में पापग्रह स्थित हो तो पिता का निधन हो जाता है ।

यदि जन्माङ्ग के सप्तम भाव में सूर्य और दशम भाव में भौम तथा द्वादश भाव में राहु स्थित न हो तो जातक का पिता आजीवन कष्ट भोगता है ।

यदि दशम भाव में शत्रुगृही मंगल स्थित हो, तो जातक के पिता का शीघ्र निधन हो जाता है ।

षष्ठ भाव में यदि चन्द्रमा, लग्न में शनि तथा सप्तम भाव में मंगल स्थित हो तो जातक का पिता जीवित नहीं रहता ।

मंगल के नवांश में स्थित होकर सूर्य यदि शनि से देखा जाता हो, तो जातक की अथवा उसके पिता की मृत्यु होती है ।

यदि चतुर्थ, दशम या द्वादश भावों में दो पापग्रह संयुक्त हों तो जातक माता-पिता के निधनोपरान्त प्रवासी होता है ।

राहु के साथ बृहस्पति यदि षष्ठ अथवा तनुभाव में स्थित हो, तो २३ वें वर्ष में जातक के पिता का निधन होता है ।

सूर्य जातक के पिता होते हैं और चन्द्रमा जातक की माता होती है । अतः सूर्य

पर्दैन

यदि पापग्रहों के मध्य स्थित हो अथवा पापग्रहों से दृष्ट हो तो जातक के पिता के लिए अरिष्टकारक होता है।

सूर्य से छठे-आठवें भावों में अथवा चतुर्थ और अष्टम भावों में यदि पापग्रह स्थित हों तथा शुभ ग्रह अन्यत्र स्थित हों तो जातक के पिता के लिए अरिष्टकारक होते हैं।

मातृकष्ट-विचार

चन्द्रमा यदि पापानां त्रितयेन प्रदृश्यते।
मातृनाशो भवेत्तस्य शुभदृष्टे शुभं भवेत्॥
धने राहुर्बुधः शुक्रः सौरिः सूर्यो यथास्थितः।
तस्य मातुः भवेन्मृत्युर्मृते पितरि जायते॥
पापात्सप्तमरन्ध्रस्थे चन्द्रे पापसमन्विते।
बलिभिः पापकैर्दृष्टे जातो भवति मातृहा॥
उच्चस्थः वाऽथ नीचस्थः सप्तमस्थो यदा रविः।
मातृहीनो भवेद्बालः अजाक्षीरेण जीवति॥
चन्द्राच्चतुर्थगः पापो रिपुक्षेत्रे यदा भवेत्।
तदा मातृवधं कुर्यात्केन्द्रे यदि शुभो न चेत्॥
द्वादशे रिपुभावे च यदा पापग्रहो भवेत्।
तदा मातुर्वधं विन्द्याच्चतुर्थे दशमे पितुः॥
लग्ने क्रूरो व्यये क्रूरो धने सौम्यस्तथैव च।
सप्तमे भवने क्रूरः परिवारक्षयङ्करः॥
लग्नस्थे च गुरौ सौरी धने राहौ तृतीयगे।
इति चेज्जन्मकाले स्यान्माता तस्य न जीवति॥
क्षीणचन्द्रात्त्रिकोणस्थैः पापैः सौम्यविवर्जितैः।
माता परित्यजेद्बालं षण्मासाच्च न संशयः॥
एकांशकस्थौ मन्दारौ यत्र कुत्र स्थितौ यदा।
शशिकेन्द्रगतौ वा द्विमातृभ्यां च जीवति॥

जन्माङ्ग में स्थित चन्द्रमा पर यदि तीन पाप ग्रहों की दृष्टि हो, तो जातक की माता का निधन होता है। यदि चन्द्रमा पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो शुभ फल होता है। • जन्माङ्ग के धनभाव में यदि राहु, बुध, शुक्र, शनि और सूर्य संयुक्त हों तो प्रथमतः माता का और बाद में पिता का निधन होता है। • जन्माङ्ग में पापग्रह से सातवाँ और आठवाँ भाव पापाक्रान्त हो, पापग्रहों से संयुक्त चन्द्रमा किसी बलवान पापग्रह से सप्तम या अष्टम भावों में दृष्ट हो, तो जातक मातृहन्ता होता है। • उच्च राशिगत अथवा नीच राशिगत सूर्य यदि जन्माङ्ग के सप्तम भाव में स्थित हो, जो जातक मातृहीन होता है तथा बकरी के दूध से उसका पालन होता है। • जन्माङ्ग में चन्द्रराशि से चतुर्थ राशि में शत्रुगृही पापग्रह स्थित हों और केन्द्र भावों (चन्द्रमा से) में कोई शुभग्रह न हो तो

जातक माता के लिए अरिष्टकारक होता है। • द्वादश और षष्ठ भावों में (दोनों भावों में) पाप ग्रह स्थित हो तो माता का और यदि चतुर्थ और दशम भावों में पापग्रहों की स्थिति हो तो जातक के पिता का निधन होता है। • लग्न और द्वादश भाव में पाप ग्रह, द्वितीय भाव में शुभ ग्रह तथा सप्तम भाव में भी पाप ग्रह स्थित हों तो इस योग में उत्पन्न जातक अपने परिवार का विनाशक होता है। • जन्मलग्न में बृहस्पति, धन (द्वितीय) भाव में शनि और तृतीय भाव में राहु स्थित हो, तो जातक की माता जीवित नहीं रहती है। • क्षीण चन्द्रमा से त्रिकोण (५।९) भावों में केवल पाप ग्रह स्थित हों तो माता छः मास के भीतर ही जातक का परित्याग कर देती है। • यदि एक ही राशि के नवांशगत होकर मंगल और शनि किसी भाव में स्थित हों, अथवा चन्द्रलग्न से केन्द्र (१।४।७।१० वें) भावों में स्थित हों तो वह जातक दो माताओं से पालित होता है।

भ्रातृकष्ट-विचार

यदा पापखेचारिणो जन्मकाले धरानन्दनाक्रान्तभावात् सहोत्थे।
तदैवाशु नाशं सहोत्थस्य धीरा मणित्थादयः प्राहुराचार्यमुख्याः ॥३॥

अन्वयः—यदा जन्मकाले धरानन्दनाक्रान्तभावात् पापखेचारिणः सहोत्थे भवति तदैव सहोत्थस्य आशु नाशं धीराः मणित्थादयः आचार्यमुख्याः प्राहुः ॥३॥

जन्माङ्ग के जिस भाव में भौम स्थित हो, उससे तृतीय भाव में यदि पापग्रह स्थित हों, तो जातक के भाई के लिए अरिष्टकारक होता है—ऐसा मणित्थ आदि प्रमुख आचार्यों का कथन है ॥३॥

मातुलकष्ट-विचार

बुधारातिभावे तु पापा भवन्ति वृत्तज्ञोऽपि नीचाश्रितो नष्टवीर्यः।
तदा मातुलानां विनाशो विशेषादिति प्राहुराचार्यवर्या नराणाम् ॥४॥

अन्वयः—यदा बुधारातिभावे पापाः भवन्ति तु नीचाश्रितः नष्टवीर्यः वृत्तज्ञोऽपि स्यात्तदा नराणां मातुलानां विशेषात् विनाशः इति आचार्यवर्याः प्राहुः ॥४॥

बुधाधिष्ठित भाव से षष्ठ भाव में पाप ग्रहों के मध्य अथवा पापग्रहों से युक्त बुध अपनी नीच राशि का होकर बलहीन हो तो जातक के मामा का निधन होता है, ऐसा श्रेष्ठ आचार्यों का कथन है ॥४॥

सन्ततिकष्ट-विचार

बृहस्पतेः पञ्चमभावसंस्था महीजमन्दागुदिवाकराश्चेत्।
गुरोरपत्याधिपतिः सपापस्तदात्मजानां विरतिं वदन्ति ॥५॥

अन्वयः—यदि चेत् बृहस्पतेः पञ्चमभावे महीजमन्दागुदिवाकराः संस्थाः गुरोरपत्याधिपतिः सपापः तदा आत्मजानां विरतिं वदन्ति ॥५॥

बृहस्पति से पञ्चम भाव में यदि मंगल, शनि, राहु या सूर्य स्थित हों तथा बृहस्पति से पञ्चम भाव का स्वामी भी पाप ग्रहों से युक्त हो, तो जातक सन्तानहीन होता है अथवा उसकी सन्तान मृत्यु को प्राप्त होती है ॥५॥

स्त्रीकष्ट-विचार

चेत्कवेरङ्गनागारगामी दिनेशो
विनाशोऽङ्गनायाः सपापो निरुक्तः ।
नैधने मन्दतः पापखेटा बलिष्ठा
नृणां नैधनं सत्वरं सन्दिशन्ति ॥६॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले पित्राद्यरिष्टाध्यायश्चतुर्थः ॥४॥

अन्वयः—चेत् सपापः दिनेशः कवेः अङ्गनागारगामी अङ्गनायाः विनाशः, मन्दतः नैधने बलिष्ठाः पापखेटाः (भवन्ति) नृणां सत्वरं नैधनं सन्दिशन्ति निरुक्तः ॥६॥

जिस भाव में शुक्र स्थित हो, उससे पञ्चम भाव में यदि पाप ग्रह से युक्त सूर्य स्थित हों, तो जातक की पत्नी का निधन होता है।

जिस भाव में शनि स्थित हो, उससे अष्टम भाव में यदि बलवान पापग्रह स्थित हो, तो स्वयं जातक के लिए घातक होता है ॥६॥

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का चतुर्थ अध्याय समाप्त ॥४॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

अरिष्टभङ्गः

अरिष्टभङ्गयोगाः

भवतीन्दुरथो शुभान्तराले परिपूर्णः किरणैश्च जन्मकाले।
विनिहन्ति तदाशु दोषसङ्घानिभसङ्घानिव केसरी बलिष्ठः ॥१॥

अन्वयः—अथ (यदा) जन्मकाले इन्दुः परिपूर्णः किरणैः शुभान्तराले भवति (तदा) दोषसङ्घान् आशु इभसङ्घान् बलिष्ठः केसरी इव विनिहन्ति ॥१॥

सम्पूर्ण किरणों से युक्त चन्द्रमा यदि शुभग्रहों के मध्य स्थित हो, तो वह हाथियों के झुण्ड को नष्ट करने वाले सिंह के समान अरिष्टसमूह का नाश कर देता है ॥१॥

यदि जनुषि निशाकरोऽरिभावं गुरुकविचन्द्रजवर्गगो विशेषात्।
शमयति बहुकष्टजालमद्धा मुरहरनाम यथाऽघसङ्घतापम् ॥२॥

अन्वयः—यदि जनुषि निशाकरः गुरुकविचन्द्रजवर्गगः अरिभावे (तदा) विशेषाद् बहु कष्टजालमद्धा शमयति यथा अघसंघतापं मुरहरनाम (कीर्त्तनं) शमयति ॥२॥

जिस प्रकार मुरारि (मुर नामक राक्षस का वध करने वाले) नामकीर्तन मात्र से पापसमूहजन्य ताप नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार शत्रुभाव में स्थित बृहस्पति शुक्र या बुध के वर्ग का चन्द्रमा अरिष्टों को नष्ट कर देता है ॥२॥

यदि सकलनभोगवीक्ष्यमाणो लसिततनुर्जनुरिन्दुरेव सद्यः।
दिविचरजनितं विहन्ति दोषं खगपतिराशु यथा भुजङ्गजालम् ॥३॥

अन्वयः—यदि (जन्मकाले) सकलनभोगवीक्ष्यमाणः लसिततनुः जनुः इन्दुः दिविचरजनितं दोषः सद्यः विहन्ति यथा भुजङ्गजालं खगपतिः आशु (निहन्ति) ॥३॥

जैसे पक्षिराज गरुड सर्पसमूह को तत्काल विनष्ट कर डालता है, वैसे ही जन्मलग्नस्थ सभी ग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा अरिष्टों का नाश कर देता है ॥३॥

भवति यदि तनोः क्षपाकरोऽयं मृतिभवने शुभखेटवर्गगश्चेत्।
गदविकलतनुं पितेव बालं किल परितः परिरक्षति प्रसन्नः ॥४॥

अन्वयः—यदि चेत् शुभखेटवर्गगः क्षपाकरः तनोः मृतिभवने भवति (तदा) अयं (योगः) बालं किल परितः प्रसन्नः परिरक्षति (यथा) गदविकलतनुं बालं (तत्) पिता परितः प्रसन्न इव परिरक्षति ॥४॥

शुभ ग्रहों के वर्ग में स्थित चन्द्रमा यदि लग्न से अष्टम भाव में स्थित हो, तो वह जातक की रक्षा वैसे ही करता है, जैसे पिता अपने रुग्ण बालक की रक्षा करता है ॥४॥

शुभभवनगतस्तदीयभागे जनिसमये कविनाऽवलोकितश्चेत् ।
शमयति सकलं शशी त्वरिष्टं जलमिव पावकमङ्गिनामतीव ॥५॥

अन्वयः—(चेत्) जनिसमये शशी शुभभवनगतः (वा) तदीयभागे कविना अवलोकितः (तदा) अङ्गिनां अतीव सकलं अरिष्टं शमयति पावकं जलमिव ॥५॥

शुभग्रह की राशि अथवा नवांशस्थ चन्द्रमा यदि शुक्र से दृष्ट हो तो जातक के समस्त अरिष्टों का वैसे ही शमन कर देता है, जैसे जल अग्नि को शान्त कर देता है ॥५॥

बलवानपि केन्द्रगो विशेषादिह सौम्यो यदि लाभगो दिनेशः ।
शमयत्यखिलामरिष्टमालामपि गाङ्गं हि जलं यथाऽघजालम् ॥६॥

अन्वयः—यदि बलवान् सौम्यः (बुधः) अपि (कश्चित् शुभग्रहः) केन्द्रगः (तथा) दिनेशः लाभ-(भवन)-गः तदा विशेषात् इह अखिलां अरिष्टमालां शमयति, यथा अघजालं गङ्गाजलं हि (शमयति) ॥६॥

बलवान शुभ ग्रह यदि केन्द्र में स्थित हो तथा एकादश (लाभ) भाव में सूर्य स्थित हो, तो जातक के समस्त अरिष्टों का वैसे ही शमन करता है जैसे गङ्गा का जल पापसमूह को नष्ट कर देता है ॥६॥

भवति हि जनुरङ्गपो बलिष्ठः सकलशुभैरवलोकितो न पापैः ।
इह मृतिमपहाय दीर्घमायुर्वितरति वित्तसमुन्नतिं विशेषात् ॥७॥

अन्वयः—जनुः अङ्गपः बलिष्ठः भवति सकलशुभैरवलोकितः, न पापैः (अवलोकितः युतश्च) इह मृतिं अपहाय हि दीर्घमायुः विशेषात् वित्तसमुन्नतिं वितरति ॥७॥

यदि बलवान लग्नेश पर सभी शुभ ग्रहों की दृष्टि हो और पाप ग्रह की उस पर दृष्टि न हो, तो यह योग मृत्यु को किनारे कर जातक को दीर्घायुष्य और धन प्रदान करता है ॥७॥

सुरपतिगुरुरङ्गधामगामी निजपदगोऽपि च तुङ्गतामुपेतः ।
बहुतरखगजं निहन्ति दोषं हरिरिभयूथमुपागतं हि यद्वत् ॥८॥

अन्वयः—यत् निजपदगः अपि च तुङ्गतां उपेतः सुरपतिगुरुः अङ्गधामगामी, बहुतरखगजं दोषं (निहन्ति) (यथा) हरिः इभयूथं उपागतं निहन्ति ॥८॥

स्वगृही अथवा स्वनवांशस्थ या उच्चस्थ बृहस्पति लग्न में स्थित हो तो वह अनेक ग्रहजन्य दोषों को उसी प्रकार विनष्ट कर देता है, जैसे हाथियों के झुण्ड में जाकर सिंह उनको विनष्ट कर देता है ॥८॥

गुरुसितबुधवर्गगा हि पापाः सकलशुभैरवलोकिता यदि स्युः ।
खगकृतमपि वारयन्ति रिष्टं तृणराशीनिव वह्निबिन्दुरेकः ॥९॥

अन्वयः—यदि गुरुसितबुधवर्गगाः हि पापाः (तथा) सकलशुभैः अवलोकिताः स्युः (तदा) खगकृतं अरिष्टमपि वारयन्ति (यथा) वह्निबिन्दुरेकः तृणराशीनिव ॥९॥

यदि सभी पाप ग्रह बुध, बृहस्पति और शुक्र के वर्ग में स्थित हों और उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, तो यह योग ग्रहजन्य अरिष्टों को वैसे ही विनष्ट कर देता है, जैसे अग्नि की एक चिंगारी तृणसमूह को नष्ट कर देती है ॥९॥

सहजरिपुगतोऽथ लाभगो वा सकलशुभैरवलोकितो युतो वा ।
अगुरिह विनिहन्ति रिष्टजालं नगजाधीश इवाधितापराशिम् ॥१०॥

अन्वयः—सकलशुभैः अवलोकितः युतः वा अगु; (राहुः) सहजरिपुलाभगः (तदाः) रिष्टजालं विनिहन्ति नगजाधीशः (स्मरणात्) अधितापराशिमिव ॥१०॥

सभी शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट राहु यदि त्रिषडाय (३।६।११ वें) भाव में स्थित हो तो वह अरिष्टसमूह को वैसे ही नष्ट कर देता है, जैसे नगजाधीश (पार्वती के पति) भगवान् शङ्कर स्मरणमात्र से ही त्रिताप (दैहिक, दैविक और भौतिक ताप) को नष्ट कर देते हैं ॥१०॥

अधिकबलयुता जनुर्नभोगा यदि सकला नरराशिगा भवन्ति ।
हितभवननिजोच्चगेहगा वा बहुतरमाशु लयं प्रयाति रिष्टम् ॥११॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहलेऽरिष्टभङ्गाध्यायः पञ्चमः ॥५॥

अन्वयः—जनुः यदि सकला अधिकबलयुता नभोगाः नरराशिगाः, हितभवन-निजोच्चगेहगा वा भवन्ति (तदा) बहुतरं अरिष्टं आशु लयं प्रयाति ॥११॥

यदि सभी पुरुषराशि-(विषमराशि)-गत ग्रह मित्र राशि में या अपनी उच्च राशि में स्थित हों तो अनेक अरिष्टों का शमन होता है ॥११॥

इनके अतिरिक्त अन्य अनेक अरिष्टभङ्गयोग जातकग्रन्थों में कहे गये हैं, जन्माङ्ग में जिनकी उपस्थिति से अरिष्ट योगों का शमन होता है। कतिपय पराशरोक्त अरिष्टभङ्ग योग यहाँ उद्धृत किये जाते हैं। यथा—

एकोऽपि ज्ञार्यशुक्राणां लग्नात्केन्द्रगतो यदि ।
अरिष्टं निखिलं हन्ति तिमिरं भास्करो यथा ॥
एक एव बली जीवो लग्नस्थोऽरिष्टसञ्चयम् ।
हन्ति पापक्षयं भक्त्या प्रणाम इव शूलिनः ॥
एक एव विलग्नेशः केन्द्रसंस्थो बलान्वितः ।
अरिष्टं निखिलं हन्ति पिनाको त्रिपुरं यथा ॥
शुक्लपक्षे क्षपाजन्म लग्ने सौम्यनिरीक्षिते ।
विपरीतं कृष्णपक्षे तदारिष्टविनाशनम् ॥
व्ययस्थाने यदा सूर्यस्तुलालग्ने तु जायते ।
जीवेत्स शतवर्षाणि दीर्घायुर्बालको भवेत् ॥
गुरुभौमौ यदा युक्तौ गुरुदृष्टोऽथवा कुजः ।
हत्वारिष्टमशेषञ्च जनन्या शुभकृद्भवेत् ॥

चतुर्थदशमे पापः सौम्यमध्ये यदा भवेत् ।
पितुः सौख्यकरो योगः शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः ॥
लग्नाच्चतुर्थे यदि पापखेटः केन्द्रत्रिकोणे सुरराजमन्त्री ।
कुलद्वयानन्दकरः प्रसूतौ दीर्घायुरारोग्यसमन्वितश्च ॥
सौम्यान्तरगतैः पापैः शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः ।
सद्यो नाशयतेऽरिष्टं तद्भावोत्थफलं न तत् ॥

• बुध, बृहस्पति और शुक्र में से कोई एक ग्रह यदि लग्न से केन्द्र में स्थित हो तो समस्त अरिष्ट का नाश कर देता है, वैसे ही जैसे सूर्य अन्धकार का नाश कर देता है। • मात्र बृहस्पति ही बलवान होकर यदि लग्न में स्थित हो, तो अरिष्टसमूह को विनष्ट कर देता है, वैसे ही जैसे भगवान् शङ्कर को भक्तिपूर्वक किया गया प्रणाम पाप- सङ्कुल को नष्ट कर देता है ॥ • भगवान् शङ्कर ने जैसे त्रिपुर नामक राक्षस का नाश किया था, वैसे ही बलवान लग्नेश यदि केन्द्रस्थ हो तो समस्त अरिष्टों का विनाश कर देता है ॥ • शुक्ल पक्ष की रात्रि में जन्म हो और लग्न पर सौम्य ग्रहों की दृष्टि हो, अथवा कृष्णपक्ष में दिवा जन्म हो और लग्न पर सौम्य ग्रहों की दृष्टि हो, तो जातक के अरिष्टों का नाश होता है ॥ • तुलालग्न में जन्म हो और द्वादश भाव में सूर्य स्थित हो तो जातक सौ वर्ष जीवित रहता है और दीर्घायु होता है ॥ • मंगल और बृहस्पति संयुक्त हों अथवा मंगल बृहस्पति से दृष्ट हो, तो अरिष्टों का नाश हो जाता है और माता के लिए सुखद होता है ॥ • चतुर्थ या दशम भाव में शुभ ग्रहों के मध्य पापग्रह स्थित हो तथा केन्द्र और त्रिकोण भावों में शुभ ग्रह स्थित हों तो यह योग पिता के लिए सुखकर होता है ॥ • लग्न से चतुर्थ भाव में यदि पापग्रह और केन्द्र-त्रिकोण भावों में सुरराज मन्त्री बृहस्पति स्थित हो, तो जातक चिरायु और निरोग रहता है ॥ • पाप ग्रह शुभ ग्रहों के मध्य और शुभ ग्रह केन्द्र-त्रिकोणगत हों तो यह योग अनेक अरिष्टों का नाश करता है तथा उन भावों के फल की वृद्धि करता है ॥

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का पञ्चम अध्याय समाप्त ॥५॥

•

अथ षष्ठोऽध्याय:

सन्तानभावविचार:

पञ्चम भाव से मुख्यत: सन्तान का विचार किया जाता है, किन्तु इसके अतिरिक्त अन्य बहुत-सी बातों का विचार भी इस पञ्चम भाव से किया जाता है। जातकाभरण का निम्न श्लोक पञ्चम भाव से विचार्य विषयों पर प्रकाश डालता है—

बुद्धिप्रबन्धात्मजमन्त्रविद्या विनेयगर्भस्थितिनीतिसंस्था: ।
सुताभिधाने भवने नराणां होरागमज्ञै: परिचिन्तनीया: ॥

अर्थात् पञ्चम भाव से बुद्धि, प्रबन्ध, सन्तान, मन्त्रविद्या का लाभ, विनय और गर्भस्थिति आदि का सुविज्ञ ज्यौतिषीगण विचार करते हैं।

नन्दनाधिपतिना युतेक्षितं नन्दनं शुभनभोगसंयुतम् ।
नन्दनागमनमेव सत्वरं व्यत्ययेन न हि नन्दनागम: ॥१॥

अन्वय:—नन्दनाधिपतिना युतेक्षितं नन्दनं (तथा) शुभनभोगसंयुतम्, (तदा) नन्दनागमनं सत्वरम् एव व्यत्ययेन नन्दनागम: न हि (भवति) ॥१॥

पञ्चम भाव के स्वामी पञ्चमभाव में स्थित हों अथवा उस पर पञ्चमाधीश की दृष्टि हो तथा पञ्चम भाव में शुभ ग्रह स्थित हों तो शीघ्र ही सन्तानसुख का लाभ जातक को होता है। इसके विपरीत परिस्थिति में, अर्थात् यदि पञ्चम भाव पञ्चमाधिपति से युत-दृष्ट न हो और पञ्चम भाव पापाक्रान्त हो, तो जातक सन्ततिसुख से वञ्चित रहता है ॥१॥

सुताभिधानं भवनं शुभानां योगेन दृष्ट्या सहितं विलोक्य ।
सन्तानयोगो प्रवदेन्मनीषी विपर्ययत्वे हि विपर्यय: स्यात् ॥ (जातकाभरण)

अङ्गाधिपे लग्नगते तृतीये धनालये वा प्रथमं सुत: स्यात् ।
सुखे यदा लग्नपतौ नरस्य कन्या सुतो वेति सुतश्च कन्या ॥२॥

अन्वय:—अङ्गाधिपे लग्नगते तृतीये धनालये वा प्रथमं सुत: स्यात्, यदा लग्नपतौ सुखे (तदा) नरस्य कन्या सुत: वा इति सुतश्च कन्या ॥२॥

लग्न के स्वामी लग्न, तृतीय या द्वितीय भाव में स्थित हों, तो जातक को प्रथमत: पुत्र और बाद में कन्या की प्राप्ति होती है।

लग्न के स्वामी यदि चतुर्थ भाव में स्थित हों तो प्रथमत: कन्या और बाद में पुत्र का लाभ होता है अथवा यमल—एक पुत्र और एक कन्या का जन्म होता है।

जातकाभरण में कहा भी गया है—

लग्ने द्वितीये यदि वा तृतीये विलग्ननार्थ: प्रथम: सुत: स्यात् ।
तुर्ये स्थितेऽस्मिंश्च सुतो द्वितीय: पुत्री सुतो वेति पुर: प्रकल्प्यम् ॥

सन्तानप्राप्ति के सम्बन्ध में पराशरादि आचार्यों के विचार भी इस सन्दर्भ में द्रष्टव्य हैं—

सुतभवने भृगुजीवसौम्ययाते बलसहितेन विलोकिते युते वा ।
बहुसुतजननं वदन्ति सन्तः सुतभवनेशबलेन चिन्त्यम् ॥
पुत्रस्थानाधिपे स्वोच्चे लग्नाच्चेद् द्वित्रिकोणभे ।
गुरुणा संयुते दृष्टे पुत्रभाग्यमुपैति सः ॥ (पराशर)

बुध, बृहस्पति और शुक्र बलवान होकर यदि पञ्चम भाव में स्थित हों या उसको देखते हों, पञ्चम भाव का स्वामी भी बलवान हो, तो अनेक सन्ततियों का सुख जातक को प्राप्त होता है ।

पञ्चमभावाधिपति अपनी उच्च राशिगत हो और लग्न से द्वितीय, पञ्चम अथवा नवम भाव में स्थित हो, बृहस्पति से युत या दृष्ट हो, तो जातक पुत्रसुख प्राप्त करता है ॥

सन्तानसंख्या

यावन्मितानामिह पुत्रभावे नरग्रहाणामिह दृष्टयः स्युः ।
तावन्त एवास्य भवन्ति पुत्राः कन्या मितिः स्त्रीग्रहदृष्टितुल्या ॥३॥

अन्वयः—पुत्रभावे यावन्मितानां नरग्रहाणां इह दृष्टयः स्युः तावन्त एव अस्य पुत्राः भवन्ति, स्त्रीग्रहदृष्टितुल्या कन्या मितिः (स्यात्) ॥३॥

पञ्चम भाव पर जितने पुरुषग्रहों की दृष्टि होती है उतने पुत्र और जितने स्त्रीग्रहों की दृष्टि होती है उतनी कन्यायें जातक को प्राप्त होती हैं । पञ्चम भाव के ये योगकारक द्रष्टा ग्रह यदि स्वगृह अथवा उच्चादि बल से युक्त हों तो सन्ततिसंख्या को द्विगुणित और त्रिगुणित समझना चाहिए ॥३॥

सन्तानभावे गगनेचराणां यावन्मितानामिह दृष्टिरस्ति ।
स्यात्सन्ततिस्तत्प्रमिता नृसंज्ञैर्नराश्च कन्याः प्रमदाभिधानैः ॥
सन्तानभावाङ्कसमानसंख्या स्यात्सन्ततिर्वेति वदन्ति केचित् ।
नीचोच्चमित्रादिगृहस्थितानां दृष्ट्या शुभं वाऽशुभमर्भकानाम् ॥
नवांशतुल्या प्रभवात्र संख्या दृष्ट्या शुभानां द्विगुणावगम्या ।
क्लिष्टा च पापग्रहदृष्टियोगान् मिश्रा च मिश्रग्रहदृष्टितोऽत्र ॥

उपर्युक्त वचनों के अनुसार पञ्चम भाव के द्रष्टा ग्रहों की संख्यातुल्य जातक को सन्तानलाभ होता है, जिसमें पुरुष ग्रह की संख्यातुल्य पुत्र और स्त्री द्रष्टा ग्रह की संख्यातुल्य कन्यायें होती हैं ।

कुछ आचार्यों के अनुसार पञ्चम भावस्थ राशिसंख्या के समान सन्तानसुख होता है । स्वगृहोच्च मित्रगृह में स्थित शुभ ग्रहों की दृष्टि सन्तान के लिए शुभद और शत्रु अथवा नीच राशिस्थ पाप ग्रहों की दृष्टि सन्तान के लिए कष्टप्रद होती है ।

कुछ के मतानुसार पञ्चम भाव की नवांश राशिसंख्या के समान जातक के सन्तान की संख्या होती है। पञ्चम भाव पर यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो सन्तानसंख्या को द्विगुणित समझना चाहिए।

पराशर ने अपने होराशास्त्र में सन्ततिसंख्या के अनेक निर्णायक योग दिये हैं, जिनमें से कुछ की चर्चा करना यहाँ अनुचित नहीं होगा।

चतुर्थे पापसंयुक्ते षष्ठे चैव तथैव हि।
सुतेशे परमोच्चस्थे लग्नेशेन समन्विते ॥
कारके शुभसंयुक्ते दशसंख्यास्तु सूनवः।

चतुर्थ और षष्ठ भावों में पाप ग्रह स्थित हों तथा पञ्चम भाव के स्वामी अपनी परमोच्च स्थिति में लग्नेश से संयुक्त हो तथा पञ्चम भाव का कारक (बृहस्पति) यदि शुभ ग्रहों से युत हो, तो जातक को दश सन्तानें होती हैं॥

पञ्चमात्पञ्चमे मन्दे सुतस्थे च तदीश्वरे।
सूनवः सप्तसंख्याश्च द्विगर्भे यमलं भवेत् ॥
वित्तेशे पञ्चमस्थे च सुतस्थे पञ्चमाधिपे।
षट्संख्या च सुतप्राप्तिस्तेषां च त्रिप्रजा मृतिः ॥
लग्नात्पञ्चमगे जीवे जीवात्पञ्चमगे शनौ।
मन्दात्पञ्चमगे राहौ पुत्रमेकं विनिर्दिशेत् ॥ (पराशर)

नवम भाव में शनि, नवमाधिपति यदि पञ्चम भाव में गत हो, तो उसके सात संतानें होती हैं, जिसमें दो सन्तानें जुड़वाँ होती हैं।

द्वितीय भाव का स्वामी पञ्चम भाव में, पञ्चमेश पञ्चम भाव में स्वगृही होकर यदि स्थित हो तो जातक को छः पुत्रों की प्राप्ति होती है, जिसमें तीन की मृत्यु हो जाती है।

लग्न से पञ्चम भाव में बृहस्पति, बृहस्पति से पञ्चम भाव (नवम भाव) में शनि और शनि से पञ्चम भाव में (लग्न में) राहु स्थित हो, तो जातक को मात्र एक पुत्र होता है।

सन्तानहानि योग (पुत्रहानि)

सहजभावपतिः सहजे यदा तनुगतो धनगो व्ययगोऽपि वा।
सुतगतः सुतहानिकरो नृणां बुधवरैरुदितो मिहिरादिभिः ॥४॥

अन्वयः—यदा सहजभावपतिः सहजे अनुगतः धनगः व्ययगः सुतगतः अपि वा तदा नृणां सुतहानिकरः मिहिरादिभिः बुधवरैः उदितः ॥४॥

सहज (तृतीय) भाव का स्वामी यदि लग्न, द्वितीय, तृतीय, व्यय या पञ्चम भाव में स्थित हो तो वह जातक के सन्तानभाव की हानि करता है ॥४॥

अनपत्यता के अनेक योग ग्रन्थान्तरों में कथित हैं, जिनमें से कुछ यहाँ उद्धृत हैं—

सुताभिधाने भवने यदि स्यात्खलस्य राशि: खलखेटयुक्त: ।
सौम्यग्रहालोकनवर्जितश्च सन्तानहीनो मनुजस्तदानीम् ॥
कवि: कलत्रे दशमे शशाङ्क: पातालयाताश्च खला भवन्ति ।
प्रसूतकाले यदि मानवं ते सन्तानहीनं जनयन्ति नूनम् ॥
सन्तानाधिपते: पञ्चषष्ठरि:फस्थिते खले ।
पुत्राभावो भवेत्तस्य यदि जातो न जीवति ॥ (जातकाभरण)

शुक्राङ्गारनिशाकरा द्वितनुगा: सन्तानसौख्यं नृणा-
मादौ सञ्जनयन्ति जन्मसमये चापं विना प्रायश: ।
मीने वा धनुषि प्रमाणपटव: सन्तानभावे यदा
सन्तानं न तदामनन्ति विबुधा: पुंसां विशेषादिह ॥५॥

अन्वय:—जन्मसमये शुक्राङ्गारनिशाकरा: चापं विना द्वितनुगा: प्रायश: नृणां आदौ सन्तानसौख्यं सञ्जनयन्ति यदा सन्तानभावे मीने वा धनुषि तदा पुंसां विशेषात् इह सन्तानं न (इति) विबुधा: आमनन्ति ॥५॥

जन्म के समय शुक्र, भौम और चन्द्रमा, धनु के अतिरिक्त अन्य द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या और मीन) राशियों में स्थित होकर पञ्चम भाव में स्थित हों तो जातक को सन्तानसुख होता है। यदि वे धनु राशि के होकर पञ्चम भाव में स्थित हों तो जातक सन्तानसुख से हीन होता है। पंञ्चम भाव में बृहस्पति की राशि (९।१२) हो तो भी दैवज्ञों ने अनपत्यता ही कही है ॥५॥

क्लीब-योग

अर्के कर्कगते हरौ भृगुसुते मन्दे तुलायामजे
चन्द्रे यस्य नरस्य जन्मसमये वीर्यच्युतोऽसौ भवेत् ।
लग्ने चन्द्रयुते गुरौ रविसुते पुत्रेऽपि वीर्यच्युतो
जीवेङ्गे सरवौ मृतावपि कुजे क्लीबर्क्षगे कण्टके ॥६॥

अन्वय:—यस्य नरस्य जन्मसमये कर्कगते अर्के हरौ भृगुसुते, तुलायां मन्दे, अजे चन्द्रे, असौ वीर्यच्युत: भवेत्, लग्ने चन्द्रयुते गुरौ, रविसुते पुत्रे अपि वीर्यच्युत:, सरवौ जीवेऽङ्गे, मृतौ अपि कुजे (तथा) क्लीबर्क्षगे कण्टके, (तदपि) वीर्यच्युत: (भवेत्) ॥६॥

जन्माङ्ग में यदि सूर्य कर्क राशि में, सिंह राशि में शुक्र, तुला में शनि और मेष राशि में चन्द्रमा स्थित हो तो जातक नपुंसक होता है।

चन्द्रमा के साथ बृहस्पति लग्न में और पञ्चम भाव में शनि स्थित हो, अथवा सूर्य के साथ बृहस्पति लग्नस्थ हो, अष्टम भाव में मंगल स्थित हो और नपुंसक ग्रह की राशि केन्द्रस्थ हो तो जातक पौरुष से हीन सन्तानोत्पत्ति में असमर्थ होता है ॥६॥

कन्याराशिगते लग्ने बुधमन्दावलोकिते।
शनिक्षेत्रे गते शुक्रे वीर्यहीनो नरो भवेत् ॥७॥

अन्वयः—(यदा) बुधमन्दावलोकिते लग्ने कन्याराशिगते, शनिक्षेत्रगते शुक्रे (तदा) नर: वीर्यहीन: भवेत् ॥७॥

कन्या राशि की लग्न बुध और शनि की सम्मिलित दृष्टि हो और शुक्र शनि के राशिगत हो तो जातक निर्वीर्य होता है ॥७॥

अनपत्यता योग

नीचे गुरौ भृगौ वापि समे ज्ञे विषमे रवौ।
तदा पुत्रसुखं न स्यादित्युक्तं गणकोत्तमैः ॥८॥

अन्वयः—(यदा) नीचे गुरौ भृगौ वा अपि समे ज्ञे, विषमे रवौ तदा पुत्रसुखं न स्यात् इति गणकोत्तमैः उक्तम् ॥८॥

बृहस्पति अथवा शुक्र अपनी नीच राशि में, बुध सम राशि और सूर्य विषम राशि में स्थित हों, तो जातक सन्तानाभाव से पीड़ित रहता है ॥८॥

वय के साठवें वर्ष में सन्तानयोग

कर्कटे तु कलानाथे पापयुक्तेक्षिते यदा।
मन्ददृष्टे दिवानाथे पुत्रः षष्टिमितेऽब्दके ॥९॥

अन्वयः—यदा पापयुक्तेक्षिते कर्कटे कलानाथे, तु मन्ददृष्टे दिवानाथे (तदा) षष्टिमिते अब्दके पुत्र: (भवति) ॥९॥

यदि चन्द्रमा कर्क राशिगत होकर पापग्रहों से युत-दृष्ट हो, सूर्य शनि से दृष्ट हो तो साठवें वर्ष की अवस्था में जातक को सन्तान की प्राप्ति होती है ॥९॥

तीस वर्ष की अवस्था में सन्तानयोग

पापभे पापसंयुक्ते जन्मलग्ने रवावलौ।
युग्मभे वसुधापुत्रे खगुणाब्दात्परं सुतः ॥१०॥

अन्वयः—जन्मलग्ने पापभे पापसंयुक्ते, रवौ अलौ, वसुधापुत्रे युग्मभे, (तदा) खगुणाब्दात् परं सुत: (भवेत्) ॥१०॥

पापसंज्ञक राशियों में यदि पाप ग्रह से संयुक्त हों, सूर्य वृश्चिक राशिगत हो और भौम मिथुन राशिगत हो तो वय के तीसवें वर्ष में जातक को सन्तानलाभ का सुख होता है ॥१०॥

अनपत्यता योग

अलौ गुरुकवी लग्ने भवेतां चन्द्रजार्कजौ।
न पश्यति सुतं गेहे कदाचिदपि मानवः ॥११॥

अन्वय:—अलौ गुरुकवी चन्द्रजार्कजौ लग्ने भवेतां (तदा) कदाचिदपि मानव: गेहे सुतं न पश्यति ॥११॥

जन्माङ्ग में बृहस्पति और शुक्र वृश्चिक राशि में किसी भाव में तथा बुध और शनि लग्न में स्थित हों तो जातक अन्त काल तक पुत्र का मुख नहीं देखता ॥११॥

मन्देन्दुदृष्टो रिपुसंयुतोऽङ्गाधिपो रविश्शत्रुधने विपुत्र: ।
मन्दोऽरिगेहे बुधसूर्यचन्द्रैर्दृष्टो विलग्ने खलवीक्षिते वा ॥१२॥

अन्वय:—मन्देन्दुदृष्ट: अङ्गाधिप: रिपुसंयुत: (तथा) रवि: शत्रुक्षेत्रे धने (गत:) विपुत्र: वा बुधसूर्यचन्द्रै: दृष्ट: मन्द: अरिगेहे (तथा) विलग्ने खलवीक्षिते (तदपि) विपुत्र: ॥१२॥

शत्रुग्रहों से युत लग्नेश पर यदि शनि और चन्द्रमा की संयुक्त दृष्टि हो और सूर्य षष्ठ या द्वितीय भाव में स्थित हो, तो जातक सन्तानहीन होता है।

शत्रुभावस्थ शनि पर यदि सूर्य, बुध और चन्द्रमा की दृष्टि हो और लग्न पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तब भी जातक सन्तानहीन होता है ॥१२॥

मन्दालयेऽर्के खलदृष्टियुक्ते लग्नेऽपि वा पापखगस्य वर्गे ।
अपत्यहानि: कुलदेवकोपात्पुरातनैरङ्गभृतां निरुक्ता: ॥१३॥

अन्वय:—खलदृष्टियुक्ते वा मन्दालये अर्के, पापखगस्य वर्गे लग्ने (तदा) कुल-देवकोपात् अपत्यहानि: (इति) पुरातनै: अङ्गभृतां निरुक्ता ॥१३॥

शनि की राशि (मकर या कुम्भ राशि) में स्थित सूर्य यदि पाप ग्रह से दृष्ट हो तथा लग्न पाप ग्रह के वर्ग में हो तो जातक कुलदेवता के कोप से सन्तानहीन होता है ॥१३॥

अपत्यभावे यदि मङ्गल: स्यादपत्यराशिं विनिहन्ति सद्य: ।
अस्तांशगे पापयुते सुतेशे तदा न सन्तानसुखं वदन्ति ॥१४॥

अन्वय:—यदि अपत्यभावे मङ्गल: स्यात् (तदा) अपत्यराशिं सद्य: विनिहन्ति (यदा) सुतेशे अस्तांशगे पापयुते तदा सन्तानसुखं न वदन्ति ॥१४॥

जन्माङ्ग के पञ्चम भाव में यदि भौम स्थित हो, तो वह तत्काल पुत्रों को विनष्ट कर देता है।

यदि पञ्चम भाव का स्वामी सातवें नवमांश में स्थित होकर पापग्रहों से संयुक्त हो तो जातक सन्तानसुख से हीन होता है ॥१४॥

गुरो: सुतागारपति: सपापो बलेन हीनो मनुजो विपुत्र: ।
अरावपापे निधने तदीश: सुतेन हीनो मनुजस्तदानीम् ॥१५॥

अन्वय:—(यदा) गुरो: सुतागारपति: सपाप: बलेन हीन: (तदा) मनुज: विपुत्र: (अथवा) अरौ अपापे निधने तदीश: तदानीं मनुज: सुतेन हीन: ॥१५॥

जन्माङ्ग में यदि बृहस्पति से पञ्चम भाव के अधिपति पाप ग्रह से संयुक्त हों और निर्बल हों तो जातक सन्तानहीन होता है।

षष्ठ भाव में शुभ ग्रह और षष्ठेश अष्टम भाव में स्थित हो जातक सन्तानहीन होता है ॥१५॥

तथैव भानुः खलु पञ्चमस्थो जातं च जातं विनिहन्ति बालम्।
लग्नेश्वरः पापयुतः सुतेशो व्ययाष्टमे पुत्रसुखेन हीनः ॥१६॥

अन्वयः—भानुः खलु पञ्चमस्थः जातं च जातं विनिहन्ति, तथैव लग्नेश्वरः पापयुतः सुतेशः व्यय-अष्टमे पुत्रसुखेन हीनः ॥१६॥

पञ्चम भाव में यदि सूर्य स्थित हो, तो वह उत्पन्न पुत्रों को विनष्ट कर देता है। यदि लग्नेश पाप ग्रहों से संयुक्त हो और पञ्चम भाव का स्वामी बारहवें या आठवें भाव में स्थित हो तो जातक सन्तानसुख से हीन होता है ॥१६॥

यदाऽगुसूर्यारशनैश्चराणां दोषो तदा जन्मनि मानवानाम्।
वंशेशकोपेन सुतस्य नाशं तदा वदन्तीति पुराणविज्ञाः ॥१७॥

अन्वयः—अथ यदा मानवानां जन्मनि अगुसूर्यारशनैश्चराणां दोषः तदा वंशेश-कोपेन सुतस्य नाशं पुराणविज्ञाः वदन्ति ॥१७॥

यदि राहु, सूर्य, भौम और शनि सन्तानप्राप्ति में बाधक हों तो इसे कुलदेवता का कोप समझना चाहिए। पूजनादि से उन्हें प्रसन्न करने से सन्तान की प्राप्ति सम्भव होती है ॥१७॥

बुधशुक्रकृते दोषे सुताप्तिः शिवपूजनात्।
गुरुचन्द्रकृते दोषे यन्त्रमन्त्रौषधीबलात् ॥१८॥

अन्वयः—बुधशुक्रकृते दोषे शिवपूजनात् सुताप्तिः गुरुचन्द्रकृते दोषे यन्त्र-मन्त्र-औषधीबलात् सुताप्तिः ॥१८॥

सन्तानप्राप्ति में यदि बुध और शुक्र बाधक हों तो शिवार्चन से, यदि चन्द्रमा और बृहस्पति बाधक हों तो यन्त्र, मन्त्र और औषधि के प्रयोग से सन्तानसुख सम्भव होता है ॥१८॥

राहुणा कन्यकादानं भानुना हरिकीर्तनम्।
शिखिना कपिलादानं मन्दाराभ्यां षडङ्गकम् ॥१९॥

अन्वयः—राहुणा कन्यकादानं भानुना हरिकीर्त्तनम्, शिखिना कपिलादानं मन्दा-राभ्यां षडङ्गकम् ॥१९॥

यदि राहु के दोष से अनपत्यता हो तो कन्यादान करने से, सूर्य के दोष से यदि अनपत्यता हो तो विष्णु की आराधना से, केतु के दोष से अनपत्यता हो तो कपिला

गौ का दान करने से तथा भौम दोष से यदि अनपत्यता हो तो षडङ्ग रुद्राभिषेक कराने से दोषों का शमन होता है और जातक को सन्तानसुख सम्भव होता है ॥१९॥

सर्वदोषविनाशाय सन्तानहरिपूजनम् ।
कुर्याद्भौमव्रतं चापि कामदेवव्रतं नरः ॥२०॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले सन्तानभावविचाराध्यायः षष्ठः ॥६॥

अन्वयः—सर्वदोषविनाशाय सन्तानहरिपूजनम्, भौमव्रतं कामदेवव्रतं च अपि नरः कुर्यात् ॥२०॥

सन्तानगोपाल का अनुष्ठान, भौम व्रत तथा कामदेव व्रत आदि शास्त्रोक्त आचरण से अनपत्यता का निवारण होकर मनुष्य सन्तानसुख प्राप्त कर सकता है ॥२०॥

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का षष्ठ अध्याय समाप्त ॥६॥

•

अथ सप्तमोऽध्यायः

राजयोग-तद्भङ्गदरिद्रयोगः

राजयोग

खेटा यदा पञ्च निजोच्चसंस्थाः स सार्वभौमः खलु यस्य सूतौ ।
त्रिभिः स्वतुङ्गोपगतैः स राजा नृपालबालोऽन्यसुतस्तु मन्त्री ॥१॥

अन्वयः—सूतौ यदा पञ्च खेटा निजोच्चसंस्थाः स खलु सार्वभौमः, त्रिभिः स्वतुङ्गोपगतैः स नृपालबालो राजा, अन्यसुतस्तु मन्त्री (भवति) ॥१॥

जन्माङ्ग में यदि पाँच ग्रह अपनी उच्च राशियों में स्थित हों तो जातक सार्वभौम (समस्त पृथ्वी का) सम्राट् होता है। यदि तीन ग्रह अपनी उच्च राशि में स्थित हों तो राजपुत्र होने पर वह निश्चय ही राजा होता है। सामान्य व्यक्ति के जन्माङ्ग में यदि तीन ग्रह उच्च राशिगत हों तो जातक राजमन्त्री अथवा राजा के समान वैभवादि से सम्पन्न होता है ॥१॥

गुरावुच्चे केन्द्रे भवति दशमे दानवगुरौ
जनुःकाले मुद्रा विलसति समुद्रावधि भृशम् ।
गुरौ कर्के चापे भवति च सचन्द्रे दिनमणौ
बुधे तुङ्गे लग्ने बलवति खगे वा नरपतिः ॥२॥

अन्वयः—(यदा) जनुःकाले गुरौ उच्चे केन्द्रे (तथा) दशमे दानवगुरौ भवति (तदा) भृशं समुद्रावधि मुद्रा विलसति, (यदि) सचन्द्रे गुरौ कर्के चापे च दिनमणौ वा बुधे तुङ्गे लग्ने, बलवति खगे भवति (तदा) नरपतिः (भवति) ॥२॥

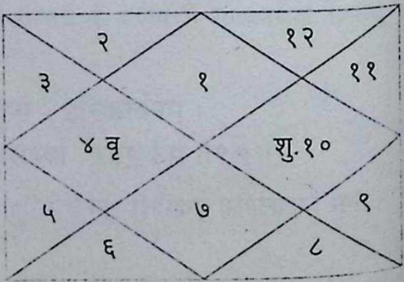

राजयोग (१)

जिसके जन्माङ्ग में उच्च राशिस्थ बृहस्पति केन्द्र में तथा दशम भाव में शुक्र स्थित हो, तो उसका शासन देश में समुद्र की सीमा तक विस्तीर्ण होता है।

बृहस्पति चन्द्रमा के साथ कर्क या धनु राशि में स्थित हों, उच्च राशिस्थ सूर्य या उच्च राशिस्थ बुध लग्न में और अन्य ग्रह बलवान हों तो जातक राजा होता है ॥२॥

राजयोग (२ क)

राजयोग (२ ख)

गुरावङ्गे कर्के मदनसुखभावे दिनमणेः
सुते शुक्रे वक्रे प्रभवति जनेर्यस्य समयः ।
महाम्भोधेर्नीरं गमनसमये तस्य करिणां
चलद्घण्टानादाद् व्रजति चपलत्वं हि परितः ॥३॥

अन्वयः—यस्य जनेः समयः कर्के गुरौ अङ्गे, दिनमणेः सुते मदनसुखभावे (तथा) शुक्रे वक्रे प्रभवति (सति) तस्य करिणां चलद्घण्टानादात् महाम्भोधेः नीरं परितः चपलत्वं व्रजति ॥३॥

जन्म के समय यदि कर्क राशिगत बृहस्पति लग्न में, सूर्यपुत्र शनि चतुर्थ या सप्तम भाव में और शुक्र वक्रगति हो तो जातक राजा होता है, जिसके सवारी निकलने के समय हाथियों पर लटकते घण्टों के निनाद से सागर का जल आन्दोलित होता है ॥३॥

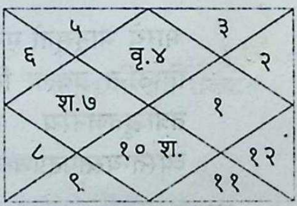

राजयोग

अजे जीवादित्यौ दशमभवने भूमितनय-
स्तपःस्थाने शुक्रो बुधविधुयुतो यस्य जनने ।
गजानामालीभिर्विजयगमने तस्य सहसा
समाक्रान्ता पृथ्वी व्रजति चकिता मोहपदवीम् ॥४॥

अन्वयः—यस्य जनने अजे जीवादित्यौ, दशमभवने भूमितनयः, तपःस्थाने बुधः, विधुयुतः शुक्रः (भवति) तस्य विजयगमने गजानामालीभिः समाक्रान्ता पृथ्वी सहसा चकिता मोहपदवीं व्रजति ॥४॥

जिसके जन्माङ्ग में सूर्य और बृहस्पति मेष राशिगत हों, भौम दशम भाव में, भाग्यस्थान में शुक्र, बुध और चन्द्रमा युक्त हों तो वह राजा होता है; जिसकी विजययात्रा के समय हाथियों की पंक्ति से आक्रान्त होकर पृथ्वी सहसा मोहित हो जाती है ॥४॥

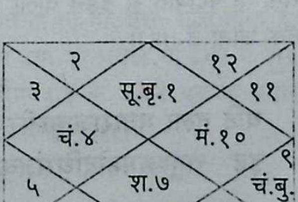

राजयोग

कन्याङ्गे सबुधे झषे सुरगुरौ भूपुत्रसूर्यौ बली
मन्दे कर्कगते शरासनगते शुक्रे यदीया जनिः ।
तस्यालं शिरसा वहन्ति वसुधाधीशाः सदा शासन-
मानन्दाद्विकचारविन्दकलिकामालामिव प्रायशः ॥५॥

अन्वयः—यदीया जनिः कन्याङ्गे सबुधे, झषे सुरगुरौ, भूपुत्रसूर्यौ बली, मन्दे कर्कगते, शरासनगते शुक्रे (भवति) तस्य शासनमानन्दाद्विकचारविन्दकलि-कामालामिव प्रायशः सदा वसुधाधीशाः शिरसा वहन्ति इत्यलम् ॥५॥

जिसका जन्म कन्या राशि के लग्न में हो और बुध लग्नस्थ हो, मीन में बृहस्पति, कर्क में शनि, शरासन (धनु) राशि में शुक्र स्थित हो तथा सूर्य और मंगल बलवान हों, तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक राजा होता है, जिसका शासन राजा लोग शिर पर पुष्पमाला के समान धारण करते हैं ॥५॥

राजयोग

भाग्ये भानुसुतो मृगे धरणिजो जीवज्ञशुक्राः सुते
तिष्ठन्ति प्रबला दिवाकरकरव्यासङ्गमुक्ता यदा ।
तत्रोद्भूतजनस्य यानसमये प्रोत्तुङ्गराजिव्रज-
व्यस्तन्यस्तपदप्रचाररजसाच्छन्नं नभोमण्डलम् ॥६॥

अन्वयः—यदा भाग्ये भानुसुतोः, मृगे धरणिजः जीवज्ञशुक्राः, सुते (तथोक्त ग्रहाः) प्रबलाः दिवाकरकरव्यासङ्गमुक्ताः तिष्ठन्ति, तत्रोद्भूतजनस्य यानसमये प्रोत्तुङ्ग-राजिव्रजव्यस्तन्यस्तपदप्रचाररजसाच्छन्नं नभोमण्डलम् (भवति) ॥६॥

भाग्यस्थान (नवम भाव) में शनि, मकर राशि में मंगल तथा सूर्य, बुध और बृहस्पति पञ्चम भाव में स्थित हो तथा बलवान हो और सूर्य के सान्निध्य से अस्त न हो तो जातक राजा होता है, जिसकी यात्रा के समय उसके साथ चलने वाली सेना के पदाघात से उड़ने वाली धूलि से आकाश ढंक जाता है ॥६॥

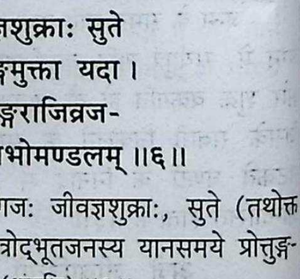

राजयोग

चतुष्कमहोदधियोग

यदि तुला मकराजकुलीरभे रविमुखाः सकला विलसन्ति चेत् ।
इह चतुष्कमहोदधिसंज्ञकः सुरपतेः समतां तनुते नृणाम् ॥७॥

अन्वयः—यदि तुला मकर-अजकुलीरभे रविमुखाः सकला विलसन्ति चेत् तदा इह चतुष्कमहोदधिसंज्ञकः (योगः) नृणां सुरपतेः समतां तनुते ॥७॥

जिसके जन्मकाल में सूर्यादि समस्त ग्रह तुला, मकर, मेष और कर्क (सभी चर राशियों) में स्थित हों तो जातक इन्द्र के समान ऐश्वर्य धारण करने वाला होता है ।।७।।

राज्यस्वामी निजोच्चे भवति तनुधनापत्यपातालकान्ता-
पुण्यानामुच्चराशौ पतय इह यदा वीर्यवन्तो भवन्ति ।
राजानो यस्य तस्य प्रबलबलघटादन्तिघण्टाधनुर्ज्या-
टङ्कारव्रातभीता जगदुदरगता: कम्पभावं भजन्ति ।।८।।

अन्वय:—यस्य (जन्मकाले) यदा राज्यस्वामी निजोच्चे भवति (तदा) तनुधनापत्यपातालकान्तापुण्यानां पतय: उच्चराशौ (अथवा) वीर्यवन्त: भवन्ति तदा तस्य प्रबलबलघटादन्तिघण्टाधनुर्ज्याटंकारव्रातभीता जगदुदरगता: राजान: कम्पभावं भजन्ति ।।८।।

जिसके जन्माङ्ग में राज्य (दशम भाव) का स्वामी अपनी उच्च राशि में स्थित हो तथा अन्य भावों के स्वामी ग्रह भी अपनी उच्च राशि में स्थित हों अथवा पूर्ण बली हों, तो वह राजा होता है, जिसके प्रचण्ड प्रताप और धनुर्धारियों के धनुष-प्रत्यञ्चाओं की टङ्कार से भयभीत होकर शत्रु गुफाओं और कन्दराओं में जा छिपते हैं ।।८।।

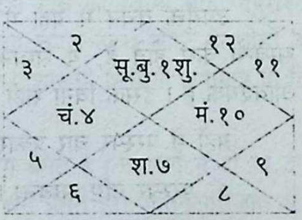

चतुष्कमहोदधि राजयोग

कीर्तिविस्तारक राजयोग

येषामर्को निजोच्चे प्रभवति मकरे मङ्गलो वैरिभावे
दैत्येज्य: कर्मगामी शनिरपि सहजे जन्ममात्रेण तेषाम् ।
पृथ्वी सद्दानतोयार्णवजनितयशश्चन्द्रकान्त्याज्र्जुनाभा[१]
मत्तोन्मत्तप्रचण्डप्रबलरिपुशिरोमण्डले वज्रपात: ।।९।।

अन्वय:—येषां (जन्मकाले) अर्क: निजोच्चे, मकरे मङ्गल: वैरिभावे, कर्मगामी दैत्येज्य:, (तथा) सहजे शनिरपि प्रभवति तेषां जन्ममात्रेण पृथ्वी सद्दानतोयार्णवजनितयशश्चन्द्रकान्त्यार्जुनाभा मत्तोन्मत्तप्रचण्डप्रबलरिपुशिरोमण्डले वज्रपात: ।।९।।

जिसके जन्माङ्ग में सूर्य अपनी उच्च राशिगत हो, मकर राशिगत भौम षष्ठ भाव में, दशम भाव में शुक्र और तृतीय भाव में शनि स्थित हो तो वह ऐसा राजा होता है, जिसके दानसंकल्प के जल से पृथ्वी परिष्कृत होकर चन्द्रमा की धवल चन्द्रिका में शुभ्र आभा से दमकने लगती है और जिसकी द्युति से भूमण्डल के अपने प्रचण्ड प्रबल बलशाली शत्रुओं के शिर पर वज्राघात का अनुभव कराती है ।।९।।

बलात् राज्याप्तियोग

सम्बन्धो दशमाधिपस्य नवमाधीशेन येषां जनु:-
काले पञ्चमभावपेन च बलोपेतस्य तुल्येन चेत् ।

प्रस्थाने सति लीलया तनुभृतां वश्यारिविश्वम्भराः
गर्जद्घोटकमत्तवारणघटाक्रान्ता समन्ताद् भवेत् ॥१०॥

अन्वयः—येषां जनुःकाले बलोपेतस्य दशमाधिस्य नवमाधीशेन (वा) पञ्चमभावपेन तुल्येन चेत् सम्बन्धः भवेत् (तदा) प्रस्थाने सति लीलया तनुभृतां वश्यारिविश्वम्भरा गर्जद्घोटकमत्तवारणघटाक्रान्ता समन्ताद् भवेत् ॥१०॥

जन्माङ्ग में बलवान दशमेश यदि नवमेश या पञ्चमेश से (अथवा दोनों से) सम्बन्ध करे तो इस योग में उत्पन्न जातक राजा होता है, जिसकी विजययात्रा के समय उसकी सेना में हाथियों और घोड़ों के निनाद से गूजते दिगन्त से भयाक्रान्त होकर शत्रुगण युद्ध किए विना ही अपने राज्य को समर्पित कर देते हैं ।॥१०॥

उपर्युक्त वचन में ग्रहों में परस्पर सम्बन्ध की चर्चा आई है। ग्रहों के परस्पर सम्बन्ध कैसे होते हैं, ये सम्बन्ध कितने प्रकार के होते हैं ? आदि बातों का ज्ञान आवश्यक है। इसके विना सही फलादेश नहीं किया जा सकता।

ग्रहों में परस्पर चार प्रकार के सम्बन्ध कहे गए हैं—

१. परस्पर दृष्टि सम्बन्ध।
२. अन्योन्याश्रय सम्बन्ध या व्यत्यय सम्बन्ध।
३. एकतर दृष्टि सम्बन्ध।
४. सहस्थान या युति सम्बन्ध।

१. परस्पर दृष्टि सम्बन्ध—दो ग्रह जब परस्पर एक-दूसरे पर दृष्टिपात करते हैं तो इस सम्बन्ध को परस्पर दृष्टि-सम्बन्ध या अन्योन्य दृष्टि-सम्बन्ध कहते हैं। इस प्रकार का सम्बन्ध दो ग्रहों में तभी सम्भव होता है, जब वे परस्पर सातवें भाव में स्थित हों। जैसे लग्न में शनि और सप्तम भाव में सूर्य स्थित हों।

२. अन्योन्याश्रय सम्बन्ध—दो ग्रह जब परस्पर एक-दूसरे की राशि में होते हैं तो उनमें अन्योन्याश्रय या व्यत्यय सम्बन्ध होता है। जैसे—मकर के सूर्य और सिंह के शनि में सम्बन्ध।

३. एकतर दृष्टि सम्बन्ध—जब एक ग्रह की दृष्टि दूसरे पर हो, किन्तु दूसरे की दृष्टि पहले द्रष्टा ग्रह पर न पड़े तो यह तीसरा एकतर दृष्टि सम्बन्ध होता है। उदाहरणार्थ लग्नस्थ शनि की दृष्टि दशम भावस्थ बुध पर होगी, किन्तु बुध की दृष्टि शनि पर नहीं होगी। अतः इन दोनों में एकतर दृष्टि सम्बन्ध होगा।

४. सहस्थान या युति सम्बन्ध—जब दो ग्रह एक ही राशि में स्थित हों तो उनमें सहस्थान या युति-सम्बन्ध होता है।

यदि दशमेश, नवमेश और पञ्चमेश में उपर्युक्त सम्बन्धों में से कोई एक हो तो राजयोगकारक होता है।

महाराजाधिराज योग

राज्येशो यदि देवतालयपदे पारावतांशे तपः-
स्थानेशो धनगोऽपि गोपुरलवे लाभाधिपो जन्मिनाम् ।
चञ्चत्तुङ्गतुरङ्गकुञ्जरघटाघण्टाधनुर्ज्यारवै-
र्वित्रस्तागमनोत्सवे दिगबला भ्रान्तिं भजन्ति क्षणात् ॥११॥

अन्वयः—यदि जन्मिनां राज्येशः पारावतांशे देवतालयपदे, तपस्थानेशः धनगः, अपि लाभाधिपः गोपुरलवे (गतः) (तदा) गमनोत्सवे चञ्चत्तुङ्गतुरङ्गकुञ्जरघटा-घण्टाधनुर्ज्यारवैः वित्रस्ता दिगबला क्षणात् भ्रान्तिं भजन्ति ॥११॥

जिसके जन्मकाल में दशम भाव का स्वामी पारावतांशस्थ होकर नवम भाव में, नवम भाव का स्वामी द्वितीय भाव में तथा एकादश भाव का स्वामी यदि गोपुरांश में स्थित हो, तो उस व्यक्ति की उत्सव यात्रा के समय चपल उच्च कोटि के घोड़ों और हाथियों के झूल में लगे घण्टों के तुमुल निनाद से दिशारूपी कामिनी क्षणमात्र के लिए स्तब्ध हो जाती है ॥११॥

पारावतांश, गोपुरांशादि अनेक विशिष्ट योग बंनते हैं। दशवर्ग में दो या दो से अधिक से अधिक स्ववर्ग के योग से ९ विशिष्ट वर्ग बनते हैं। जातकपारिजात में श्री वैद्यनाथ कहते हैं—

मूलत्रिकोणस्वगृहोच्चभागवर्गोत्तमानां दशवर्गजानाम् ।
स योग जातोत्तमनामपूर्वा वैशेषिकांशो इति वदन्ति ॥
उत्तमन्तु त्रिवर्गैक्यं चतुर्वर्गस्तु गोपुरम् ।
वर्गपञ्चकसंयोगं सिंहासनमिहोच्यते ॥
वर्गद्वयं पारिजातं षष्णां पारावतांशकः ।
सप्तमं देवलोकः स्यादष्टमं च तथा भवेत् ॥
ऐरावतं तु नवकं फलं तेषां पृथक्-पृथक् । (जातकपारिजात)

दशवर्ग में अपने मूलत्रिकोण, गृह अथवा उच्च राशि के वर्गों में ग्रह स्थित हों तो उनके संयोग से विभिन्न संज्ञक वैशेषिकांश होते हैं। दश वर्गों में यदि तीन वर्ग उस ग्रह की मूल त्रिकोण, उच्च राशि अथवा उसकी स्वराशि के हों तो सम्बन्धित ग्रह **उत्तम** नामक वैशेषिकांश में कहलाता है। यदि चार वर्ग ग्रह के अपने वर्ग हों तो ग्रह **गोपुरांश** में कहा जाता है। यदि पाँच वर्ग ग्रह के अपने हों तो वह ग्रह **सिंहासनांश** में कहलाता है। यदि दो वर्ग ग्रह के अपने हों तो वह **पारिजातांश** में कहलाता है। यदि छः वर्ग उसके अपने हों तो वह ग्रह **पारावतांश** में स्थित होता है। इसी प्रकार सात, आठ वर्गैक्य से **देवलोकांश** में तथा नव वर्ग यदि ग्रह के अपने हों तो उसे **ऐरावतांश** में स्थित कहते हैं। यदि दश वर्ग ग्रह के अपने हों तो उसे वैशेषिकांश कहते हैं।

पराशर का मत इससे भिन्न है। उन्होंने षड्वर्ग और सप्तवर्ग के लिए तथा दशवर्ग के लिए भिन्न-भिन्न संज्ञायें बतलाई हैं—

वर्गभेदानहं वक्ष्ये मैत्रेय त्वं विचारय।
षड्वर्गा सप्तवर्गा दिग्वर्गा नृपवर्गका: ॥
वदन्ति वर्गसंयोगे षड्वर्गे किंशुकादय: ।
द्वाभ्यां किंशुकनामा च त्रिभिर्व्यञ्जनमुच्यते ॥
चतुर्भिश्चामराख्यं च छत्रं पञ्चभिरेव च।
षड्भि: कुण्डलयोग: स्यान्मुकुटाख्यं च सप्तभि: ॥
सप्तवर्गेऽथ दिग्वर्गे पारिजातादिसंज्ञका: ।
पारिजातं भवेद्द्वाभ्यामुत्तमं त्रिभिरुच्यते ॥
चतुर्भिर्गोपुराख्यं स्याच्छरै: सिंहासनं तथा।
पारावतं भवेत्षड्भिर्देवलोकं तु सप्तभि: ॥
वसुभिर्ब्रह्मलोकाख्यं नवभि: शक्रवाहनम्।
दिग्भि: श्रीधामयोगं स्यादथ षोडशवर्गके ॥
भेदकं तु भवेद्द्वाभ्यां त्रिभि: स्यात्कुसुमाख्यकम्।
चतुर्भिर्नागपुष्पं स्यात्पञ्चभि: कन्दुकाह्वयम् ॥
केरलाख्यं भवेत्षड्भि: सप्तभि: कल्पवृक्षकम्।
अष्टभिश्चन्दनवनं नवभि: पूर्णचन्द्रकम् ॥
दिग्भिरुच्चै:श्रवानाम रुद्रैर्धन्वन्तरिर्भवेत्।
सूर्यकान्तं भवेत् सूर्यैर्विश्वै: स्याद्विद्रुमाह्वयम् ॥
शक्रसिंहासनं शक्रैर्गोलोकं तिथिभिर्भवेत्।
भूयै: श्रीवल्लभाख्यं स्याद्वर्गभेदैरुदाहता ॥

षड्वर्ग या सप्तवर्ग में दो या दो से अधिक वर्ग ग्रह की स्व, स्वोच्च या मूल त्रिकोण राशियों के हों, उसकी किंशुकादि विशिष्ट संज्ञायें होती हैं—

दो वर्गों के योग से **किंशुक** योग, तीन वर्गों के योग से **व्यञ्जन** योग, चार वर्गों के योग से **चामर** योग, पाँच वर्गों के योग से **छत्र** योग, छ: वर्गों के योग से **कुण्डल** योग और सात वर्गों के योग से **मुकुट** योग होते हैं।

दशवर्ग में दो या दो से अधिक वर्ग यदि ग्रह की स्व, उच्च या मूल त्रिकोण राशि के हों तो पारिजातादि विशिष्ट योग बनते हैं। दो वर्गों के योग से **पारिजात** योग, तीन वर्गों के योग से **उत्तम** योग, चार वर्गों के योग से **गोपुर** योग, पाँच वर्गों के से **सिंहासन** योग, छ: वर्गों के योग से **पारावत** योग, सात वर्गों के योग से **देवलोक** योग, आठ वर्गों के योग से **ब्रह्मलोक** योग, नव वर्गों के योग से **शक्रवाहन** योग, दश वर्गों के योग से **श्रीधाम** योग होता है।

षोडश वर्ग में ग्रह के स्वगृह, स्वोच्च और स्वमूलत्रिकोण राशियों के दो या दो से अधिक वर्गों के योग से भेदक आदि पन्द्रह विशिष्ट योगों का उल्लेख पराशर ने अपनी होराशास्त्र में किया है—दो वर्गों के योग से **भेदक** योग, तीन वर्गों के योग से

कुसुमाख्य योग, चार वर्गों के योग से **नागपुष्प** योग, पाँच वर्गों के योग से **कन्दुक** योग, छ: वर्गों के योग से **केरलाख्य** योग, सात वर्गों के योग से **केरलाख्य** योग, आठ वर्गों के योग से **चन्दनवन** योग, नव वर्गों के योग से **पूर्णचन्द्रक** योग, दशवर्गों के योग से **उच्चै:श्रवा** योग, ग्यारह वर्गों के योग से **धन्वन्तरि** योग, बारह वर्गों के योग से **सूर्यकान्त** योग, तेरह वर्गों के योग से **विद्रुम** योग, चौदह वर्गों के योग से **शक्रसिंहासन** योग, पन्द्रह वर्गों के योग से **गोलोक** योग, सोलह वर्गों के योग से **श्रीवल्लभ**योग होते हैं।

सिंहासनयोग

कन्यामीनवृषालिभे यदि खगाः सिंहासनः कीर्तितः
किंवा चापनृयुग्मकुम्भहरिभे खेटे हि सिंहासनः।
यः सिंहासनयोगजो हि मनुजो भूपाधिराजो बली
गर्जत्कुञ्जरवाजिराजिमुकुटारूढ़ो धरामण्डले ॥१२॥

अन्वय:—यदि कन्यामीनवृषालिभे खगा: (तदा) सिंहासन: (योग:) किंवा चापनृयुग्मकुम्भहरिभे खेटे हि सिंहासन: (योग:) कीर्तित:, य: मनुज: सिंहासनयोगज: (जात: स) गर्जत् कुञ्जरवाजिराजिमुकुटारूढ: धरामण्डले भूपाधिराज: बली (भवति) ॥१२॥

यदि जन्माङ्ग में सभी ग्रह कन्या, मीन, वृष और वृश्चिक राशियों में स्थित हों, तो सिंहासन योग होता है। यदि जन्माङ्ग में समस्त ग्रह धनु, मिथुन, कुम्भ और सिंह राशियों में स्थित हों, तब भी सिंहासन योग होता है। इस योग में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ हाथियों और घोड़ों पर विराजने वाला बलशाली राजा होता है ॥१२॥

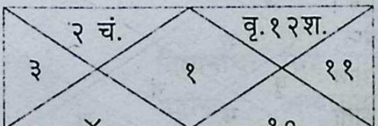

सिंहासन योग

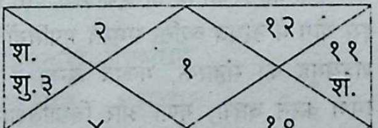

सिंहासन योग

चतुश्चक्र योग

अजे सिंहे कन्याकलशमिथुनान्त्यालितुरगे
समाजः खेटानामिह भवति जन्मन्यपि नरः।
चतुश्चक्रे योगे सकलसुखभोगेन मिलितो
महीपानामालीमुकुटमणिपाली विजयते ॥१३॥

अन्वयः—(यस्य) जन्मनि अजे सिंह कन्या-कलशमिथुनान्त्यालितुरगे खेटानां समाजः (तदा चतुश्चक्रयोगः) भवति इह चतुश्चक्रे योगे (जातः) नरः सकलसुखभोगेन मिलितः महीपानामाली मुकुमणिपाली विजयते ॥१३॥

जिसके जन्माङ्ग में समस्त सूर्यादि ग्रह मेष, सिंह, कन्या, कुम्भ, मिथुन, मीन, वृश्चिक और तुला राशियों में स्थित हों तो इस योग को चतुश्चक्र योग कहते हैं। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति समस्त वैभवादि के सुख से सम्पन्न, अनेक राजाओं को पददलित कर उनके मुकुट में लगे मणिसमूह को जीतने वाला प्रतापी राजा होता है ॥१३॥

चतुश्चक्र योग

एकावली योग

एकैकेन खगेन जन्मसमये सैकावली कीर्तिता
मुक्तालीव समस्तभूपमुकुटालङ्कारचूडामणिः ।
तज्जातो रिपुपुञ्जभञ्जनकरो गन्धर्वदिव्याङ्गना-
वृन्दानन्दपरो गुणव्रजधरो विद्याकरो मानवः ॥१४॥

अन्वयः—जन्मसमये एकैकेन खगेन मुक्तालीव सैकावली कीर्तिता तज्जातः मानवः समस्तभूपमुकुटालङ्कारचूड़ामणिः रिपुपुञ्जभञ्जनकरः गन्धर्व-दिव्याङ्गनावृन्दानन्द-परः गुणव्रजधरः विद्याकरः भवति ॥१४॥

जन्मकाल में यदि लगातार प्रत्येक भाव में एक-एक ग्रह स्थित हों तो एकावली योग होता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति समस्त भूपतियों में श्रेष्ठ, शत्रुसमूह का संहारक, गन्धर्व कन्याओं के साथ रमण करने वाला, गुणी और विद्याविशारद होता है ॥१४॥

एकावली योग

शत्रुहन्ता योग

कुलीरे कन्यायामनिमिषधनुर्युग्मभवने
जनुःकाले यस्य प्रभवति नभोगो रविमुखः ।
प्रचण्डप्रोत्तुङ्गप्रबलरिपुहन्ता क्षितिपतिः
समन्तादाधिक्यं व्रजति धनदानेन महताम् ॥१५॥

अन्वयः—यस्य जनुःकाले कुलीरे कन्यायाम् अनिमिषधनुर्युग्मभवने रविमुखः नभोगः प्रभवति, (स) प्रचण्डप्रोत्तुङ्गप्रबलरिपुहन्ता क्षितिपतिः, (तथा) धनदानेन समन्ताद् आधिक्यं व्रजति ॥१५॥

जिसके जन्माङ्ग में सूर्यादि सभी ग्रह कर्क, कन्या, मीन, धनु और मिथुन राशियों में स्थित हों तो वह व्यक्ति प्रचण्ड बलशाली, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला और महादानी राजा होता है ॥१५॥

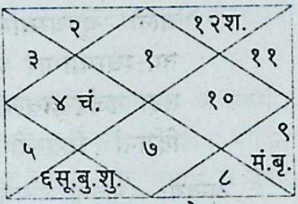

शत्रुहन्ता योग

नृबालयोग

अथादित्यः सिंहे विधुरपि कुलीरे रविसुतो
मृगे मीने जीवो हिमकरसुतो यस्य मिथुने।
तुलायां शुक्रश्चेदजभवनगो भूमितनयो
नृबालो भूपालो नृपमुकुटभूषामणिवरः ॥१६॥

अन्वयः—यस्य (जन्मसमये) आदित्यः सिंहे विधुरपि कुलीरे, रविसुतः मृगे, मीने जीवः हिमकरसुतः मिथुने तुलायां शुक्रः चेत् अजयवनगोभूमितनयः (तदा स) नृबालः भूपालः नृपमुकुटभूषामणिवरः (भवति) ॥१६॥

जिसके जन्मकाल में सिंह राशि में सूर्य, कर्क में चन्द्रमा, मकर में शनि, बृहस्पति मीन राशि में, मिथुन में बुध, तुला राशि में शुक्र और मेष राशि में मंगल स्थित हो, तो ऐसा जातक साधारण परिवार में उत्पन्न होकर भी राजाओं में श्रेष्ठ राजा होता है ॥१६॥

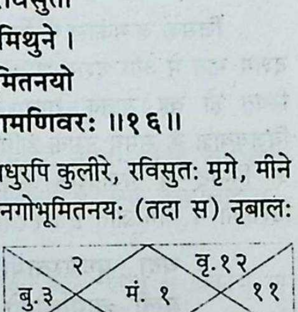

नृबाल योग

अन्य राजयोग

दिवानाथः सिंहे गवि हिमकरो मेषभवने
महीजः कन्यायाममृतकरसूनुः सुरगुरुः।
भवेच्चापे कुम्भे दिनमणिसुतस्तौलिनि कवि-
र्जनुःकाले यस्य प्रभवति नरोऽसौ क्षितिपतिः ॥१७॥

अन्वयः—यस्य जनुःकाले दिवानाथः सिंहे, हिमकरः गवि, महीजः मेषभवने, अमृतकरसूनुः कन्यायां, सुरगुरुः चापे, दिनमणिसुतः कुम्भे, कविः तौलिनि भवेत् तदा असौ नरः क्षितिपतिः प्रभवति ॥१७॥

जन्मकाल में यदि सूर्य सिंह राशि में, चन्द्रमा वृष राशि में, मंगल मेष राशि में, बुध कन्या राशि में, बृहस्पति धनु राशि में, शनि कुम्भ राशि में और शुक्र तुला राशि में अवस्थित हों, तो ऐसे योग में उत्पन्न बालक राजा होता है ॥१७॥

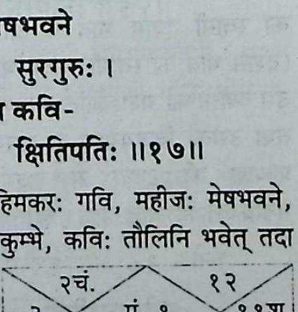

राजयोग

बली पुण्यस्वामी दशमभवनाधीशभवने
तपःस्वाम्यागारे भवति दशमेशोऽपि भविनाम् ।
तदा गर्जद्दन्तावलनिकरघण्टाघनरवै-
र्दिगन्तं वित्रस्तो विजयगमने यात्यरिगणः ॥१८॥

अन्वयः—भविनां जन्मसमये बली पुण्यस्वामी दशमभवनाधीशभवने, दशमेशोऽपि तपःस्वाम्यागारे भवति तदा विजयगमने गर्ज्जद्दन्तावलनिकरघण्टाघनरवैः वित्रस्तः अरिगणः दिगन्तं याति ॥१८॥

राजयोग

जिसके जन्मकाल में नवम भावाधिपति यदि दशम भाव में और दशम भावाधीश नवम भाव में स्थित हो वह जातक राजा होता है, जिसकी विजययात्रा के समय उसके हाथियों पर लगे घण्टों के निनाद से भयाक्रान्त होकर शत्रुगण सभी दिशाओं में भाग जाते हैं ॥१८॥

यदा पुण्यस्वामी दशमभवने पुण्यभवने
बली कर्माधीशो भवति भविनामेव जनने ।
समुद्रान्तं कीर्तिर्विजयगमने वैरिपटली
धनुर्ज्याटङ्कारैर्भजति चकिता भीतिपदवीम् ॥१९॥

अन्वयः—यदा भविनां जनने बली पुण्यस्वामी दशमभवने (तथा) बली कर्माधीशः पुण्यभवने भवति (तदा) समुद्रान्तं कीर्तिः (तथा) विजयगमने धनुर्ज्याटङ्कारैः वैरिपटली चकिता भीतिपदवीं भजति ॥१९॥

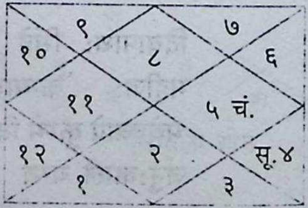

राजयोग

जिसके जन्मकाल में जन्माङ्ग के नवम भाव का स्वामी दशम भाव में और बलवान कर्मेश (दशम भाव का स्वामी) नवम भाव में स्थित हो तो उस व्यक्ति की यश-कीर्ति आसमुद्र विस्तृत होती है तथा उसकी विजययात्रा के समय उसके धनुष के प्रत्यञ्चा की टङ्कार से शत्रुगण चकित और भयाक्रान्त हो जाते हैं ॥१९॥

श्लोक १८ और १९ में वर्णित योग एक ही है ।

भवेदङ्गाधीशो जननसमये पुण्यभवने
तथा कर्मस्वामी भवति च विलग्ने जनिमताम् ।
तदा गर्जद्दन्तावलकरभवाजिव्रजपदैः
समाक्रान्ता पृथ्वी व्रजति गमने मोहपदवीम् ॥२०॥

अन्वयः—(यदा) जनिमतां जननसमये अङ्गाधीशः पुण्यभवने तथा कर्मस्वामी

विलग्ने भवेत् तदा गमने गर्जद्दन्तावलकरभवाजिव्रजपदैः समाक्रान्ता पृथ्वी मोहपदवीं व्रजति ॥२०॥

यदि लग्नेश जन्माङ्ग के नवम भाव में और कर्मस्वामी (दशमभाव के स्वामी) लग्न में स्थित हों, तो जातक राजा होता है; जिसकी बड़ी भारी सेना में अनेक भयंकर गर्जन करने वाले हाथी-घोड़ों के बोझ से आक्रान्त पृथ्वी चकित और विमुग्ध हो जाती है ॥२०॥

यदा राज्यस्वामी नवमसुतकेन्द्रेऽर्थभवने
बलाक्रान्तो यस्य प्रभवति स वीरो नरवरः ।
सदा काव्यालापी नवमणिकलापी बहुबली
तुरङ्गालीदन्तावलकलभगन्ता धनपतिः ॥२१॥

अन्वयः—यदा (जन्मसमये) बलाक्रान्तः राज्यस्वामी नवमसुतकेन्द्रे अर्थभवने प्रभवति स वीरः नरवरः सदा काव्यालापी नवमणिकलापी बहुबली तुरङ्गालीदन्तावलकलभगन्ता धनपतिः (भवति) ॥२१॥

जिसके जन्माङ्ग में दशम भाव का स्वामी बलवान होकर लग्न से त्रिकोण या केन्द्र या धनभावों (१,२,४,५,७,९ और १० वें भावों) में से किसी एक भाव में स्थित हो, तो ऐसा जातक मणियों की माला धारण करने वाला, काव्यरचना में पटु, श्रेष्ठ घोड़ों और हाथियों की पंक्ति का स्वामी और धन से सम्पन्न होता है ॥२१॥

यदा कर्मस्वामी सुतभवनगामी शुभयुतः
सुतेशः कोदण्डे भवति भविनो यस्य जनने ।
भयातीतो भोगी भवति चिरजीवी बहुगुणी
मतङ्गालीगन्ता रिपुनिकरहन्ता नरपतिः ॥२२॥

अन्वयः—भविनः यस्य जनने यदा शुभयुतः कर्मस्वामी सुतभवनगामी (तथा) सुतेशः कोदण्डे भवति (तदा सः) भयातीतः भोगी चिरजीवी, बहुगुणी मतङ्गालीगन्ता रिपुनिकरहन्ता नरपतिः भवति ॥२२॥

जिसके जन्मकाल में कर्मेश (दशमेश) शुभ ग्रहों से युक्त होकर पञ्चम भाव में स्थित हो तथा पञ्चमभाव का स्वामी धनु राशि में स्थित हो, तो वह व्यक्ति निर्भय, गुणवान, अनेक हाथियों का स्वामी और शत्रुञ्जयी होता है ॥२२॥

धनागारस्वामी भवति यदि पारावतपदे
विशालं भूपालं कलयति नृबालं बहुबलम् ।
अरातीभव्राताङ्कुशमनिशमानन्दनिरतं
नितान्तं श्रीमन्तं विविधधनदानोद्यतमलम् ॥२३॥

अन्वयः—यदि धनागारस्वामी पारावतपदे भवति (तदा) नृबालं विशालं भूपालं

बहुबलं कलयति तथा अरातीभव्रातांङ्कुशम् अनिशम् आनन्दनिरतं श्रीमन्तं विविधधनदानोद्यतम् (इति) अत्यलम् ॥२३॥

धन (द्वितीय) भाव का स्वामी यदि पारावतांशगत हो, तो जातक शत्रुरूपी हाथियों पर अङ्कुश के समान, अहर्निश आनन्द-निरत, अत्यधिक श्रीसम्पन्न, अनेकशः धनदान करने को सदैव उद्यत राजा होता है ॥२३॥

देवलोकलवगो निशाकरात्पुण्यराशिपतिरिन्दुकान्तिभाक् ।
गोगजव्रजतुरङ्गमण्डलीमण्डितो मणिगणैरिलापतिः ॥२४॥

अन्वयः—(यदा) निशाकरात् पुण्यराशिपतिदेवलोकलवगः (तथा च) इन्दुकान्तिभाक् (भवति) (तदा) गोगजव्रजतुरङ्गमण्डलीमण्डितः मणिगणैः इलापतिः (भवति) ॥२४॥

अपनी सम्पूर्ण कान्ति से युक्त चन्द्रमा से नवम भाव का स्वामी यदि देवलोकांश में (जिसके दशवर्ग में सात वर्ग उसके स्वगृह, स्वोच्च या स्वमूलत्रिकोण राशि के हों) हो तो जातक गौ, हाथी, घोड़ों के समूह से तथा रत्नों के भण्डार से सम्पन्न राजा होता है ॥२४॥

कुबेरतुल्य राजयोग

यदा माने याने भवति मदने वासवगुरौ
स्वतुङ्गे वा पङ्केरुहनिकरबन्धावपि भृशम् ।
भयत्राता दाता निगमविहिताचारचतुरो
गुणव्रातैर्नम्रो धनपतिसमानो विजयते ॥२५॥

अन्वयः—यदा वासवगुरौ स्वतुङ्गे माने याने मदने भवति (तथा) पङ्केरुहनिकरवन्धावपि (तत्रैव) (तदा) भृशं भयत्राता दाता निगमविहिता चारचतुरः गुणव्रातैः नम्रः धनपतिसमानः विजयते ॥२५॥

जिसके जन्माङ्ग में चतुर्थ, सप्तम और दशम भाव में अपनी उच्च राशिगत बृहस्पति स्थित हो तथा उसके साथ चन्द्रमा भी संयुक्त हो तो जातक भय से मुक्त करने वाला, परम दानी, निगमादि शास्त्रविहित आचरण में निष्णात, गुणों के भार से नत एवं कुबेर के समान धन से सम्पन्न राजा होता है ॥२५॥

एतेषु योगेषु नरो नृपालो भवेदलं नीचकुलप्रजातः ।
नृपालबालोऽपि च वक्ष्यमाणैः सुयोगजातैरिति सम्प्रवक्ष्ये ॥२६॥

अन्वयः—एतेषु योगेषु नीचकुलप्रजातः नरः (अपि) अलं नृपालः भवेत्, नृपालबालोऽपि च वक्ष्यमाणैः (साधारणसुयोगैः) नृपालः भवेत् इति सुयोगजातैः सम्प्रवक्ष्ये ॥२६॥

ऊपर कहे गये राजयोग यदि जन्माङ्ग में उपस्थित हों तो नीच कुलोत्पन्न व्यक्ति को भी राजा बना देते हैं। अब मैं उन राजयोगों को कहता हूँ, जो राजकुल में उत्पन्न जातक को राजा बनाने की क्षमता से सम्पन्न होते हैं ॥२६॥

मृगे विलग्ने रविजे कुलीरे दिवाकरे चन्द्रयुते प्रसूतौ ।
कुजे यदाये भृगुजेऽष्टमस्थे भवेन्नृपालो नृपवंशजात: ॥२७॥

अन्वय:—यदा प्रसूतौ मृगे विलग्ने रविजे, कुलीरे दिवाकरे चन्द्रयुते, कुजे यदाये, भृगुजेऽष्टमस्थे (तदा) नृपवंशजात: नृपाल: भवेत् ॥२७॥

यदि मकर लग्न में शनि, कर्क राशि (सप्तम भाव) में चन्द्रमा से युक्त सूर्य, आय (एकादश) भाव में मंगल और अष्टम भाव में शुक्र स्थित हो, तो राजकुल में उत्पन्न बालक राजा होता है ॥२७॥

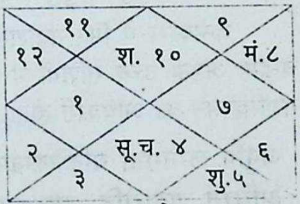

राजयोग

यदा कवीज्यौ भवतश्चतुर्थे नृपालबालोऽपि च भूमिपाल: ।
कुलीरगो देवगुरु: सचन्द्रो नृपालबालं प्रकरोति बालम् ॥२८॥

अन्वय:—यदा कवीज्यौ चतुर्थे भवत: (तदा) नृपालबालोऽपि भूमिपाल: (भवति) (यदा) सचन्द्र: देवगुरु: कुलीरग: (तदा) बालं नृपालबालं प्रकरोति ॥२८॥

यदि जन्मकाल में बृहस्पति और शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित हों, तो राजपुत्र राजा होता है ।

यदि जन्माङ्ग में चन्द्रमा के साथ बृहस्पति कर्क राशिगत हो तो साधारण कुलोत्पन्न बालक भी राजा होता है ॥२८॥

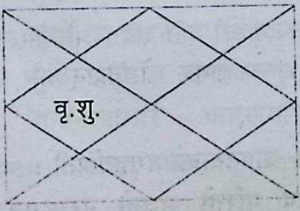

राजयोग

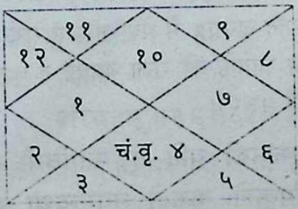

विशिष्ट राजयोग

यदेन्द्रमन्त्री विधुजं प्रपश्येद्गुणज्ञविज्ञं नृपतिं करोति ।
प्रसूतिकाले यदि पञ्चराशौ चैकोऽपि बालं कुरुते नृपालम् ॥२९॥

अन्वय:—प्रसूतिकाले यदेन्द्रमन्त्री विधुजं प्रपश्येत् तदा गुणज्ञविज्ञं नृपतिं करोति, यदा पञ्चराशौ च एकोऽपि (बली शुभग्रह:) तदा बालं नृपालं कुरुते ॥२९॥

जन्माङ्ग में यदि बृहस्पति बुध से दृष्ट हो तो राजपुत्र गुणज्ञ और विद्वान् राजा होता है ।

प्रसूतिकाल में जिसके पञ्चम भाव में एक भी बलवान ग्रह स्थित हो तो राजकुलोत्पन्न बालक राजा होता है ॥२९॥

हितलवे तपनो विधुनेक्षितो नृपसुतं कुरुते च नृपोत्तमम् ।
विधुसुतः सविधुः कुरुते नृपं भवति तुङ्गगतो यदि जन्मनि ॥३०॥

अन्वयः—यदि जन्मनि विधुनेक्षितः तपनः हितलवे तदा नृपसुतं नृपोत्तमं कुरुते यदि जन्मनि सविधुः विधुसुतः तुङ्गगतः भवति तदा नृपं कुरुते ॥३०॥

जन्मकाल में मित्र नवांशस्थ सूर्य पर यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तथा बुध और चन्द्रमा अपनी उच्च राशियों में स्थित हों, तो उक्त दोनों स्थितियों में राजा का पुत्र राजसिंहासन का अधिकारी होता है ॥३०॥

जनुषि लग्नगतो यदि लग्नपो बलयुतः किल कण्टकगोऽपि वा ।
अविरतं प्रकरोति तदा नृपं नृपजमेव न चित्रमिति स्फुटम् ॥३१॥

अन्वयः—यदि जनुषि बलयुतः लग्नपः लग्नगतः कण्टकगोऽपि वा तदा किल अविरतं नृपजमेव नृपं करोति चित्रमिति स्फुटम् ॥३१॥

लग्न का स्वामी बलवान होकर यदि जन्माङ्ग के लग्नस्थान में स्थित हों अथवा अन्य किसी भी केन्द्रस्थान में स्थित हो तो जातक राजा होता है। यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है ॥३१॥

रविरजे शशिना बलिना युतो भवति भूमिपतिं कुरुते शिशुम् ।
द्रविड़केरलदेशसमुद्भवं कृतिवरं च परत्र धनेश्वरम् ॥३२॥

अन्वयः—बलिना शशिना युतः रविः अजे भवति (तदा) शिशुं भूमिपतिं कुरुते, द्रविड़केरलदेशसमुद्भवं कृतिवरं च परत्र धनेश्वरम् ॥३२॥

यदि जन्माङ्ग में मेष राशि में सूर्य और चन्द्रमा की युति द्रविड और केरल प्रदेश में उत्पन्न जातक को राजा बनाती है। अन्यत्र उत्पन्न जातक को विद्वान् और धनपति बनाती है ॥३२॥

गुरुकवी यदि तुङ्गगताविमौ जनुषि कण्टककोणगृहाश्रितौ ।
नृपकुले कुरुतो नृपमन्यथा द्रविणपं परितो भवतो नरम् ॥३३॥

अन्वयः—यदि जनुषि इमौ गुरुकवी तुङ्गगतौ कण्टककोणगृहाश्रितौ भवतः (तदा) नृपं नृपकुले कुरुतः, अन्यथा परितः द्रविणपं नरं (कुरुतः) ॥३३॥

जिसके जन्माङ्ग में बृहस्पति और शुक्र अपनी-अपनी उच्च राशियों में स्थित होकर यदि त्रिकोण या केन्द्रस्थ हों तो राजकुलोत्पन्न बालक राजा होता है तथा अन्य कुल का जातक धनपति होता है ॥३३॥

श्रीछत्र योग

प्रसूतिकाले यदि सर्वखेटैस्तनुव्ययाऽगाऽर्थगृहस्थितैश्चेत् ।
पुरातनात्पुण्यत एव पुंसां श्रीच्छत्रयोगं प्रवदन्ति सन्तः ॥३४॥

अन्वय:—यदि प्रसूतिकाले सर्वखेटै: तनुव्ययाऽगाऽर्थगृहस्थितै: चेत् (तदा) पुरातनात् सन्त: पुण्यत एव पुंसां श्रीच्छत्रयोगं प्रवदन्ति ॥३४॥

जन्मकाल में समस्त ग्रह यदि लग्न, द्वादश, सप्तम और द्वितीय भावों में स्थित हों, तो पूर्वजन्मकृत पुण्यसङ्कुल के कारण जातक छत्र धारण करने वाला होता है। सन्तों ने इस योग को श्रीछत्र योग कहा है ॥३४॥

यह भी राजयोग होता है।

यदा जीवो लग्ने मकरमपहाय प्रवसति
तदालं भूपालं नृपतिकुलबालं जनयति।
भवत्येवं चन्द्रो जनुषि जनुरङ्गं च कलया
परिक्रान्त: केन्द्रे नरपतिसुतं भूपतिपरम् ॥३५॥

अन्वय:—यदा जनुषि मकरम् अपहाय जीव: लग्ने प्रवसति तदा: नृपतिकुलबालं भूपालं जनयति, एवं कलया (पूर्ण:) चन्द्र: (नीचम् अपहाय) जनु: अङ्गं केन्द्रे च परिक्रान्त: (तदा) नरपतिसुतं परं भूपति: भवति ॥३५॥

मकर राशि से इतर राशि का बृहस्पति लग्न अथवा अन्य केन्द्रभावों में स्थित हो तो ऐसा राजपुत्र निश्चय ही राजा होता है।

इसी प्रकार वृश्चिक से इतर राशि का पूर्ण किरणों से युक्त चन्द्रमा यदि लग्न या अन्य केन्द्रभावों में स्थित हो, तो राजकुलोत्पन्न जातक राजा होता है ॥३५॥

सुखागारस्वामी भवति नवमे वाथ दशमे
सुखे वा लग्ने वा हितलवगतो वा शुभखगै:।
युतो दृष्टो दन्तावलतुरगयानेन नितरां
जनानामागारं कनकमणिसङ्घै: परिवृतम् ॥३६॥

अन्वय:—(यदा) शुभखगैर्युत: दृष्ट: हितलवगत: सुखागारस्वामी नवमे वाऽथ दशमे वा सुखे वा लग्ने भवति (तदा) जनानाम् आगारं दन्तावलतुरगयानेन (तदा) कनकमणिसङ्घै: नितरां परिवृतम् ॥३६॥

चतुर्थ भाव का स्वामी जन्माङ्ग के नवम, दशम, चतुर्थ अथवा लग्न में मित्र नवांश का होकर स्थित हो, शुभ ग्रह से युत अथवा दृष्ट हो तो जातक हाथी-घोड़े आदि वाहनों से सुशोभित होता है तथा उसका धनागार स्वर्ण-रत्नादि से परिपूर्ण रहता है ॥३६॥

पञ्चमे भवति कर्मभावपे कान्तिभाजि गजवाजिजं सुखम्।
सर्वतोऽस्य विदिता ततो भवेदादिगन्तमतुला यशोलता ॥३७॥

अन्वय:—(यदा) कर्मभावपे पञ्चमे भवति (तदा) कान्तिभाजि गजवाजिजं सुखं भवेत् तत: अस्य बालस्य सर्वत: आदिगन्तमतुला यशोलता विदिता भवेत् ॥३७॥

दशम भाव का अधिपति यदि पञ्चम भाव में स्थित हो तो जातक हाथी-घोड़े आदि वाहनों के सुख से सुखी होता है और उसकी कीर्तिलता दिगन्त में विस्तीर्ण होती है ॥३७॥

चन्द्रकृत् राजयोग

भवति चन्द्रमसो दशमाधिपो जनुषि केन्द्रनवद्विसुतोपगः।
अतिविचित्रमणिव्रजमण्डितो वसुमतौ वसुभूषणसंयुतः ॥३८॥

अन्वयः—जनुषि चन्द्रमसः दशमाधिपः केन्द्रनवद्विसुतोपगः (भवति) (तदा) अतिविचित्रमणिव्रजमण्डितः वसुमतौ वसुभूषणसंयुतः भवति ॥३८॥

चन्द्राधिकृत राशि से दशम भाव का स्वामी केन्द्रभावों में, नवम, द्वितीय या पञ्चम भावों में स्थित हो, तो जातक विचित्र मणियों से युक्त, धन और आभूषणों से सम्पृक्त राजा होता है ॥३८॥

चन्द्राक्रान्तभपः सुखालयगतो दन्तावलानां सुखं
मुक्तास्वर्णमणिव्रजामलयशःपुञ्जं विचित्रालयम्।
भृत्यापत्यकलत्रमित्रपटलीविद्याविनोदं तथा
पुण्यं सन्तनुते मुदं नरपतेरर्थं नराणामिह ॥३९॥

अन्वयः—(यदा) चन्द्रक्रान्तभपः सुखालयगतः (तदा) नराणां दन्तावलानां सुखं, मुक्तास्वर्णमणिव्रजामलयशः विचित्रालयम् तथा भृत्यापत्यकलत्रमित्रपटलीविद्याविनोदं तथा पुण्यं, मुदं एवं नरपतेः अर्थं सन्तनुते ॥३९॥

चन्द्राक्रान्त राशि के स्वामी यदि उससे चतुर्थ भाव में स्थित हों, तो जातक हाथी के सुख का भोग करने वाला मोती, स्वर्ण, मणिरत्नादि से शोभित अमल यशःपुञ्ज का स्वामी; दास, दासियों, स्त्री-पुत्रादिकों, मित्रों से युक्त, विद्याविनोदी एवं धन से परिपूर्ण होता है ॥३९॥

सुनफा-अनफा-दुरधरा योग

व्ययगतैरनफा रविवर्जितैर्धनगतैः खचरैः स्वनफा विधोः।
उभयतोऽपि गतैरुदिता नृणां दुरुधरा मधुराशनभोगदा ॥४०॥

अन्वयः—विधोः व्ययगतैः रविवर्जितैः खचरैः अनफा (तथा) धनगतैः स्वनफा, उभयतः अपि गतैः दुरुधरा योगः नृणां मधुराशनभोगदा उदिता ॥४०॥

सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह यदि चन्द्राधिष्ठित राशि से द्वादश भाव में स्थित हो तो **अनफा** योग होता है। चन्द्राधिष्ठित राशि से द्वितीय भाव में सूर्य से इतर कोई ग्रह स्थित हो **स्वनफा** या **सुनफा** योग होता है। चन्द्राधिष्ठित राशि के दोनों ओर अर्थात् द्वितीय और द्वादश भावों में सूर्य के अतिरिक्त ग्रह स्थित हों तो **दुरुधरा** नामक योग होता है, जो मनुष्यों को मधुर भोजन का प्रेमी बनाता है ॥४०॥

अनफायोग-फल

जनिमतामनफा कुरुतेतरां गुणवती युवतीरतिवर्द्धनम्।
नृपसभापटुताममलं यशो वरपशोरपि सौख्यकरं परम् ॥४१॥

अन्वयः—जनिमतां अनफा (योगे) गुणवती युवती रतिवर्द्धनं नृपसभापटुताम् अमलं यशः वरपशोः अपि परमं सौख्यकरं कुरुते ॥४१॥

जिस व्यक्ति के जन्माङ्ग में अनफा योग हो, उसे गुणवन्ती स्त्री प्राप्त होती है, रतिक्रीडा की सामर्थ्य में वृद्धि होती है। वह राजा की सभा में अपनी वाक्पटुता से अमल यश को प्राप्त करता है तथा सुन्दर श्रेष्ठ पशुधन से सुखी होता है ॥४१॥

स्वनफा या सुनफा योगफल

भुजबलेन रमापरमालयं जनिमतां गरिमा स्वनफा यदा।
अबलयाऽमलया नवयानभूविभुतयाद्भुतया परमं सुखम् ॥४२॥

अन्वयः—यदा जनिमतां स्वनफा योगः (तदा) भुजबलेन रमा परमालयं गरिमा, अबलया अमलया, नवयानभूविभुतया अद्भुतया परमं सुखं (भवति) ॥४२॥

जिसके जन्माङ्ग में सुनफा योग होता है वह अपने पुरुषार्थ से लक्ष्मी को अपने गृह में अधिष्ठित कर लेता है तथा सुन्दर स्त्री, नूतन वाहन एवं भूसम्पदा के सुख से परम सुखी होता है ॥४२॥

दुरुधरायोग फल

दुरुधरा बहुधा वसुधावसुव्रजसुवारणवाजिसुखं नृणाम्।
वितनुते नृपतेरतुलं यशो गुणकलापपटुत्वमिहाद्भुतम् ॥४३॥

अन्वयः—(यदा) नृणां दुरुधरायोगः (तदा) बहुधा वसुधावसुव्रजसुवारणवा-जिसुखं (वितनुते) नृपतेः अतुलयशः अद्भुतम् इह गुणकलापपटुत्वं च वितनुते ॥४३॥

दुरुधरा योगोत्पन्न व्यक्ति विपुल भू-सम्पदा एवं हाथी-घोड़े आदि के सुख से सुखी तथा अपने अद्भुत गुणों और चातुर्य से राजा से विपुल धन और यश प्राप्त करता है।

केमद्रुमयोग-लक्षण

न धने न व्यये खेटाश्चन्द्रादिह भवन्ति चेत्।
तदा केमद्रुमं प्राहुः पण्डिता मिहिरादयः ॥४४॥

अन्वयः—यदि चेत् चन्द्रात् न धने न व्यये खेटाः भवन्ति तदा मिहिरादयः पण्डिताः केमद्रुमं इह प्राहुः ॥४४॥

चन्द्राधिष्ठित भाव से द्वितीय और द्वादश भावों में यदि कोई ग्रह (सूर्य के अतिरिक्त) न स्थित हो तो **केमद्रुम** योग होता है। ऐसा वराहमिहिरादि पण्डितों का कहना है ॥४४॥

केमद्रुमयोग-फल

केमद्रुमे सुरपतेरपि नन्दनोऽयं
देशान्तरं व्रजति पुत्रकलत्रहीनः ।
धर्मच्च्युतो विकलितो गदसङ्घभीतो
नानाधितापसहितो महितोषहीनः ॥४५॥

अन्वयः—केमद्रुमे (योगे) सुरपतेः नन्दनः अपि अयं पुत्रकलत्रहीनः देशान्तरं व्रजति, (तथा) धर्मच्युतः विकलितः गदसंघभीतः नानाधितापसहितः महितोषहीनः व्रजति ॥४५॥

केम्रदुम योग में उत्पन्न जातक इन्द्र देवता की सन्तान होने पर भी स्त्री-पुत्रादि से हीन, धर्म से च्युत, रोगार्त, दैहिक, दैविक, भौतिक त्रिताप से सन्तप्त, विकल होकर देश-देशान्तर में भ्रमण करता है ॥४५॥

सुनफादि चान्द्र योगों के स्वरूप के सम्बन्ध में अनेक मतान्तर ग्रन्थान्तरों में मिलते हैं। किसी-किसी के मतानुसार यदि चन्द्रमा से केन्द्र में ग्रह स्थित हों और चन्द्रमा से द्विर्द्वादश भाव ग्रहशून्य हों, अथवा यदि चन्द्रमा ग्रहयुक्त हो, तो केमद्रुम योग भङ्ग हो जाता है और जातक उसके अनिष्ट फल से मुक्त हो जाता है। सत्याचार्य, गार्गी, कल्याणवर्मा आदि आचार्यों ने चन्द्रराशि से द्विर्द्वादश भावों में सूर्येतर ग्रहों की स्थिति से क्रमशः सुनफा, अनफा, दुरुधरा आदि योगों को स्वीकार किया है—

सुनफा त्वनफायोगौ दौरुधुरश्चन्द्रसंस्थितक्षेत्रात् ।
प्राक्पृष्ठतो ग्रहेन्द्रैरुभयगतैस्तेषु रविवर्ज्यम् ॥
केन्द्रगोऽत्र योगोऽन्यथा भवेद्यत्र गर्हितं जन्म । (सत्याचार्य)

व्ययार्थकेन्द्रगश्चन्द्राद्विना भानु न चेद् ग्रहाः ।
कश्चित्स्याद्वा विना चन्द्रं लग्नकेन्द्रगतोऽथवा ॥
योगं केमद्रुमो नाम तदा स्यात्तत्र गर्हितः ।
भवन्ति निन्दिताचारा दरिद्रापत्तिसंयुताः ॥ (गार्गी)

सुनफानफादुरुधराः क्रमेण योगा भवन्ति रविरहितैः ।
वित्तान्त्योभयसंस्थैः कैरववनवान्धवाद्विहगैः ॥
एते च यदा योगाः केन्द्रग्रहवर्जितः शशाङ्कश्च ।
केमद्रुमोऽतिकष्टः शशिनि च सर्वग्रहादृष्टे ॥ (कल्याणवर्मा)

श्रुतिकीर्ति के अनुसार चन्द्रराशि से चतुर्थ और दशम भावों में यदि सूर्येतर ग्रह स्थित हो तो क्रमशः सुनफा और अनफा योग होते हैं। यदि उक्त दोनों भावों में ग्रह स्थित हों तो दुरुधरा और चतुर्थ और दशम भाव यदि ग्रहरहित हों तो केमद्रुम योग होता है—

चन्द्राच्चतुर्थै: सुनफा दशमस्थितै: कीर्तितोऽनफा विहगै: ।
उभयस्थितैर्दुरुधरा केमद्रुमसंज्ञितोऽन्यथा योग: ॥ (श्रुतिकीर्ति)

जीवशर्मा के मतानुसार चन्द्रमा की नवमांश राशि से द्वितीय द्वादश भावों में ग्रहस्थिति से सुनफादि योग बनते हैं—

यद्राशिसंज्ञं शीतांशुर्नवांशे जन्मनि स्थित: ।
तद्द्वितीयस्थितं योग: सुनफाख्य: प्रकीर्तित: ॥
द्वादशैरनफा ज्ञेया ग्रहैर्द्विर्द्वादशस्थितै: ।
प्रोक्तो दुरुधरायोगोऽन्य: केमद्रुम: स्मृत: ॥ (जीवशर्मा)

सुनफा और अनफा योग के ३१-३१ और दुरुधरा योग के १८० भेद होते हैं—

त्रिंशत्सरूपा: सुनफानफाख्या: षष्टित्रयं दौरुधरे प्रभेदा: । (कल्याणवर्मा)

भौमादि पाँच ग्रहों से बनने वाले सुनफादि (सुनफा-अनफा-दुरुधरा) योगों के फल अलग-अलग सारावली आदि विभिन्न जातक ग्रन्थों मे देखे जा सकते हैं। जिज्ञासुओं की सुविधा के लिए उन्हें यहाँ उद्धृत करना समीचीन होगा—

सुनफा योगफल

विक्रमवित्तप्रायो निष्ठुरवचनश्च भूपतिश्चण्ड: ।
हिंस्रो दम्भविरोधी सुनफायां भौमसंयोगे ॥
श्रुतिशास्त्रज्ञेयकुशलो धर्मपर: काव्यकृन्मनस्वी च ।
सर्वहितो रुचिरतनु: सुनफायां सोमजे भवति ॥
विद्याचार्यं ख्यातं नृपतिं नृपतिप्रियं वाऽपि ।
सुकुटुम्बधनसमृद्धं सुनफायां सुरगुरु: कुरुते ॥
स्त्रीक्षेत्रवित्तविभवश्चतुष्पाढ्य: सुविक्रमो भवति ।
नृपसत्कृत: सुधीरो दक्ष: शुक्रेण सुनफायाम् ॥
निपुणमतिग्रामपुरैर्नित्यं सम्पूजितो धनसमृद्ध: ।
सुनफायां रविपुत्रे क्रियासु युक्तो भवेद्धीर: ॥

अनफा योगफल

चोरस्वामी धृष्ट: स्ववशी मानी रणोत्कट: क्रोधी ।
श्रेष्ठ: श्लाघ्य: सुतनु: कुजेऽनफायां सुलाभश्च ॥
गन्धर्वलेखनपटु: कवि: प्रवक्त: नृपाप्तसत्कार: ।
रुचिरतनुस्त्वनफायां प्रसिद्धकर्मा बुधेन भवेत् ॥
गाम्भीर्यसत्त्वमेधास्थानरणे बुद्धिमान् नृपाप्तयशा: ।
अनफायां त्रिदशगुरौ सञ्जात: सत्कविर्भवति ॥
युवतीनामतिसुभग: प्रणयी क्षितिपस्य भोगवान् कान्त: ।
ख्यात: कनकसमृद्धस्त्वनफायां भार्गवे भवति ॥

विस्तीर्णभुजो नेता गृहीतवाक्यश्चतुष्पदसमृद्धः।
दुर्वनितायां भक्तो गुणसहितश्चार्कपुत्रेण।

दुरुधरा योगफल

आनृतो बहुवित्तो निपुणोऽतिशठोऽधिको लुब्धः।
वृद्धासती प्रसक्तः कुलाग्रणीः शशिनि भौमबुधमध्ये॥
ख्यातः कर्मसु विभवी बहुजनवैरस्त्वमर्षणो हृष्टः।
कुलरक्षी कुजगुर्वोः सङ्ग्रहशीलः शशिनि मध्ये॥
उत्तमरामः सुभगो विवादशीलः शुचिर्भवेद् दक्षः।
व्यायामी रणशूरः सितारयोर्मध्ये चन्द्रे॥
कुत्सितयोषिद्रमणो बहुसञ्चयकारको व्यसनसक्तः।
क्रोधी पिशुनो रिपुहा यमारयोः स्याद्दुरुधरायाम्॥
धर्मपरः शास्त्रज्ञो वाचालः सत्कविधनोपेतः।
त्यागयुतो विख्यातो बुधगुरुमध्ये स्थिते चन्द्रे॥
प्रियवाक् सुभगः कान्तः प्रनृत्तगेयादिषु प्रियो भवति।
सेव्यः शूरो मन्त्री बुधसितयोर्दुरुधरायोगे॥
देशाद्देशं गच्छति वित्तपरो नातिविद्यया सहितः।
चन्द्रेऽन्येषां पूज्यः स्वजनविरोधी ज्ञमन्दयोर्मध्ये॥
धृतिमेधाशौर्ययुतो नीतिज्ञः कनकरत्नपरिपूर्णः।
ख्यातो नृपकृत्यकरो गुरुसितयोर्दुरुधरायोगे॥
सुखनयविज्ञानयुतः प्रियवाग्विद्वान् धुरन्धरोऽप्यार्यः।
शान्तो धनी सुरूपश्चन्द्रे गुरुभानुजान्तःस्थे॥
वृद्धचरितं कुलोग्र्यं निपुणं स्त्रीवल्लभं धनसमृद्धम्।
नृपसत्कृतं बहुधनं कुरुते चन्द्रः सितासितयोः॥

केमद्रुमभङ्गयोग

शुक्रेज्यसौम्यसहितोऽपि च कण्टकस्थो
वा पूर्णबिम्ब इह यस्य भवेन्मृगाङ्कः।
केन्द्राणि खेचरयुतानि तदा नराणां
केमद्रुमोद्भवफलं विफलत्वमीयात्॥४६॥

अन्वयः—यस्य पूर्णबिम्बः मृगाङ्कः शुक्रेज्यसौम्यसहितोऽपि कण्टकस्थः वा केन्द्राणि खेचरयुतानि (भवेयुः) तदा नराणां केमद्रुमोद्भवफलं विफलत्वमीयात्॥४६॥

शुक्र, बृहस्पति और बुध के साथ यदि पूर्ण रश्मियों से युक्त चन्द्रमा केन्द्रस्थ हो तथा अन्य ग्रह भी केन्द्रगत हों तो जन्माङ्ग में उपस्थित केमद्रुम योग को निष्फल बना देते हैं॥४६॥

अन्य दारिद्र्ययोग

ह्रदयोग

जनुषि नीचगताः सकला ग्रहा यदि भवन्ति तदा ह्रदसंज्ञकः ।
ह्रदभवो विकलो विभवोनितो रिपुहतो नितरां शठतायुतः ।।४७।।

अन्वयः—यदि जनुषि सकलाः ग्रहाः नीचगताः भवन्ति, तदा ह्रदसंज्ञकः (योगः) ह्रदभवः (नरः) विकलः विभवोनितः रिपुहतः (तथा) नितरां शठतायुतः (भवति) ।।४७।।

जन्मकाल में यदि समस्त ग्रह अपनी-अपनी नीच राशि में स्थित हों तो ह्रदसंज्ञक योग होता है। इस योग में उत्पन्न जातक विकल, धनहीन, शत्रुपीड़ित और शठ (दुष्टप्रकृति का) होता है ।।४७।।

फणियोग

घटगते तपने क्रियगे शनावलिगते च विधौ निजनीचभे ।
भृगुसुते जनने फणिसंज्ञको विकलितं कुरुते नरपुङ्गवम् ।।४८।।

अन्वयः—जनने घटगते तपने, क्रियगे शनौ, अलिगते विधौ, निजनीचभे च भृगुसुते, (तदा) फणिसंज्ञकः (योगः), नरपुङ्गवं विकलितं कुरुते ।।४८।।

जन्माङ्ग में यदि कुम्भ राशि में सूर्य, मेष राशि में शनि, वृश्चिक राशि में चन्द्रमा तथा अपनी नीच राशि (कन्या) में शुक्र स्थित हो तो फणियोग होता है। इस योग में उत्पन्न श्रेष्ठ पुरुष भी हर प्रकार से संत्रस्त रहता है ।।४८।।

काकयोग

अजगते भृगुजे रविजे जनुर्वृषभगे दिनपेऽनिमिषे विधौ ।
अवनिजे यदि कर्कटगेहगे भवति काकभवो विभवोनितः ।।४९।।

अन्वयः—(यस्य) जनुः अजगते भृगुजे रविजे, वृषभगे दिनपे, अनिमिषे विधौ, अवनिजे कर्कटगेहगे (तदा) काकभवः (योगः) विभवोनितः भवति ।।४९।।

शनि और शुक्र मेष राशि में युत हों, वृष राशि में सूर्य, मीन राशि में चन्द्रमा तथा कर्क राशि में भौम स्थित हों तो काकसंज्ञक योग होता है। इस योग में उत्पन्न जातक विभवहीन दरिद्र होता है ।।४९।।

अन्य दारिद्र्ययोग

विधुयुतो घटभे दिवसाधिपो गुरुमहीजकवीनसुताः पुनः ।
यदि भवन्ति च नीचगता जनुर्व्रजति राजसुतोऽपि दरिद्रताम् ।।५०।।

अन्वयः—यदि जनुः विधुयुतः दिवसाधिपः घटभे पुनः गुरुमहीजकवीनसुताः नीचगताः भवन्ति (तदा) राजसुतोऽपि दरिद्रतां व्रजति ।।५०।।

जन्माङ्ग में यदि कुम्भ राशि का सूर्य हो तथा बृहस्पति, भौम, शुक्र और शनि अपनी नीच राशियों में स्थित हो तो राजपुत्र भी दरिद्र हो जाता है ॥५०॥

हुताशनयोग

शनिमहीजनिशाकरचन्द्रजा यदि जनुः किल नीचमुपाश्रिताः ।
मकरभे भृगुजोऽपि हुताशनः परमतापकरो न करोति शम् ॥५१॥

अन्वयः—यदि जनुः शनि-महीज-निशाकर-चन्द्रजाः किल नीचमुपाश्रिताः, भृगु-जोऽपि मकरभे (तदा) हुताशनः (योगः) परमतापकरः शम् न करोति ॥५१॥

यदि शनि, मंगल, चन्द्रमा और बुध अपनी नीच राशियों में स्थित हों तथा शुक्र मकर राशि में स्थित हो तो हुताशननामक योग होता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति सदैव सन्तप्त रहता है। उसे कभी भी शान्ति या सुख नहीं प्राप्त होता ॥५१॥

अन्य दारिद्र्ययोग

यदि भवन्ति नवायदशाधिपा जनुषि नीचगता विकला भृशम् ।
नृपतियोगजमङ्गभृतां फलं परिणमत्यपि निष्फलतामिह ॥५२॥

अन्वयः—यदि जनुषि नव-आय-दश-अधिपाः नीचगताः विकलाः च भवन्ति (तदा) अङ्गभृतां नृपतियोगजं फलं भृशम् इह निष्फलतां परिणमति ॥५२॥

जन्माङ्ग में नवम, दशम और एकादश भावों के स्वामी यदि नीच राशि में अथवा विकलावस्था में हों तो राजयोग होने पर भी वह निष्फल होता है ॥५२॥

राजभङ्गयोग

रिपुमन्दिरगैरेव वैरिभावगतैरपि ।
राजयोगा विनश्यन्ति दिवाकरकरोपगैः ॥५३॥

अन्वयः—(यदि राजयोगकारकाः) रिपुमन्दिरगैः वैरिभावगतैः अपि (वा) दिवाकरकरोपगैः तदा राजयोगाः विनश्यन्ति ॥५३।

यदि राजयोगकारक ग्रह शत्रु राशि में, शत्रुभाव में (छठे भाव में) अथवा सूर्य सान्निध्य में अस्त हों तो राजयोग को निष्फल कर देते हैं ॥५३॥

भवति वीक्षणवर्जितमङ्गिनां जननलग्नमिहाम्बरगामिनाम् ।
जननभं च नृपालभवो नरो जगति यातितरामतिरङ्कताम् ॥५४॥

अन्वयः—(यदि) अंगिनां जननलग्नं जननभं च अम्बरगामिनां वीक्षणवर्जितं भवति (तदा) जगति नृपालभवः नरः अतितरां रङ्कतां याति ॥५४॥

जन्मलग्न और जन्मराशि दोनों पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो, तो राजपुत्र भी दरिद्रता को प्राप्त होता है ॥५४॥

भद्रायां व्यतिपाते वा तथा केतूदये जनिः।
यस्य तस्य विनश्यन्ति राजयोगफलान्यपि ॥५५॥

अन्वयः—यस्य भद्रायां व्यतिपाते वा तथा केतूदये जनिः तस्य राजयोगफलानि अपि विनश्यन्ति ॥५५॥

भद्राकाल में, व्यतिपात योग में और केतु (पुच्छल तारा) के उदयकाल में जिसका जन्म होता है, उसे राजयोग का फल नहीं प्राप्त होता ॥५५॥

परमनीचलवे यदि चन्द्रमा भवति जन्मनि तस्य विशेषतः।
नृपतियोगफलं विफलं ततः कलयतीति वदन्ति मुनीश्वराः ॥५६॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले राजयोगतद्भङ्ग-
दरिद्रयोगाध्यायः सप्तमः ॥७॥

अन्वयः—(यस्य) जन्मनि यदि चन्द्रमा परमनीचलवे भवति 'तस्य' विशेषतः नृपतियोगफलं विफलं कलयति इति मुनीश्वराः वदन्ति ॥५६॥

जन्म के समय यदि चन्द्रमा परम नीच नवांश में स्थित हो तो जातक को राजयोग का फल नहीं प्राप्त होता—ऐसा श्रेष्ठ मुनियों का कथन है ॥५६॥

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का सप्तम अध्याय समाप्त हुआ ॥७॥

•

अथाष्टमोऽध्याय:

सामुद्रिकलक्षणम्

सामुद्रिक-विचार

जनने प्रबलो यस्य राजयोगो भवेद्यदि।
करे वा चरणेऽवश्यं राजचिह्नं प्रजायते ॥१॥

अन्वयः—यस्य जनने प्रबल: राजयोग: भवेत् (तस्य) करे चरणे वा अवश्यं राजचिह्नं प्रजायते ॥१॥

जिसके जन्माङ्ग में प्रबल राजयोग होता है, उसके हाथ अथवा पैर में अवश्य राजचिह्न होता है ॥१॥

विशेष—हाथ और पैर से यहाँ हाथ और पैर का तलुआ ग्रहण करना चाहिए।

अनामा मूलगा रेखा सैव पुण्याभिधा मता।
मध्यमाङ्गुलिमारभ्य मणिबन्धान्तमागता ॥२॥
सोर्ध्वरेखा विशेषेण राज्यलाभकरी भवेत्।
खण्डिता दुष्टफलदा क्षीणा क्षीणफलप्रदा ॥३॥

अन्वयः—अनामा मूलगा रेखा सैव पुण्याभिधा मता, मध्यमाङ्गुलिमारभ्य मणि-बन्धान्तमागता, सा ऊर्ध्वरेखा विशेषेण राज्यलाभकरी भवेत् (यदि) खण्डिता (तदा) दुष्टफलदा (चेत्) क्षीणा क्षीणफलप्रदा भवेत् ॥२-३॥

अनामिका के मूल में स्थित सीधी ऊर्ध्वाध: रेखा पुण्यप्रदा होती है। मध्यमा अङ्गुलि से प्रारम्भ होकर मणिबन्ध तक विस्तीर्ण ऊर्ध्व रेखा विशेष रूप से राजसुखकारक होती है।

करतल में खण्डित रेखाएँ (अन्य किसी रेखा से कटने वाली रेखा) नेष्ट फल देती है तथा जो रेखा क्षीण होती है, वह मध्यम फल देती है ॥२-३॥

अङ्गुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य विराजते चारुयवो यशस्वी।
स्ववंशभूषासहितो विभूषायोषाजनैरर्थगणैश्च मर्त्यः ॥४॥

अन्वयः—यस्य पुरुषस्य अङ्गुष्ठमध्ये चारुयव: विराजते स मर्त्य: यशस्वी स्ववंशभूषासहित: विभूषायोषाजनै: अर्थगणैश्च (भवति) ॥४॥

जिस पुरुष के अङ्गुष्ठ के मध्य भाग में स्पष्ट सुन्दर यवचिह्न हो, वह यशस्वी, अपने कुल में श्रेष्ठ, आभूषण, धन-ऐश्वर्य और युवती-स्त्री से सम्पन्न होता है ॥४॥

वैसारिणो वाऽऽतपवारणो वा चेद्वारणो दक्षिणपाणिमध्ये ।
सरोवरं चाङ्कुश एव यस्य वीणा च राजा भुवि जायते सः ॥५॥

अन्वयः—यस्य (नरस्य) दक्षिणपाणिमध्ये चेद् वैसारिणः, आतपवारणः, वारणः वा, सरोवरं वा अङ्कुशं वीणा च (भवति) स भुवि राजा जायते ॥५॥

जिसके दक्षिण करतल में मत्स्य, छत्र और हाथी, सरोवर, अङ्कुश और वीणा के चिह्न हों, वह राजा होता है ॥५॥

मुसलशैलकृपाणहलाङ्कितं करतलं किल यस्य स वित्तपः ।
कुसुममालिकया फलमीदृशं नृपतिरेव नृपालभवे यदा ॥६॥

अन्वयः—यस्य किल करतलं मुसलशैलकृपाणहलाङ्कितं कुसुममालिकया च स्यात् तदा स वित्तपः, यदा ईदृशं फलं नृपालभवे तदा नृपतिरेव (भवति) ॥६॥

जिसके करतल में मुशल, पर्वत, कृपाण और हल के चिह्न अङ्कित हों, वह धनाढ्य होता है। यदि करतल में पुष्पमाला के चिह्न हों, तब भी वैसा ही फल होता है। यदि राजपुत्र की हथेली में ये चिह्न हों, तो वह राजा होता है ॥६॥

करतलेऽपि च पादतले नृणां तुरगपङ्कजचापरथाङ्गवत् ।
ध्वजरथासनदोलिकया समं भवति लक्ष्म रमापरमालये ॥७॥

अन्वयः—नृणां करतले पादतलेऽपि च तुरगपङ्कजचापरथाङ्गवत् ध्वजरथासन-दोलिकया समं लक्ष्मं (तदा) रमापरमालये भवति ॥७॥

जिसके हाथ और पैर के तलभाग में अश्व, कमल, धनुष, चक्र, ध्वजा, सिंहासन या पालकी के समान चिह्न हों उसके गृह में महालक्ष्मी सदा निवास करती हैं ॥७॥

कुम्भः स्तम्भो वा तुरङ्गो मृदङ्गः पाणावंघ्रौ वा द्रुमो यस्य पुंसः ।
चञ्चद्दण्डोऽखण्डलक्ष्म्या परीतः किंवा सोऽयं पण्डितः शौण्डिको वा ॥८

अन्वयः—यस्य पुंसः पाणौ अंघ्रौ कुम्भः स्तम्भः वा तुरङ्गः मृदङ्गः द्रुमः दण्डः वा (भवति तस्य) अखण्डलक्ष्म्या परीतः किंवा सोऽयं पण्डितः शौण्डिकः वा (भवति) ॥८॥

कुम्भ (घड़ा), स्तम्भ, अश्व, मृदङ्ग, छड़ी अथवा वृक्ष के चिह्न हों, वह पण्डित या मद्यविक्रेता होता है ॥८॥

विशालभालोऽम्बुजपत्रनेत्रः सुवृत्तमौलिः क्षितिमण्डलेशः ।
आजानुबाहुः पुरुषं तमाहुः क्षोणीभृतां मुख्यतरं महान्तः ॥९॥

अन्वयः—(यस्य) विशालभालः अम्बुजपत्रनेत्रः सुवृत्तमौलिः आजानुबाहुः तं पुरुषं क्षितिमण्डलेशः क्षोणिभृतां मुख्यतरं महान्तः आहुः ॥९॥

विशाल मस्तक, कमल की पंखुड़ी के समान नेत्र, सुन्दर वृत्ताकार ललाट—इन

चिह्नों से युक्त व्यक्ति भूमण्डल का स्वामी होता है। खड़े रहते जिसके हाथ घुटने का स्पर्श करें, वह महान् राजा होता है ॥९॥

नाभिर्गभीरा सरला च नासा वक्षःस्थलं रत्नशिलातलाभम्।
आरक्तवर्णौ खलु यस्य पादौ मृदू भवेतां स नृपोत्तमः स्यात् ॥१०॥

अन्वयः—यस्य नाभिः गभीरा सरला नासा च वक्षःस्थलं रत्नशिलातलाभम् (तथा) पादौ आरक्तवर्णौ मृदुश्च भवेतां स नृपोत्तमः स्यात् ॥१०॥

जिसकी नाभि गहरी और नासिका सीधी हो, रत्नशिला के समान सुचिक्कण और समतल वक्षस्थल हों तथा पैर कोमल और रक्ताभ हो तो वह श्रेष्ठ राजा होता है ॥१०॥

राजते करगो यस्य तिलोऽतुलधनप्रदः।
तथा पादतले पुंसां वाहनार्थसुखप्रदः ॥११॥

अन्वयः—यस्य करगः तिलः राजते स अतुलधनप्रदः तथा पादतले (तिलः) पुंसां वाहनार्थसुखप्रदः स्यात् ॥११॥

हाथ की हथेली में विद्यमान तिल अतुल धन देने वाला होता है। वही तिल यदि पादतल में हो तो वाहनादि सुख का कारक होता है ॥११॥

राजवंशप्रजातानां समस्तफलमीदृशम्।
अन्येषामल्पतां याति तथा व्यक्तं सुलक्षणम् ॥१२॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले सामुद्रिकलक्षणाध्यायोऽष्टमः ॥८॥

अन्वयः—राजवंशप्रजातानां ईदृशं समस्तं फलम् तथा अन्येषाम् अल्पतां याति (इति) सुलक्षणं व्यक्तम् ॥१२॥

राजवंश में उत्पन्न जातक में यदि उक्त चिह्न उपस्थित हों, तो पूर्ण फल देते हैं। अन्य कुलोत्पन्न जातक के अङ्गों में यदि उक्त चिह्न हों तो वह राजा के समान ही धनपति होता है ॥१२॥

उदयराज 9824480306

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का अष्टम अध्याय समाप्त हुआ ॥८॥

* केशवो एकादश भाववार 5 स्वके पतिनो दिदीवर्धिनी [illegible] हरिः।

अथ नवमोऽध्याय:

स्त्रीजातक:

शुभाशुभं पूर्वजनेर्विपाकात् सीमन्तिनीनामपि तत्फलं हि।
विवाहकालात्परत: प्रवीणैरसम्भवात्तत्पतिषु प्रकल्प्यम् ॥१॥

अन्वय:—सीमन्तिनीनाम् अपि शुभाशुभं पूर्वजने: विपाकात् (भवति) तत्फलं विवाहकालात् पर: तत्पतिषु असम्भवात् प्रवीणै: प्रकल्प्यम् ॥१॥

पूर्वजन्म के सञ्चित कर्मफल के अनुसार मनुष्यों को शुभाशुभ फल प्राप्त होते हैं। विवाहोपरान्त पति-पत्नी दोनों के फल एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। पति का भाग्यफल पत्नी को और पत्नी का भाग्यफल पति को भोगना होता है। अत: इसका सम्यग् विचार कर चतुर दैवज्ञ को फलादेश करना चाहिए ॥१॥

अतीवसारं फलमङ्गनानामुदीरितं शौनकनारदाद्यै:।
व्यक्तं यथा लग्ननिशाकराभ्यां मया तथैव प्रतिपाद्यते तत् ॥२॥

अन्वय:—यथा अङ्गनानां शौनकनारदाद्यै: उदीरितं तत् लग्ननिशाकराभ्यां तथैव मया व्यक्तं प्रतिपाद्यते ॥२॥

जन्मलग्न और चन्द्रमा से विचार कर जो फल शौनक, नारदादि महर्षियों ने कहे हैं, उसी के सारतत्त्व को मैं यहाँ प्रतिपादित करता हूँ ॥२॥

सौभाग्यं सप्तमस्थाने शरीरं लग्नचन्द्रयो:।
वैधव्यं निधनस्थाने पुत्रे पुत्रं विचिन्तयेत् ॥३॥

अन्वय:—(स्त्रीणां) सौभाग्यं सप्तमस्थाने, शरीरं लग्नचन्द्रयो:, वैधव्यं निधनस्थाने, पुत्रं पुत्रे विचिन्तयेत् ॥३॥

स्त्रियों के जन्माङ्ग में सप्तम भाव से सौभाग्य, लग्न और चन्द्रमा से शारीरिक सुख, अष्टम भाव से वैधव्य और पञ्चम भाव से पुत्रादि का विचार करना चाहिए ॥३॥

सौम्याभ्यां प्रवरा शुभत्रययुते जाया भवेद्भूपते:
सौम्यैकेन पतिप्रिया मदनभे दृष्टे युते जन्मनि।
पापैकेन पुनर्विलोलनयना पापद्वयेनाधमा
पापानां त्रितयेन सा परकुलं हत्वा पतिं गच्छति ॥४॥

अन्वय:—जन्मनि मदनभे सौम्याभ्यां दृष्टे युते प्रवरा (तथा) शुभत्रययुते दृष्टे भूपते: जाया भवेत्, सौम्यैकेन (युते दृष्टे) पतिप्रिया, पुन: पापैकेन (युते दृष्टे) विलो-

लनयना, पापद्वयेन (युते दृष्टे) अधमा, त्रितयेन पापानां (दृष्टे युते) सा पतिं हत्वा परकुलं गच्छति ॥४॥

स्त्री के जन्माङ्ग में दो शुभग्रह यदि सप्तम भाव में संयुक्त हों अथवा उसको देखते हों, तो जातका शुभ गुणों से युक्त पतिपरायणा होती है। यदि तीन शुभ ग्रह सप्तम भाव में संयुक्त हों अथवा सप्तम भाव पर दृष्टिपात करते हों तो जातका राजमहिषी होती है। यदि सप्तम भाव पर एक शुभ ग्रह की दृष्टि हो अथवा उससे युक्त हो तो जातका पतिप्रिया होती है। यदि जन्माङ्ग का सप्तम भाव एक पापग्रह से युत-दृष्ट हो तो जातका चञ्चल नेत्रों वाली, यदि दो पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो, तो अधम और सप्तम भाव यदि तीन पापग्रहों से युत या दृष्ट हो तो वह स्त्री पति का परित्याग कर अन्य कुल में जाती है ॥४॥

वैधव्ययोग

जनुःकाले यस्या मदनभवने वासरमणौ
पतिं त्यक्त्वा नूनं कुपितहृदया भूमितनये।
अवश्यं वैधव्यं सपदि कमलाक्षी रविसुते
जरां पापैर्दृष्टे निजपतिविरोधं व्रजति वा ॥५॥

अन्वयः—यस्या जनुः काले वासरमणौ मदनभवने सा कुपितहृदया नूनं पतिं त्यक्त्वा भूमितनये अवश्यं वैधव्यं, (यदा) रविसुते मदनभवने तदा कमलाक्षी सपदि जरां (गच्छति), वा पापैः दृष्टे निजपतिविरोधं व्रजति ॥५॥

जिस स्त्री के जन्माङ्ग के सप्तम भाव में सूर्य स्थित हो वह उग्र स्वभाव की और पति की उपेक्षा या परित्याग करने वाली होती है। यदि सप्तम भाव भौमयुक्त हो तो वैधव्यकारक होता है। सप्तम भाव में यदि शनि स्थित हो तो युवावस्था में ही उसमें वृद्धत्व के लक्षण उभर आते हैं और सप्तम भाव पर यदि पापग्रह की दृष्टि हो तो पति से मतैक्य नहीं होता। परस्पर सम्बन्ध अन्तर्विरोध से युक्त होता है ॥५॥

यस्याः शशाङ्के जनिलग्नभे वा रामर्क्षगे सा प्रकृतिः स्थिरा स्यात्।
शुभेक्षिते रूपवती गुणज्ञा पतिप्रिया चारुविभूषणाढ्या ॥६॥

अन्वयः—यस्याः शशाङ्के जनिलग्नभे वा रामर्क्षगे सा प्रकृतिः स्थिरा स्यात्, शुभेक्षिते रूपवती गुणज्ञा चारुविभूषणाढ्या पतिप्रिया स्यात् ॥६॥

जन्मकाल में जिस स्त्री के जन्माङ्ग में चन्द्रमा लग्न अथवा तृतीय भाव में स्थित हो, वह स्थिर प्रकृति की होती है। उक्त चन्द्रमा यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातका सुन्दर, गुणवती, पति में अनुरक्ता और सुन्दर आभूषणों से सम्पन्न होती है ॥६॥

यदाङ्गचन्द्रावसमे भवेतां तदा नराकारसमा कुरूपा।
पापेक्षितौ पापयुतौ विशेषाद् गदातुरा रूपगुणैर्विहीना ॥७॥

अन्वयः—यदाङ्गचन्द्रावसमे भवेतां तदा नराकारसमा कुरूपा (भवेत्) यदा (ते

अङ्गचन्द्रौ) पापेक्षितौ पापयुतौ भवेतां तदा विशेषाद् गदातुरा रूपगुणैः विहीना (स्यात्) ॥७॥

स्त्री के जन्माङ्ग में लग्न और चन्द्रमा विषम राशि के हों तो वह पुरुषाकृति—पुरुषों के समान आचरण करने वाली कुरूपा होती है। यदि उक्त लग्न और चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो जातका रूप-गुणविहीना और रोगिणी होती है ॥७॥

स्त्रियों के राजयोग

जनुःकाले यस्या मदनसदने दानवगुरौ
शुभाभ्यामाक्रान्ते गतवति तदा सा विधुमुखी।
गजेन्द्राणां मुक्ताफलविमलमालावृतकुचा
प्रिया पत्युर्नित्यं प्रभवति शचीवत्क्षितितले ॥८॥

अन्वयः—यस्या जनुःकाले शुभाभ्याम् आक्रान्ते दानवगुरौ मदनसदने गतवति तदा सा विधुमुखी गजेन्द्राणां मुक्ताफलविमलमालावृतकुचा पत्युः प्रिया नित्यं शचीवत् क्षितितले प्रभवति ॥८॥

जिस स्त्री के जन्माङ्ग के सप्तम भाव में शुक्र अन्य शुभ ग्रहों के साथ स्थित हो तो वह चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाली, स्तनों पर राजमुक्ता की माला धारण करने वाली, पतिप्रिया और शची (इन्द्र की पत्नी) के समान ऐश्वर्यशालिनी होती है ॥८॥

समाक्रान्ते लग्ने त्रिदशगुरुणा वाथ भृगुणा
बुधे कन्याराशौ मदनभवने भूमितनये।
मृगे कर्के चन्द्रे सति भवति लावण्यतिलका
तपोरेखायोषा प्रभवति विशेषात्क्षितिपतेः ॥९॥

अन्वयः—अथ लग्ने त्रिदश-गुरुणा वा भृगुणा समाक्रान्ते, बुधे कन्या- राशौ मदनभवने, भूमितनये मृगे, (तया) कर्के चन्द्रे सति लावण्यतिलका भवति (तथा) विशेषात् क्षितिपतेः तपोरेखा-योषा प्रभवति ॥९॥

जिस स्त्री के जन्मलग्न में बृह-स्पति या शुक्र स्थित हों, कन्या राशिगत बुध सप्तम भाव में, मकर में भौम तथा कर्क राशि में चन्द्रमा स्थित हो तो वह श्रेष्ठ लावण्यमयी एवं सुन्दरियों में श्रेष्ठ राजरानी होती है ॥९॥

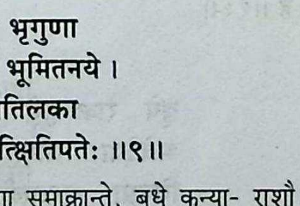

राजयोग

शशाङ्के कर्कस्थे भवति हि युवत्यां विधुसुते
तनौ जीवे मीने गवि भृगुसुते जन्मसमये।
सहस्रालीमान्या जगति नृपकन्या गुणवती
विशेषादेषा स्यान्नृपतिपतिका पुण्यलतिका ॥१०॥

अन्वयः—जन्मसमये शशाङ्के कर्कस्थे, युवत्यां विधुसुते, मीने जीवे तनौ (तथा च) गवि भृगुसुते भवति (तदा) सहस्रालो मान्या जगति नृपकन्या गुणवती विशेषाद् एषा नृपतिपतिका पुण्यलतिका स्यात् ॥१०॥

जिस स्त्री के जन्माङ्ग में कर्क राशि में चन्द्रमा, कन्या राशि में बुध, मीन राशि के लग्न में बृहस्पति तथा वृष राशि में शुक्र स्थित हो, तो जातका हजारों सखियों में श्रेष्ठ एवं गुणों से युक्त राजकन्या होती है, जो किसी राजा की रानी के पद पर पुण्यमूर्ति के समान सुशोभित होती है ॥१०॥

राजयोग

सप्तमभावस्थ सूर्यादि ग्रहफल

दिनपताविह कामनिकेतनं गतवति प्रवराऽप्यवरा भवेत् ।
जनुषि वल्लभभावविवर्जिता सुजनतारहिता वनिता भृशम् ॥११॥

अन्वयः—जनुषि दिनपतौ इह कामनिकेतनं गतवति (तदा) वनिता भृशं प्रवरापि अप्रवरा वल्लभभावविवर्जिता सुजनतारहिता भवेत् ॥११॥

जिसके जन्माङ्ग के सप्तम भाव में सूर्य स्थित हो तो जातका सुन्दर और श्रेष्ठ होते हुए भी दुष्ट स्वभाव की होती है। साथ ही पति-प्रेम से हीन एवं असज्जन स्त्री होती है ॥११॥

सप्तमस्थ चन्द्रफल

वृषे राकानाथे भवति मदने जन्मसमये
भवेदेषा योषा विमलवसना चारुवदना ।
विनम्रा मुक्तालीवलितकुचभारेण नितरां
परालीलालक्ष्मीरतिपतिरमेव क्षितितले ॥१२॥

अन्वयः—(यस्याः) जन्मसमये वृषे राकानाथे मदने भवेत् (तदा) एषा योषा विमलवसना, चारुवदना, विनम्रा, मुक्तालीवलितकुचभारेण नितरां क्षितितले परालीला-लक्ष्मीरतिपतिरमेव भवति ॥१२॥

जिस स्त्री के जन्माङ्ग के सप्तम भाव में वृष राशि का चन्द्रमा स्थित हो, वह निर्मल वस्त्र धारण करने वाली, अति सुन्दर शरीर की स्वामिनी एवं विनम्र स्वभाव वाली होती है। मोतियों की माला से सुशोभित सुन्दर कुचों को धारण करने वाली वह केलिक्रिया में निपुण कामदेव की पत्नी रति अथवा लक्ष्मी के समान रूपवती होती है ॥१२॥

अङ्गारके मदनमन्दिरमिन्दुभावं मन्दान्विते हरिभगे जननेऽङ्गनायाः ।
वैधव्यमेव नियतं कपटप्रबन्धाद्वाराङ्गना भवति सैव वराङ्गनापि ॥१३॥

अन्वयः—यस्याः अङ्गनायाः जनने मदनमन्दिरमिन्दुभावं अङ्गारके (वा) हरिभगे

मन्दान्वितेऽङ्गारके, तदा सैव नियतं वैधव्यं अथवा वराङ्गनाम् अपि कपटप्रबन्धाद् वाराङ्गना भवति ॥१३॥

यदि कर्क राशि का मङ्गल अथवा सिंह राशि का मङ्गल शनि के साथ सप्तम भाव में स्थित हो तो स्त्री को निश्चय ही वैधव्य देता है। ऐसी स्त्री कुलटा, व्यभिचारिणी एवं अच्छे कुल में उत्पन्न होकर भी वेश्या होती है ॥१३॥

सप्तमस्थ बुधफल

अनेकस्त्रीभर्ता भवति मखकर्त्ता च मदने
बुधे तुङ्गे यस्या जनुषि खलु तस्याः पतिरिह ।
स्वयं वामा कामाकुलितहृदया मोदकलया
परीता मुक्तालीरजतकनकालीमणिगणैः ॥१४॥

अन्वयः—यस्याः जनुषि तुङ्गे बुधे मदने तस्याः पति अनेकस्त्रीभर्ता, मखकर्ता (तथा) इह स्वयं वामा कामाकुलितहृदया मोदकलया मुक्तालीरजतकनकालीमणिगणैः परीता भवति ॥१४॥

जिस स्त्री के जन्माङ्ग के सप्तम भाव में उच्चस्थ बुध स्थित हो, उसका पति अनेक स्त्रियों का पति और अनेक यज्ञ-अनुष्ठानादि का कर्त्ता होता है। वह स्वयं कामपीड़ितहृदया, अनेक रत्नादि और रजत-स्वर्णादि से सम्पन्न होती है ॥१४॥

सप्तमस्थ बृहस्पतिफल

परिक्रान्ते यस्या मदनभवने देवगुरुणा
गुणज्ञा धर्मज्ञा निजपतिपदाब्जं भजति सा ।
मणीनां मालाभिः कनकघटिताभिश्च शिरसा
समाक्रान्ता कान्ता रतिपतिपताकेव शशिभे ॥१५॥

अन्वयः—यस्या मदनभवने देवगुरुणा परिक्रान्ते सा गुणज्ञा धर्मज्ञा निजपतिपदाब्जं भजति (यदि) शशिभे देवगुरुणा मदनभवने (तदा) मणीनां मालाभिः कनकघटिताभिश्च शिरसा समाक्रान्ता कान्ता रतिपतिपताकेव (भवति) ॥१५॥

जिस स्त्री के जन्माङ्ग के सप्तम भाव में उच्च का बृहस्पति स्थित हो, वह गुणवती, धर्मपरायणा, पति में पूर्णतया अनुरक्ता, स्वर्णखचित मणियों की माला को नखशिख धारण करने वाली और कामदेव की पताका के समान रूप-गुण-धन-वैभवादि से सम्पन्न होती है ॥१५॥

सप्तमस्थ शुक्रफल

कवौ यस्या जन्मन्यपि मदनगे मीनभवने
तदा कान्तो दान्तो रतिपतिकलाकौतुकपटुः ।

धनुर्द्धर्त्ता भर्ता स्वयमपि च सङ्गीतरसिका
विलोला पद्माक्षी वसनलसिता भूषणवृता ॥१६॥

अन्वयः—यस्या जन्मनि मीनभवने कवौ मदनगे तदा कान्तः दान्तः रतिपति-कलाकौतुकपटुः (तदा) धनुर्धर्त्ता भर्त्ता स्वयम् अपि च सङ्गीतरसिका विलोला पद्माक्षी वसनलसिता भूषणवृता (भवति) ॥१६॥

जिस स्त्री के जन्मकाल में मीनस्थ शुक्र सप्तम भाव में अवस्थित हो उसका पति अत्यन्त दयालु, कामकला में चतुर एवं धनुष धारण करने वाला अत्यन्त वीर होता है। जातका स्वयं भी सङ्गीत आदि ललित कलाओं में निष्णात, चञ्चल नेत्रों वाली कमल-नयनी एवं वस्त्राभूषण से सम्पन्न होती है ॥१६॥

सप्तमस्थ शनिफल

मदनभावगते तपनात्मजे पतिरतीवगदाकुलितो भवेत्।
मलिनवेषधरो विबलो महाञ्जनुषि तुङ्गगते प्रवरो धनी ॥१७॥

अन्वयः—(यदि) जनुषि तपनात्मजे मदनभावगते (तदा) पतिरतीव गदाकुलित मलिनवेषधरः महान् विबलः भवेत् (यदि) तपनात्मजे तुङ्गगते (तदा पतिः) प्रवरः धनं भवेत् ॥१७॥

जिस स्त्री के जन्माङ्ग में शनि सप्तम भावगत हो उसका पति रुग्ण, मलिन वेशधारी और बलहीन होता है; किन्तु यदि शनि अपनी उच्च राशि का होकर सप्तम भाव में स्थित हो तो उसका पति श्रेष्ठ और धनिक होता है ॥१७॥

सप्तमस्थ राहुफल

सप्तमे सिंहिकापुत्रे कुलदोषविवर्द्धिनी।
नारी सुखपरित्यक्ता तुङ्गे स्वामिसुखान्विता ॥१८॥

अन्वयः—सप्तमे सिंहिकापुत्रे (तदा) नारी कुलदोषविवर्धिनी (तथा) सुख-परित्यक्ता (यदि) तुङ्गे स्वामिसुखान्विता भवति ॥१८॥

जिस स्त्री के सप्तम भाव में राहु स्थित हो वह कुल के कलंकस्वरूप सुख से हीन होती है। यदि राहु अपनी उच्च राशि का होकर सप्तम भाव में स्थित हो तो जातका को पतिसुख प्राप्त होता है ॥१८॥

अन्य योग

मिथस्तौ शुक्रार्की यदि लवगतौ वीक्षणमितौ
भवेतां वा लग्ने घटलवगते शुक्रभवने।
अनङ्गैरालीलाकलितनररूपाभिरनिशं
स्थिताभिः कान्ताभिः खलु मदनशान्तिं व्रजति सा ॥१९॥

अन्वयः—यदि खलु शुक्रभवने घटलवगते लग्ने (तथा) शुक्रार्की मिथः तौ लवगतौ वीक्षणमितौ वा भवेतां (तदा) सा अनङ्गैरालीलाकलितनररूपाभिः स्थिताभिः कान्ताभिः मदनशान्तिं व्रजति ॥१९॥

स्त्री के जन्माङ्ग में शुक्र और शनि यदि परस्पर एक-दूसरे के नवांश में स्थित हों और उनमें परस्पर दृष्टि-सम्बन्ध भी हो अथवा कुम्भ राशि के नवांश में शुक्र की राशि लग्न में हो, तो जातका कामकेलि से उत्प्रेरित पुरुषरूप धारण कर अन्य स्त्री के साथ अपनी कामाग्नि को शान्त करती है ॥१९॥

क्षपानाथे यस्या गतवति कुलीराङ्गमथवा
मदागारं सारं सुरगुरुबुधाभ्यामपि युतम्।
महान्तोऽपि भ्रान्ताः कतिकति मनोजाधिकतया
पुरस्तां पश्यन्तो दधति परमानन्दलहरीम् ॥२०॥

अन्वयः—यस्याः कुलीराङ्गं क्षपानाथे अथवा सुरगुरुबुधाभ्यां युतं मन्दागारं सारं गतवति (तदा) महान्तोऽपि पुरः तां पश्यन्तः भ्रान्ताः कति कति मनोजाधिकतया परमानन्दलहरीं दधति ॥२०॥

जिस स्त्री के जन्माङ्ग में कर्क राशीस्थ चन्द्रमा लग्न या सप्तम भाव में स्थित हो एवं बुध और बृहस्पति के साथ भौम सप्तम भाव में स्थित हो, तो जातका महान् तापसियों को भी अपने अतिशय रूपजाल से विमुग्ध कर आनन्दित कर देने की क्षमता से सम्पन्न होती है ॥२०॥

मृगागारे सारे गतवति विसारं सुरगुरौ
कवौ वा पातालं तपनतनयेनापि मिलिते।
जनुःकाले यस्याः करिमुकुटमुक्ताफलमणि-
व्रजानां मालाभिर्वलितमुत वक्षोजयुगलम् ॥२१॥

अन्वयः—यस्याः जनुःकाले मृगागारे सारे, विसारं सुरसुरौ वा तपनतनयेन अपि मिलिते कवौ पातालं गतवति सति (तदा) करिमुकुटमुक्ताफलमणिव्रजानां मालाभिः वलितम् उत वक्षोजयुगलं (भवति) ॥२१॥

जिस स्त्री के जन्माङ्ग में भौम मकर राशि में और बृहस्पति मीन राशि में स्थित हो अथवा शुक्र के साथ शनि चतुर्थ भाव में संयुक्त हो तो गजमुक्ता तथा अन्यान्य मणि-रत्नों की माला से पुष्ट उसके कुचयुगल निरन्तर ढके रहते हैं ॥२१॥

वैधव्य योग

निशाकरात्सप्तमभावसंस्था महीजमन्दागुदिवाकराश्चेत्।
तनोऽरिभे जन्मनि नैधने वा दिशन्ति वैधव्यमलं मदे वा ॥२२॥

अन्वयः—यदि जन्मनि निशाकरात् सप्तमभावसंस्थाः महीजमन्दाऽगुदिवाकराः चेत् वा तनोऽरिभे जन्मनि नैधनं वा (उक्ता ग्रहास्तदा) वैधव्यं दिशन्ति इत्यलम् ॥२२॥

चन्द्रराशि से सप्तम भाव में यदि मंगल, शनि, राहु और सूर्य स्थित हो, तो जातका विधवा होती है। अथवा जन्मलग्न से तनु, षष्ठ, सप्तम या अष्टम भाव में वे ही ग्रह स्थित हों तो जातका को वैधव्य देते हैं ॥२२॥

लग्नाधिपो वाऽथ मदालयेशो वर्गे गतः पापनभश्चराणाम्।
मदे तनौ वा खलखेटवर्गस्तदा कुलं मुञ्चति चञ्चलाक्षी ॥२३॥

अन्वयः—अथ पापनभश्चराणां वर्गे लग्नाधिपः मदालयेशः वा (भवति) वा खलखेटवर्गः मदे तनौ (भवति) (तदा) चञ्चलाक्षी कुलं मुञ्चति ॥२३॥

जन्मलग्न अथवा सप्तम भाव के स्वामी यदि पापग्रहों के वर्ग में स्थित हों अथवा लग्न या सप्तम भाव पापवर्ग में हों तो ऐसे कुयोग में उत्पन्न जातका स्वकुल का परित्याग कर देती है अर्थात् वह चरित्रहीन कुलटा होती है ॥२३॥

पापान्तराले यदि लग्नचन्द्रौ स्यातां शुभालोकनवर्जितौ तौ।
अनङ्गलोला खलसङ्गमेन कुलद्वयं हन्ति तदा मृगाक्षी ॥२४॥

अन्वयः—यदि लग्नचन्द्रौ पापान्तराले स्याताम् (तथा) तौ शुभावलोकनवर्जितौ (भवतः) तदा मृगाक्षी अनङ्गलोलाखलसङ्गमेन कुलद्वयं हन्ति ॥२४॥

लग्न अथवा जन्मराशि (चन्द्रराशि) यदि पापग्रहों के मध्य स्थित हो और शुभग्रहों की दृष्टि उन पर न हो तो कामपीड़ा से त्रस्त जातका नीचों की सङ्गति से स्वकुल और पितृकुल का नाश करती है ॥२४॥

व्ययेऽष्टमे भूमिसुतस्य राशावगौ सपापे भवतीह रण्डा।
मदे कुलीरे सरवौ कुजेऽपि धवेन हीना रमतेऽन्यलोकैः ॥२५॥

अन्वयः—भूमिसुतस्य राशौ अगौ सपापे व्यये अष्टमे (तदा) इह रण्डा भवति, (तथा) मदे कुलीरे सरवौ कुजे अपि (तदा) धवेन हीना अन्यलोकैः सह रमते ॥२५॥

स्त्री के जन्माङ्ग में भौम की राशि (मेष, वृश्चिक) का होकर राहु पापग्रहों के साथ यदि अष्टम या द्वादश भाव (वृष, कन्या, धनु या मेष राशि के लग्न में ही सम्भव है) में राहु स्थित हो तो जातका रण्डा होती है।

जिसके जन्माङ्ग में कर्क राशिगत सूर्य और मङ्गल सप्तम भाव में स्थित हो तो ऐसी जातका स्वपति से विहीन होकर अन्य पुरुष के साथ रमण करती है ॥२५॥

रण्डा योग

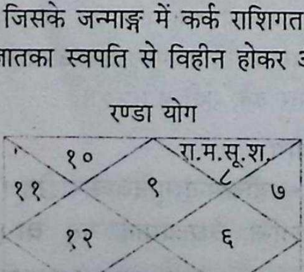

पतित्यक्ता योग

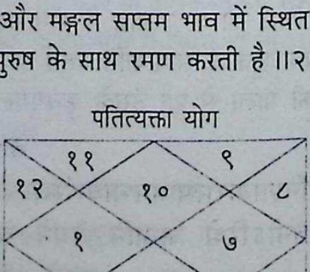

इसी प्रकार मेष और कन्या लग्न होने पर राहु के साथ पाप ग्रह के अष्टम भाव में होने से भी यह योग उक्त फल प्रदान करता है।

तनौ चतुर्थे निधने व्यये वा मदालये पापयुतः कुजश्चेत्।
अनङ्गलीलां प्रकरोति जारैः पतिं तिरस्कृत्य विलोलनेत्रा ॥२६॥

अन्वयः—यदि चेत् तनौ, चतुर्थे, निधने, व्यये, मदालये वा पापयुतः कुजः (भवेत्) तदा विलोलनेत्रा पतिं तिरस्कृत्य जारैः (सह) अनङ्गलीलां प्रकरोति ॥२६॥

लग्न, चतुर्थ, अष्टम, द्वादश अथवा सप्तम भाव में पापग्रह के साथ यदि मङ्गल स्थित हो, तो जातका चञ्चल नेत्रों वाली एवं अपने पति को तिरस्कृत कर पर पुरुष के साथ रमण करने वाली होती है ॥२६॥

परस्परांशोपगतौ भवेतां महीजशुक्रौ जननेऽङ्गनायाः।
स्वयं मृगाक्षी ह्यभिसारिकेव प्रयाति कामाकुलितान्यगेहे ॥२७॥

अन्वयः—यदि अङ्गनायाः जनने महीजशुक्रौ परस्परांशोपगतौ भवेतां (तदा) सा मृगाक्षी अभिसारिकेव स्वयं कामाकुलिता अन्यगेहं प्रयाति ॥२७॥

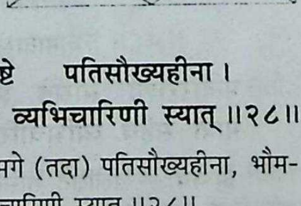

जिस स्त्री के जन्माङ्ग में भौम और शुक्र परस्पर एक-दूसरे के नवांश में स्थित हों अर्थात् भौम शुक्र के नवमांश में तथा शुक्र भौम के नवमांश में स्थित हो, तो वह मृगनयनी कामासक्त होकर स्वयं पहल कर अभिसारिका के समान दूसरे के घर जाती है ॥२७॥

पापग्रहे सप्तमगे बलोनेऽशुभेन दृष्टे पतिसौख्यहीना।
स्यातां मदे भौमकवी सचन्द्रौ पत्याज्ञया सा व्यभिचारिणी स्यात् ॥२८॥

अन्वयः—अशुभेन दृष्टे बलोने पापग्रहे सप्तमगे (तदा) पतिसौख्यहीना, भौमकवी सचन्द्रौ मदे स्यातां (तदा) सा पत्याज्ञया व्यभिचारिणी स्यात् ॥२८॥

जन्माङ्ग के सप्तम भाव में यदि निर्बल पापग्रह स्थित हो और शुभ ग्रह की दृष्टि से हीन हो, तो जातका पतिसुख से हीन होती है।

चन्द्रमा और मंगल के साथ यदि शुक्र सप्तम भाव में स्थित हो, तो जातका अपने पति के आदेश से व्यभिचार में प्रवृत्त होती है ॥२८॥

पापग्रहे सप्तमलग्नगेहे भर्ता दिवं गच्छति सप्तमाब्दे।
निशाकरे चाष्टमवैरिभावे तदाष्टमाब्दे निधनं प्रयाति ॥२९॥

अन्वयः—पापग्रहे सप्तमलग्नगेहे तदा सप्तमाब्दे भर्ता दिवं गच्छति। (अथ) च अष्टमवैरिभावे निशाकरे (तदा) अष्टमाब्दे भर्ता निधनं प्रयाति ॥२९॥

जिसके जन्माङ्ग में लग्न और सप्तम भाव पाप ग्रहों से आक्रान्त हों, तो विवाह से सातवें वर्ष में उसके पति का निधन हो जाता है। उक्त योग में यदि चन्द्रमा अष्टम भाव में स्थित हो तो विवाह से आठवें वर्ष में उसके पति की मृत्यु होती है ॥२९॥

बालविधवा योग

सप्तमेशोऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः।
पापेक्षणयुतो बाला वैधव्यं लभते ध्रुवम् ॥३०॥

अन्वयः—यस्याः पापेक्षणयुतः सप्तमेशः अष्टमे (तथा) निधनाधिपः सप्तमे (भवति) (तदा सा) बाला ध्रुवं वैधव्यं लभते ॥३०॥

जन्माङ्ग में यदि सप्तम और अष्टम भावाधिपतियों में व्यत्यय सम्बन्ध हो, अर्थात् सप्तमेश अष्टम भाव में और अष्टमेश सप्तम भाव में स्थित हो और उन पर पापग्रहों की दृष्टि हो, तो जातका निश्चय ही वैधव्य को प्राप्त होती है ॥३०॥

अन्य वैधव्य योग

सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीड़ितौ।
तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः ॥३१॥

अन्वयः—(यदा) पापपीड़ितौ सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा (भवति) तदा नारी वैधव्यम् आप्नोति, अत्र नैव संशयः ॥३१॥

जन्माङ्ग के षष्ठ या द्वादश भाव में यदि पापाक्रान्त सप्तम और अष्टम भावस्वामी स्थित हों तो जातका निस्सन्देह वैधव्य प्राप्त करती है ॥३१॥

मातासहित व्यभिचारिणी योग

मन्दारराशौ ससिते शशाङ्के खलेक्षिते लग्नगते मृगाक्षी।
मात्रा सहैव व्यभिचारिणी स्यान्मदे खलांशे व्रणविद्धयोनिः ॥३२॥

अन्वयः—खलेक्षिते ससिते शशाङ्के मन्दारराशौ लग्नगते (तदा) मृगाक्षी मात्रा सहैव व्यभिचारिणी स्यात् (यदि) मदे खलांशे (सति) (तदा) मात्रा सह व्रणविद्धयोनिः स्यात् ॥३२॥

शनि और भौम राशिगत शुक्र और चन्द्रमा लग्न में स्थित होकर पाप ग्रह से दृष्ट हो तो जातका और उसकी माता व्यभिचारिणी होती है। उक्त योग में यदि सप्तम भाव में पाप ग्रह का नवमांश हो, तो जातका की योनि व्रणयुक्त होती है ॥३२॥

राशियों के अनुसार भिन्न-भिन्न राशियों के त्रिंशांशफल

भौम राशि-त्रिंशांशफल

यदाङ्गचन्द्रौ कुजभे कुजस्य त्रिंशांशके दुष्टतमैव कन्या।
मन्दस्य दासी हि गुरौ तु साध्वी मायाविनी ज्ञस्य कवेः कुवृत्ता ॥३३॥

अन्वयः—यदा अङ्गचन्द्रौ कुजभे कुजस्य त्रिंशांशके (तदा) कन्या दुष्टतमा एव, मन्दस्य दासी, गुरौ तु साध्वी, ज्ञस्य मायाविनी, कवेः (त्रिंशांशके) कुवृत्ता (स्यात्) ॥३३॥

यदि लग्न और चन्द्रमा मङ्गल की राशि (मेष, वृश्चिक) में स्थित होकर मङ्गल के ही त्रिंशांश में स्थित हों तो जातका दुष्टा होती है। उक्त लग्न और चन्द्रमा यदि शनि के त्रिंशांश में हों तो दासी, यदि बृहस्पति के त्रिंशांशगत हों तो साध्वी, बुध के त्रिंशांश में हों, तो मायावी और यदि शुक्र के त्रिंशांश में हों तो चरित्रहीन होती है ॥३३॥

शुक्र की राशि और त्रिंशांशस्थ चन्द्रमा और लग्नफल

शुक्रभे कुजखाग्न्यंशे दुष्टा सौरेः पुनर्भवा।
गुरोर्गुणमयी विज्ञा ज्ञस्य कामातुरा भृगोः ॥३४॥

अन्वयः—शुक्रभे कुजखाग्न्यंशे दुष्टा, सौरेः पुनर्भवा, गुरोः गुणमयी, ज्ञस्य विज्ञा, भृगोः कामातुरा (भवेत्) ॥३४॥

स्त्री के जन्माङ्ग में लग्न और चन्द्रमा शुक्र की राशि (वृष, तुला) में स्थित होकर भौम की राशि (मेष, वृश्चिक) के त्रिंशांश में स्थित हो तो जातका दुष्टा होती है। उक्त लग्न या चन्द्रमा यदि शनि के त्रिंशांशगत हों, तो जातका का दो विवाह होता है। उक्त लग्न अथवा चन्द्रमा में यदि बृहस्पति का त्रिंशांश हो तो जातका गुणवती, बुध का त्रिंशांश हो तो विदुषी और यदि शुक्र का त्रिंशांश हो तो जातका कामातुरा होती है॥३४॥

बुध राशि में त्रिशांशस्थ चन्द्र और लग्नफल

बुधभे भूमिपुत्रस्य कापटी क्लीबवच्छनेः।
गुरोः सती विदो विज्ञा कवेः कामातुरा भवेत् ॥३५॥

अन्वयः—बुधभे भूमिपुत्रस्य (त्रिंशांशे) कापटी, शनेः क्लीबवत्, गुरोः सती, विदः विज्ञा, कवेः कामातुरा भवेत् ॥३५॥

लग्न या चन्द्रमा बुध की राशि (मिथुन, कन्या) में स्थित होकर वे यदि मङ्गल के त्रिंशांशस्थ हों तो जातका कपटी होती है। उक्त लग्न, चन्द्रमा यदि शनि के त्रिंशांश में स्थित हों, तो जातका नपुंसका होती है, बृहस्पति के त्रिंशांश में स्थित हो तो जातका सती एवं पतिव्रता होती है, बुध के त्रिंशांश में स्थित हो तो जातका विदुषी और यदि शुक्र के त्रिंशांशगत हो तो कामासक्ता होती है ॥३५॥

चन्द्रमा की राशि में भिन्न त्रिशांशस्थ लग्न-चन्द्रफल

कुलीरभे भूमिसुतस्य वेश्या शनेः पतिप्राणविघातकर्त्री।
गुरोर्गुणव्रातवती बुधस्य शिल्पक्रियज्ञा कुलटा भृगोः स्यात् ॥२६॥

अन्वयः—कुलीरभे भूमिसुतस्य वेश्या, शनेः पतिप्राणविघातकर्त्री, गुरोः गुणव्रातवती, बुधस्य शिल्पक्रियज्ञा, भृगोः कुलटा स्यात् ॥३६॥

स्त्री के जन्माङ्ग में लग्न-चन्द्रमा यदि चन्द्रमा की राशि कर्कस्थ होकर मङ्गल के त्रिशांश में स्थित हों तो जातका वेश्यावृत्ति में प्रवृत्त होती है। उक्त लग्न-चन्द्रमा यदि शनि के त्रिंशांश में स्थित हों तो पति के लिए घातक, यदि बृहस्पति के त्रिंशांशगत हों, तो गुणवती; बुध के त्रिंशांश में स्थित हों, तो शिल्पी और शुक्र के त्रिंशांश में स्थित हों तो कुलटा होती है ॥३६॥

सूर्यराशि और विभिन्न त्रिंशांशगत लग्न-चन्द्रफल

सिंहे नराकारधरा कुजस्य वराङ्गना भानुसुतस्य नारी।
गुरोरिलाधीशवधूर्बुधस्य दुष्टा कवेरङ्गजगामिनी स्यात् ॥३७॥

अन्वयः—सिंहे कुजस्य (त्रिंशांशके) नारी नराकारधरा भानुसुतस्य वाराङ्गना, गुरोः इलाधीशवधूः, बुधस्य दुष्टा, कवेः अङ्गजगामिनी स्यात् ॥३७॥

लग्न अथवा चन्द्रराशि सिंह हो तथा वे भौमत्रिंशांश में स्थित हों, तो जातका पुरुषाकृति अथवा पुरुषों जैसा आचरण करने वाली होती है। उक्त लग्न-चन्द्रमा यदि शनि के त्रिंशांश में स्थित हों, तो वेश्या, बृहस्पति के त्रिंशांश में हों तो राजरानी, बुध के त्रिंशांशगत हों तो दुष्ट स्वभाव की और यदि शुक्र के त्रिंशांशगत हों तो अपने पुत्र के साथ रमण करने वाली होती है ॥३७॥

बृहस्पति की राशि और विभिन्न त्रिंशांशस्थ लग्न-चन्द्रफल

गुणैर्विचित्रा गुरुभे कुजस्य मन्दस्य मन्दा गुणतत्त्वविज्ञा।
जीवस्य विज्ञा शशिनन्दनस्य शुक्रस्य रम्याऽपि भवेदरम्या ॥३८॥

अन्वयः—गुरुभे कुजस्य गुणैः विचित्रा, मन्दस्य मन्दा, जीवस्य गुणतत्त्वविज्ञा, शशिनन्दनस्य विज्ञा, शुक्रस्य रम्यापि अरम्या भवेत् ॥३८॥

स्त्री के जन्माङ्ग में लग्न-चन्द्रमा की राशि धनु या मीन हो और मङ्गल का त्रिंशांश हो, तो जातका अनेक गुणसमूहों से युक्त होती है। उक्त लग्न-चन्द्र राशि यदि शनि के त्रिंशांश में हो तो जातका मन्द बुद्धि, यदि बृहस्पति के त्रिंशांश में हो तो गुणी, यदि बुध के त्रिंशांश में हो तो तत्त्वविद् तथा यदि शुक्र के त्रिंशांश में हो, तो जातका सुन्दरी होती हुई भी (आचरणभ्रष्ट होने से) असुन्दर होती है ॥३८॥

शनिराशिगत विभिन्न त्रिंशांशस्थ लग्न-चन्द्रफल

मन्दालये भूमिसुतस्य दासी शनेरसाध्वी भवतीति साध्वी।
गुरोर्निशानाथसुतस्य दुष्टा शुक्रस्य वन्ध्या क्रमतः प्रदिष्टा ॥३९॥

अन्वयः—मन्दालये भूमिसुतस्य दासी, शनेः असाध्वी, गुरोः साध्वी, निशानाथसुतस्य दुष्टा, शुक्रस्य वन्ध्या भवति, इति क्रमतः प्रदिष्टा ॥३९॥

स्त्री के जन्माङ्ग में लग्न-चन्द्रमा यदि मकर या कुम्भ राशि का होकर मङ्गल के

त्रिंशांश में हो तो जातका दासी, शनि के त्रिंशांश में हो तो दुष्टा, बृहस्पति के त्रिंशांश में हो तो सद्गुणों से युक्त, बुध के त्रिंशांश में हो तो दुष्टा और यदि शुक्र के त्रिंशांश में स्थित हो तो वन्ध्या होती है ॥३९॥

अन्यान्य योग

मन्दे मध्यबले कवीन्दुशशिजैर्वीर्यच्युतैः प्रायशः
शेषैर्वीर्यसमन्वितैः पुरुषवन्नारी यदोजे तनुः ।
जीवाङ्गाररवीन्दुजैर्बलयुतैश्चेदङ्गराशौ समे
गीतातत्त्वविचारसारचतुरा वेदान्तवादिन्यपि ॥४०॥

अन्वयः—यदोजे तनुः मन्दे मध्यबले, कवीन्दुशशिजैः वीर्यच्युतैः प्रायशः शेषैः वीर्यसमन्वितैः (तदा) नारी पुरुषवत् (भवति) चेत् अङ्गराशौ समे जीवाङ्गाररवीन्दुजैः बलयुतैः (तदा) नारी गीतातत्त्वविचारसारचतुरा वेदान्तवादिनी अपि (भवति) ॥४०॥

जिस स्त्री की जन्म-लग्न विषम राशि हो तथा शुक्र, चन्द्रमा और बुध बलहीन हों और शनि मध्यम बली हो तथा अन्य ग्रह—सूर्य, भौम और बृहस्पति बलवान हों तो जातका पुरुषलक्षणों से युक्त होती है।

सम राशि का लग्न हो और बृहस्पति, भौम, सूर्य तथा बुध हों तो जातका परम विदुषी एवं गीता जैसे ग्रन्थों के सारतत्त्व को जानने वाली वेदान्तवेत्ता होती है ॥४०॥

अष्टमभाव-विचार

यदाष्टमे देवगुरौ भृगौ वा विनष्टगर्भा मृतपुत्रका वा ।
कुजेऽष्टमे सा कुलटा मृगाक्षी चन्द्रेऽष्टमे स्वामिसुखेन हीना ॥४१॥

अन्वयः—यदा अष्टमे देवगुरौ भृगौ वा (तदा) विनष्टगर्भा मृतपुत्रका वा, कुजे (यदा) अष्टमे (तदा) सा मृगाक्षी कुलटा, चन्द्रे अष्टमे स्वामिसुखेन हीना (भवति) ॥४१॥

जिस स्त्री के जन्माङ्ग के अष्टम भाव में बृहस्पति या शुक्र स्थित हों वह विनष्टगर्भा (जिसका गर्भपात हो जाय) या मृतपुत्रका (जिसके पुत्र न जीवित रहें) होती है। यदि अष्टम भाव में मङ्गल स्थित हो, तो हिरण के समान चञ्चल नेत्रों वाली कुलटा होती है। यदि अष्टम भाव में चन्द्रमा स्थित हो, तो दाम्पत्य सुख से हीन होती है ॥४१॥

मन्देऽष्टमे रोगरतस्य भार्या दिनाधिपे सा परितापतप्ता ।
अनङ्गरङ्गा परकान्तसङ्गा मृतावगौ सा कुलधर्मभङ्गा ॥४२॥

अन्वयः—मन्दे अष्टमे रोगरतस्य भार्या, दिनाधिपे अष्टमे, सा परितापतप्ता, अगौ मृतौ सा अनङ्गरङ्गा परकान्तसङ्गा कुलधर्मभङ्गा च (भवति) ॥४२॥

जिस स्त्री के जन्माङ्ग के अष्टम भाव में शनि स्थित हो, वह निरन्तर रुग्ण रहने

वाले पुरुष की भार्या होती है। अष्टम भाव में यदि सूर्य स्थित हो तो जातका त्रिताप (आधिदैविक, आधिदैहिक और आधिभौतिक ताप) से सदैव सन्तप्त रहती है। यदि अष्टम भाव में राहु स्थित हो, तो जातका चरित्रहीन, स्वकुल-धर्म और परम्पराओं को विनष्ट करती है ॥४२॥

पञ्चमभाव-विचार

पञ्चमे शुभसन्दृष्टे पञ्चमाधिपतावपि।
केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥४३॥

अन्वयः—(यदा) पञ्चमे शुभसंदृष्टे, पञ्चमाधिपतौ अपि केन्द्रकोणे (गते) तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥४३॥

स्त्री के जन्माङ्ग में यदि पञ्चम भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा पञ्चम भाव का अधिपति भी शुभ दृष्टि से युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो वह अनेक पुत्रों के सुख से सुखी होती है ॥४३॥

पञ्चपुत्रवती जीवे सबले च सिते विधौ।
सुतासुखवती पापे नारी सन्तानवर्जिता ॥४४॥

अन्वयः—सबले जीवे (पञ्चमे) पञ्चपुत्रवती, सबले सिते विधौ च (पञ्चमे) सुता सुखवती, पापे (पञ्चमे) (तदा) नारी सन्तानवर्जिता (भवेत्) ॥४४॥

बलवान बृहस्पति जिस स्त्री के पञ्चम भाव में स्थित हो, उसे पाँच पुत्रों की माता होने का सुख प्राप्त होता है। जिसके पञ्चम भाव में बलवान शुक्र या चन्द्रमा स्थित हो, उसे कन्याओं का सुख होता है। जन्माङ्ग के पञ्चम भाव में यदि पाप ग्रह स्थित हो तो वह जातका सन्तानहीन होती है ॥४४॥

उक्त योगों में जिन स्थानों में ग्रहदृष्टि कही गई है, उन स्थानों में ग्रहयुति को भी दृष्टिवत् समझना चाहिए। इसी प्रकार जिन स्थानों में ग्रहयुति का फल कहा गया है, उन स्थानों में उक्त ग्रह की दृष्टि होने से भी उसी प्रकार के कथित फल की कल्पना करनी चाहिए।

विषयोग

भद्रासार्पानलवरुणभे भानुमन्दारवारे
यस्या जन्म प्रभवति तदा सा विषाख्या कुमारी।
पापे लग्नेऽशुभखगयुतः पापखेटावरिस्थौ
स्यातां यस्या जननसमये सा कुमारी विषाख्या ॥४५॥

अन्वयः—भद्रासार्पानलवरुणभे भानुमन्दारवारे यस्याः जन्म प्रभवति तदा सा कुमारी विषाख्या (तथा) यस्याः जन्मसमये अशुभखगयुतः पापे लग्ने पापखेटौ अरिस्थौ तदा सा कुमारी विषाख्या (भवेत्) ॥४५॥

भद्रा तिथियों (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी) में क्रमशः आश्लेषा, कृत्तिका और शतभिषा नक्षत्र यदि क्रमशः रविवार, शनिवार और भौमवार के दिन पड़े तो इन योगों में जन्म लेने वाली कन्या विषाख्या कहलाती है। अर्थात् रविवार के दिन द्वितीया तिथि और आश्लेषा नक्षत्र हो अथवा शनिवार के दिन सप्तमी तिथि और कृत्तिका नक्षत्र हो अथवा भौमवार के दिन द्वादशी तिथि और शतभिषा नक्षत्र हो तो ये तीनों विषयोगकारक होते हैं और इनमें जन्म लेने वाली कन्या विषाख्या कहलाती है।

यदि लग्न में पाप ग्रह की राशि पाप ग्रहों से युक्त हो तथा दो पापग्रह षष्ठ भाव में स्थित हों, तो ऐसे योग में उत्पन्न कन्या भी विषाख्या होती है ॥४५॥

आदित्यसूनोर्दिवसे द्वितीया भुजङ्गभे भौमदिनेऽम्बुजर्क्षे।
चेत्सप्तमी वाऽथ रवौ विशाखा हरेस्तिथौ वापि च सा विषाख्या ॥४६॥

अन्वयः—अथ चेत् (जन्मनि) आदित्यसूनोः दिवसे द्वितीया भुजङ्गभे, वा भौमदिने अम्बुजर्क्षे सप्तमी, वा अथ रवौ विशाखा हरेः तिथौ (भवेत्तदा) सा (कुमारी) विषाख्या (भवेत्) ॥४६॥

यदि शनिवार के दिन द्वितीया तिथि और आश्लेषा नक्षत्र हो, भौमवार के दिन सप्तमी तिथि और शतभिषा नक्षत्र हो, अथवा रविवार के दिन द्वादशी तिथि और विशाखा नक्षत्र हो,तो विषाख्य योग होता है। इन योगों में यदि कन्या का जन्म हो तो, वह विषाख्या कहलाती है ॥४६॥

धर्मगेहगते भौमे लग्नगे रविनन्दने।
पञ्चमे दिवसाधीशे सा विषाख्या कुमारिका ॥४७॥

अन्वयः—धर्मगेहगते भौमे लग्नगे रविनन्दने पञ्चमे दिवसाधीशे सा कुमारिका विषाख्या (भवति) ॥४७॥

यदि लग्न में शनि, नवम भाव में मंगल और पञ्चम भाव में सूर्य स्थित हों तो ऐसे योग में उत्पन्न कन्या विषाख्या होती है ॥४७॥

विषाख्या-फल

विषाख्या शोकसन्तप्ता दुर्भगा मृतपुत्रिका।
वस्त्राभरणहीना च पुराणैरुदिता बुधैः ॥४८॥

अन्वयः—विषाख्या शोकसन्तप्ता, दुर्भगा मृतपुत्रिका, वस्त्राभरणहीना च इति पुराणैः बुधैः उदिता ॥४८॥

विषाख्या कन्या शोकाकुला, भाग्यहीना, सन्तानहीना एवं वस्त्र और आभूषणों से भी हीन होती है, ऐसा पूर्व मनीषियों का कहना है ॥४८॥

विषयोगभङ्ग

सप्तमे सप्तमाधीशः शुभो वा लग्नचन्द्रयोः ।
विषयोगमलं हन्ति सद्यो हरिरिभं यथा ॥४९॥

अन्वयः—लग्नचन्द्रयोः सप्तमे सप्तमाधीशः शुभः वा (भवेत् तदा) विषयोगमलं सद्यः हन्ति यथा हरिरिभं हन्ति ॥४९॥

लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम भावाधिपति अथवा शुभ ग्रह सप्तम भाव में स्थित हों तो यह योग, जिस प्रकार सिंह हाथियों के समूह का नाश कर देता है, वैसे ही विषयोग के दोष को विनष्ट कर देता है ॥४९॥

इत्थं विवाहकालेऽपि ज्ञातव्यं लग्नचन्द्रयोः ।
तदधीनं यतः स्त्रीणां शुभाशुभफलं भवेत् ॥५०॥

अन्वयः—इत्थं स्त्रीणां विवाहकाले अपि लग्नचन्द्रयोः ज्ञातव्यं, यतः शुभाशुभफलं तदधीनं भवेत् ॥५०॥

इसी प्रकार लग्न और चन्द्रमा से विषयोग का विचार विवाह के काल में विवाह-लग्न और तत्कालीन चन्द्रराशि से भी करना चाहिए। उसी के अनुसार स्त्री को शुभाशुभ फल प्राप्त होता है ॥५०॥

वैधव्ययोग-परिहार

वैधव्ययोगयुक्तायाः कन्यायाः शान्तिपूर्वकम् ।
वेदोक्तविधिनोद्वाहं कारयेच्चिरजीविना ॥५१॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले स्त्रीजातकाध्यायः नवमः ॥९॥

अन्वयः—वैधव्ययोगयुक्तायाः कन्यायाः शान्तिपूर्वकं वेदोक्तविधिना चिरजीविना (वरेण) उद्वाहं कारयेत् ॥५१॥

यदि कन्या के जन्माङ्ग में वैधव्य योग हो तो सावित्रीव्रतादि शान्ति कर्म के अनन्तर विवाह से पूर्व वेदोक्त विधि से विष्णु की प्रतिमा से कन्या का विवाह करा कर किसी दीर्घायुष्य वाले पुरुष से कन्या का विवाह करना चाहिए ॥५१॥

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का नवम अध्याय समाप्त हुआ ॥९॥

अथ दशमोऽध्यायः

सामुद्रिकलक्षणम्

कन्या के अङ्ग-लक्षण

शुभलक्षणसम्पन्ना भवेदिह यदाऽङ्गना।
तत्करग्रहणादेव वर्द्धते गृहिणां सुखम् ॥१॥

अन्वयः—यदा अङ्गना शुभलक्षणसम्पन्ना भवेत् (तदा) इह तत्करग्रहणाद् एव गृहिणां सुखं वर्द्धते ॥१॥

शुभ लक्षणों से युक्त स्त्री के साथ विवाह करने से व्यक्ति के सांसारिक सुखों में वृद्धि होती है ॥१॥

शुभाशुभं पुरा गीतं वेदव्यासेन धीमता।
प्रकाश्यते तदेवात्र नारीणामङ्गलक्षणम् ॥२॥

अन्वयः—धीमता वेदव्यासेन नारीणां अङ्गलक्षणं शुभाशुभं (यत्) पुरा गीतं तदेव अत्र प्रकाश्यते ॥२॥

बुद्धिमान वेदव्यास के द्वारा पूर्वकथित स्त्रियों के शारीरिक शुभ और अशुभ लक्षणों को मैं कहता हूँ ॥२॥

पादतललक्षण

युवतिपादतलं किल कोमलं सममतीव जपाकुसुमप्रभम्।
दिशति मांसलमुष्णमिलापतेरतिहितं बहुधर्मसमन्वितम् ॥३॥

अन्वयः—युवतिपादतलं किल कोमलं अतीव समं जपाकुसुमप्रभं मांसलं, उष्णं विवर्जितं (भवति) (तदा) बहुधर्मसमन्वितं इलापतेः अतिहितं दिशति ॥३॥

जिस स्त्री के पादतल (पैर के तलुए) कोमल, सरल (सुन्दर) एवं जपाकुसुम के समान रक्ताभ हों, मांसल और उष्ण हों वह राजाओं को सुख देने वाली होती है अर्थात् राजमहिषी होती है ॥३॥

कमलकम्बुरथध्वजचक्रवत् पृथुलमीनविमानवितानवत्।
भवति लक्ष्म पदे यदि योषितां क्षितिभृतां वनिता विभुतावृता ॥४॥

अन्वयः—यदि योषितां पदे कमलकम्बुरथध्वजचक्रवत् पृथुलमीनविमान-वितानवत् लक्ष्म भवति (तदा) विभुतावृता क्षितिभृतां वनिता भवेत् ॥४॥

जिस स्त्री के पादतल कमल, शङ्ख, रथ, ध्वज (पताका), चक्र, मोटी मछली,

विमान, वितान (चँदोबा) आदि के समान चिह्नों से युक्त हो, वह समस्त वैभव और ऐश्वर्य से सम्पन्न राजमहिषी होती है ॥४॥

शूर्पाकारं विवर्णञ्च विशुष्कं परुषं तथा।
रूक्षं पादतलं तन्व्या दौर्भाग्यपरिसूचकम् ॥५॥

अन्वयः—(यस्या) पादतलं शूर्पाकारं विवर्णं विशुष्कं परुषं तथा रूक्षं (भवेत् सा) तन्व्या दौर्भाग्यपरिसूचकं भवति ॥५॥

जिस स्त्री के पादतल शूर्पाकार (सूप के आकार के), पीत या श्वेत (भद्दे वर्ण के), शुष्क, कठोर (खुरदुरे) एवं रूखे हों, वह भाग्यहीन होती है ॥५॥

पादाङ्गुलि-लक्षण

यस्याः समुन्नताङ्गुष्ठो वर्तुलोऽतुलसौख्यदः।
शूर्पाकारा नखा यस्याः सा भवेद्दुःखभागिनी ॥६॥

अन्वयः—यस्याः समुन्नताङ्गुष्ठः वर्तुलः (तदा) अतुलसौख्यदः (तथा) यस्याः नखाः शूर्पाकाराः सा दुःखभागिनी भवेत् ॥६॥

जिस स्त्री के पैर का अङ्गुष्ठ समुन्नत और गोल हो, वह अतुल सुख देने वाली होती है; किन्तु जिसके पैर के अङ्गूठे शूर्पाकार नखों से युक्त हों वह दुःखी होती है ॥६॥

सञ्चलन्त्यां धराधूलिधारा यदा राजमार्गेऽबलायां बलादुच्छलेत्।
पांसुला सा कुलानां त्रयं सत्वरं नाशयित्वा खलैर्मोदते सर्वदा ॥७॥

अन्वयः—यदा अबलायां राजमार्गे सञ्चलन्त्यां धराधूलिधारा बलात् उच्छलेत् (तदा) सा पांसुला कुलानां त्रयं सत्वरं नाशयित्वा सर्वदा खलैः मोदते ॥७॥

जिस स्त्री के राजमार्ग में चलने से धूलि उठती हो, पैर घिसटते हों वह जारिणी और अपने तीनों कुलों (मातृकुल, पितृकुल और श्वशुरकुल) को विनष्ट कर दुष्ट जनों को आनन्द देने वाली होती है ॥७॥

यस्या अन्योन्यमारूढाः पादाङ्गुल्यो भवन्ति चेत्।
सा पतीन् बहुधा हत्वा वारवामा भवेदिह ॥८॥

अन्वयः—यस्याः पादाङ्गुल्यः अन्योन्यमारूढाः चेद् भवन्ति (तदा) सा बहुधा पतीन् हत्वा वारवामा भवेत् ॥८॥

जिस स्त्री के पैर की अङ्गुलियाँ परस्पर एक-दूसरे पर चढ़ी हुई हों, वह पति का परित्याग कर वेश्या होती है ॥८॥

कनिष्ठा न स्पृशेद्भूमिं चलन्त्या योषितस्तदा।
सा द्रुतं स्वपतिं हत्वा जारेण रमते पुनः ॥९॥

अन्वयः—यस्याः योषितः चलन्त्याः कनिष्ठा भूमिं न स्पृशेत् तदा सा द्रुतं स्वपतिं हत्वा पुनः जारेण रमते ॥९॥

जिस स्त्री के पैर की कनिष्ठिका अङ्गुली चलते समय भूमि का स्पर्श न करती हो, वह शीघ्र ही अपने पति का परित्याग कर जारपुरुष के साथ रमण करती है ॥९॥

अनामिका च मध्या च यदि भूमिं न संस्पृशेत्।
आद्या पतिद्वयं हन्ति चापरा तु पतित्रयम् ॥१०॥

अन्वयः—यदि अनामिका च मध्या च भूमिं न संस्पृशेत् (तदा) आद्या (अनामिका) पतिद्वयं हन्ति तु अपरा (मध्या) पतित्रयं हन्ति ॥१०॥

जिस स्त्री के पैर की अनामिका और मध्यमा चलते समय भूमि का स्पर्श न करे, वह प्रथमतः दो पतियों का और पुनः तीसरे पति का भी नाश करती है ॥१०॥

अनामिका च मध्या च यदि हीना प्रजायते।
तदा सा पतिहीना स्यादित्याह भगवान् स्वयम् ॥११॥

अन्वयः—यदि अनामिका च मध्या च हीना प्रजायते तदा सा पतिहीना स्यात् इति स्वयं भगवान् आह ॥११॥

जिस स्त्री के पैर की अनामिका और मध्यमा छोटी (कनिष्ठा से छोटी या उसके समान) हो तो वह स्त्री पतिसुख से हीन होती है ॥११॥

यदि पादनखाः स्निग्धा वर्तुलाश्च समुन्नताः।
ताम्रवर्णा मृगाक्षीणां महाभोगप्रदायकाः ॥१२॥

अन्वयः—मृगाक्षीणां पादनखाः स्निग्धाः वर्त्तुलाः समुन्नताः ताम्रवर्णाश्च तदा महाभोगप्रदायकाः ॥१२॥

स्त्रियों के पैर के नख यदि स्निग्ध, गोल, समुन्नत और ताम्बे के वर्ण के हों, तो वह अतुल भोगसुख देने वाली होती है ॥१२॥

पादपृष्ठ-लक्षण

यदि भवेदमलं किल कोमलं कमलपृष्ठवदेव मृगीदृशाम्।
अरुणकुङ्कुमविद्रुमसन्निभं बहुगुणं पदपृष्ठमिति ध्रुवम् ॥१३॥

अन्वयः—यदि मृगीदृशां पादपृष्ठं किल कोमलं कमलपृष्ठवत् एव (अथवा) अरुणकुङ्कुमविद्रुमसन्निभं भवेत् (तदा) ध्रुवं बहुगुणं भवेत् ॥१३॥

जिस स्त्री के पादपृष्ठ निर्मल, कोमल, कमल की पंखुड़ी के पृष्ठ के समान रक्ताभ, कुंकुम या मूँगे की आभा से युक्त हों, वह अनेकानेक गुणों से युक्त होती है ॥१३॥

अंघ्रिमध्ये दरिद्रा स्यान्नम्रत्वेन सदाङ्गना।
शिरालेनाध्वगा नारी दासी लोमाधिकेन सा ॥१४॥

अन्वयः—अङ्गना अंघ्रिमध्ये नम्रत्वेन सदा दरिद्रा, शिरालेन अध्वगा, लोमाधिकेन सा नारी दासी स्यात् ॥१४॥

पादपृष्ठ का मध्य भाग यदि नम्र (दबा हुआ) हो तो वह स्त्री दरिद्रा होती है। पादपृष्ठ पर यदि शिरायें (नसें) अधिक उभरी हों, तो उसमें स्थिरता का अभाव होता है, अर्थात् उसे अधिक चलना होता है। यदि पादपृष्ठ पर रोम अधिक हों तो वह दासी होती है ॥१४॥

गुल्फ-लक्षण

निर्मांसेन सदा नारी दुर्भगा खलु जायते।
गुल्फौ गूढौ शुभौ स्यातामशिरालौ च वर्तुलौ ॥१५॥

अन्वयः—(यस्याः) गुल्फौ निर्मांसेन (सा) नारी सदा दुर्भगा खलु जायते, गूढौ अशिरालौ वर्तुलौ शुभौ स्याताम् ॥१५॥

जिस स्त्री के गुल्फप्रदेश दुर्बल एवं मांसरहित हों, वह भाग्यहीना होती है। इसके विपरीत जिसके गुल्फप्रदेश सुघड, मांसल और शिराविहीन हों तो वे शुभ और सुख-सौभाग्य को देने वाले होते हैं ॥१५॥

अगूढ़ौ शिथिलौ यस्यास्तस्या दौर्भाग्यसूचकौ।
गुल्फलक्षणमाख्यातं पार्ष्णिलक्षणमुच्यते ॥१६॥

अन्वयः—यस्याः (गुल्फौ) अगूढ़ौ शिथिलौ तस्याः दौर्भाग्यसूचकौ गुल्फलक्षणम् आख्यातं पार्ष्णिलक्षणम् उच्यते ॥१६॥

जिस स्त्री के गुल्फ (टखने) दुर्बल और ढीले हों, तो वे उसके दुर्भाग्य के सूचक होते हैं। इस प्रकार गुल्फलक्षण कह कर अब मैं पार्ष्णि-लक्षण कहता हूँ ॥१६॥

पार्ष्णि (एड़ी) लक्षण

समानपार्ष्णिः सुभगा पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा।
कुलटा तुङ्गपार्ष्णिश्च दीर्घपार्ष्णिर्गदाकुला ॥१७॥

अन्वयः—समानपार्ष्णिः सुभगा पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा, तुङ्गपार्ष्णिश्च कुलटा दीर्घपार्ष्णिः गदाकुला भवेत् ॥१७॥

स्त्री की समान एड़ी हो, न अधिक स्थूल और न अधिक दुर्बल हो, तो वह सुख-सौभाग्य को देने वाली होती है। स्त्री की स्थूल एड़ी दुर्भाग्य की सूचक होती है। जिस स्त्री की एड़ी ऊँची हो, वह कुलटा होती है। जिसकी एड़ी लम्बी हो, वह स्त्री रोगार्त होती है ॥१७॥

जङ्घा-लक्षण

जङ्घे रम्भोपमे यस्या रोमहीने च वर्तुले।
मांसले च समे स्निग्धे राज्ञी सा भवति ध्रुवम् ॥१८॥

अन्वयः—यस्याः जंघे रम्भोपमे रोमहीने वर्तुले मांसले समे च स्निग्धे च (सा) ध्रुवं राज्ञी भवति ॥१८॥

जिस स्त्री की जाँघ केले के स्तम्भ के समान रोमविहीन, गोल, मांसल और सुडौल, स्निग्ध हो, वह स्त्री राजमहिषी होती है ॥१८॥

रोमलक्षण

एकरोमा प्रिया राज्ञी द्विरोमा सौख्यभागिनी।
त्रिरोमा विधवा ज्ञेया रोमकूपेषु कामिनी ॥१९॥

अन्वयः—कामिनी रोमकूपेषु एकरोमा प्रिया राज्ञी, द्विरोमा सौख्यभागिनी, त्रिरोमा विधवा ज्ञेया ॥१९॥

जिसकी जाँघ के रोमकूपों में केवल एक-एक रोम हों वह राजरानी के समान ऐश्वर्यशालिनी होती है। जाँघ के रोमकूपों में दो-दो रोम हों तो वह स्त्री सुख-सौभाग्यशालिनी होती है। यदि तीन-तीन रोम एक ही कूप से निकले हों तो वह स्त्री विधवा होती है ॥१९॥

भवति जानुयुगं यदि मांसलं तदतिवृत्तमतीव शुभप्रदम्।
भुवनभर्तुरतो विपरीतमादिभिरिदं विपरीतमुदीरितम् ॥२०॥

अन्वयः—यदि जानुयुगं मांसलं तदतिवृत्तं भवति (तदा) अतीव शुभप्रदं (तथा) भुवनभर्तुः भवति, इदं विपरीतं (तदा फलमपि) विपरीतं (इति) आदिभिः उदीरितम् ॥२०॥

स्त्री की दोनों जंघायें यदि मांसल, गोल, सुडौल हों, तो वह अत्यन्त शुभकर होती हैं तथा ऐसी स्त्री राजरानी के समान ऐश्वर्यशालिनी होती है। इसके विपरीत होने से विपरीत फल समझना चाहिए ॥२०॥

कटिनितम्ब-लक्षण

समुन्नतनिताम्बाद्या यस्याः सिद्धाङ्गुला कटिः।
सा राजपट्टमहिषी नानालीभिः समावृता ॥२१॥

अन्वयः—यस्याः नितम्बाद्या समुन्नतं (तथा) कटिः सिद्धाङ्गुला (स्यात् तदा) सा नानालीभिः समावृता राजपट्टमहिषी (भवति) ॥२१॥

जिस स्त्री के कटिप्रदेश का परिमाप २४ अङ्गुल हो एवं समुन्नत नितम्ब हों तो वह अनेक सखियों एवं दासियों से घिरी हुई राजा की पट्टमहिषी के समान ऐश्वर्यशालिनी होती है ॥२१॥

निर्मांसा विनता दीर्घा चिपिटा शकटाकृतिः।
लघ्वी रोमाकुला नार्या वैधव्यं दिशते कटिः ॥२२॥

अन्वयः—(यस्याः) कटिः निर्मांसा, विनता, दीर्घा, चिपिटा, शकटाकृतिः लघ्वी रोमाकुला (स्यात्तदा) नार्या वैधव्यं दिशते ॥२२॥

जिस स्त्री का कटिभाग मांसरहित, सूखा, दबा हुआ, चौड़ा, चिपटा, शकट के समान, छोटा एवं रोमावलि से ढका हो तो वह विधवा होती है ॥२२॥

सीमन्तिनीनां यदि चारुबिम्बो भवेन्नितम्बो बहुभोगदः स्यात् ।
समुन्नतो मांसल एव यासां पृथुः सदा कामसुखाय तासाम् ॥२३॥

अन्वयः—यदि सीमन्तिनीनां नितम्बः चारुविम्बः भवेत् तदा बहुभोगदः स्यात् (तथा) यासां समुन्नतः मांसलः पृथुः एव भवेत् तासां सदा कामसुखाय स्यात् ॥२३॥

जिस स्त्री के नितम्ब गोल, मण्डलाकार एवं सुन्दर हों वह अनेक भोगों को देने वाली होती है। जिसके नितम्ब समुन्नत, मांसल और स्थूल हों, वह भी कामसुख-प्रदायिनी होती है ॥२३॥

भग-लक्षण

यदा गजस्कन्धसमानरूपो भगोऽथवा कच्छपपृष्ठवेषः ।
इलापतेः कामविनोददायी वा सोन्नतः सोऽपि सुताजनेता ॥२४॥

अन्वयः—यदि (कामिन्याः) भगः गजस्कन्धसमानरूपः अथवा कच्छपपृष्ठवेषः वा सोन्नतः भवेत् (तदा) सा इलापतेः कामविनोददायी अपि च सुताजनेता भवति ॥२४॥

जिस स्त्री का भग हाथी के स्कन्ध के समान अथवा कछुये की पीठ के समान समुन्नत हो तो ऐसी स्त्री राजाओं को कामसुख देने वाली अर्थात् राजरानी के समान वैभवादि से सम्पन्न होती है तथा ऐसी योनि कन्याओं को जन्म देती है ॥२४॥

अश्वत्थदलरूपो वा भगो गूढ़मणिः शुभः ।
चुल्हिकोदररूपो यः कुरङ्गखुरसन्निभः ॥२५॥
रोमाकुलो दृष्टनासो विकृतास्यो महाधमः ।
कामिनां न विनोदार्हो भगो भवति सर्वथा ॥२६॥

अन्वयः—(यदि वा) भगः अश्वत्थदलरूपः वा गूढ़मणिः (स्वरूपस्तदा) शुभः, (अथवा) चुल्हिकोदररूपः यः कुरङ्गखुरसन्निभः रोमाकुलः दृष्टनासः विकृतास्यः भगः महाधमः (तथा) कामिनां सर्वथा विनोदार्हः न भवति ॥२५-२६॥

जिस स्त्री का भग पीपल के पत्ते के आकार का हो और भगाङ्कुर भीतर हो तो वह भग अत्यन्त शुभद होता है। चुल्ही के आकार वाली अथवा हरिण के खुर के समान, दृष्ट भगाङ्कुर और सघन रोमावलि से युक्त भग, जो देखने में भद्दा हो, वह यदा- कदा कामियों को सुख देने वाला होता है ॥२५-२६॥

कामिन्याः कञ्चुकावर्तो भगो दौर्भाग्यवर्द्धकः ।
स गर्भधारणाशक्तो वक्राकारोऽपि तादृशः ॥२७॥

अन्वयः—कामिन्याः भगः कञ्चुकावर्तः दौर्भाग्यवर्द्धकः (तदा) गर्भधारणाशक्तः स वक्राकारोऽपि तादृशः (गर्भधारणाशक्तः) ॥२७॥

स्त्री का भग यदि कञ्चुकाकार चोली के समान दोनों और ऊँचा और मध्य में गहरा हो तो वह दुर्भाग्य की अभिवृद्धि करने वाला होता है। ऐसी योनि गर्भ धारण करने में अक्षम होती है। वक्राकार अर्थात् टेढ़ी-मेढ़ी योनि भी इसी प्रकार दुर्भाग्य को देने वाली और गर्भधारण में असमर्थ होती है ॥२७॥

वेतसवंशदलप्रतिभासः कर्पररूपवदेव भगो वा।
लम्बगलो विकटो गजलोमा नैव शुभश्चिपिटोऽपि निरुक्तः ॥२८॥

अन्वयः—भगः वेतसवंशदलप्रतिभासः कर्पररूपवदेव वा लम्बगलः विकटः गजलोमा (वा) चिपिटोऽपि नैव शुभः (इति निरुक्तः) ॥२८॥

बेंत अथवा बाँस के पत्ते के आकार वाला या कर्पर—कड़ाही के आकार का, गले के आकार-सदृश लम्बा और स्थूल भग, असम—ऊँचा-नीचा भग, हाथी के रोम के समान रूक्ष रोमों से आवृत्त एवं चिपटा भग अशुभसूचक होता है ॥२८॥

मृदुतरं मृदुरोमकुलाकुलं यदि तदा जघनं भगभाजनम्।
उत समुन्नतमायतमादरात् पतिकलाकलितं गदितं बुधैः ॥२९॥

अन्वयः—यदि मृदुतरं मृदुरोमकुलाकुलं जघनं तदा भगभाजनम्, उत समुन्नतम् आयतम् आदरात् पतिकलाकलितं (भगभाजनमिति) बुधैः गदितम् ॥२९॥

कोमल, सुचिक्कण, कोमल रोमावलि से आच्छादित भग और जघन, जिसके दर्शन अथवा स्पर्श से पति आनन्दित हो उठे, वही श्रेष्ठ होता है ॥२९॥

तदेव दक्षिणावर्त्तं मांसलं शुभसूचकम्।
वामावर्त्तं च नारीणां खण्डितं खण्डिताश्रयम् ॥३०॥

अन्वयः—तदेव दक्षिणावर्त्तं मांसलं शुभूसूचकम्, वामावर्त्तं च नारीणां खण्डितं खण्डिताश्रयम् ॥३०॥

यदि भग दक्षिणावर्त हो अर्थात् दाहिनी ओर घूमा हुआ हो-एवं मांसल हो तो ऐसा भग शुभद होता है। यदि भग का घुमाव वामावर्त हो, तो ऐसा भग स्त्री को व्यभिचारिणी बनाता है ॥३०॥

निर्मांसं कुटिलाकारं रूक्षं वैधव्यसूचकम्।
अतिस्थूलं महादीर्घं सद्यो दौर्भाग्यवर्द्धकम् ॥३१॥

अन्वयः—निर्मांसं कुटिलाकारं रूक्षं वैधव्यसूचकम्, अतिस्थूलं महादीर्घं सद्यः दौर्भाग्यवर्द्धकम् ॥३१॥

निर्मांस, सूखी हुई एवं टेढ़ी-मेढ़ी योनि पति के लिए घातक होती है। अति स्थूल और लम्बी योनि दुर्भाग्यकारक होती है ॥३१॥

बस्ति-लक्षण

मृदुला विपुला बस्तिः शोभना च समुन्नता।
अशुभा रेखयाऽऽक्रान्ता शिराला लोमसङ्कुला ॥३२॥

अन्वयः—बस्तिः मृदुला विपुला समुन्नता च शोभना, रेखया आक्रान्ता शिराला लोमसंकुला (तदा) अशुभा ॥३२॥

जिसका बस्ति प्रदेश (नाभि से भगपर्यन्त विस्तृत प्रदेश) कोमल, समुन्नत, उठा हुआ और विस्तृत हो तो वह शुभ फल देता है। यदि यह बस्ति प्रदेश रूक्ष, शिराओं और अनेक रेखाओं से युक्त एवं सघन रोम से आच्छादित हो, तो ऐसा बस्ति प्रदेश अशुभ फल देता है ॥३२॥

नाभि-लक्षण

गभीरा दक्षिणावर्त्ता नाभी भोगविवर्द्धिनी।
व्यक्तग्रन्थिः समुत्ताना वामावर्त्ता न शोभना ॥३३॥

अन्वयः—नाभी गभीरा दक्षिणावर्ता (तदा) भोगविवर्द्धिनी व्यक्तग्रन्थिः समुत्ताना वामावर्त्ता न शोभना ॥३३॥

गहरी और दाहिनी ओर घूमी हुई नाभि शुभ फल देने वाली होती है। बाँयीं ओर झुकी हुई, ग्रन्थियों (गाँठों) से युक्त उभरी हुई नाभि शुभद नहीं होती ॥३३॥

उदर-लक्षण

पृथूदरी यदा नारी सूते पुत्रान् बहूनपि।
भेकोदरी नरेशानं बलिनं चायतोदरी ॥३४॥

अन्वयः—यदा नारी पृथूदरी बहूनपि पुत्रान् सूते, भेकोदरी नरेशानां च आयतोदरी बलिनं प्रसूयते ॥३४॥

जिस स्त्री का उदर बृहद् हो, वह बहुत पुत्रों को जन्म देती है। जिसका उदर मेढ़क के आकार का हो, वह राजा को जन्म देती है तथा जिसका उदरभाग आयताकार हो, उस स्त्री को शूरवीर की माता होने का गौरव प्राप्त होता है ॥३४॥

उन्नतेनोदरेणैव वन्ध्या नारी प्रजायते।
जठरेण कठोरेण सा भवेद्भिन्दुकाङ्गना ॥३५॥

अन्वयः—उन्नतेन उदरेण एव नारी वन्ध्या प्रजायते, कठोरेण जठरेण सा भिन्दुकाङ्गना भवेत् ॥३५॥

समुन्नत उदर वाली महिला वन्ध्या होती है। जिस स्त्री का उदरभाग कठोर हो, वह नीच जातिविशेष के पुरुष की पत्नी होती है ॥३५॥

आवर्त्तेन युतेनैव दासिका भवति ध्रुवम्।
कोमलैर्मांससंयुक्तैः समानैः पार्श्वकैः शुभम् ॥३६॥

अन्वयः—आवर्त्तेन युतेन एव ध्रुवं दासिका भवति, पार्श्वकैः कोमलैः मांससंयुक्तैः समानैः शुभम् ॥३६॥

जिसके उदरभाग में आवर्त (भँवरी) हो, वह दासी होती है। स्त्री के पार्श्वभाग यदि कोमल, मांसल और सम हों तो वह अत्यन्त शुभद होती है ॥३६॥

विशिरेण मृदुत्वचा सपुत्रा जठरेणातिकृशेन कामिनी सा।
बहुधाऽतुलभोगलालिता साऽनुदिनं मोदकसत्फलाशिनी स्यात् ॥३७॥

अन्वयः—विशिरेण मृदुत्वचा जठरेण अतिकृशेन सा कामिनी सपुत्रा बहुधा अतुलभोगलालिता (तथा च सा) अनुदिनं मोदकसत्फलाशिनी स्यात् ॥३७॥

शिरारहित, कोमल त्वचा से युक्त और अति कृश उदर वाली महिला सत्पुत्रों की जननी, अनेक वैभव और भोगों से तृप्त रहने वाली तथा नित्य मोदक, सुन्दर भोजन और सुन्दर फलों का भक्षण करती है ॥३७॥

घटाकारं यस्या भवति च मृदङ्गेन सदृशं
यवाकारं दैवादुदरमहितं पुत्ररहितम्।
अभद्रं नो भद्रं तदपि यदि कूष्माण्डसदृशं
निरुक्तं तत्त्वज्ञैः कठिनमुरुशालेन च समम् ॥३८॥

अन्वयः—यस्याः उदरं घटाकारं यवाकारं (तथा) दैवात् मृदङ्गेन सदृशं च भवति (तदा) अहितं पुत्ररहितं भवति, यदि कूष्माण्डसदृशं तदपि अभद्रं यदि कठिनं उरुशालेन च समं (तदपि) नः भद्रं (इति) तत्त्वज्ञैः निरुक्तम् ॥३८॥

जिस स्त्री का उदरभाग घड़े के समान हो, मृदङ्ग या यव के समान हो, वह नेष्ट (अहितकर), पुत्रहीन होती है। यदि स्त्री का उदरभाग कुम्हड़े के आकार का हो अथवा ऊरुशाल के समान कठोर हो, तो उसे कभी मङ्गल अथवा शुभ उत्सवादि देखने को नहीं मिलता ॥३८॥

त्रिवली-लक्षण

कृशतरा त्रिवली सरलावली ललितनर्मविनोदविवर्द्धिनी।
भवति सा कपिला कुटिलाकुला शुभकरी विरला महदाकृतिः ॥३९॥

अन्वयः—(यस्याः) त्रिवली कृशतरा सरलावली भवति सा ललितनर्मविनोदविवर्द्धिनी (भवति, यदि) सा कपिला कुटिला (तदा) अकुला, यदि विरला महदाकृतिः (तदा) शुभकरी (भवति) ॥३९॥

जिस स्त्री की त्रिवली पतली, सीधी एवं कोमल हो, वह आनन्द और सुख देने वाली होती है। जिसकी त्रिवली बृहदाकार, मोटी एवं भूरे वर्ण की सघन हो, टेढ़ी-मेढ़ी

हो, विरल हो, वह स्त्री कुटिल स्वभाव की होती है। यदि विरल रोमों से युक्त और बड़ी त्रिवली हो तो शुभद होती है ।।३९।।

वक्ष-लक्षण

लोमहीनहृदयं यदा भवेन्निम्नताविरहितं समायतम्।
भोगमेत्य सकलं वराङ्गना सा पुनः प्रियवियोगमालभेत् ।।४०।।

अन्वयः—यदा लोमहीनहृदयं निम्नताविरहितं समायतं भवेत् (तदा) सा वराङ्गना सकलं भोगं एत्य पुनः प्रियवियोगम् आलभेत् ।।४०।।

जिस स्त्री का वक्ष:स्थल रोमरहित, समतल और आयताकार होता है, वह समस्त भोगों को भोगने के अनन्तर पति वियोग से पीड़ित होती है ।।४०।।

उद्भिन्नरोमहृदया स्वपतिं निहन्ति
विस्ताररूपहृदया व्यभिचारिणी स्यात्।
अष्टादशांगुलमितं हृदयं सुखाय
चेद्रोमशं च विषमं न सुखाय किञ्चित् ।।४१।।

अन्वयः—उद्भिन्नरोमहृदया स्वपतिं निहन्ति विस्ताररूपहृदया व्यभिचारिणी स्यात्। अष्टादशांगुलमितं हृदयं सुखाय चेत् विषमं रोमशं (तथा) किञ्चित् सुखाय न (भवति) ।।४१।।

जिस महिला के वक्ष:स्थल के रोम असम (कहीं हों, कहीं न हों) हों, तो वह महिला अपने पति के लिए घातक होती है। जिस स्त्री का वक्ष:स्थल विस्तृत हो, वह व्यभिचारिणी होती है। अट्ठारह अङ्गुल चौड़ा वक्ष सुख देने वाला होता है। जिस स्त्री का वक्ष सघन रोमाच्छादित हो और असम हो तो वह जीवन में कदाचित् ही सुख प्राप्त करती है ।।४१।।

उन्नतं पीवरं शस्तं हृदयं वरयोषिताम्।
अपीवरमिदं नीचं पृथुदौर्भाग्यसूचकम् ।।४२।।

अन्वयः—वरयोषितां हृदयं उन्नतं पीवरं शस्तं (यदि) हृदयं अपीवरं नीचं (तदा) पृथु दौर्भाग्यसूचकं भवेत् ।।४२।।

समुन्नत, मांसल वक्ष स्त्री और पुरुष दोनों के लिए प्रशस्त होता है। दबे हुए एवं मांसहीन वक्ष दुर्भाग्य के सूचक होते हैं ।।४२।।

स्तन-लक्षण

भवत एव समौ सुदृढ़ाविमौ यदि घनौ सुदृशस्तु पयोधरौ।
निजपतेरनिशं परिवर्त्तुलौ कुसुमबाणविनोदविवर्द्धकौ ।।४३।।

अन्वयः—यदि पयोधरौ समौ सुदृढौ घनौ परिवर्तुलौ (तथा) सुदृश एव भवतः (तदा) निजपतेः अनिशं कुसुमबाणविनोदविवर्द्धकौ (भवतः) ।।४३।।

स्त्री के समान आकार के सुदृढ़ और सुन्दर, गोलाकार स्तन कामक्रीड़ा के आनन्द को बढ़ाने वाले होते हैं ।।४३।।

सुभ्रुवौ विरलौ सूक्ष्मौ स्थूलाग्रावहिताविमौ।
पयोधरौ तदा नार्याः प्रभवेद्दक्षिणोन्नतः ।।४४।।
पुत्रदोऽप्यथ कन्यादो यदा वामोन्नतो भवेत्।
सान्तरालौ च विस्तारौ पीवरास्यौ न शोभनौ ।।४५।।

अन्वयः—सुभ्रुवौ नार्याः पयोधरौ विरलौ सूक्ष्मौ स्थूलाग्रौ तदा अहितौ (भवतः) दक्षिणोन्नतः पुत्रदः प्रभवेत्, यदा वामोन्नतः कन्यादः भवेत् अथ सान्तरालौ च विस्तारौ पीवरास्यौ न शोभनौ भवतः ।।४४-४५।।

सुन्दर भृकुटी वाली स्त्री के स्तन यदि मिले या सटे रहते हों और आकार में बड़े हों तो शुभद नहीं होते। दक्षिण स्तन यदि अपेक्षया बड़े हों तो पुत्रलाभ कराते हैं। यदि वाम स्तन अपेक्षाकृत बड़े हों तो उस स्त्री को कन्यायें अधिक होती हैं। जिनके स्तनों के मध्य अन्तर हो अर्थात् वे एक-दूसरे से सटे हुए न हों, आकार में बड़े हों और उनके अग्रभाग भी स्थूल हों तो वे शुभ नहीं होते ।।४४-४५।।

मूले स्थूलौ क्रमकृशावग्रे तीक्ष्णौ पयोधरौ।
सुखदौ पूर्वकाले तु पश्चादत्यन्तदुःखदौ ।।४६।।

अन्वयः—पयोधरौ मूले स्थूलौ क्रमकृशौ अग्रे तीक्ष्णौ तदा पूर्वकाले सुखदौ तु पश्चादत्यन्तदुःखदौ (भवतः) ।।४६।।

अपने मूल भाग में स्थूल और क्रमशः पतला होकर स्तन का अग्रभाग नुकीला हो, तो वह आरम्भ में सुखकर और बाद में दुःखद होता है ।।४६।।

स्कन्ध-लक्षण

पुत्रिणी विनतस्कन्धा ह्रस्वस्कन्धा सुखप्रदा।
पुष्टस्कन्धा तु कामान्धा रतिभोगसुखावहा ।।४७।।

अन्वयः—विनतस्कन्धा पुत्रिणी ह्रस्वकन्धा सुखप्रदा पुष्टस्कन्धा तु कामान्धा रतिभोगसुखावहा ।।४७।।

जिस स्त्री के स्कन्ध नमित झुके हुए हों, वह पुत्रवती होती है। जिसके स्कन्ध आकार में छोटे हों, वह सुखकर होती है तथा विशाल सुविस्तृत स्कन्ध वाली स्त्री कामान्ध होती है और केलिक्रीडा में सुख देती है ।।४७।।

मदान्धा कुटिलस्कन्धा स्थूलस्कन्धा च तादृशी।
यदि लोमाकुलस्कन्धा वैधव्यं द्रुतमावहेत् ।।४८।।

अन्वयः—कुटिलस्कन्धा मदान्धा स्थूलस्कन्धा च तादृशी यदि लोमाकुलस्कन्धा द्रुतं वैधव्यम् आवहेत् ।।४८।।

कुटिल, टेढ़ी-मेढ़ी, ऊँची-नीची अथवा स्थूल स्कन्ध वाली स्त्री मदान्ध होती है। सघन रोमावली से आच्छादित स्कन्ध वैधव्य देता है ॥४८॥

स्रस्तांसा संहतांसा च धन्या भवति कामिनी।
तुङ्गांसा विधवा ज्ञेया विमांसांसा तथैव च॥४९॥

अन्वयः—स्रस्तां स संहतां सा च कामिनी धन्या भवति, तुङ्गा सा विधवा ज्ञेया विमांसां सा तथैव च (विधवा भवति) ॥४९॥

दोनों स्कन्धों के भुजमूल यदि स्थूल, चौड़े और मांसल एवं कड़े हों तो ऐसी स्त्री शुभ और ऐश्वर्यशालिनी होती है। यदि भुजमूल दुर्बल, ऊँचे एवं सूखे हुए हों तो वह स्त्री विधवा होती है ॥४९॥

कराङ्गुलि-लक्षण

अङ्गुष्ठाङ्गुलिकं युग्मं यत्पद्मकलिकासमम्।
बहुभोगाय नारीणां निर्मितं विधिना पुरा॥५०॥

अन्वयः—अंगुष्ठांगुलिकं युग्मं यत् पद्मकलिकासमम् नारीणां बहुभोगाय पुरा विधिना निर्मितम् ॥५०॥

जिस स्त्री के हाथ के अंगूठे और न्यूनतम दो अङ्गुलियाँ कमल की कली के समान आभायुक्त हों, तो ऐसी स्त्री का निर्माण ब्रह्मा सभी प्रकार के भोग के लिये ही करते हैं ॥५०॥

करतल-लक्षण

करतलं भुजयोर्यदि कोमलं विमलपद्मनिभं च समुन्नतम्।
निजपतेः कुसुमायुधवर्द्धकं निगदितं मुनिना विधिनोदितम्॥५१॥

अन्वयः—यदि भुजयोः करतलं कोमलं विमलपद्मनिभं च समुन्नतं (तदा) निजपतेः कुसुमायुधवर्द्धकं (इति) विधिना उदितं मुनिना निगदितम् ॥५१॥

जिस स्त्री के करतल (हथेली) भुजाओं की अपेक्षा कोमल, स्निग्ध, कमल की आभा से युक्त और समुन्नत होते हैं, वह पति में काम को उद्दीप्त करने वाली होती है—ऐसा श्रेष्ठ मुनियों का कथन है ॥५१॥

स्वच्छरेखाकुलं भद्रं नो भद्रं हीनरेखया।
अभद्रं रेखया हीनं वैधव्यं चातिरेखया॥५२॥

अन्वयः—स्वच्छरेखाकुलं भद्रं हीनरेखया नः भद्रं रेखया हीनम् अभद्रं च अतिरेखया अभद्रं (स्यात्) ॥५२॥

स्पष्ट रेखाओं से युक्त हथेली शुभद होती है। जिस स्त्री की हथेली की रेखाएँ छोटी हों, वह अशुभकर होती हैं। जिसकी हथेली रेखाविहीन हो, वह भी अमंगलकारक होती है; किन्तु जिस स्त्री की हथेली में बहुत रेखाएँ हो, वह विधवा होती है ॥५२॥

शिरालं कुरुते निःस्वं नारीकरतलं यदि।
समुन्नतं च विशिरं करपृष्ठं सुशोभनम् ॥५३॥

अन्वयः—यदि नारी करतलं शिरालं निःस्वं कुरुते करपृष्ठं समुन्नतं च विशिरं सुशोभनम् ॥५३॥

जिस स्त्री के करतल भाग शिराओं (नसों) से युक्त हों एवं वे शिराएँ उभरी हुई हों, वह दरिद्रा होती है। शिराओं से रहित एवं समुन्नत करपृष्ठ शुभद होता है ॥५३॥

रोमाकुलं गभीरं च निर्मांसं पतिजीवहृत्।
सुभ्रुवः करपृष्ठस्य लक्षणं गदितं बुधैः ॥५४॥

अन्वयः—सुभ्रुवः (करपृष्ठं) रोमाकुलं गभीरं च निर्मांसं पतिजीवहृते, करपृष्ठस्य लक्षणं बुधैः निगदितम् ॥५४॥

गहन रोमों से आच्छदित, गहरा और मांसहीन करपृष्ठ जिस स्त्री का हो, वह अपने पति के लिए अनिष्टकारक होती है। इस प्रकार पूर्वाचार्यों ने करपृष्ठ के लक्षण कहे हैं ॥५४॥

रेखा-फल

गभीरा रक्ताभा भवति मृदुला वा स्फुटतरा
करे वामे रेखा जनयति मृगाक्ष्या बहु शुभम्।
यदा वृत्ताकारा पतिरतिसुखं विन्दति परं
विसारं सौभाग्यं बलमपि सुतं स्वस्तिकमपि ॥५५॥

अन्वयः—मृगाक्ष्या वामे करे गभीरा रक्ताभा मृदुला वा स्फुटतरा रेखा भवति (तदा) बहुशुभं जनयति, यदा वृत्ताकारा (रेखा तदा) पतिरतिसुखं परं विन्दति विसारं स्वस्तिकम् अपि सौभाग्यं बलमपि सुतं (विन्दति) ॥५५॥

जिस स्त्री के बाँयें हाथ की रेखाएँ गहरी, रक्ताभ, कोमल और स्पष्ट हों, वह अत्यन्त शुभ करने वाली होती है। जिस स्त्री के हाथ की रेखाएँ गोलाकार हों, वह पति को रतिसुख देने में समर्थ होती है। यदि करतल मत्स्य, स्वस्तिक आदि शुभ चिह्नों से युक्त हो तो वह सुख-सौभाग्य, शारीरिक सुख और सन्तानादि समस्त सुखों को देने वाली होती है ॥५५॥

करतले यदि पद्ममिलापतेः प्रियतमा परमा गरिमावृता।
नृपमपत्यमलं जनयेदरं बलवतामपि मानविमर्दकम् ॥५६॥

अन्वयः—यदि करतले पद्मं इलापतेः प्रियतमा परमा गरिमावृता, नृपम् अपत्यमलं जनयेत् अरं बलवताम् अपि मानविमर्दकम् ॥५६॥

जिस महिला के करतल में कमल का चिह्न हो वह परम गरिमामयी एवं राजा की

पट्टमहिषी होती है तथा शत्रुओं का विनाश करने में पूर्ण सामर्थ्यवान् राजा को जन्म देती है ॥५६॥

यदा प्रदक्षिणाकारो नद्यावर्तः प्रजायते।
चक्रवर्तिनृपस्त्री सा यस्याः पाणितलेऽमले ॥५७॥

अन्वयः—यस्याः अमले पाणितले यदा प्रदक्षिणाकरः नद्यावर्तः प्रजायते सा चक्रवर्तिनृपस्त्री (भवति) ॥५७॥

जिस स्त्री के हाथ में प्रदक्षिणाकार (बाँयें से दाहिनी ओर घूमी हुई) नद्यावर्त (भँवरी) का चिह्न हो, वह चक्रवर्ती राजा की रानी होने का गौरव प्राप्त करती है ॥५७॥

आतपत्रं च कमठः शंखोऽपि यदि वा भवेत्।
नृपमाता गुणोपेता भव्याकारा पतिव्रता ॥५८॥

अन्वयः—यदि आतपत्रं च कमठः शङ्खः अपि वा भवेत् (सा) नृपमाता गुणोपेता भव्याकारा पतिव्रता भवति ॥५८॥

जिस स्त्री के करतल भाग में छत्र, कछुआ और शंख आदि की आकृति हो, वह भव्य स्वरूप-गुणशीला एवं पतिव्रता राजमाता होती है ॥५८॥

यस्या वामकरे रेखा तुलामालोपमा भवेत्।
वैश्यवामा रमापूर्णा नानालङ्कारमण्डिता ॥५९॥

अन्वयः—यस्याः वामकरे तुलामालोपमा रेखा भवेत्, (सा) वैश्यवामा रमापूर्णा नानालङ्कारमण्डिता (भवति) ॥५९॥

जिस स्त्री के बाँयी हाथ की हथेली में तराजू और माला का चिह्न हो, वह समस्त वैभवादि से सम्पन्न एवं अनेक आभूषणों से सुशोभित किसी श्रेष्ठी की पत्नी होती है ॥५९॥

करतले गजवाजिवृषाकृतिः कृतिविदामबला किल कोविदा।
भवति सौधसमा यदि सुभ्रुवः शशिनिभाऽतिशुभा किल रेखिका ॥६०॥

अन्वयः—(यस्याः) करतले गजवाजिवृषाकृतिः भवति (सा) कृतिविदां अबला किल कोविदा, यदि सुभ्रुवः सौधसमा शशिनिभा किल रेखिका अतिशुभा भवति ॥६०॥

जिस महिला की हथेली हाथी, घोड़े, बैल की आकृतियों से युक्त हो, वह परम विदुषी एवं कृत कार्यों की समीक्षा करने में समर्थ होती है। करतल भाग में यदि पक्के मकान या चन्द्रमा की आकृति वाले चिह्न हों तो वह गुणवती और परम भाग्यशालिनी होती है ॥६०॥

भवति सा विमलाङ्कुशचामरामलशरासनवद्यदि रेखिका।
गुणविभूषितभूपतिवल्लभा करतले शकटेन विशोऽबला ॥६१॥

अन्वयः—(यस्याः) करतले विमलांकुशचामरामलशरासनवत् यदि रेखिका भवति सा गुणविभूषितभूपतिवल्लभा (तथा) शकटेन विशः अबला (भवति) ॥६१॥

जिस स्त्री के करतल में अङ्कुश और धनुष के आकार की रेखाएँ स्पष्ट हों, वह अनेक सद्‌गुणों से युक्त राजरानी होती है। यदि शकट (गाड़ी) के चिह्नों से हथेली युक्त हो तो वह व्यवसायी की पत्नी होती है ॥६१॥

अङ्गुष्ठमूलतो रेखा कनिष्ठा यदि गच्छति।
यस्याः सा पतिहन्त्री तां दूरतः परिवर्जयेत् ॥६२॥

अन्वयः—यस्याः अङ्गुष्ठमूलतः कनिष्ठा रेखा यदि गच्छति (तदा) सा पतिहन्त्री (अतः) तां दूरतः परिवर्जयेत् ॥६२॥

जिस स्त्री के अङ्गुष्ठ के मूलभाग से निकल कर कोई रेखा कनिष्ठिका के मूल तक गई हो, उसका त्याग कर देना चाहिए; क्योंकि वह पति के लिए अनिष्टकर होती है ॥६२॥

यदि करे करवालगदामलप्रखरकुन्तमृदङ्गकुरङ्गवत्।
भवति शूलनिभा खलु रेखिका भुवि सदा धनदा प्रमदा तदा ॥६३॥

अन्वयः—यदि करे करवालगदामलप्रखरकुन्तमृदङ्गकुरङ्गवत् (तथा) शूलनिभा खलु रेखिका भवति तदा प्रमदा भुवि सदा धनदा (भवति) ॥६३॥

स्त्री की हथेली में तलवार, गदा, भाला (कुन्त), मृदङ्ग, हरिण और त्रिशूल की आकृति के चिह्न हों, तो वह धनदात्री होती है ॥६३॥

वृषभेकवृश्चिकभुजङ्गजम्बुकाः खरकङ्कपत्रशलभा विडालकाः।
यदि वामपाणितलगा भवन्ति चेत् कलहेन सार्द्धमतिरोगकारकाः ॥६४॥

अन्वयः—यदि वृषभेकवृश्चिकभुजङ्गजम्बुकाः खरकङ्कपत्रशलभा विडालकाः वामपाणितलगाः भवन्ति चेत् कलहेन सार्द्धमतिरोगकारकाः (भवन्ति) ॥६४॥

जिस स्त्री के करतल भाग में बैल, मेढ़क (भेक), वृश्चिक (बिच्छू), सर्प, शृगाल, गधा, कंकपत्र (पक्षीविशेष), पतङ्ग और बिल्ली के आकार वाली रेखाएँ हों, तो वह स्त्री विवादी और रोगिणी होती हैं ॥६४॥

अंगुलिलक्षण

कोमलः सरलोऽङ्गुष्ठो वर्त्तुलो यदि योषिताम्।
क्रमादेवं कृशाङ्गुल्यो दीर्घाकाराश्च वर्त्तुलाः ॥६५॥
पृष्ठरोमाः प्रजाः शस्तश्चिपिटा उदिता बुधैः।
कृशाः कुञ्चितपर्वाणो ह्रस्वा रोगभयावहाः ॥६६॥
अनेकपर्वसंयुक्ता उन्नताङ्गुलयोऽशुभाः ॥६७॥

अन्वयः—यदि योषितामङ्गुल्यः कोमलः सरलः अङ्गुष्ठः वर्त्तुलः क्रमात् कृशांगुल्यः दीर्घाकाराश्च वर्त्तुलाः पृष्ठरोमाः चिपिटाः (तदा) शस्तफलाः (इति) बुधैः उदिताः एवं कृशाः कुञ्चितपर्वाणः ह्रस्वाः रोगभयावहाः (तथा च) अनेकपर्वसंयुक्ता उन्नताङ्गुल्यः अशुभाः ॥६५-६७॥

जिस स्त्री का अङ्गुष्ठ कोमल, सरल, (सीधा) तथा अङ्गुष्ठाग्र भाग वर्तुलाकार (गोल) हो, शेष अङ्गुलियाँ अङ्गुष्ठ से क्रमशः क्षीणतर और लम्बी तथा उनका अग्रभाग गोल हो, अङ्गुलियों के पृष्ठभाग रोमयुक्त हों और कुछ चिपटे हों तो वे पूर्वाचार्यों के कथनानुसार शुभ फल देने वाली होती हैं। दुर्बल और टेढ़ी-मेढ़ी छोटी अङ्गुलियाँ रोगभयकारक होती हैं। अनेक पर्वों (त्रयाधिक पर्वों) वाली तथा उठी हुई अङ्गुलियाँ अनिष्ट-कारक होती हैं ॥६५-६७॥

नख-लक्षण

शंखशुक्तिनिभा निम्ना विवर्णा न नखाः शुभाः ।
कपिला वक्रिता रूक्षाः सुभ्रुवः सुखनाशकाः ॥६८॥

अन्वयः—सुभ्रुवः शङ्खशुक्तिनिभा निम्ना विवर्णा नखाः न शुभाः कपिला वक्रिता रूक्षाः सुखनाशकाः (भवन्ति) ॥६८॥

जिस स्त्री के नख शंख या शुक्ति (सीपी) के जैसे आभा वाले एवं विवर्ण हों तो वे शुभद नहीं होते। यदि पीले या भूरे वर्ण के टेढ़े-मेढ़े, कटे-फटे हों और सूखे हों तो ऐसे नख स्त्री के सुखों का नाश करते हैं ॥६८॥

यदि भवन्ति नखेषु मृगीदृशां सितरुचो विरला यदि बिन्दवः ।
अतितरां कुसुमायुधपीड़या परजनेन लपन्ति रमन्ति ताः ॥६९॥

अन्वयः—यदि मृगीदृशां नखेषु सितरुचः विरलः बिन्दवः भवन्ति (तदा) अतितरां कुसुमायुधपीड़या परजनेन लपन्ति रमन्ति च ॥६९॥

मृग के समान नेत्रों वाली स्त्री के नख यदि रक्ताभायुक्त हों और उनपर श्वेत बिन्दु उभरे हों तो वह कामेच्छा की अधिकता से परपुरुष की इच्छा करती है और उनके साथ रमण करती है ॥६९॥

पृष्ठ-लक्षण

गुप्तास्थिपृष्ठवंशेन मांसलेन पतिप्रिया ।
रोममूलेन पृष्ठेन विधवा भवति ध्रुवम् ॥७०॥

अन्वयः—गुप्तास्थिपृष्ठवंशेन मांसलेन पतिप्रिया रोममूलेन पृष्ठेन ध्रुवं विधवा भवति ॥७०॥

जिस स्त्री के पृष्ठभाग में रीढ़ की हड्डी मांस से ढ़की हो और पृष्ठभाग मांसल हो, तो वह पतिप्रिया होती है। यदि पृष्ठभाग में रोम अधिक हों, तो वह स्त्री निश्चित रूप से विधवा होती है ॥७०॥

सशिरेणातिभुग्नेन विनतेन च दुःखिता।
सरलो मांसलो यस्याः पृष्ठवंशः समुन्नतः ॥७१॥
सा पत्युरनुभद्राख्या मुक्तालङ्कारमण्डिता।
अतिप्रिया सुशीला च वरालीभिः समावृता ॥७२॥

अन्वयः—यस्याः पृष्ठवंशः सशिरेण अतिभुग्नेन विनतेन च दुःखिता सरलः मांसलः समुन्नतः सा पत्युः अनुभद्राख्या मुक्तालङ्कारमण्डिता अतिप्रिया सुशीला च वरालीभिः समावृता (भवति) ॥७१-७२॥

जिस स्त्री की पीठ पर अनेक शिराएँ उभरी हों, उबड़-खाबड़ हों, दबी हुई हों, वह आजीवन दुःखी रहती है। जिसकी पीठ सरल, मांसल, रीढ़ की हड्डी उन्नत हो, तो वह सौभाग्यशालिनी अपने पति के लिए सुखकर, मोती आदि रत्नों से मण्डित आभूषणों से सुशोभित, अतिप्रिय और अनेक सखियों से घिरी रहती है ॥७१-७२॥

कण्ठ-लक्षण

कण्ठो वर्तुलरूपः कमनीयः पीनतायुक्तः।
चतुरङ्गुलश्च यस्याः सा निजभर्तुः प्रिया भवति ॥७६॥

अन्वयः—यस्याः कण्ठः वर्तुलरूपः कमनीयः पीनतायुक्तः चतुरङ्गुलश्च (लम्बः) सा निजभर्तुः प्रिया भवति ॥७३॥

स्त्री का कण्ठ यदि गोल, मनोरम, स्थूल और चार अङ्गुल लम्बा हो तो वह पतिप्रिया होती है ॥७३॥

गुप्तास्थिर्मांसला ग्रीवा त्रिरेखाभिः समावृता।
सुसंहता तदा शस्ता विपरीता न शोभना ॥७४॥

अन्वयः—(यस्याः) ग्रीवा गुप्तास्थिमांसला त्रिरेखाभिः समावृता सुसंहता तदा शस्ता, विपरीता न शोभना ॥७४॥

गुप्त अस्थियों वाली अर्थात् जिसकी ग्रीवा की हड्डियाँ न दिखती हों, तीन रेखाओं से युक्त और दृढ़ हों तो सुखकर होती है। इससे विपरीत आकार की ग्रीवा शुभद नहीं होती ॥७४॥

स्थूलग्रीवा धवत्यक्ता रक्तग्रीवा च दासिका।
अपतिश्चिपिटग्रीवा लघुग्रीवार्थवर्जिता ॥७५॥

अन्वयः—स्थूलग्रीवा धवत्यक्ता रक्तग्रीवा च दासिका चिपिटग्रीवा अपतिः लघुग्रीवा अर्थवर्जिता ॥७५॥

जिस स्त्री की ग्रीवा अधिक स्थूल हो, वह पति से परित्यक्ता होती है। यदि ग्रीवा रक्त वर्ण हो तो दासी, चिपटी ग्रीवा हो तो विधवा और यदि छोटी हो तो दरिद्रा होती है ॥७५॥

हनु-लक्षण

सुघना कोमला यस्या निर्लोमा च हनुः शुभा ।
लोमशा कुटिला लघ्वी चातिस्थूला न शोभना ।।७६।।

अन्वयः—यस्या हनुः सुघना कोमला निर्लोमा च शुभा, लोमशा कुटिला लघ्वी चातिस्थूला न शोभना ।।७६।।

जिस स्त्री की ठोढ़ी चिकनी, कोमल और निर्लोम हो, तो वह शुभद होती है। रोमावलियुक्त, अधिक स्थूल, वक्र और छोटी ठोढ़ी हो तो वह अशुभ होती है ।।७६।।

कपोल-लक्षण

मांसलौ कोमलावेतौ कपोलौ वर्त्तुलाकृती ।
समुन्नतौ मृगाक्षीणां प्रशस्तौ भवतस्तदा ।।७७।।

अन्वयः—मृगाक्षीणां एतौ कपोलौ मांसलौ वर्त्तुलाकृती समुन्नतौ भवतः तदा प्रशस्तौ (भवतः) ।।७७।।

समुन्नत, वर्तुल (गोलाकार), मांसल और कोमल कपोल स्त्रियों के लिए शुभद कहे गए हैं ।।७७।।

निर्मांसौ पुरुषाकारौ रोमशौ कुटिलाकृती ।
सीमन्तिनीनामशुभौ दौर्भाग्यपरिवर्द्धकौ ।।७८।।

अन्वः—सीमन्तिनीनां (कपोलौ) निर्मांसौ पुरुषाकारौ रोमशौ कुटिलाकृती (तदा) अशुभौ दौर्भाग्यपरिवर्द्धकौ (भवतः) ।।७८।।

मांसहीन, पुरुषों के समान, रोमों से युक्त और टेढ़े-मेढ़े या ऊँचे-नीचे कपोल स्त्री के दुर्भाग्य को बढ़ाने वाले होते हैं ।।७८।।

अधरोष्ठ-लक्षण

वर्तुलो रेखयाक्रान्तो बन्धूकसदृशोऽधरः ।
स्निग्धो राजप्रियो नित्यं सुभ्रुवः परिकीर्तितः ।।७९।।

अन्वयः—सुभ्रुवः अधरः वर्त्तुलः रेखया आक्रान्तः बन्धूकसदृशः स्निग्धः (तदा) नित्यं राजप्रियः परिकीर्तितः ।।७९।।

स्त्री के अधरोष्ठ यदि गोलाई लिए हुए, रेखाओं से युक्त, बन्धूक पुष्प के समान रक्ताभ और स्निग्ध हों तो ऐसी स्त्री राजाओं को प्रिय होती है ।।७९।।

प्रलम्बः पुरुषाकारः स्फुटितो मांसवर्जितः ।
दौर्भाग्यजनको ज्ञेयः कृष्णो वैधव्यसूचकः ।।८०।।

अन्वयः—प्रलम्बः पुरुषाकारः स्फुटितः मांसवर्जितः दौर्भाग्यजनकः ज्ञेयः, कृष्णः वैधव्यसूचकः ।।८०।।

स्त्री के अधरोष्ठ यदि लम्बे, पुरुष के सदृश फटे हुए और मांसहीन, सूखे हों तो स्त्रियों के लिए दुर्भाग्य के कारक होते हैं। यदि अधरोष्ठ श्यामल वर्ण के हों, तो वैधव्य के सूचक होते हैं ॥८०॥

दन्त-लक्षण

उपर्यधः समा दन्ताः स्तोकरूपाः पयोरुचः।
द्वात्रिंशदास्यगा यस्याः सा सदा सुभगा भवेत् ॥८१॥

अन्वयः—यस्याः दन्ताः उपर्यधः स्तोकरूपाः पयोरुचः द्वात्रिंशदास्यगा सा सदा सुभगा भवेत् ॥८१॥

स्त्री की दन्तावली ऊपर और नीचे समान आकार की हो, छोटी, दुग्ध-धवल और संख्या में बत्तीस हो तो वह स्त्री सदैव सौभाग्यशालिनी होती है ॥८१॥

अधोदन्ताधिकत्वेन मातृहीना च दुःखिता।
विधवा विकटाकारैः स्वैरिणी विरलद्विजैः ॥८२॥

अन्वयः—अधोदन्ताधिकत्वेन मातृहीना च दुःखिता, विकटाकारैः विधवा (तथा) विरलद्विजैः स्वैरिणी (भवेत्) ॥८२॥

स्त्री के मुख में निम्न पंक्ति में यदि दाँतों की संख्या अपेक्षया अधिक हो, तो वह मातृहीना और दुःखी होती है। यदि दाँत बड़े आकार वाले हों तो विधवा और यदि विरल दन्त हों, तो दुराचारिणी होती है ॥८२॥

जिह्वा-लक्षण

कोमला सरला रक्ता श्वेता च रसना शुभा।
स्थूला या मध्यसङ्कीर्णा विकृता सुखनाशिनी ॥८३॥

अन्वयः—(यस्याः) रसना कोमला सरला रक्ता श्वेता च शुभा स्थूला या मध्यसंकीर्णा विकृता सुखनाशिनी ॥८३॥

स्त्री की जिह्वा यदि कोमल, सरल (सीधी), रक्ताभ या श्वेतमिश्रित रक्ताभ हो तो शुभ लक्षण होता है। जो जिह्वा स्थूल, मध्य भाग में सिकुड़ी या दुर्बल एवं विकृत आकृति की हो, वह सुख का नाश करती है ॥८३॥

श्यामया कलहा नित्यं दरिद्रा स्थूलया भवेत्।
अभक्ष्यभक्षिणी ज्ञेया जिह्वया लम्बमानया ॥८४॥

अन्वयः—श्यामया जिह्वया नित्यं कलहा स्थूलया दरिद्रा भवेत् लम्बमानया (जिह्वया) अभक्ष्यभक्षिणी ज्ञेया ॥८४॥

जिस स्त्री की जिह्वा श्यामल होती है, वह कलही प्रवृत्ति की होती है। जिसकी जिह्वा मोटी हो, वह दरिद्र तथा जिसकी जिह्वा लम्बी होती है वह स्त्री अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण करती है ॥८४॥

तालु-लक्षण

तालु कोकनदाभासं कोमलं भद्रकारकम्।
नारी प्रव्रजिता प्रीते सिते वैधव्यमाप्नुयात् ॥८५॥

अन्वयः—तालु कोकनदाभासं कोमलं भद्रकारकम्, प्रीते नारी प्रव्रजिता, सिते वैधव्यम् आप्नुयात् ॥८५॥

स्त्री का तालु यदि कमल के समान कोमल और रक्ताभ हो तो शुभद होता है। यदि तालु का वर्ण पीला हो तो वह स्त्री दीक्षित होकर संन्यासिनी होती है तथा यदि तालु का वर्ण श्वेताभ हो तो वह वैधव्यकारक होता है ॥८५॥

श्यामले पुत्रहीना च रूक्षे तालुनि दुःखिता।
वक्रे कलिप्रिया नारी बहुरूपे च दुर्भगा ॥८६॥

अन्वयः—नारी तालुनि श्यामले पुत्रहीना रूक्षे च दुखिता, वक्रे कलिप्रिया बहुरूपे च दुर्भगा ॥८६॥

श्यामल तालु की स्त्री सन्ततिविहीना होती है। रूक्ष तालु वाली महिला दुःखी, ऊँचे-नीचे तालु वाली महिला कलही और अनेक रूपों वाले तालु से युक्त महिला दुर्भाग्यशालिनी होती है ॥८६॥

कण्ठमूल (घण्टिका)-लक्षण

क्रमसूक्ष्मारुणा वृत्ता स्थूला घण्टी शुभा मता।
अतिस्थूला प्रलम्बा च कृष्णा नैव शुभा भवेत् ॥८७॥

अन्वयः—घण्टी क्रमसूक्ष्मारुणा वृत्ता स्थूला शुभा मता अतिस्थूला प्रलम्बा कृष्णा च शुभा नैव भवेत् ॥८७॥

कण्ठघण्टिका यदि मूल में स्थूल और क्रमशः क्षीण, गोल, रक्तवर्ण और मोटी हो तो शुभ होती है। यदि वह अतिस्थूल, लम्बी और कृष्ण वर्ण की हो तो शुभद नहीं होती ॥८७॥

स्मित-लक्षण

भवति चेदनिमीलितलोचनं शुभदृशां दरफुल्लकपोलकम्।
अलमलक्षितदन्तमुदीरितं पतिहितं सततं स्मितमुत्तमम् ॥८८॥

अन्वयः—यदि चेत् शुभदृशां स्मितं अनिमीलितलोचनं दरफुल्लकपोलकं अलमलक्षितदन्तं भवति (तदा) सततं पतिहितं (तथा) उत्तमम् उदीरितम् ॥८८॥

जिस सुमुखी के नेत्र मुस्कराते समय बन्द न हों, कपोल फूल जायँ, दन्तावलि न दिख पड़े, ऐसी मुस्कान पति का हित करने वाली होती है ॥८८॥

नासिका-लक्षण

नासिका तु लघुच्छिद्रा समवृत्तपुटा शुभा ।
स्थूलाग्रा मध्यनम्रा च न शस्ता सुभ्रुवो भवेत् ॥८९॥

अन्वयः—सुभ्रुवः नासिका लघुछिद्रा तु समवृत्तपुटा शुभा, स्थूलाग्रा मध्यनम्रा च शस्ता न भवेत् ॥८९॥

लघु नासारन्ध्रों वाली, समान और गोल नासापुटों से युक्त नासिका शुभद होती है तथा जिसके अग्रभाग (नासाग्र) स्थूल हों, मध्य भाग चिपटा हो, वह नासिका शुभद नहीं होती ॥८९॥

लोहिताग्रा कुञ्चिता च महावैधव्यकारिणी ।
दासिका चिपिटाकारा प्रलम्बा च कलिप्रिया ॥९०॥

अन्वयः—लोहिताग्रा कुञ्चिता च महावैधव्यकारिणी, चिपिटाकारा दासिका प्रलम्बा च कलिप्रिया (भवति) ॥९०॥

नासिकाग्र रक्त वर्ण का हो, नासिका टेढ़ी-मेढ़ी हो तो वैधव्यकारक होती है। चिपटी नासिका वाली स्त्री दासी होती है तथा लम्बी नासिका वाली कलहप्रिया (झगड़ालू) होती है ॥९०॥

नेत्र-लक्षण

रक्तान्ते लोचने भद्रे तदन्तः कृष्णतारके ।
कम्बुगोक्षीरधवले कोमले कृष्णपक्ष्मणी ॥९१॥

अन्वयः—लोचने रक्तान्ते, तदन्तः कृष्णतारके, कम्बुगोक्षीरधवले कोमले कृष्णपक्ष्मणी भद्रे ॥९१॥

यदि नेत्रों के कोने (नेत्रान्त) लाल हों, तारा (पुतली) काली हो, शेष भाग शङ्ख या गाय के दूध के समान श्वेत हो तथा पलकों के बाल (बरौनी) काले हों तो ऐसे नेत्र शुभद होते हैं ॥९१॥

अल्पायुरुन्नताक्षी च वृत्ताक्षी कुलटा भवेत् ।
अजाक्षी केकराक्षी च कासराक्षी च दुर्भगा ॥९२॥

अन्वयः—उन्नताक्षी अल्पायुः वृत्ताक्षी च कुटला, अजाक्षी केकराक्षी च कासराक्षी च दुर्भगा भवेत् ॥९२॥

जिस महिला के नेत्र उभरे हों, वह अल्पायु होती है। जिसके नेत्र गोल हों, वह कुलटा होती है तथा जिसके नेत्र भैंगी हो, बकरे या भैंसे के समान हों तो वह महिला दुर्भाग्यशालिनी होती है ॥९२॥

पिङ्गाक्षी च कपोताक्षी दुःशीला कामवर्जिता ।
कोटराक्षी महादुष्टा रक्ताक्षी पतिघातिनी ॥९३॥

अन्वयः—पिङ्गाक्षी च कपोताक्षी दुःशीला कामवर्जिता, कोटराक्षी महादुष्टा, रक्ताक्षी पतिघातिनी (भवेत्) ॥९३॥

पिङ्गल (पीले) नेत्रों या कबूतर के समान नेत्रों वाली स्त्री दुष्ट स्वभाव की और कामवासनारहित होती है । कोटर के समान नेत्रों वाली स्त्री अत्यन्त दुष्टा और रक्ताभयुक्त नेत्रों वाली स्त्री पतिघातिनी होती है ॥९३॥

विडालाक्षी गजाक्षी च कामिनी कुलनाशिनी ।
वन्ध्या च दक्षकाणाक्षी पुंश्चली वामकाणिका ॥९४॥

अन्वयः—कामिनी विडालाक्षी गजाक्षी च कुलनाशिनी, दक्षकाणाक्षी वन्ध्या वामकाणिका पुंश्चली च (भवति) ॥९४॥

विडाल या हाथी के समान नेत्रों वाली स्त्री कुल का नाश करने वाली होती है। दक्षिण नेत्र से काणी स्त्री वन्ध्या और वाम नेत्र से काणी स्त्री पुंश्चली (दुराचारिणी) होती है ॥९४॥

सदा धनवती नारी मधुपिङ्गललोचना ।
पुत्रपौत्रसुखोपेता गदिता पतिसम्मता ॥९५॥

अन्वयः—मधुपिंगललोचना नारी सदा धनवती पुत्रपौत्रसुखोपेता, पतिसम्मता गदिता ॥९५॥

मधुपिङ्गल अर्थात् जिस स्त्री के नेत्र शहद के समान पीले वर्ण के हों, वह धन-धान्य से सम्पन्न, पुत्र-पौत्रादि से सुखी और पति की अनुगामिनी होती है ॥९५॥

बरौनी-लक्षण

कोमलैरसिताभासैः पक्ष्मभिः सुघनैरपि ।
लघुरूपधरैरेव धन्या मान्या पतिप्रिया ॥९६॥

अन्वयः—कोमलैः असिताभासैः सुघनैः अपि लघुरूपधरैः एव पक्ष्मभिः धन्या मान्या पतिप्रिया (भवति) ॥९६॥

जिस स्त्री की पलकों के रोम घने और काले हों, श्याम वर्ण के हों एवं आकार में छोटे हों, वह सम्मानित और पति को प्रिय होती है ॥९६॥

रोमहीनैश्च विरलैर्लम्बितैः कपिलैरपि ।
पक्ष्मभिः स्थूलकेशैश्च कामिनी परगामिनी ॥९७॥

अन्वयः—रोमहीनैश्च विरलैः लम्बितैः कपिलैः अपि स्थूलकेशैश्च पक्ष्मभिः कामिनी परगामिनी (भवति) ॥९७॥

यदि स्त्री की पलकें रोमरहित हों अथवा विरल, लम्बे और भूरे रंग के एवं मोटे हों तो वह दुश्चरित्रा होती है ॥९७॥

भ्रू-लक्षण

वर्त्तुला कोमला श्यामा भ्रूर्यदा धनुराकृतिः ।
अनङ्गरङ्गजननी विज्ञेया मृदुलोमशा ॥९८॥

अन्वयः—(यदा) भ्रूः वर्तुला कोमला श्यामा धनुराकृतिः मृदुलोमशा (तदा) अनङ्गरङ्गजननी विज्ञेया ॥९८॥

गोल, कोमल और श्याम वर्ण की भृकुटी यदि धनुष के समान हो, तो वह स्त्री कामक्रीड़ा में पति को सुख देने वाली होती है ॥९८॥

पिङ्गला विरला स्थूला सरला मिलिता यदि ।
दीर्घलोमा विलोमा च न प्रशस्ता नतभ्रुवः ॥९९॥

अन्वयः—पिंगला विरला स्थूला सरला मिलिता दीर्घलोमा विलोमा च नतभ्रुवः न प्रशस्ता (भवति) ॥९९॥

भूरे वर्ण की, विरल रोमावलि से युक्त, मोटी और सीधी, परस्पर मिली हुई, बड़े रोमों वाली अथवा रोमरहित भृकुटी शुभद नहीं होती ॥९९॥

कर्ण-लक्षण

प्रलम्बौ वर्त्तुलाकारौ कर्णौ भद्रफलप्रदौ ।
शिरालौ च कृशौ निन्द्यौ शष्कुलीपरिवर्जितौ ॥१००॥

अन्वयः—कर्णौ प्रलम्बौ वर्तुलाकारौ भद्रफलदौ, शिरालौ च कृशौ निन्द्यौ शष्कुलीपरिवर्जितौ ॥१००॥

स्त्रियों के लम्बे और गोल आकार वाले कान शुभ फल देने वाले होते हैं। उभरी हुई शिराओं से युक्त पतले कान निन्दित होते हैं। रोटी के समान गोल और पतले कानों वाली स्त्री त्याज्य होती है ॥१००॥

भाल-लक्षण

उन्नतस्त्र्यङ्गुलो भालः कोमलश्च नतभ्रुवाम् ।
अर्द्धचन्द्रनिभो नित्यं सौभाग्यारोग्यवर्द्धकः ॥१०१॥

अन्वयः—नतभ्रुवां भालः उन्नतः त्र्यंगुलः कोमलश्च (तथा) अर्द्धचन्द्रनिभः (तदा) नित्यं सौभाग्यवर्द्धकः (भवेत्) ॥१०१॥

स्त्रियों के झुके हुए भृकुटी से युक्त, तीन अङ्गुल चौड़े, समुन्नत और कोमल अर्द्धचन्द्राकार ललाट नित्य सुख, सौभाग्य और नैरोग्यवर्द्धन करने वाले होते हैं ॥१०१॥

व्यक्तस्वस्तिकरेखयाकुलमलं नार्या ललाटस्थलं
सौभाग्यामलभोग्यकृत्तदलिकं लम्बायमानं यदि ।
अद्धा देवरमाशु हन्ति नितरां रोमाकुलं रोगदं
रेखाहीनमनङ्गभङ्गजनकं ज्ञेयं बुधैः सर्वदा ॥१०२॥

अन्वयः—नार्याः ललाटस्थलं व्यक्तस्वस्तिकरेखयाकुलमलं (तदा) सौभाग्यामलभोग्यकृत्, यदि तदलिकं लम्बायमानं अद्धा देवरं आशु हन्ति, रोमाकुलं नितरां रोगदं, रेखाहीनमनङ्गभङ्गजनकं सर्वदा बुधैः ज्ञेयम् ॥१०२॥

जिस स्त्री के ललाट पर स्वस्तिक-चिह्न स्पष्ट हो, तो वह सुख-सौभाग्यादि समस्त भोगों से युक्त होती है। वही स्वस्तिक लम्बा और नीचे की ओर लटका हुआ हो तो वह अपने देवर का शीघ्र ही विनाश करती है। यदि स्त्री के ललाट पर रोम हों तो वह रोगिणी होती है। स्त्री का रेखाओं से हीन ललाट कामेच्छाहीनता का द्योतक होता है ॥१०२॥

करिपुङ्गवकुम्भसमान उत प्रवरोन्नत एव कदम्बनिभः ।
इह मौलिरजस्रमिला विमला विविधा बहुधान्ययुता सुदृशः ॥१०३॥

अन्वयः—सुदृशः मौलिः करिपुङ्गवकुम्भसमानः उत प्रवरोन्नतः एव कदम्बनिभः (भवति) इह अजस्रमिला विमला विविधा बहुधान्ययुता (भवति) ॥१०३॥

स्त्री का ललाट यदि श्रेष्ठ हाथी के मस्तक के समान उन्नत हो तथा कदम्ब के समान हो तो उसे सभी प्रकार के धन-धान्य से युक्त भूसम्पदा प्राप्त होती है ॥१०३॥

पीनमौलिरतिमानहारिका दारिका कुजनसङ्गकारिका ।
लम्बमौलिरपि सर्वनाशिका बन्धकी निजकुलान्तकारिका ॥१०४॥

अन्वयः—पीनमौलिः दारिका रतिमानहारिका कुजनसंगकारिका लम्बमौलिरपि सर्वनाशिका बन्धकी निजकुलान्तकारिका (भवति) ॥१०४॥

जिस स्त्री का ललाट अति स्थूल और उभरा हुआ हो, वह केलि के समय वेश्या के समान निर्लज्ज एवं दुर्जनों की सहचरी होती है। लम्बे ललाट वाली स्त्री वन्ध्या और स्वकुल का सम्पूर्ण नाश करने वाली होती है ॥१०४॥

केश-लक्षण

केशा यस्या भ्रमरपटलोपेक्षवर्णाः सुवर्णा
वक्राकाराः कुवलयदृशः किञ्चिदाकुञ्चिताग्राः ।
भाग्यं सद्यो ददति विरलाः पिङ्गलाः स्थूलरूपा
रूक्षाकाराः परमलघवो बन्धवैधव्यदुःखम् ॥१०५॥

अन्वयः—यस्याः केशाः भ्रमरपटलोपेक्षवर्णाः सुवर्णाः वक्राकाराः कुवलयदृशः

किञ्चिदाकुञ्चिताग्रा (भवति तदा) सद्यः भाग्यं ददति, विरलाः पिङ्गलाः स्थूलरूपाः रूक्षाकाराः (अथवा) परमलघवः (भवति तदा) बन्धवैधव्यदुःखं (ददति) ॥१०५॥

जिस महिला के केश भौरों से भी काले, चमकदार और घुँघुराले हों; साथ ही उनके केशाग्र भी किंचिद् कुञ्चित हों, तो वे सद्यः भाग्योदय कराने वाले होते हैं। जिसके केश भूरे, मोटे, रूखे और विरल हों, वह महिला बन्धन और वैधव्य से दुःखी रहती है।

मशक (मस्सा) लक्षण

मशकोऽपि ललाटपट्टवर्ती यदि जागर्त्ति स मध्यगो भ्रुवोर्वा।
तनुते सुखमर्थराशिभोगं सततं पत्युरपत्यभृत्ययोश्च ॥१०६॥

अन्वयः—यदि ललाटपट्टवर्ती भ्रुवोः मध्यगः वा मशकोऽपि जागर्ति सा सततं अर्थराशिभोगं, पत्युः अपत्यभृत्ययोश्च सुखं तनुते ॥१०६॥

जिस स्त्री के मस्तक पर भौहों के मध्य मशक (मस्सा) हो, तो वह सुख, विपुल धन और पति-पुत्रादि के सुख को भोगती है ॥१०६॥

मशकोऽपि कपोलमध्यगामी सुदृशो लोहित एवमिष्टदः स्यात्।
हृदयं तिलकेन शोभितं लसनेनापि च राज्यकारणम् ॥१०७॥

अन्वयः—सुदृशः कपोलमध्यगामिनी मशकोऽपि इष्टदः स्यात्, एवं हृदयं तिलकेन शोभितं लसनेनापि च राज्यकारणम् ॥१०७॥

जिस स्त्री के गालों पर रक्ताभवर्णी तिल या मस्सा हो, वह सभी प्रकार के अभीष्ट की आपूर्ति करने वाली होती है। जिसके हृदयस्थल पर तिल या लाञ्छन (लच्छन) हो, वह राज्य देने वाली होती है ॥१०७॥

लोहितेन तिलकेन मण्डितं सुभ्रुवो हि कुचमण्डलं यदा।
जायते किल सुताचतुष्टयं बालकत्रयमुदीरितं तदा ॥१०८॥

अन्वयः—यदा सुभ्रुवः कुचमण्डलं लोहितेन तिलकेन हि मण्डितं तदा किल सुताचतुष्टयं बालकत्रयं च उदीरितम् ॥१०८॥

जिस महिला के स्तन पर लोहित वर्ण का तिल शोभित हो, उसे चार कन्याओं के साथ तीन पुत्रों की माता होने का गौरव प्राप्त होता है ॥१०८॥

भवति वामकुचेऽरुणलाञ्छनं शुभदृशस्तिलकं कमलप्रभम्।
प्रथमतस्तनयं परिसूय सा कृतिवरं विधवा तदनन्तरम् ॥१०९॥

अन्वयः—शुभदृशः वामकुचे अरुणलाञ्छनं (अथवा) तिलकं कमलप्रभं भवति सा प्रथमतः कृतिवरं तनयं परिसूय तदनन्तरं विधवा भवति ॥१०९॥

यदि बाँयें स्तन पर रक्ताभ लाञ्छन हो तो वह युवावस्था में एक विद्वान् पुत्र के जन्म के अनन्तर वैधव्य का दुःख झेलती है ॥१०९॥

लसति बालमधुव्रतसन्निभं शुभदृशस्तिलकं गुददक्षिणे।
नरपतेरबला कमलालया नृपमपत्यमरं जनयेदलम् ॥११०॥

अन्वयः—शुभदृशः गुददक्षिणे बालमधुव्रतसन्निभं तिलकं लसति (सा) नरपतेः अबला, कमलालया नृपमपत्यमरं अलं जनयेत् ॥११०॥

जिसके गुदा के दक्षिण भाग में छोटे भ्रमरसमूह के समान काला तिल हो, वह धन-धान्य से युक्त राजरानी होती है और उसका पुत्र निश्चय ही राजा होता है ॥११०॥

मशकोऽपि च नासिकाग्रगामी सुदृशी विद्रुमकान्तिरर्थदायी।
अलिपक्षनवाभ्ररूपधारी पतिहन्त्री किल पुंश्चली विशेषात् ॥१११॥

अन्वयः—सुदृशी नासाग्रगामी विद्रुमकान्तिः मशकोऽपि तदा अर्थदायी (तथा) अलिपक्षनवाभ्ररूपधारी (तदा), पतिहन्त्री विशेषात् किल पुंश्चली (भवति) ॥१११॥

जिस सुमुखी के नासिकाग्र भाग पर मूँगे के वर्ण का मस्सा हो, वह धन देने वाली होती है। वही मस्सा यदि भौंरे के पंख के समान या मेघ के रंग का हो तो वह स्त्री पतिहन्ता और दुराचारिणी होती है ॥१११॥

यदि नाभेरधोभागे तिलकं लाञ्छनं स्फुटम्।
सौभाग्यसूचकं ज्ञेयं मशको वा नतभ्रुवाम् ॥११२॥

अन्वयः—यदि नतभ्रुवां नाभेः अधोभागे स्फुटं तिलकं लाञ्छनं मशकः वा (भवति तदा) सौभाग्यसूचकं ज्ञेयम् ॥११२॥

स्त्री की नाभि के निम्न भाग में यदि तिल या स्पष्ट लाञ्छन हो तो उसे सौभाग्य का सूचक समझना चाहिए। उक्त स्थान पर यदि मशक (मस्सा) हो, तब भी वही फल प्राप्त होता है ॥११२॥

यदि करे च कपोलतलेऽथवा भवति कण्ठगतं तिलकं तदा।
श्रुतितलेऽपि च सा पतिवल्लभा वरदृशी मशकामललाञ्छनैः ॥११३॥

अन्वयः—यदि वरदृशी करे च कपोलतले अथवा कण्ठगतं श्रुतितलेऽपि च तिलकं (भवति तदा) सा पतिवल्लभा, मशकामललाञ्छनैरपि पतिवल्लभा (भवति) ॥११३॥

यदि हाथ की हथेली में, गाल के निम्न भाग में, कण्ठ में अथवा कान के नीचे तिल (या मस्सा) हो, तो वह सुनयना पतिप्रिया होती है ॥११३॥

भालस्थेन त्रिशूलेन शम्भुना निर्मितेन वै।
यस्याः साऽऽलीसहस्राणामीशितामाप्नुयादरम् ॥११४॥

अन्वयः—यस्याः भालस्थेन शम्भुना निर्मितेन त्रिशूलेन (शोभिता) सा वै अली-सहस्राणामीशितां आदरमाप्नुयात् ॥११४॥

यदि स्त्री के ललाट पर शङ्कर के द्वारा निर्मित त्रिशूल का चिह्न हो तो वह सहस्त्रों स्त्रियों में श्रेष्ठ होने से उनसे आदर प्राप्त करती है ॥११४॥

किटकिटे तिलकं कुरुते मिथः शुभदृशः शयने तु रदावली।
महदमङ्गलमाह विशेषतः प्रियतमे तनुलक्षणकोविदाः ॥११५॥

अन्वयः—शुभदृशः शयने रदावली तिलकं (अथवा) मिथः किटकिटे कुरुते (तदा) प्रियतमे विशेषतः महदमङ्गलं (इति) तनुलक्षणकोविदाः आह ॥११५॥

जिस सुनयना की दन्तपंक्तियाँ तिलयुक्त हो अथवा निद्रावस्था में परस्पर किट-किट शब्द करें अथवा घर्षण से कीरते हों, वह अत्यन्त अमङ्गलकारिणी, विशेषकर पति के लिए होती है ॥११५॥

आवर्त (भवरी) लक्षण

शकटवद्यदि योनिललाटगो मृगदृशो मृदुलोमगणो भवेत्।
वरदुकूलमणिव्रजमण्डिता क्षितिभृतां वनिता वनितावृता ॥११६॥

अन्वयः—यदि मृगदृशः मृदुलोमगणः शकटवत् योनिललाटगः वरदुकूल-मणिव्रजमण्डिता वनिता वनितावृता क्षितिभृतां भवेत् ॥११६॥

जिस स्त्री के ललाट पर रोमों से शकट (गाड़ी) या योनि की आकृति बनी हो, वह सुन्दर वस्त्र और मणियों से युक्त तथा आभूषणों से अलंकृत राजा की पत्नी होती है ॥११६॥

विलसति भगभाले दक्षिणावर्त्तरूपः
कुवलयनयनायाः कोमलो लोमसङ्घः।
नरपतिकुलभर्तुः कामिनी मानिनीना-
मिह भवति वदान्या सैव धन्या विशेषात् ॥११७॥

अन्वयः—(यस्याः) कुवलयनयनायाः भगभाले कोमलः लोमसङ्घः दक्षिणावर्त्तरूपः विलसति सैव कामिनी इह नरपतिकुलभुर्तः मानिनीनां वदान्या विशेषात् धन्या (च) भवति ॥११७॥

जिस स्त्री के भाल पर कोमल रोमावलि से निर्मित भग की आकृति शोभायमान हो और रोमावलि दक्षिणावर्त घूमी हुई हो, वह कामिनियों में सर्वश्रेष्ठ, राजाधिराज की पटरानी होती है। वह विशेष रूप से धन्य होती है ॥११७॥

कण्ठावर्ता भवति कुलटा भर्तृहन्त्री कुरूपा
पृष्ठावर्त्ता कठिनहृदया स्वामिहन्त्री कुलघ्नी।
आवर्तौ वा भवति उदरे द्वाविहैकोऽपि यस्याः
साऽपि त्याज्या कृतिभिरबला लक्षणज्ञैस्तु दूरात् ॥११८॥

अन्वयः—यस्याः (रोमावर्तः) कण्ठावर्ता (तदा) कुलटा, भर्तृहन्त्री, कुरूपा भवति, पृष्ठावर्ता कठिनहृदया स्वामिहन्त्री कुलघ्नी भवति, द्वौ आवर्तौ उदरे भवतः एकोऽपि वा (भवति) सापि अबला लक्षणज्ञैः कृतिभिः दूरात् त्याज्या ॥११८॥

स्त्री के कण्ठ में यदि रोमावर्त (भँवरी) हो, तो वह कुलटा, कुरूपा और पति का अनिष्ट करने वाली होती है। पीठ में आवर्त हो, तो क्रूरहृदया, पति का अनिष्ट करने वाली और कुल का अनिष्ट करने वाली; पेट में एक या दो आवर्त हो, तो सामुद्रिक लक्षणों को जानने वाले ऐसी स्त्री का दूर से ही त्याग कर देते हैं ॥११८॥

सीमन्ते च ललाटे वा कण्ठे वाऽपि नतभ्रुवः।
लोम्नामावर्त्तको दक्षो वामो वैधव्यसूचकः ॥११९॥

अन्वयः—नतभ्रुवः सीमन्ते च ललाटे वा कण्ठे दक्षः वामोऽपि लोम्नामावर्त्तकः भवति तदा वैधव्यसूचकः ॥११९॥

जिस स्त्री के ललाट अथवा कण्ठ में आवर्त्त—दक्षिणावर्त या वामावर्त हो, तो वह आवर्त वैधव्यसूचक होता है ॥११९॥

याभिरेव वरदो महेश्वरः पूजितः किल पुरा व्रतादिभिः।
पार्वती च परिपूजितः मुदा भक्तियोगविधिना सुवासिनी ॥१२०॥
भूषितामलविभूषणादिभिः क्षालितं वपुरनेकधा पुरा।
तीर्थराजपयसा भवन्ति ता लक्षणैरिह शुभाः सुलक्षणाः ॥१२१॥

अन्वयः—याभिः पुरा व्रतादिभिः वरदः महेश्वरः किल पूजितः तथा भक्तियोगविधिना मुदा पार्वती सुवासिनी च भूषितामलविभूषणादिभिः हरिपूजिता, तथा तीर्थराजपयसा पुरा अनेकधा वपुः क्षालितं ताः सुलक्षणाः लक्षणैः इह भवन्ति ॥१२०-१२१॥

जिसने पूर्वजन्म में विधि-विधान से शिव की आराधना किया हो, व्रत आदि किया हो, प्रसन्नचित्त होकर भक्तिपूर्वक पार्वती का पूजन-अर्चन किया हो, अनेक सुन्दर आभूषणों से उनको विभूषित किया हो, तीर्थराज (प्रयाग) आदि अनेक तीर्थों के जल से अपने शरीर को बार-बार प्रक्षालित किया हो, उसे ही ये शुभ लक्षण प्राप्त होते हैं ॥१२०-१२१॥

कृतं नहि तपो यया नगजया समाराधितो हरि-
र्नहि रविव्रतं नहि कृतं च तीर्थाटनम्।
धनं नहि धरामरे परममर्पितं तर्पितं
गुरोः कुलमिहाङ्गना भवति सैव दीनाङ्गना ॥१२२॥

अन्वयः—यया नगजया तपः नहि कृतं, हरिः समाराधितः नहि कृतं, रविव्रतं नहि कृतं, तीर्थाटनं च नहि कृतं, धरामरे परमं धनं नहि अर्पितं, गुरोः कुलं नहि तर्पितं इह सैव अङ्गना दीनाङ्गना भवति ॥१२२॥

जिस स्त्री ने पूर्वजन्म में जप-तपादि द्वारा पार्वती का विधिवत् पूजनार्चन नहीं किया हो, विष्णु की विधिवत् पूजार्चनादि नहीं किया हो, सूर्यादि व्रत का आचरण न किया हो, तीर्थों के दर्शन-पूजन न किये हों, भूदेवों (ब्राह्मणों) को धन आदि के दान से सन्तुष्ट न किया हो और न ही अपने गुरु को तृप्त किया हो, ऐसी स्त्री इस जन्म में दारिद्र्य और दुःखों से दुःखी तथा कुलक्षणों से युक्त होती है ॥१२२॥

यतः सुलक्षणी रेखा योषा हीनायुषं पतिम् ।
दीर्घायुषं सुचरितैः प्रकरोति सुखास्पदम् ॥१२३॥

अन्वयः—यतः सुलक्षणी रेखा योषा सुचरितैः हीनायुषं पतिम् दीर्घायुषं सुखास्पदं (च) प्रकरोति ॥१२३॥

सुलक्षणों से युक्त स्त्री अल्पायु पति को भी दीर्घायु बनाने में एवं अपने सच्चरित्र से घर में सुख के अम्बार खड़े करने में समर्थ होती है ॥१२३॥

दीर्घायुषं पतिं हन्ति कुयोगैश्च कुलक्षणैः ।
अतः सुलक्षणा कन्या परिणेया विचक्षणैः ॥१२४॥

अन्वयः—कुलक्षणैः कुयोगैश्च दीर्घायुषं पतिं हन्ति, अतः विचक्षणैः सुलक्षणा कन्या परिणेया ॥१२४॥

कुलक्षणों और अपने कुयोगों से युक्त स्त्री अपने दीर्घायु पति के लिए भी घातक होती है। इसलिए बुद्धिमानों को विचारपूर्वक सुलक्षणों से युक्त स्त्री का ही पाणिग्रहण करना चाहिए ॥१२४॥

कुलक्षणविलक्षिता यदि सुताऽत्र सञ्जायते
श्रुतिस्मृतिपथानया परमसोमवारव्रतम् ।
विधाय तदनन्दरं रहसि कारयित्वाच्युत-
द्रुमेण हरिणाकृती शुभघटेन पाणिग्रहम् ॥१२५॥

अन्वयः—यदि कुलक्षणविलक्षिता सुता अत्र सञ्जायते (तदा) परमसोमवारव्रतं विधाय तदनन्तरं रहसि श्रुतिस्मृतिपथा अनया अच्युतद्रुमेण हरिणा, शुभघटेन वा पाणिग्रहं कारयित्वा (अग्रे सम्बन्धः) ॥१२५॥

कन्या यदि उपर्युक्त कुलक्षणों से युक्त हो तो उससे वेद और धर्मशास्त्र के अनुसार सोमवार व्रताचार कराकर एकान्त में पीपल वृक्ष से, विष्णुप्रतिमा से अथवा कुम्भ से उसका विधिवत् विवाह करा देना चाहिए ॥१२५॥

शुभेऽहनि कुमारिकाकरनिपीडनं कारयेद्
वरेण चिरजीविना पुनरिदं न दोषायते ।
इदं तु बहुसम्मतं मुनिवरेण गीतं पुनः
प्रमाणपटुनादृतं प्रियविनोदकन्दप्रदम् ॥१२६॥

अन्वयः—शुभे अहनि कुमारिकाकरनिपीडनं चिरजीविना वरेण कारयेत् इदं पुनः न दोषायते (इति) मुनिवरेण गीतं इदं तु बहुसम्मतं पुनः प्रमाणपटुनादृतं प्रियविनोदकन्दप्रदम् ॥१२६॥

तदनन्तर पीपल, विष्णुप्रतिमा या कुम्भविवाहोपरान्त शुभ दिन और शुभ मुहूर्त्त में उस कन्या का विवाह दीर्घायुष्य वाले सुलक्षणयुक्त पुरुष से कराने से पूर्वोक्त दोष प्रभावी नहीं होते। यह बहुसम्मत मुनियों द्वारा कहा गया एवं विद्वानों द्वारा समादृत उपाय है। इससे सर्वत्र आनन्द एवं सुख होता है ॥१२६॥

कुलक्षणैः कुयोगैश्च लक्षिता वनिता यदा।
तस्याः पूर्वविधानेन विवाहं कारयेद्बुधः ॥१२७॥

अन्वयः—यदा कुलक्षणैः कुयोगैश्च वनिता लक्षिता तस्याः पूर्वविधानेन विवाहं बुधः कारयेत् ॥१२७॥

उपर्युक्त कुलक्षणों से युक्त कन्या यदि कहीं हो तो पूर्वकथित विधि से बुद्धिमान व्यक्ति को उसका विवाह अवश्य करा देना चाहिए ॥१२७॥

जीवनाथविदुषाऽत्र कामिनीलक्षणं बुधमनोमुदे मया।
स्कन्दकुम्भभवयोर्विवादजं व्यासगीतमखिलं प्रकाशितम् ॥१२८॥

इति श्रीजीनाथकृतभावकुतूहले सामुद्रिकलक्षणाध्यायः दशमः ॥१०॥

अन्वयः—जीवनाथविदुषा अत्र कामिनीलक्षणं बुधमनोमुदे स्कन्दकुम्भभवयोः विवादजं व्यासगीतम् अखिलं मया प्रकाशितम् ॥१२८॥

ग्रन्थकार पण्डित जीवनाथ कहते हैं कि व्यास द्वारा स्कन्द-कुम्भक विवाद में वर्णित स्त्रियों के लक्षण सुधीजनों के मोदार्थ यहाँ मैंने कहा है ॥१२८॥

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का दशम अध्याय समाप्त हुआ ॥१०॥

•

अथैकादशोऽध्यायः

स्थानवशेनावस्थाफलकथनम्

शयनादि द्वादश अवस्थायें

प्रथमं शयनं ज्ञेयं द्वितीयमुपवेशनम्।
नेत्रपाणिः प्रकाशश्च गमनागमने ततः ॥१॥
सभायाञ्च ततो ज्ञेय आगमो भोजनं तथा।
नृत्यलिप्सा कौतुकं च निद्रावस्था नभःसदाम् ॥२॥

अन्वयः—प्रथमं शयनं, द्वितीयं उपवेशनं, नेत्रपाणिः प्रकाशश्च, ततः गमनागमने, सभायां आगमः तथा भोजनं, नृत्यलिप्सा, कौतुकं निद्रा चेति नभःसदां अवस्था ज्ञेयम् ॥१-२॥

१. शयन, २. उपवेशन, ३. नेत्रपाणि, ४. प्रकाश, ५. गमन, ६. आगमन, ७ सभा, ८. आगम, ९. भोजन, १०. नृत्यलिप्सा, ११. कौतुक और १२. निद्रा—ये ग्रहों की १२ अवस्थायें होती हैं ॥१-२॥

शयनाद्यवस्थानयन

ग्रहर्क्षसंख्या खगमाननिघ्नी खेटांशसंख्या गुणिता ग्रहाणाम्।
निजेष्टजन्मर्क्षतनुप्रमाणैर्युतार्कतष्टा शयनाद्यवस्था ॥३॥

अन्वयः—खगमाननिघ्नी ग्रहर्क्षसंख्या, ग्रहाणां गुणिता खेटांशसंख्या, निजेष्टजन्मर्क्षतनुप्रमाणैः युता अर्कतष्टा शयनाद्यवस्थाः (भवन्ति) ॥३॥

जिस नक्षत्र में ग्रह स्थित हो, अश्विन्यादि क्रम में उसकी जो संख्या हो, उसे ग्रह की सूर्यादि क्रमसंख्या से गुणा कर गुणनफल में ग्रहांश (ग्रह की नवांश संख्या) से गुणा करे। गुणनफल में इष्टघटी, जन्मनक्षत्र और लग्नस्थ राशिसंख्या जोड़कर योगफल में बारह का भाग देने से प्राप्त शेषतुल्य अवस्था होती है। जैसे एक शेष हो तो शयन, दो शेष हो तो उपवेशन, तीन शेष हो तो नेत्रपाणि आदि अवस्थायें होती हैं ॥३॥

दृष्टि आदि अवस्था

शेषं शेषहतं स्वराङ्कसहितं तष्टं पुनर्भानुना
संक्षेपं गुणशेषितं खलु भवेद्दृष्ट्याद्यवस्था त्रिधा।
पञ्च[५]द्वि[२]द्वि[२]गुणा[३]क्ष[५]राम[३]गुण[३]वेदाः[४] क्षेपकाङ्काः रवेः
प्राचीनैर्यवनादिभिः समुदितास्तेऽमी निबद्धा मया ॥४॥

अन्वयः—शेषहतं शेषं स्वराङ्कसहितं पुनः भानुना तष्टं, गुणशेषितं संक्षेपं खलु

त्रिधा दृष्ट्याद्यवस्था: भवेत् । रवे: क्षेपकाङ्का पञ्च-द्वि-द्वि-गुण-अक्ष-राम-गुण-वेदा: अमी यवनादिभि: समुदिता:, ते मया निबद्धा: ॥४॥

शयनादि अवस्था को इसी से गुणा कर गुणनफल में स्वरांक (नाम के आद्यक्षर का स्वराङ्क निम्न तालिका के अनुसार) जोड़कर योगफल में १२ से भाग देने पर जो शेष लब्ध हो, उसमें ग्रहक्षेपक को जोड़कर ३ का भाग देने से प्राप्त शेषतुल्य दृष्टि आदि अवस्था होती है। जैसे १ शेष हो तो दृष्टि, २ शेष हो तो चेष्टा और ० शेष हो तो विचेष्टा नामक अन्तरावस्था होती है।

सूर्यादि ग्रहों के क्रम से ५, २, २, ३, ५, ३, ३, ४ क्षेपकाङ्क होते हैं। यवनाचार्यों ने इसे कहा है ॥४॥

ग्रहक्षेपकाङ्क

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	रा.
क्षेपक	५	२	२	३	५	३	३	४

स्वराङ्का

स्वराङ्क	१	२	३	४	५
	अ	इ	उ	ए	ओ
	क	ख	ग	घ	च
	छ	ज	झ	ट	ठ
	ड	ढ	त	थ	द
	ध	न	प	फ	ब
	भ	म	य	र	ल
	व	श	ष	स	ह

उदाहरण—सं. २०५२ शक १९१७ के आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पञ्चमी, शुक्रवार दिन में १० बजे अनुराधा नक्षत्र में उसके २७ घ. ७ पल गत हो जाने पर इष्टघटी १० पल २५ पर वृश्चिक लग्न में राजेन्द्र प्रसाद का जन्म हुआ।

सूर्यादि ग्रहों के तात्कालिक स्पष्ट भोग इस प्रकार हैं—

सू. ५।११।४६।७ (हस्त में)
चं. ७।९।४४।५२ (अनुराधा में)
मं. ६।२०।५८।२६ (विशाखा में)
बु. ५।२३।३९।९ वक्री (चित्रा में)
वृ. ७।१६।२२।५६ (अनुराधा में)
शु. ५।२२।२०।२७ (हस्त में)
श. १०।२६।२६।२५ वक्री (पू.भा. में)
रा. ६।३।३६।१६ (चित्रा में)

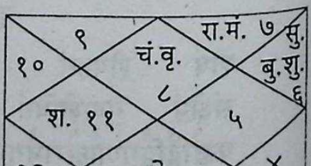

अथ जन्माङ्गम्

पर्दैन

अब यदि सूर्य की अवस्था जाननी हो तो ग्रह की क्रमसंख्या १ से ग्रह के नक्षत्र की क्रमसंख्या (ग्रहनक्षत्र हस्त का अश्विन्यादि क्रमांक) १३ से गुणा करने पर १३ हुआ। इस गुणनफल को ग्रह की अंशसंख्या ११ से गुणा कर गुणनफल १४३ में इष्ट घटी १०।०, जन्मनक्षत्र अनुराधा की क्रमसंख्या १७ और लग्नराशि वृश्चिक की क्रमसंख्या ८ को जोड़ने से १४३+१०+१७+८=१७८ हुआ। इस योगफल में १२ से भाग देने पर लब्धि १४ और शेष १० बचा। अत: यहाँ शयनादि अवस्थाक्रम में १० वीं नृत्यलिप्सावस्था में सूर्य स्थित है।

उक्त सम्पूर्ण क्रिया को सूत्रबद्ध करने पर निम्न स्वरूप होगा—

ग्रहर्क्ष सं.×ग्रह सं. × ग्रहांश सं. + इष्टकाल + जन्मर्क्ष + लग्न = शेष अवस्था।

इस ग्रन्थ के कतिपय टीकाकारों ने श्लोक ३ के द्वितीय चरण में प्रयुक्त खेटांश से ग्रह के अंश अर्थात् ग्रह राशि के जितने अंश पर स्थित हो, उसका ग्रहण किया है, किन्तु अनेक स्थलों पर इस ग्रन्थ में भी (अंश) शब्द से नवांश का ग्रहण हुआ है। भास्कराचार्य ने अपने होराशास्त्र में शयनाद्यवस्था जानने के लिए जो सूत्र दिया है, वह इस प्रकार है—

यस्मिन्नृक्षे भवेत्खेटस्तेन तं परिपूरयेत्। पुनरंशेन सम्पूर्य स्वनक्षत्रं नियोजयेत्॥
यातदण्डं तथा लग्नमेकीकृत्य सदा बुध:। रविणा हरते भागं शेषं कार्ये नियोजयेत्॥

प्रात:स्मरणीय स्वनामधन्य आचार्य पण्डित गणेशदत्त पाठक एवं पण्डितवर्य श्री सीताराम झा जैसे विद्वानों ने 'अंशेन' शब्द से नवांश का ग्रहण किय़ा है। ग्रह की नक्षत्रसंख्या को ग्रह की क्रमसंख्या और उसके नवांशसंख्या से गुणा करना चाहिए, न कि ग्रह राशि के जितने अंश पर हो, उससे।

इसके अनुसार ग्रहर्क्ष संख्या १३, ग्रह संख्या १, ग्रह नवांश संख्या ४ (सूर्य कन्या के चतुर्थ नवांश में स्थित है) इष्टघटी १०।०, जन्म नक्षत्र अनुराधा की क्रमसंख्या १७, जन्मलग्न तुला की क्रमसंख्या ७,

$$\frac{१}{१२}(१३\times१\times४+१०+१७+७)=\frac{१}{१२}(५२+३४)=\frac{८६}{१२}=७\frac{२}{१२}$$

शेष २ से २सरी उपवेशनावस्था सूर्य की वर्तमान अवस्था हुई।

दृष्टि आदि अवस्था जानने के लिए शयनाद्यवस्था के अंक २ को २ से ही गुणा कर गुणनफल ४ में नाम कें आद्यक्षर के स्वराङ्क ४ को जोड़ने से योग ८ हुआ। इस योगफल में १२ से भाग देने पर शेष ८ में सूर्यक्षेपकांक ५ जोड़ने से १३ हुए। इस योगफल में पुन: ३ से भाग दिया तो शेष ० हुआ अर्थात् सूर्य की दृष्टि अवस्था हुई।

$$\frac{१}{१२}(२\times२+४)=\frac{८}{१२} \qquad \frac{१}{१२}(\text{शेष}\times\text{शेष}+\text{स्वराङ्क})$$

शेष = ८

$$\frac{१}{३}(८+५)=\frac{१३}{३} \qquad \frac{१}{३}(\text{शेष}+\text{क्षेपक})$$

शेष १ = अवस्था-दृष्टि।

पठन

पराशर ने इनके अतिरिक्त ग्रहों की अवस्था के पाँच भेदों का उल्लेख अपने होराशास्त्र में किया है। वे इस प्रकार हैं—

१. जाग्रतादि अवस्था,
२. दीप्तादि अवस्था,
३. बालादि अवस्था,
४. प्रवासादि अवस्था,
५. लज्जितादि अवस्था।

(१) जाग्रत् अवस्था—जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति—ये ३ भेद इस अवस्था के होते हैं। एक राशि के ३० अंशों में १०-१० अंशों की एक-एक जाग्रतादि अवस्था होती है। विषम राशि में प्रथम १० अंशों में यदि ग्रह स्थित हो तो जाग्रत् अवस्था, १० से २० अंशों के भीतर स्थित हो तो स्वप्नावस्था और २० से ३० अंशों के मध्य स्थित हो तो सुषुप्त्यवस्था में ग्रह होते हैं। सम राशि में अवस्थाक्रम विलोम होता है अर्थात् प्रथम दश अंशों में सुषुप्त्यवस्था, मध्य के १० अंशों में स्वप्नावस्था और अन्तिम दश अंशों में जाग्रत अवस्था होती है।

त्रिंशदंशं त्रिभागं च परिकल्प्या पृथक्-पृथक्।
विषमादिक्रमेणैव समे वै विपरीतकम्॥
विज्ञानं प्रथमं पुंसां जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिकाः।
विशेषतः परीक्ष्या स्याज्जाग्रतः कार्यसाधकः॥ (पराशर)

(२) दीप्तादि अवस्था—दीप्तादि अवस्था के ९ भेद होते हैं—१. दीप्त, २. स्वस्थ, ३. मुदित, ४. शान्त, ५. दीन, ६. अतिदुःखित, ७. विकल, ८. खल और ९ क्रोधी।

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तो दीनोऽतिदुःखितः।
विकलश्च खलः क्रोधी नवधा खेचरो भवेत्॥ (पराशर)

ग्रह की उच्च, स्वगृहादि में स्थिति के अनुसार दीप्तादि अवस्थाएँ होती हैं। जैसे उच्चस्थ ग्रह दीप्त, अधिमित्र के गृह में स्थित हो तो स्वस्थ, मित्रगृह में स्थित हो तो मुदित, समगृह में स्थित हो तो शान्त, शत्रुगृह में स्थित हो तो दुःखी, अधिशत्रु गृह में स्थित हो तो अतिदुःखी, पापग्रह के साथ हो तो विकल, पापग्रह के गृह में हो तो खल और यदि सूर्य से संयुक्त हो तो वही ग्रह क्रोधी होता है।

(३) बालादि अवस्था—बालादि अवस्था के पाँच भेद होते हैं—१. बाल, २. तरुण, ३. युवा, ४. वृद्ध और ५. मृत। ये अवस्थाएँ ६-६ अंशों की होती है। उक्त क्रम विषम राशि के हैं। सम राशि में इससे विपरीत क्रम से दशाएँ होती हैं—१. मृत, २. वृद्ध, ३. युवा, ४. तरुण और बाल।

बालो रसांशैरसमे प्रदिष्टस्ततः कुमारो हि युवाऽथ वृद्धः।
मृतः क्रमादुत्क्रमतः समर्क्षे बालाद्यवस्था कथिता ग्रहाणाम्॥ (पराशर)

पर्यन्त

विषम राशि में ६° पर्यन्त बाल, ६° से १२° तक कुमार (तरुण), १२° से १८° तक युवा, १८° से २४° तक वृद्ध और २४° से ३०° तक मृत अवस्था होती है। ऐसे ही समराशि में विपरीत क्रम से अर्थात् ०° से ६° तक मृत, ६° से १२° तक वृद्ध, १२° से १८° तक युवा, १८° से २४° तक तरुण और २४° से ३०° तक बाल्यावस्था होती है।

(४) प्रवासादि अवस्था—प्रवासादि अवस्था के १२ भेद होते हैं—१. प्रवास, २. नष्ट, ३. मृत, ४. जय, ५. हास्य, ६. रति, ७. मुद, ८. सुप्त, ९. भुक्त, १०. ज्वर, ११. कम्प और १२. स्थिर।

प्रवासनष्टा च मृता जया हास्या रतिर्मुदा।
सुप्ता भुक्ता ज्वरा कम्पा सुस्थितिर्नामसन्निभा॥ (पराशर)

इन अवस्थाओं को जानने के लिए आचार्य ने जो विधि बतलाई है, वह इस प्रकार है—

षष्ठिघ्नं गतभं भुक्तघटीयुतं युगाहतम्।
शराब्धिहल्लब्धतोऽर्काच्छेषावस्था द्विजोत्तम॥

ग्रह के गतनक्षत्र की अश्विन्यादि क्रमसंख्या को ६० से गुणा कर गुणनफल में वर्तमान नक्षत्र की भुक्त घटी (भयात्) को युत कर ४ से गुणा कर गुणनफल में ४५ से भाग देने पर लब्ध फलतुल्य ग्रह की अवस्था होती है। लब्धफल यदि १२ से अधिक हो तो उसमें १२ से भाग देकर शेषतुल्य दशा ग्रहण करनी चाहिए।

उदाहरण—पूर्वोक्त उदाहरण (पृ.१२६) में भौम का स्पष्टराश्यादि भोग ६रा।२०°।५८'।२६'' है।

६रा।२०°।५८'।२६'' = २००°।५८'।२६''
= १२०५८'।२६''

भौम के इस कलात्मक भोग में नक्षत्रमान ८००' से भाग दिया—

१२०५८'।२६'' ÷ ८००
= १५.०७३०४

लब्धफल १५ गत नक्षत्रसंख्या और शेष ५८'।२६'' वर्तमान नक्षत्र के गत भाग होंगे। १५वाँ गत नक्षत्र स्वाती और वर्तमान विशाखा हुआ।

विशाखा के भुक्तांश ०°।५८'।२६'' ÷ ६
भुक्त घट्यादि = ०।९।४४

अब गत नक्षत्रसंख्या १५ को ६० से गुणा कर भुक्त घट्यादि ०।५८।४४ जोड़ कर ४ से भाग दिया—

(१५×६० + ०।९।४४) × $\frac{१}{४}$ = २२५.०४०५८ हुआ; इसमें पुनः ४५ से भाग दिया,

२२५.०४०५८ ÷ ४५ = ५,०००९।

लब्धफल ५ अवस्था की क्रमसंख्या हई। अर्थात् भौम की पाँचवीं अवस्था हास्यावस्था है।

(५) लज्जितादि अवस्था—इस अवस्था के ६ भेद होते हैं—१. लज्जित, २. गर्वित, ३. क्षुधित, ४. तृषित, ५. मुदित और ६. क्षोभित। कहा भी है—

लज्जितो गर्वितश्चैव क्षुधितस्तृषितस्तथा।
मुदितः क्षोभितश्चैव ग्रहावस्थाः प्रकीर्तिताः॥ (पराशर)

इन अवस्थाओं के लक्षण इस प्रकार हैं—

१. लज्जित— पुत्रगेहगतः खेटो राहुकेतुयुतो भवेत्।
रविमन्दकुजैर्युक्तो लज्जितो ग्रह एव सः॥

२. गर्वित— तुङ्गस्थानगतो वाऽपि त्रिकोणेऽपि भवेत्पुनः।
गर्वितः सोऽपि गदितो निर्विशङ्कं द्विजोत्तम॥

३. क्षुधित—शत्रुगेही शत्रुयुक्तो रिपुदृष्टो भवेद्यदि।
क्षुधितः स च विज्ञेयः शनियुक्तो यथा तथा॥

४. तृषित— जलराशौ स्थितः खेटः शत्रुणा चावलोकितः।
शुभग्रहा न पश्यन्ति तृषितः स उदाहृतः॥

५. मुदित— मित्रगेही मित्रयुक्तो मित्रेण चावलोकितः।
गुरुणा सहितो यश्च मुदितः स प्रकीर्त्तितः॥

६. क्षोभित— रविणा सहितो यश्च पापाः पश्यन्ति सर्वथा।
क्षोभितं तं विजानीयाच्छत्रुणा यदि वीक्षितः॥ (पराशर)

इन अवस्थाओं के अलग-अलग फल पराशर ने कहे हैं। उनका भी अवलोकन करना उपयोगी होगा।

द्वादश अवस्थाओं के फल

सूर्य अवस्थाओं के भावपरक फल

त्रिकोणे वा कर्मण्यपि नयनपाणौ दिनमणेः
फलं शस्तं ज्ञेयं मदनसदने नन्दनपदे।
प्रकाशे मार्तण्डे मृतिपदमपत्यं जनिमतां
तथा जाया याति व्ययमदनमाने च जनने॥५॥
पुण्यबाधाकरः पुण्यभे भोजने कौतुके वैरिभे वैरिहन्ता रविः।
सप्तमे पञ्चमे तत्रगो वा भवेदङ्गनापुत्रहा लिङ्गरोगप्रदः॥६॥

अन्वयः—जनिमतां जनने नयनपाणौ दिनमणेः कर्मणि अपि वा फलं शस्तं

ज्ञेयं, तथा प्रकाशे मार्तण्डे मदनसदने नन्दनपदे, (तदा) अपत्यं मृतिपदं याति, तथा च प्रकाशे मार्तण्डे व्ययमदनमाने जनने (तदा) जाया मृतिपदं याति। यदि भोजने पुण्यभे रविः (तदा) पुण्यबाधाकरः कौतुके वैरिभे वैरिहन्ता, (यदा) तत्रगः (कौतुकावस्थागतः) सप्तमे पञ्चमे (रविः तदा) अङ्गनापुत्रहा लिङ्गरोगप्रदश्च भवेत् ॥५-६॥

त्रिकोण (५,९ वें भाव) और दशम भाव में यदि नेत्रपाणि अवस्था का सूर्य स्थित हो तो शुभद होता है। पञ्चम और सप्तम भावों में यदि प्रकाशावस्था में सूर्य स्थित हो तो पुत्र और स्त्री के लिए अनिष्टकारक होता है। द्वादश, सप्तम अथवा दशम भाव में यदि उक्त अवस्था में सूर्य स्थित हो, तो भी वैसा ही फल देता है। नवम भाव में सूर्य यदि भोजनावस्था में स्थित हो तो पुण्यकार्यों में बाधायें होती हैं। शत्रुभाव (छठे भाव) में यदि कौतुकावस्था का सूर्य स्थित हो, तो शत्रुओं का विनाशक होता है। इसी अवस्था का सूर्य यदि पञ्चम या सप्तम भाव में स्थित हो, तो स्त्री और पुत्र की हानि तथा गुप्ताङ्ग में व्याधि उत्पन्न करता है ॥५-६॥

चन्द्रावस्था के भावपरक फल

चन्द्रस्य द्वादशावस्था फलं शुक्लदले शुभम्।
अशुभं कृष्णपक्षे तु विज्ञेयं गणकोत्तमैः ॥७॥

अन्वयः—चन्द्रस्य द्वादशावस्था फलं शुक्लदले शुभम्, कृष्णपक्षे तु अशुभं (इति) गणकोत्तमैः विज्ञेयम् ॥७॥

शुक्ल पक्ष में शयनादि अवस्था का चन्द्रमा शुभ फल तथा कृष्ण पक्ष में पाप फल देता है ॥७॥

भौमावस्था के भावपरक फल

मदननन्दनगोऽवनिनन्दनः शयनगश्च कलत्रसुतक्षयम्।
प्रथमतः कुरुते रिपुणेक्षितो रिपुगृहे करभङ्गमनङ्गतः ॥८॥

अन्वयः—प्रथमतः अवनिनन्दनः शयनगः मदननन्दनगः (तदा) कलत्रसुतक्षयं कुरुते, रिपुणेक्षितः रिपुगृहे (गतः तदा) अनङ्गतः करभङ्गं (कुरुते) ॥८॥

शयनावस्था का मंगल यदि सप्तम या पञ्चम भाव में स्थित हो तो स्त्री-पुत्र के लिए अरिष्टकारक होता है। उक्त अवस्था का मंगल यदि शत्रुभाव में स्थित हो, तो शत्रुओं की क्षति और स्त्री से विवाद में हाथ टूट जाता है ॥८॥

यदि युतः शनिनापि च राहुणा शिरसि रोगकरो धरणीसुतः।
तनुगतः शयने नयने गदं वितनुते नितरां क्षतमङ्गिनाम् ॥९॥

अन्वयः—यदि धरणीसुतः शयनेऽवस्थागः शनिनापि राहुणा च युतः तनुगतः (तदा) अङ्गिनां नयने गदं (तथा) नितरां क्षतं वितनुते ॥९॥

शयनावस्था का मंगल शनि और राहु से संयुक्त होकर यदि लग्न में स्थित हो, तो शिरोरोग करता है। यदि लग्न में हो तो नेत्रव्याधि के साथ-साथ अन्य अनेक व्याधियाँ भी उत्पन्न करता है ॥९॥

अङ्गारकोऽङ्गे यदि नेत्रपाणौ करोत्यनङ्गातिशयेन भङ्गम्।
भुजङ्गदन्तक्षतपावकाम्बुभयं नगे हानिमिहाङ्गनायाः ॥१०॥

अन्वयः—यदि अङ्गारकः नेत्रपाणौ अंगे (तदा) अनङ्गातिशयेन भङ्गं करोति (तथा) भुजङ्गदन्तक्षतपावकाम्बुभयं करोति, (यदि) नगे (तदा) अङ्गनायाः हानिं करोति ॥१०॥

नेत्रपाणि अवस्था का मंगल यदि लग्न में स्थित हो तो स्त्रीलिप्सा के कारण अङ्गभङ्ग कराता है तथा सूर्य, अग्नि और जल से भय एवं यदि सप्तम भाव में हो तो स्त्री की हानि करता है ॥१०॥

प्रकाशने पञ्चमसप्तमस्थः सुतं निहन्त्याशु निहन्ति वामाम्।
पापान्वितः पापखगान्तराले कुकर्मिणां केतुवरं करोति ॥११॥

अन्वयः—(यदि भौमः) प्रकाशने पञ्चमस्थः (तदा) सुतं वामं आशु निहन्ति (यदि) प्रकाशने सप्तमस्थः (तदा) सुतं वामं आशु निहन्ति (यदि) पापान्वितः पापखगान्तराले (भौमस्तदा) कुकर्मिणां केतुवरं करोति ॥११॥

प्रकाशावस्था का भौम यदि पाँचवें या सप्तम भावगत हो, तो पुत्र को तत्काल मार कर पत्नी का भी निधन कराता है। उक्त भौम यदि पापग्रह से युत हो अथवा पापग्रहों के मध्यगत हो तो जातक दुष्कर्मियों का शिरमौर होता है ॥११॥

बुधावस्था के भावपरक फल

नेत्रपाणौ सुते सौम्ये पुत्रहानिः सुतागमः।
सभायामेव कन्यानामाधिक्यं मदने सुते ॥१२॥

अन्वयः—सौम्ये नेत्रपाणौ (अवस्थायां) सुते (तदा) पुत्रहानिः सुतागमः (तथा) सभायां मदने (वा) सुते (तदा) कन्यानां आधिक्यं एव करोति ॥१२॥

नेत्रपाणि अवस्था का बुध यदि पञ्चम भाव में स्थित हो, तो पुत्र की क्षति और कन्या का जन्म कराता है। सभावस्था का बुध यदि पञ्चम या सप्तम भाव में स्थित हो, तो कन्याओं की अधिकता होती है ॥१२॥

बृहस्पति अवस्था के भावपरक फल

भवति देवगुरौ यदि भोजने तनुगते मनुजो हि धनुर्द्धरः।
नवमपञ्चमभे धनवर्जितो भवति पापयुते विसुतो नरः ॥१३॥

अन्वयः—देवगुरौ भोजने तनुगते (तदा) मनुजः हि धनुर्द्धरः भवति यदि (उक्ता-

वस्थायां) नवमभे पञ्चमभे (तदा) धनवर्जितः (यदि) पापयुते (नवमपञ्चमभे तदा) नरः विसुतः (भवति) ॥१३॥

भोजनावस्था का बृहस्पति यदि लग्नगत हो, तो जातक धनुर्धारी योद्धा होता है। उक्त अवस्था में यदि बृहस्पति पञ्चम या नवम भाव में स्थित हो तो जातक धनहीन, पापकर्मी और निःसन्तान होता है ॥१३॥

शुक्र अवस्था के भावपरक फल

तनुगृहे मदने दशमे सितो नयनपाणिगतो यदि जन्मनि।
शुभमतीव फलं तनुते बलं दशनभङ्गमनङ्गविवर्द्धनम् ॥१४॥

अन्वयः—यदि जन्मनि सितः पाणिगतः तनुगृहे, मदने, दशमे, (भवति तदा) अतीव शुभं फलं बलं (च) तनुते, दशनभङ्गं, अनङ्गविवर्धनं (च) तनुते ॥१४॥

जन्मकाल में यदि शुक्र नयनपाणि अवस्था में स्थित होकर लग्न, सप्तम या दशम भावगत हो तो अत्यन्त शुभ फल देता है। साथ ही दन्तभङ्ग और कामवासना की वृद्धि करता है ॥१४॥

शनि अवस्था के भावपरक फल

यत्र कुत्र स्थितो मन्दो जन्मकाले विशेषतः।
अवस्थानामसदृशं वितनोति शुभाशुभम् ॥१५॥

अन्वयः—जन्मकाले मन्दः यत्र कुत्र स्थितः विशेषतः अवस्थानां असदृशं (फलं) वितनोति ॥१५॥

जिस किसी अवस्था का शनि जिस किसी भाव में स्थित हो, उस अवस्था के अनुसार ही शुभाशुभ फल देता है ॥१५॥

राहु-केतु अवस्था के भावपरक फल

नवमे मदने वापि राहुराहुरिहाङ्गिनाम्।
महान्तो निद्रितोऽवश्यं पुण्यक्षेत्रनिवासिताम् ॥१६॥
द्वितीये द्वादशे वापि लाभे वा सिंहिकासुते।
वसुधां भ्रमते मर्त्यो विधनः शयने भवेत् ॥१७॥
निजक्षेत्रे तुङ्गे कविकुजगृहे मित्रभवने
स्ववर्गे सद्वर्गे तमसि शयने जन्मसमये।
फलं पूर्णं प्राहुः कथितभवनादन्यभवने
तदा दुष्टप्राञ्चस्तदिह शिखिनो राहुवदिदम् ॥१८॥

अन्वयः—अङ्गिनां राहुः निद्रितः नवमे मदने वाऽपि भवति (तदा) पुण्यक्षेत्रनिवासितां अवश्यं (करोतीति) महान्तः आहुः। शयने सिंहिकासुते द्वितीये वा द्वादशे वा लाभेऽपि भवेत् तदा मर्त्यः विधनः वसुधां भ्रमते। जन्मसमये शयने तमसि

निजक्षेत्रे, तुङ्गे, कविकुजगृहे, मित्रभवने, स्ववर्गे सद्वर्गे (वा भवति) तदा फलं (शुभं) पूर्णं आहुः (यदा) कथितभवनात् अन्यभवने तदा दुष्टप्राञ्चः (करोति) राहुवत् इदं फलं शिखिनोऽपि (भवति) ॥१६-१८॥

जिसके जन्मकाल में शयनावस्था का राहु सप्तम या नवम भाव में स्थित हो तो जातक पुण्यक्षेत्र में प्रवास करता है, ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है। उक्त अवस्था का राहु यदि द्वितीय, द्वादश या एकादश भावगत हो तो जातक निर्धन होकर भूतल में भ्रमण करता है। यदि राहु स्वगृह, उच्च, शुक्र या मंगल की राशि, मित्रगृह, अपने वर्ग अथवा शुभवर्ग में शयनावस्था का हो तो पूर्ण फल प्रदान करता है, लेकिन अन्य भावों में नेष्ट फल देता है। राहु के समान ही केतु का भी फल होता है ॥१६-१८॥

विशेष फल

यदि निद्रागतः पापः सप्तमे पापपीडितः ।
तदा जायाविनाशः स्याच्छुभयोगेक्षणान्न हि ॥१९॥

अन्वयः—यदि पापः (पापग्रहः) पापपीडितः निद्रागतः सप्तमे (स्थितः) तदा जायाविनाशः स्यात्, शुभयोगेक्षणात् न हि विनाशः स्यात् ॥१९॥

निद्रावस्था का कोई पापग्रह पापपीड़ित (पापग्रह से युत या दृष्ट) हो तो पत्नी की मृत्यु होती है। शुभग्रह यदि उक्त अवस्था में स्थित हो तो स्त्री को कष्ट होता है ॥१९॥

निद्रितो रिपुगेहस्थो रिपुयुक्तेक्षितो मदे ।
भार्या विनश्यति क्षिप्रं विधिना रक्षिताऽपि चेत् ॥२०॥

अन्वयः—यदि पापः निद्रितः रिपुयुक्तेक्षितः रिपुगेहस्थः मदे (स्थितः) तदा चेत् विधिना रक्षिताऽपि भार्या क्षिप्रं विनश्यति ॥२०॥

निद्रावस्था में कोई ग्रह यदि छठे भाव में स्थित हो या सप्तम भावगत हो, साथ ही शत्रुग्रह के साथ अथवा शत्रुग्रह से दृष्ट हो तो ब्रह्मा से रक्षित होने पर भी जातक की पत्नी का निधन होता है ॥२०॥

शुभयोगेक्षणादेका विनश्यति परा न हि ।
शुभाशुभदृशा भार्या कष्टयुक्ता नृणां भवेत् ॥२१॥

अन्वयः—शुभयोगेक्षणात् एका भार्या विनश्यति अपरा नहि, (यदा) शुभाशुभदृशा (तदा) नृणां भार्या कष्टयुक्ता भवेत् ॥२१॥

पूर्वोक्त स्थिति में स्थित ग्रह यदि शुभग्रहों से युत और दृष्ट हों तो जातक की एक पत्नी का निधन होता है और दूसरी पत्नी से उसे गार्हस्थ्य-सुख प्राप्त होता है। यदि मिश्रित ग्रहों से उक्त स्थिति में स्थित ग्रह पीड़ित हों तो पत्नी कष्ट भोगती है ॥२१॥

सन्तानहानि योग

अपत्यभावे यदि तुङ्गगेहे निजालये पापयुतेक्षितश्चेत्।
निद्रागतोऽपत्यविनाशकारी शुभेक्षितश्चैकसुतस्य हन्ता ॥२२॥

अन्वयः—यदि (ग्रहः) तुङ्गगेहे निजालये अपत्यभावे (स्थितः) चेत् पापयुतेक्षितः निद्रागतः (तदा) अपत्यविनाशकारी (यदि) शुभेक्षितः (तदा) एकसुतस्य विनाशकारी भवति ॥२२॥

यदि शयनावस्था का कोई ग्रह पञ्चम भाव में अपनी राशि अथवा अपनी उच्च राशि का होकर स्थित हो तो वह पुत्रहन्ता होता है अर्थात् जातक सन्तानहीन होता है। किन्तु यदि उक्त ग्रह शुभ ग्रहों से युत-दृष्ट हो तो जातक को केवल एक ही पुत्र की हानि होती है, अन्य की नहीं ॥२२॥

अपमृत्यु योग

राहुणा सहितौ यस्य निधनस्थौ कुजार्कजौ।
अपमृत्युर्भवेत्तस्य शस्त्रघातान्न संशयः ॥२३॥

अन्वयः—यस्य जन्मनि राहुणा सहितौ कुजार्कजौ (निद्रावस्थागतौ) निधनस्थौ (तस्य) शस्त्रघातात् अपमृत्युः भवेत् (अत्र) न संशयः ॥२३॥

राहु के साथ मंगल और शनि यदि अष्टम भाव में स्थित हों और वे सभी अथवा उनमें से कोई एक ग्रह यदि निद्रावस्था में स्थित हो तो शस्त्र के आघात से जातक की मृत्यु होती है ॥२३॥

निधनेऽपि शुभो यस्य पापारिग्रहवीक्षितः।
तदा मृत्युर्विजानीयादाहवे शस्त्रपीडनात् ॥२४॥

अन्वयः—यस्य पापारिग्रहवीक्षितः शुभोऽपि (निद्रागतः) निधने (स्थितः) तदा आहवे शस्त्रपीडनात् मृत्युः विजानीयात् ॥२४॥

अष्टम भाव में यदि शुभग्रह भी हों और निद्रावस्था में हों तथा पापग्रह अथवा शत्रुग्रह द्वारा देखे जाते हों तो शस्त्राघात से जातक मृत्यु को प्राप्त होती है ॥२४॥

अरिष्टकृत तीर्थकृत मृत्युयोग

यदा निद्रायुक्तो निधनभवनं पापमिलितः
शयानो वा मृत्युं व्रजति रिपुकोपेन मनुजः।
शुभैर्दृष्टो युक्तो निजपतियुतो वाऽन्तसमये
नरो गङ्गामेत्य व्रजति हरिसायुज्यपदवीम् ॥२५॥

अन्वयः—यदि (ग्रहः) निद्रायुक्तः शयानः वा पापमिलितः निधनभवनं (गतस्तदा) मनुजः रिपुकोपेन मृत्युं व्रजति, यदि (ग्रहः) शुभैर्दृष्टः युतश्च निजपतियुतः (अष्टमेशेन युतः) वा (तदा) अन्तसमये नरः गङ्गां एत्य हरिसायुज्यपदवीं व्रजति ॥२५॥

शयनावस्था या निद्रावस्था में यदि कोई ग्रह पापग्रह के साथ अष्टम भावगत हो, तो शत्रु द्वारा जातक की मृत्यु होती है। यदि वे शुभ ग्रहों से युत-दृष्ट हों और अष्टमेश भी अष्टम भाव में स्थित हो तो गंगालाभ कर जातक विष्णुसायुज्य को प्राप्त करता है ॥२५॥

पुण्यक्षेत्रलाभ योग

यदा पश्येदङ्गं तनुभवननाथोऽष्टमपति-
र्मृतिं धर्माधीशो जनुषि च तपःस्थानमथवा।
शुभाभ्यामाक्रान्तं नवमभवनं पापरहितं
वरक्षेत्रं प्राप्य व्रजति मनुजो मोक्षपदवीम् ॥२६॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले स्थानवशेनावस्था-फलकथनाध्याय एकादशः ॥११॥

अन्वयः—यदा जनुषि तनुभवननाथः अङ्गं पश्येत् अष्टमपतिः मृतिं पश्येत्, धर्माधीशः च तपःस्थानं पश्येत् अथवा शुभाभ्याम् आक्रान्तं नवमभवनं पापरहितं भवति तदा मनुजः वरक्षेत्रं प्राप्य मोक्षपदवीं व्रजति ॥२६॥

यदि लग्नेश लग्न को, अष्टमेश अष्टम भाव को तथा नवमेश नवम भाव को देखता हो अथवा इनमें से कोई एक अपने भाव को देखता हो अथवा नवम भाव पापरहित हो, शुभग्रहों से युत हो, उन पर पापग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक का निधन किसी तीर्थस्थान में होने से उसे मोक्षपद प्राप्त होता है ॥२६॥

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का एकादश अध्याय समाप्त हुआ ॥११॥

•

S. 9843150300
R. 9803464180
M. 9841401473

अथ द्वादशोऽध्यायः

ग्रहाणां शयनाद्यवस्थाविचारः

ग्रहों के अवस्थाफल

सूर्य अवस्था फल

मन्दाग्निरोगो बहुधा नराणां स्थूलत्वमंघ्रेरपि पित्तकोपः ।
व्रणं गुदे शूलमुरःप्रदेशे यदोष्णभानौ शयनं प्रयाते ॥१॥

अन्वयः—यदा उष्णभानौ शयनं प्रयाते (तदा) नराणां बहुधा मन्दाग्निरोगः अंघ्रेः स्थूलत्वं अपि पित्तकोपः गुदे व्रणं उरःप्रदेशे शूलं (च भवति) ॥१॥

जिसके जन्माङ्ग में सूर्य शयनावस्था में हो वह व्यक्ति प्रायः मन्दाग्नि, पित्त-प्रकोप, पैरों में शोथ (सूजन), गुदामार्ग में व्रण और हृत्शूल से पीड़ित रहता है ॥१॥

दरिद्रताभारविहारशाली विवादविद्याभिरतो नरः स्यात् ।
कठोरचित्तः खलु नष्टवित्तः सूर्ये यदा चेदुपवेशनस्थे ॥२॥

अन्वयः—यदा सूर्ये उपवेशनस्थे (तदा) नरः दरिद्रताभारविहारशाली, विवादविद्याभिरतः कठोरचित्तः खलु नष्टवित्तः स्यात् ॥२॥

जन्माङ्ग में सूर्य यदि उपवेशनावस्था में हो तो जातक दरिद्र, दूसरों के बोझ आदि ढ़ोकर (कुली या सामान्य मजदूर) जीवनयापन करने वाला, विवादप्रिय, निर्दय और धनहीन होता है ॥२॥

नरः सदानन्दधरो विवेकी परोपकारी बलवित्तयुक्तः ।
महासुखी राजकृपाभिमानी दिवाधिनाथे यदि नेत्रपाणौ ॥३॥

अन्वयः—यदि नेत्रपाणौ दिवाधिनाथे तदा नरः सदानन्दधरः, विवेकी परोपकारी, बलवित्तयुक्तः, महासुखी (तथा) राजकृपाभिमानी (स्यात्) ॥३॥

जन्माङ्ग का सूर्य यदि नेत्रपाणि अवस्था में हो, तो जातक सदा आनन्दपूर्वक जीवनयापन करता है। वह विवेकशील, परोपकारी, बलवान और धनसम्पदादि से सम्पन्न, सुखी एवं राजकृपा प्राप्त होने से अभिमानी होता है ॥३॥

उदारचित्तः परिपूर्णवित्तः सभासु वक्ता बहुपुण्यकर्त्ता ।
महाबली सुन्दररूपशाली प्रकाशने जन्मनि पद्मिनीशे ॥४॥

अन्वयः—(यदा) जन्मनि प्रकाशने पद्मिनीशे (तदा नरः) उदारचित्तः, परिपूर्णवित्तः सभासु वक्ता, बहुपुण्यकर्त्ता, महाबली, सुन्दररूपशाली (स्यात्) ॥४॥

यदि जन्माङ्ग में सूर्य प्रकाशनावस्था में हो तो जातक उदारमना, धन-सम्पदादि

से पूर्ण सुखी, सभा में पटुवक्ता, अनेक पुण्यकार्य करने वाला, बलशाली और सुदर्शन होता है ॥४॥

प्रवासशाली किल दुःखमाली सदालसी धीधनवर्जितश्च ।
भयातुरः कोपपरो विशेषाद् दिवाधिनाथे गमने मनुष्यः ॥५॥

अन्वयः—यदि गमने दिवाधिनाथे (तदा) मनुष्यः प्रवासशाली, किल दुःखमाली, सदालसी, धीधनवर्जितश्च, भयातुरः (तथा) विशेषात् कोपपरः (स्यात्) ॥५॥

जन्माङ्ग का सूर्य यदि गमनावस्था में हो तो जातक अनेक दुःखों से दुःखी, प्रवासी, आलस्य से पीड़ित (उद्यमहीन), बुद्धि और धन से हीन तथा भयाक्रान्त होता है ॥५॥

परदाररतो जनतारहितो बहुधाऽऽगमने गमनाभिरुचिः ।
कृपणः खलताकुशलो मलिनो दिवसाधिपतौ मनुजः कुमतिः ॥६॥

अन्वयः—(यदा) आगमने दिवसाधिपतौ (तदा) मनुजः मलिनः परदाररतः जनतारहितः बहुधाऽऽगमने गमनाभिरुचिः कृपणः, खलताकुशलः (तथा) कुमतिः (स्यात्) ॥६॥

यदि जन्माङ्ग में सूर्य आगमनावस्था में हो तो जातक दूसरे की स्त्री में निरत, प्रायः यात्राभिलाषी, सङ्गतिविहीन, कृपण, दुष्ट स्वभाव वाला, दुर्बुद्धियुक्त एवं मलिन रहता है ॥६॥

सभागते हिते नरः परोपकारतत्परः
सदाऽर्थरत्नपूरितो दिवाकरो गुणाकरः ।
वसुन्धरानवाम्बरालयान्वितो महाबली
विचित्रमित्रवत्सलः कृपाकलाधरः परः ॥७॥

अन्वयः—(यदा) हिते सभागते दिवाकरः, (तदा) नरः परोपकारतत्परः, सदा अर्थरत्नपूरितः, गुणाकरः, वसुन्धरानवाम्बरालयान्वितः, महाबली, विचित्रमित्रवत्सलः परः कृपाकलाधरः (स्यात्) ॥७॥

सभावस्था का सूर्य जन्माङ्ग में मित्रगृही हो, तो जातक परोपकारनिरत, धन और रत्नादि से पूर्ण, गुणवान, भूसम्पदा का स्वामी, सदैव नवीन वस्त्रों से युक्त, सुन्दर भवन में निवास करने वाला, महाबलशाली, अति मित्रवत्सल और अत्यन्त कृपालु होता है ॥७॥

क्षोभितो रिपुगणैः सदा नरः चञ्चलः खलमतिः कृशस्तथा ।
धर्मकर्मरहितो मदोद्धतश्चागमे दिनपतौ यदा तदा ॥८॥

अन्वयः—यदा आगमे दिनपतौ तदा नरः रिपुगणैः क्षोभितः, सदा चञ्चलः खलमतिः, कृशः तथा धर्मकर्मरहितः मदोद्धतश्च (स्यात्) ॥८॥

यदि जन्माङ्ग का सूर्य आगमावस्था में हो तो जातक शत्रुओं से पीड़ित, चञ्चल

मति, दुष्ट, कृशाङ्ग, धर्म-कर्म से हीन एवं मद से अभिभूत होकर उद्धत आचरण करने वाला होता है ॥८॥

सदाङ्गसन्धिवेदना पराङ्गनाधनक्षयो
बलक्षय: पदे पदे यदा तदा हि भोजने।
असत्यता शिरोव्यथा तथा वृथान्नभोजनं
रवावसत्कथारति: कुमार्गगामिनी मति: ॥९॥

अन्वय:—यदा भोजने रवौ तदा सदा अङ्गसन्धिवेदना, पदे पदे पराङ्गनाधनक्षय: बलक्षय:, हि असत्यता, शिरोव्यथा, वृथान्नभोजनं, असत्कथारति: तथा कुमार्गगामिनी मति: (स्यात्) ॥९॥

यदि भोजनावस्था का सूर्य जन्माङ्ग में हो तो जातक सदैव सन्धिवेदना (जोड़ों के दर्द) से पीड़ित रहता है। दूसरे की स्त्रियों में लिप्सा के कारण धन का क्षय, बल का नाश, असत्याचारी, शिर:शूल से पीड़ित एवं उसके द्वारा किया गया भोजन अखाद्य होने के कारण व्यर्थ होता है; साथ ही वह कुमार्ग का अनुसरण करने वाला होता है ॥९॥

विज्ञलोकै: सदा मण्डित: पण्डित: काव्यविद्यानवद्यप्रलापान्वित:।
राजपूज्यो धरामण्डले सर्वदा नृत्यलिप्सागते पद्मिनीनायके ॥१०॥

अन्वय:—(यदा) नृत्यलिप्सागते पद्मिनीनायके (तदा नर:) सदा विज्ञलोकै: मण्डित:, पण्डित:, काव्यविद्यानवद्यप्रलापान्वित: धरामण्डले सर्वदा राजपूज्य: (स्यात्) ॥१०॥

जिसके जन्माङ्ग का सूर्य नृत्यलिप्सावस्था में हो, वह विद्वज्जनों से सुपूजित काव्यशास्त्र-विनोद में पारङ्गत एवं राजा से पूज्य होता है ॥१०॥

सर्वदानन्दधर्त्ता जनो ज्ञानवान् यज्ञकर्त्ता धराधीशसद्मस्थित:।
पद्मबन्धावरातीभपञ्चानन: काव्यविद्याप्रलापी मुदा कौतुके ॥११॥

अन्वय:—(यदा) कौतुके पद्मबन्धौ (तदा) जन: सर्वदानन्दधर्ता, ज्ञानवान्, यज्ञ-कर्त्ता धराधीशसद्मस्थित: अरातीभपञ्चानन: (तथा) मुदा काव्यविद्याप्रलापी (स्यात्) ॥११॥

जन्माङ्ग में यदि सूर्य कौतुकावस्था में हो तो जातक सदैव आनन्दमय जीवन-यापन करने वाला, ज्ञानवान, यज्ञ करने वाला, राजा के सान्निध्य में निवास करने वाला, शत्रुरूपी हाथियों के समूह पर सिंह के समान शत्रुओं का मानमर्दन करने वाला एवं काव्यानुरागी होता है ॥११॥

निद्राभरारक्तनिभे भवेतां निद्रागते लोचनपद्मयुग्मे।
रवौ विदेशे वसतिर्जनस्य कलत्रहानि: कतिधार्थनाश: ॥१२॥

अन्वय:—(यदा) निद्रागते रवौ (तदा) जनस्य लोचनपद्मयुग्मे निद्राभरारक्तनिभे भवेतां, विदेशे वसति: कलत्रहानि: (तथा) कतिधा अर्थनाश: (स्यात्) ॥१२॥

जिसके जन्माङ्ग में सूर्य निद्रावस्था में हो, उसके नेत्र सदैव निद्रा से बोझिल, रक्ताभ एवं कमल के सदृश होते हैं। वह प्रवासी होता है तथा उसको पत्नी की हानि होती है एवं अनके बार उसके धन का नाश भी होता है ॥१२॥

चन्द्रावस्था फल

जनुःकाले क्षपानाथे शयनं चेदुपागते।
मानी शीतप्रधानी च कामी वित्तविनाशकः ॥१३॥

अन्वयः—चेत् जनुः काले क्षपानाथे शयनं उपागते (तदा) मानी शीतप्रधानी, कामी वित्तविनाशकश्च (स्यात्) ॥१३॥

जन्मकालिक चन्द्रमा यदि शयनावस्था में हो तो जातक अभिमानी, शीतप्रधान प्रकृति वाला एवं उद्दाम कामवासना से युक्त होता है तथा उसके धन का विनाश होता है ॥१३॥

रोगार्दितो मन्दमतिर्विशेषाद्वित्तेन हीनो मनुजः कठोरः।
अपायकारी परवित्तहारी क्षपाकरे चेदुपवेशनस्थे ॥१४॥

अन्वयः—चेत् क्षपाकरे उपवेशनस्थे (तदा) मनुजः रोगार्दितः, मन्दमतिः विशेषात् वित्तेन हीनः, कठोरः, अपायकारी (तथा) परवित्तहारी (स्यात्) ॥१४॥

जन्माङ्ग का चन्द्रमा यदि उपवेशनावस्था में हो तो जातक रोगार्त, मन्द बुद्धि, धनहीन, निर्मम, अपने धन का नाशक और परधनहर्त्ता होता है ॥१४॥

नेत्रपाणौ क्षपानाथे महारोगी नरो भवेत्।
अनल्पजल्पको धूर्त्तः कुकर्मनिरतस्सदा ॥१५॥

अन्वयः—(यदि) नेत्रपाणौ क्षपानाथे (तदा) नरः महारोगी, अनल्पजल्पकः धूर्त्तः (तथा) सदा कुकर्मनिरतः भवेत् ॥१५॥

जन्मकाल में यदि चन्द्रमा नेत्रपाणि अवस्था में हो तो जातक महारोगी, अति वाचाल, धूर्त और सदैव दुष्कर्म में निरत रहता है ॥१५॥

यदा राकानाथे गतवति प्रकाशं च जनने
विकासः संसारे विमलगुणराशेरवनिपात्।
नवा शालामाला करितुरगलक्ष्म्या परिवृता
विभूषायोषाभिः सुखमनुदिनं तीर्थगमनम् ॥१६॥

अन्वयः—यदा जनने राकानाथे प्रकाशं गतवति (तदा नरः) संसारे विमलगुण-राशेः विकासः अवनिपात् नवा शालामाला, करितुरगलक्ष्म्या परिवृता विभूषायोषाभिः सुखम् अनुदिनं (तथा) तीर्थगमनं करोति ॥१६॥

जन्माङ्गस्थ चन्द्रमा यदि प्रकाशावस्था में हो तो जातक संसार में अपने उत्तम

गुणों का निपात कर विकास करता हुआ नवीन गृह, हाथी, घोड़ों और धन-सम्पदादि से परिवृत्त होकर आभूषणों से युक्त पत्नी के साथ सुखपूर्वक रमण करता है और अन्त में तीर्थाटनादि सत्कर्म करता है ॥१६॥

सितेतरे पापरतो निशाकरे विशेषतः क्रूरतरो नरो भवेत्।
सदाक्षिरोगैः परिपीड्यमानो वलर्क्षपक्षे गमने भयातुरः ॥१७॥

अन्वयः—(यदि) सितेतरे निशाकरे गमने भवेत् (तदा) नरः विशेषतः पापरतः क्रूररतः सदाक्षिरोगैः परिपीड्यमानः (यदि) बलर्क्षपक्षे (तदा) भयातुरः (भवेत्) ॥१७॥

जन्मकाल में यदि कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा गमनावस्था में हो तो जातक पापकर्म में रत, अत्यन्त क्रूरमना तथा नेत्ररोगी होता है। यदि शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा गमनावस्था में हो तो जातक भयाक्रान्त रहता है ॥१७॥

विधावागमने मानी पादरोगी नरो भवेत्।
गुप्तपापरतो दीनो मतितोषविवर्जितः ॥१८॥

अन्वयः—(यदि) विधवागमने भवेत् (तदा) नरः मानी, पादरोगी, गुप्तपापरतः दीनः (तथा) मतितोषविवर्जितः (भवेत्) ॥१८॥

यदि चन्द्रमा आगमनावस्था में हो तो जातक अभिमानी, पैरों से रुग्ण, गुप्त पापकर्म करनें वाला, बुद्धि और सन्तुष्टि से हीन तथा दीन-हीन होता है ॥१८॥

सकलजनवदान्यो राजराजेन्द्रमान्यो
रतिपतिसमकान्तिः शान्तिकृत्कामिनीनाम्।
सपदि सदसि याते चारुविम्बे शशाङ्के
भवति परमरीतिप्रीतिविज्ञो गुणज्ञः ॥१९॥

अन्वयः—(यदि) चारुविम्बे शशांके सदसि याते (तदा नरः) सकलजनवदान्यः, राजराजेन्द्रमान्यः रतिपतिसमकान्तिः कामिनीनां सपदि शान्तिकृत् परमरीतिप्रीतिविज्ञः (तथा) गुणज्ञः भवति ॥१९॥

जन्मकालिक चन्द्रमा यदि समावस्था में हो तो जातक चतुरविशिष्ट, राजसम्मान प्राप्तकर्त्ता, कामदेव के समान कान्ति से युक्त, युवतियों को सन्तुष्टि प्रदान करने वाला तथा रीति-प्रीति को जानने वाला गुणवान् होता है ॥१९॥

विधावागमने मर्त्यो वाचालो धर्मपूरितः।
कृष्णपक्षे द्विभार्यः स्याद्रोगी दुष्टतरो हठी ॥२०॥

अन्वयः—विधौ आगमने मर्त्यः वाचालः धर्मपूरितः (यदि) कृष्णपक्षे (तदा) द्विभार्यः, रोगी दुष्टतरः हठी स्यात् ॥२०॥

जन्मकालिक चन्द्रमा यदि आगमावस्था में हो, तो व्यक्ति वाचाल एवं धार्मिक होता

है। यदि कृष्ण पक्ष का जन्म हो और चन्द्रमा उक्त अवस्था में हो तो जातक की दो पत्नी होती है तथा वह स्वयं रोगी, हठवादी और परम दुष्ट स्वभाव का होता है ॥२०॥

भोजने जनुषि पूर्णचन्द्रमा मानयानजनतासुखं नृणाम्।
आतनोति वनितासुतासुखं सर्वमेव न सितेतरे शुभम् ॥२१॥

अन्वयः—यदि जनुषि पूर्णचन्द्रमा भोजने (तदा) नृणां मानयानजनतासुखं, वनितासुतासुखं आतनोति, सितेतरे सर्वं एव न शुभम् ॥२१॥

पूर्णिमा का जन्म हो और चन्द्रमा भोजनावस्था में हो तो जातक को सम्मान, वाहन आदि और दास-दासियां का सुख एवं स्त्री और पुत्रादि का सुख प्राप्त होता है। कृष्ण पक्ष में जन्म हो, तो जातक इन सभी शुभ फलों से हीन होता है ॥२१॥

नृत्यलिप्सागते चन्द्रे सबले बलवान्नरः।
गीतज्ञो हि रसज्ञश्च कृष्णे पापकरो भवेत् ॥२२॥

अन्वयः—(यदि) सबले चन्द्रे नृत्यलिप्सागते (तदा) नरः बलवान् गीतज्ञः हि रसज्ञश्च भवेत्। (यदि) कृष्णे चन्द्रे (तदा) पापकरः भवेत् ॥२२॥

जन्माङ्ग का चन्द्रमा यदि नृत्यलिप्सावस्था में हो तो जातक बलवान एवं सङ्गीत और रसों का मर्मज्ञ होता है। कृष्ण पक्ष में जन्म हो तो जातक पापकर्म में निरत रहता है ॥२२॥

कौतुकभवनं गतवति चन्द्रे भवति नृपत्वं वा धनपत्वम्।
कामकलासु सदा कुशलत्वं वारवधूरतिरमणपटुत्वम् ॥२३॥

अन्वयः—(यदि) चन्द्रे कौतुकभवनं गतवति (तदा नरः) नृपत्वं वा धनपत्वं, कामकलासु सदा कुशलत्वं, वारवधूरतिरमणपटुत्वं भवति ॥२३॥

जन्मकालिक चन्द्रमा यदि कौतुकावस्था में हो तो जातक राजा अथवा धनपति होता हैं। साथ ही वह कामक्रीडा में पटु एवं वाराङ्गनाओं का भोग करने वाला होता है ॥२३॥

निद्रागते जन्मनि मानवानां कलाधरे जीवयुते महत्त्वम्।
यदाङ्गनासञ्चितवित्तनाशः शिवालये रौति विचित्रमुच्चैः ॥२४॥

अन्वयः—(यदि) जन्मनि जीवयुते कलाधरे निद्रागते (तदा) मानवानां महत्त्वं यदाङ्गना (तदा) सञ्चितवित्तनाशः (तथा) विचित्रम् उच्चैः शिवालये रौति ॥२४॥

जन्माङ्ग का चन्द्रमा यदि निद्रावस्था में बृहस्पति से युक्त हो तो जातक समाज का महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होता है। यदि कन्या का चन्द्रमा उक्त अवस्था में हो तो जातक के धन-गृहादि का विनाश हो जाता है और उसके गृह में शृगाल आदि का उच्च स्वर में रोदन सुनाई पड़ता है ॥२४॥

भौम अवस्था-फल

शयने वसुधापुत्रे जन्मकाले जनो भवेत्।
बहुना कण्डुना युक्तो दद्रुणा च विशेषतः ॥२५॥

अन्वयः—(यदि) जन्मकाले वसुधापुत्रे शयने (तदा) जन: बहुना कण्डुना युक्त: विशेषत: दद्रुणा च युक्त: भवेत् ॥२५॥

जन्मकालिक मंगल यदि शयनावस्था में हो तो जातक दद्रुरोग और कण्डू (खुजली) रोग से अत्यन्त पीड़ित होता है ॥२५॥

बली सदा पापरतो नरः स्यादसत्यवादी नितरां प्रगल्भः।
धनेन पूर्णो निजधर्महीनो धरासुते चेदुपवेशनस्थे ॥२६॥

अन्वयः—चेत् धरासुते उपवेशनस्थे (तदा) नर: बली, सदा पापरत:, असत्यवादी, नितरां प्रगल्भ:, धनेन पूर्ण: (तथा) निजधर्महीन: स्यात् ॥२६॥

जन्मकाल में चन्द्रमा यदि उपवेशनावस्था में हो तो जातक पापकर्मा, असत्यवादी, परम साहसी, धन-धान्य से सम्पन्न तथा अपने धर्म से च्युत होता है ॥२६॥

यदा भूमिसुते लग्ने नेत्रपाणिमुपागते।
दरिद्रता सदा पुंसामन्यभे नगरेशता ॥२७॥

अन्वयः—यदा भूमिसुते नेत्रपाणिम् उपागते लग्ने (गते तदा) पुंसां सदा दरिद्रता, अन्यभे नगरेशता (स्यात्) ॥२७॥

नेत्रपाणि अवस्था में मंगल यदि लग्नगत हो तो जातक धनहीन एवं दरिद्र होता है। यदि अन्य भावगत उक्त मंगल हो तो व्यक्ति नगराधीश होता है ॥२७॥

प्रकाशो गुणस्य प्रवासः प्रकाशे धराधीशभर्तुः सदा मानवृद्धिः।
सुते भूसुते पुत्रकान्तावियोगो युते राहुणा दारुणो वा निपातः ॥२८॥

अन्वयः—(यदि) भूसुते प्रकाशे (तदा) गुणस्य प्रकाश: प्रवास: धराधीशभर्त्तु: सदा मानवृद्धि: (यदि) भूसुते सुते (तदा) पुत्रकान्तवियोग: वा राहुणा युते (तदा) दारुण: निपात: (स्यात्) ॥२८॥

यदि जन्मकालिक मंगल प्रकाश अवस्था में हो तो वह व्यक्ति के गुणों को प्रकाशित करता है। जातक राजकृपा का पात्र और सम्मानित व्यक्ति होता है। उक्त अवस्था में चन्द्रमा यदि पञ्चम भाव में स्थित हो तो ज़ातक स्त्री-पुंत्रादि से वियुक्त रहता है। उक्त चन्द्रमा यदि राहु से संयुक्त हो तो जातक वृक्षादि से पतित होकर कष्ट भोगता है ॥२८॥

गमने गमनं कुरुतेऽनुदिनं व्रणजालभयं वनिताकलहम्।
बहुदद्रुककण्डुभयं बहुधा वसुधातनयो वसुहानिकरः ॥२९॥

अन्वयः—(यदि) वसुधातनयः गमने (तदा नरः) अनुदिनं गमनं व्रणजालभयं, वनिताकलहं बहुदद्रुककण्डुभयं कुरुते (तथा) वसुहानिकरः (स्यात्) ॥२९॥

यदि मंगल गमनावस्था में हो तो जातक अनेक यात्रायें करता है। व्रण, दद्रु, कण्डू आदि रोगों से उसे पीड़ा का भय होता है। वह स्त्री से विवादग्रस्त रहता है तथा उसके भूसम्पदा की हानि होती है ॥२९॥

आगमने गुणशाली मणिमाली करालकरवाली।
गजगन्ता रिपुहन्ता परिजनसन्तापहारको भौमे ॥३०॥

अन्वयः—(यदि) भौमे आगमने (तदा) गुणशाली, मणिमाली, करालकरवाली, गजगन्ता, रिपुहन्ता, परिजनसन्तापहारकः (स्यात्) ॥३०॥

जन्मकाल में यदि मंगल आगमनावस्था में हो तो जातक गुणी, मणियों की मालाओं से सुसज्जित, भयङ्कर खड्ग धारण करने वाला, हाथियों की सवारी करने वाला, शत्रुओं का विनाशक तथा परिजनों के दुःखों का विनाशक होता है ॥३०॥

तुङ्गे युद्धकलाकलापकुशलो धर्मध्वजो वित्तपः
कोणे भूमिसुते सभामुपगते विद्याविहीनः पुमान्।
अन्तेऽपत्यकलत्रमित्ररहितः प्रोक्तेतरस्थानगेऽ-
वश्यं राजसभाबुधो बहुधनी मानी च दानी जनः ॥३१॥

अन्वयः—(यदि) भूमिसुते तुङ्गे सभाम् उपगते (तदा) पुमान् युद्धकलाकलाप-कुशलः धर्मध्वजः, वित्तपः (यदि) कोणे (तदा) विद्याविहीनः (यदि) अन्ते (तदा) अपत्यकलत्रमित्ररहितः (यदि) प्रोक्तेतरस्थानगे (तदा) जनः अवश्यं राजसभाबुधः बहु-धनी, मानी, दानी च (स्यात्) ॥३१॥

जन्मकालिक मंगल उच्च राशि का होकर यदि सभावस्था में हो तो जातक युद्धकला में पारंगत, धर्मध्वज को धारण करने वाला (धर्म का रक्षक) एवं धनिक होता है। सभावस्था का मंगल यदि त्रिकोणगत हो, तो जातक विद्याविहीन और बुद्धिहीन होता है। उक्त मंगल यदि द्वादश भाव में स्थित हो तो जातक स्त्री, पुत्र और मित्रों से हीन होता है। शेष स्थानों में उक्त मंगल की स्थिति जातक को धन, मान-सम्मान आदि देता है और जातक दानी होता है ॥३१॥

आगमे भवति भूमिजे जनो धर्मकर्मरहितो गदातुरः।
कर्णमूलगुरुशूलरोगवानेव कातरमतिः कुसङ्गमी ॥३२॥

अन्वयः—(यदि) भूमिजे आगमे भवति (तदा) जनः धर्मकर्मरहितः गदातुरः कर्णमूलगुरुशूलरोगवान् एव कातरमतिः (तथा) कुसङ्गमी (स्यात्) ॥३२॥

जन्मकालिक मंगल यदि आगमावस्था में हो, तो जातक स्वकुलानुरूप धर्म-कर्म से हीन, रोगार्त्त, कर्णमूल में भयङ्कर शूल वाला, कातर और कुसंगरत होता है ॥३२॥

भोजने मिष्टभोजी च जनने सबले कुजे।
नीचकर्मकरो नित्यं मनुजो मानवर्जितः ॥३३॥

अन्वयः—(यदि) जनने सबले कुजे भोजने (तदा) मनुजः मिष्टभोजी, नित्यं नीचकर्मकरः (तथा) मानवर्जितः (स्यात्) ॥३३॥

जन्मकाल में भौम यदि भोजनावस्था में हो तो जातक मिष्ठान्न में रुचि रखने वाला, नीचकर्मा और मान-सम्मानहीन होता है ॥३३॥

नृत्यलिप्सागते भूसुते जन्मिनामिन्दिराराशिरायाति भूमीपतेः।
स्वर्णरत्नप्रवालैः सदा मण्डिता वासशाला विशाला नराणां भवेत् ॥३४॥

अन्वयः—जन्मिनां भूसुते नृत्यलिप्सागते (तदा) नराणां भूमिपतेः इन्दिराराशिः आयाति, सदा स्वर्णरत्नप्रवालैः मण्डिता (तथा) विशाला वासशाला भवेत् ॥३४॥

जन्मकालिक भौम यदि नृत्यलिप्सावस्था में हो तो जातक को राजा से धन, स्वर्ण, प्रवाल आदि रत्नों से सुशोभित विशाल भवन का लाभ होता है ॥३४॥

कौतुकी भवति कौतुके कुजे मित्रपुत्रपरिपूरितो जनः।
उच्चगे नृपतिगेहपण्डितो मण्डितो बुधवरैर्गुणाकरैः ॥३५॥

अन्वयः—(यदि) कुजे कौतुके भवति (तदा) जनः कौतुकी, मित्रपुत्रपरिपूरितः (यदि) उच्चगे (तदा) नृपतिगेहपण्डितः बुधवरैः गुणाकरैः मण्डितः भवति ॥३५॥

जिसके जन्माङ्ग का भौम कौतुक अवस्था में हो, तो पुत्र-मित्रादि से युक्त व्यक्ति खेल-तमाशा आदि से जीवन-यापन करता है। यदि उच्चस्थ भौम कौतुकावस्था में हो, तो वह श्रेष्ठ पण्डितों से युक्त राजपण्डित होता है ॥३५॥

निद्रावस्थागते भौमे क्रोधी धीधनवर्जितः।
धूर्तो धर्मपरिभ्रष्टो मनुष्यो गदपीडितः ॥३६॥

अन्वयः—(यदि) भौमे निद्रावस्थागते (तदा) मनुष्यः क्रोधी, धीधनवर्जितः धूर्तः धर्मपरिभ्रष्टः (तथा) गदपीडितः (भवति) ॥३६॥

जिस व्यक्ति के जन्माङ्ग का मंगल निद्रावस्था में हो, वह धन और बुद्धि से हीन, क्रोधी, धूर्त, धर्मच्युत एवं रोगार्त्त होता है ॥३६॥

बुध अवस्था-फल

क्षुधातुरो भवेदङ्गे खञ्जो गुञ्जानिभेक्षणः।
जन्मभे लम्पटो धूर्त्तो मनुजः शयने बुधे ॥३७॥

अन्वयः—(यदि) बुधे शयने अङ्गे भवेत् (तदा) मनुजः क्षुधातुरः, खञ्जः गुञ्जानिभेक्षणः (यदि) अन्यभे (तदा) लम्पटः धूर्तः (स्यात्) ॥३७॥

लग्नस्थ बुध यदि शयनावस्था में हो तो जातक सदैव क्षुधा से पीड़ित एवं पैर से अपङ्ग होता है तथा उसके नेत्र गुंजा के समान रक्ताभ होते हैं। उसी अवस्था में यदि बुध लग्नेतर भावों में स्थित हो, तो जातक लम्पट और धूर्त होता है ॥३७॥

शशाङ्कपुत्रे जनुरङ्गगेहे यदोपवेशे गुणराशिपूर्णः ।
पापेक्षिते पापयुते दरिद्रो हितोच्चभे वित्तसुखी मनुष्यः ॥३८॥

अन्वयः—यदा जनुः शशाङ्कपुत्रे उपवेशे अङ्गगेहे (भवति तदा) मनुष्यः गुणराशिपूर्णः यदा पापेक्षिते पापयुते (तदा) दरिद्रः, हितोच्चभे वित्तसुखी (स्यात्) ॥३८॥

उपवेशनावस्था में बुध यदि लग्नस्थ हो तो जातक अनेक गुणों से परिपूर्ण होता है। उक्त बुध यदि पापग्रहों से युत या दृष्ट हो तो जातक निर्धन और दरिद्र होता है। यदि मित्र राशि या अपनी उच्च राशिगत हो तो धन-धान्य से सुखी होता है ॥३८॥

विद्याविवेकरहितो हिततोषहीनो मानी जनो भवति चन्द्रसुतेऽक्षिपाणौ ।
पुत्रालये सुतकलत्रसुखेन हीनः कन्याप्रजो नृपतिगेहबुधो वरार्यः ॥३९॥

अन्वयः—(यदि) चन्द्रसुते अक्षिपाणौ भवति (तदा) जनः विद्याविवेकरहितः, हिततोषहीनः मानी (यदा) पुत्रालये (तदा) सुतकलत्रसुखेन हीनः, कन्याप्रजः नृपतिगेहबुधः वरार्यश्च ॥३९॥

यदि जन्माङ्ग में बुध नेत्रपाणि अवस्था में हो तो जातक विद्या और विवेक से हीन, परोपकार से सन्तुष्ट न होने वाला एवं मिथ्याभिमानी होता है। उक्त अवस्था का बुध यदि पञ्चम भाव में स्थित हो तो जातक स्त्री और पुत्रसुख से हीन होता है तथा उसको कन्याएँ अधिक होती हैं, साथ ही वह राजगुरु अथवा राजपण्डित होता है ॥३९॥

दाता दयालुः खलु पुण्यकर्त्ता विकासने चन्द्रसुते मनुष्यः ।
अनेकविद्यार्णवपारगन्ता विवेकपूर्णः खलगर्वहन्ता ॥४०॥

अन्वयः—(यदा) चन्द्रसुते विकासने (तदा) मनुष्यः दाता, दयालुः, खलु पुण्यकर्त्ता, अनेकविद्यार्णवपारगन्ता, विवेकपूर्णः खलगर्वहन्ता (च भवति) ॥४०॥

जन्माङ्गस्थ बुध यदि प्रकाशावस्था में हो, तो जातक महादानी, दयालु, पुण्यकर्त्ता, अनेक विद्याओं में पारङ्गत, विवेकी और दुष्टों का विनाशक होता है ॥४०॥

गमनागमने भवतो गमने बहुधा वसुधा वसुधाधिपतेः ।
भवनं च विचित्रमलं रमया विदि नुश्च जनुःसमये नितराम् ॥४१॥

अन्वयः—जनुःसमये विदि गमने (तदा) नुः गमनागमने भवतः वसुधाधिपतेः बहुधा वसुधा, नितरां विचित्रं भवनं च (तथा) रमया अलं (भवति) ॥४१॥

यदि जन्माङ्गस्थ बुध गमनागमन अवस्था में हो तो जातक को प्रायः विदेशयात्राएँ करनी होती हैं। उसे राजा से अनेकशः भूसम्पत्ति, सज्जा और लक्ष्मी से युक्त सुन्दर भवन का लाभ होता है ॥४१॥

संपदि विदि जनानामुच्चभे जन्मकाले
सदसि धनसमृद्धिः सर्वदा पुण्यवृद्धिः ।
धनपतिसमता वा भूपतिमन्त्रिता वा
हरिहरपदभक्तिः सात्त्विकी मुक्तिरद्धा ॥४२॥

अन्वयः—(यदि) जन्मकाले विदि उच्चभे सदसि (तदा) जनानां सपदि धनसमृद्धिः, सर्वदा पुण्यवृद्धिः धनपतिसमता वा भूपतिमन्त्रिता वा, हरिहरपदभक्तिः, सात्त्विकी मुक्तिरद्धा (भवति) ॥४२॥

जन्मकालिक बुध यदि सभावस्था में उच्च राशिगत हो तो जातक के धन की द्रुतगति से वृद्धि होती है तथा उसकी गणना श्रेष्ठ धनिकों में होने लगती है अथवा वह राजमन्त्री होता है। अन्त में उसे भगवान् शङ्कर की भक्ति और आराधना से मोक्ष की प्राप्ति होती है ॥४२॥

आगमे जनुषि जन्मिनां यदा चन्द्रजे भवति हीनसेवया ।
अर्थसिद्धिरपि पुत्रयुग्मता बालिका भवति मानदायिका ॥४३॥

अन्वयः—जनुषि यदा चन्द्रजे आगमे भवति (तदा) जन्मिनां हीनसेवया अर्थसिद्धिः, अपि पुत्रयुग्मता (तथा) मानदायिका बालिका भवति ॥४३॥

जन्मकालिक बुध यदि आगमावस्था में हो तो जातक हीन व्यक्तियों की सेवाओं से जीविकोपार्जन करता है। उसे दो पुत्र और एक कुल को प्रतिष्ठा प्रदान करने वाली कन्या का सुख प्राप्त होता है ॥४३॥

भोजने चन्द्रजे जन्मकाले यदा जन्मिनामर्थहानिः सदा वादतः ।
राजभीत्या कृशत्वं चलत्वं मतेरङ्गसङ्गो न जाया न मायासुखम् ॥४४॥

अन्वयः—यदा जन्मकाले चन्द्रजे भोजने (तदा) जन्मिनां सदा वादतः अर्थहानिः राजभीत्या कृशत्वं, चलत्वं, मतेरङ्गसङ्गः न जाया न मायासुखं (भवति) ॥४४॥

जन्मकालिक बुध यदि भोजनावस्था में हो तो विवाद से जातक के धन की हानि होती है। राजभय से कृशता होती है, जातक में बौद्धिक स्थिरता का अभाव होता है तथा वह स्त्री और धन से हीन होता है ॥४४॥

नृत्यलिप्सागते चन्द्रजे मानवो मानयानप्रवालव्रजैः संयुतः ।
मित्रपुत्रप्रतापैः सभापण्डितः पापभे वारवामारतौ लम्पटः ॥४५॥

अन्वयः—(यदा) चन्द्रजे नृत्यलिप्सागते (तदा) मानवः मानयानप्रवालव्रजैः मित्रपुत्रप्रतापैः संयुतः, सभापण्डितः। (यदि) पापभे (तदा) वारवामारतौ लम्पटः ॥४५॥

जन्माङ्ग में बुध यदि नृत्यलिप्सा अवस्था में हो तो जातक धन, वाहन, सम्मान, मूंगा, हीरा आदि रत्नों एवं मित्र और पुत्रों से सुखी राजपण्डित होता है। यदि उक्त बुध पाप ग्रह का राशिगत हो तो जातक वेश्याभोगी और लम्पट होता है ॥४५॥

कौतुके चन्द्रजे जन्मकाले नृणामङ्गभे गीतविद्यानवद्या भवेत् ।
सप्तमे नैधने वारवध्वा रतिः पुण्यभे पुण्ययुक्ता जनिः सद्गतिः ॥४६॥

अन्वयः—जन्मकाले चन्द्रजे अङ्गभे कौतुके (तदा) नृणां गीतविद्यानवद्या भवेत्, सप्तमे नैधने वारवध्वा रतिः, पुण्यभे जनिः पुण्ययुक्ता (ततः) सद्गतिः (भवति) ॥४६॥

यदि जन्माङ्ग में कौतुकावस्था का बुध लग्नस्थ हो तो जातक संगीत में पारंगत होता है। यदि सप्तम या अष्टम भावों में उक्त अवस्था का बुध स्थित हो तो जातक वेश्यागामी होता है। उक्त बुध यदि नवम भावस्थ हो तो जातक पुण्यात्मा होता है और मृत्यु के उपरान्त सद्गति प्राप्त करता है ॥४६॥

निद्राश्रिते चन्द्रसुते न निद्रासुखं सदा व्याधिसमाधियोगः ।
सहोत्थवैकल्यमनल्पतापो निजेन वादो धनमाननाशः ॥४७॥

अन्वयः—चन्द्रसुते निद्राश्रिते न निद्रासुखं, सदा व्याधिसमाधियोगः, सहोत्थवैकल्यमनल्पतापः, निजेन वादः (तथा) धनमाननाशः (स्यात्) ॥४७॥

जन्मकालिक बुध यदि निद्रावस्था में हो तो जातक निद्रासुख से वञ्चित होता है। वह सदैव आधि-व्याधि से व्याकुल रहता है, बन्धु-वान्धवों से विरोध या विवाद के कारण मानसिक सन्ताप से ग्रस्त होता है तथा पारिवारिक कलह से उसके धन-सम्मानादि की क्षति होती है ॥४७॥

बृहस्पति अवस्था-फल

वचसामधिपे तु जनुःसमये शयने बलवानपि हीनरवः ।
अतिगौरतनुः खलु दीर्घहनुः सुतरामरिभीतियुतो मनुजः ॥४८॥

अन्वयः—(यदि) जनुःसमये वचसाम् अधिपे शयने (तदा) मनुजः बलवानपि हीनरवः अतिगौरतनुः खलु दीर्घहनुः तु सुतराम् अरिभीतियुतः (भवति) ॥४८॥

जन्म के समय यदि बृहस्पति शयनावस्था में हो तो जातक बलवान होता है, किन्तु उसकी वाणी दुर्बल होती है। उसका शरीर अत्यन्त गौर वर्ण और ठोढ़ी किंचिद् बड़ी होती है। वह सदैव शत्रुभय से पीड़ित रहता है ॥४८॥

उपवेशं यदि गतवति जीवे वाचालो बहुगर्वपरीतः ।
क्षोणीपतिरिपुजनपरितप्तः पदजङ्घास्यकरव्रणयुक्तः ॥४९॥

अन्वयः—यदि जीवे उपवेशं गतवति (तदा नरः) वाचालः बहुगर्वपरीतः क्षोणीपतिरिपुजनपरितप्तः पदजंघास्यकरव्रणयुक्तः (स्यात्) ॥४९॥

यदि जन्माङ्ग का बृहस्पति उपवेशनावस्था में हो तो जातक वाचाल एवं घमण्डी होता है तथा राजभय और शत्रुभय से सन्तप्त रहता है। वह पैर, जंघा, आनन और हाथ में व्रणादि से पीड़ित होता है ॥४९॥

नेत्रपाणौ गते देवराजार्चिते रोगयुक्तो वियुक्तो वरार्थश्रिया।
गीतनृत्यप्रियः कामुकः सर्वदा गौरवर्णो विवर्णोद्भवप्रीतियुक् ॥५०॥

अन्वयः—देवराजार्चिते नेत्रपाणौ गते (तदा नरः) रोगयुक्तः, वरार्थश्रिया वियुक्तः गीतनृत्यप्रियः, कामुकः, सर्वदा गौरवर्णः, विवर्णोद्भवप्रीतियुक् (भवति) ॥५०॥

जन्मकालिक बृहस्पति यदि नेत्रपाणि नामक अवस्था में हो तो जातक उत्तम धन और कान्ति से हीन, संगीत और नृत्य आदि का प्रेमी, अति कामुक, गौर गात्र और विजातियों से प्रीति रखने वाला होता है ॥५०॥

गुणानामानन्दं विमलसुखकन्दं वितनुते
तदा तेजःपुञ्जं व्रजपतिनिकुञ्जं प्रतिगमम्।
प्रकाशं चेदुच्चैर्द्रुतमुपगतो वासवगुरु-
र्गुरुत्वं लोकानां धनपतिसमत्वं तनुभृताम् ॥५१॥

अन्वयः—चेत् वासवगुरुः प्रकाशं (गतस्तदा) तनुभृतां गुणानाम् आनन्दं विमलसुखकन्दं वितनुते, सदा तेजःपुञ्जं, व्रजपतिनिकुञ्जं प्रतिगमं उच्चैः द्रुतमुपगतः लोकानां गुरुत्वं (तदा) धनपतिसमत्वं (कृतम्) ॥५१॥

जिसके जन्माङ्ग में बृहस्पति यदि उच्च राशि का होकर प्रकाशावस्था में हो तो जातक अपने गुणों से आनन्दित होता है और सुख प्राप्त करता है। वह तेजयुक्त होकर कृष्ण के समान वनों-उपवनों में विहार करता है। लोक में उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर कुवेर के समान धनपति होता है ॥५१॥

साहसी भवति मानवः सदा मित्रपुत्रसुखपूरितो मुदा।
पण्डितो विविधवित्तमण्डितो वेदविद्यदि गुरौ गमं गते ॥५२॥

अन्वयः—यदि गुरौ गमं गते (तदा) मानवः साहसी, सदा मित्रपुत्रसुखपूरितः मुदा पण्डितः, विविधवित्तमण्डितः (तथा) वेदविद् भवति ॥५२॥

जन्मकालिक बृहस्पति यदि गमनावस्था में हो तो जातक साहसी होता है, साथ ही मित्र और सन्तति सुख से युक्त प्रसन्नचित्त होता है। वह विद्वान्, वेद का ज्ञाता और अनेकशः धन-धान्य से सम्पन्न होता है ॥५२॥

आगमने जनतावरजाया यस्य जनुःसमये हरिमाया।
मुञ्चति नालमिहालयमद्धा देवगुरौ परितः परिबद्धा ॥५३॥

अन्वयः—यस्य जनुःसमये देवगुरौ आगमने (तदा) जनतावरजाया, हरिमाया (लक्ष्मी) इह आलयम् अद्धा अलं न मुञ्चति (अर्थात्) परितः परिबद्धा (भवति) ॥५३॥

जिसके जन्मकाल में बृहस्पति आगमनावस्था में हो वह अनेक व्यक्तियों से सेवित और सुन्दर, सुयोग्य पत्नी का पति होता है। पूर्वजन्मकृत सत्कर्मों से आबद्ध होकर लक्ष्मी सदैव उसके गृह में निवास करती है ॥५३॥

सुरगुरुसमवक्ता शुभ्रमुक्ताफलाढ्यः
सदसि सपदि पूर्णो वित्तमाणिक्ययानैः ।
गजतुरगरथाढ्यो देवताधीशपूज्ये
जनुषि विविधविद्यागर्वितो मानवः स्यात् ॥५४॥

अन्वयः—(यदि) जनुषि देवताधीशपूज्ये सदसि (तदा) मानवः सुरगुरुसमवक्ता, शुभ्रमुक्ताफलाढ्यः, सपदि वित्तमाणिक्ययानैः पूर्णः, गंजतुरगरथाढ्यः (तथा) विविध-विद्यागर्वितः स्यात् ॥५४॥

यदि जन्माङ्ग में बृहस्पति सभावस्था में हो, तो जातक बृहस्पति के समान कुशल वक्ता, शुभ्र मोती-माणिक्यादि रत्न, धन, घोड़ा, हाथी और रथ से युक्त होता है तथा अनेक विद्याओं में पारङ्गत होता है ॥५४॥

नानावाहनमानयानपटलीसौख्यं गुरावागमे
भृत्यापत्यकलत्रमित्रजसुखं विद्यानवद्या भवेत् ।
क्षोणीपालसमानतानवरतं चातीवहृद्या मतिः
काव्यानन्दरतिः सदा हितगतिः सर्वत्र मानोन्नतिः ॥५५॥

अन्वयः—(यदा) गुरौ आगमे (तदा नरं) नानावाहनमानयानपटलीसौख्यं, भृत्यापत्यकलत्रमित्रजसुखं, विद्यानवद्या, क्षोणीपालसमानतानवरतं, अतीव हृद्या मतिः, च काव्यानन्दरतिः, सदा हितगतिः (तथा) सर्वत्र मानोन्नतिः भवेत् ॥५५॥

जन्माङ्ग में यदि बृहस्पति आगमावस्था में स्थित हो तो जातक अनेक वाहन, यान (पालकी)-समूह, सम्मानादि, अनेक भृत्यों, पुत्र, स्त्री और सद्मित्रों के सुख से सम्पन्न एवं अनेक विद्याओं से युक्त होता है। वह राजा से समानता करने वाला, सुन्दर कुशाग्र बुद्धि से युक्त, काव्य रस में निमग्न रहने वाला, सदैव हितकर गति वाला एवं सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है ॥५५॥

भोजने भवति देवता गुरौ यस्य तस्य सततं सुभोजनम् ।
नैव मुञ्चति रमालयं तदा वाजिवारणरथैश्च मण्डितम् ॥५६॥

अन्वयः—यस्य देवतागुरौ भोजने भवति तदा तस्य सततं सुभोजनम् रमा आलयं नैव मुञ्चति, वाजिवारणरथैश्च मण्डितं (भवति) ॥५६॥.

जन्माङ्गस्थ बृहस्पति यदि भोजनावस्था में हो तो जातक नित्य सुन्दर व्यञ्जनों का भोग करता है। वह रथ, हाथी, घोड़े आदि से सुशोभित रहता है तथा लक्ष्मी उसके गृह में सदैव विराजती हैं ॥५६॥

नृत्यलिप्सागते राजमानी धनी देवताधीशवन्द्ये सदा धर्मवित् ।
तन्त्रविज्ञो बुधैर्मण्डितः पण्डितः शब्दविद्यानवद्यो हि सद्यो जनः ॥५७॥

अन्वयः—(यदा) देवताधीशवन्द्ये नृत्यलिप्सागते (तदा) जनः राजमानी, धनी,

सदा धर्मवित्, तन्त्रविज्ञः, बुधैः मण्डितः, पण्डितः, हि, सद्यः शब्दविद्यानवद्यः भवति ॥५७॥

जन्माङ्ग का बृहस्पति यदि नृत्यलिप्सा अवस्था में हो तो जातक राजा के समान सम्मान प्राप्त करने वाला, धनवान और धर्म को जानने वाला, तन्त्र-विद्याविशारद, विद्वत्समूह से सुशोभित एवं स्वयं शब्दविद्या (व्याकरण) का विद्वान् होता है ॥५७॥

कुतूहली सकौतुके महाधनी जनः सदा
निजान्वयाब्जभास्करः कृपाकलाधरः सुखी ।
निलिम्पराजपूजिते सुतेन भूनयेन वा
युतो महाबली धराधिपेन्द्रसद्मपण्डितः ॥५८॥

अन्वयः—(यदि) निलिम्पराजपूजिते स कौतुके (तदा) जनः कुतूहली, महाधनी, निजान्वयाब्जभास्करः, कृपाकलाधरः, सदा सुखी, सुतेन भूनयेन वा युतः, महाबली, धराधिपेन्द्रसद्मपण्डितः भवति ॥५८॥

जन्मकालिक बृहस्पति यदि कौतुकावस्था में हो तो जातक कौतुक अर्थात् खेल-तमाशे आदि से जीविकोपार्जन करने वाला, महाधनी, अपने कुल में सूर्य के समान, अत्यन्त कृपालु और सुनीति, सन्तान-भूसम्पदादि से संयुक्त, विनम्र, महाबली एवं राजकुल का पण्डित होता है ॥५८॥

गुरौ निद्रागते यस्य मूर्खता सर्वकर्मणि ।
दरिद्रतापरिक्रान्तं भवनं पुण्यवर्जितम् ॥५९॥

अन्वयः—यस्य गुरौ निद्रागते (तदा) सर्वकर्मणि मूर्खता, दरिद्रता परिक्रान्तं तथा भवनं पुण्यवर्जितं (भवति) ॥५९॥

जिसके जन्माङ्ग में बृहस्पति निद्रावस्था में हो, वह सभी कार्यों में मूर्ख, दरिद्रता से आक्रान्त और पुण्यकर्म से हीन होता है ॥५९॥

शुक्र अवस्था-फल

जनो बलीयानपि दन्तरोगी भृगौ महारोषसमन्वितः स्यात् ।
धनेन हीनः शयनं प्रयाते वाराङ्गनासङ्गमलम्पटश्च ॥६०॥

अन्वयः—(यस्य) भृगौ शयनं प्रयाते (तदा) जनः बलीयानपि दन्तरोगी, महारोषसमन्वितः, धनेन हीनः, वाराङ्गनासङ्गम् अलम्पटश्च स्यात् ॥६०॥

यदि जन्माङ्गस्थ शुक्र शयनावस्था में हो तो जातक बलवान, किन्तु दन्तरोगी होता है। वह उग्र स्वभाव का, धनहीन, वेश्यागामी तथा लम्पट होता है ॥६०॥

यदि भवेदुशना उपवेशने नवमणिवज्रकाञ्चनभूषणैः ।
सुखमजस्त्रमरिक्षय आदरादवनिपादपि मानसमुन्नतिः ॥६१॥

अन्वयः—यदि उशना उपवेशने भवेत् (तदा) नवमणिवज्रकाञ्चनभूषणैः अजस्रं सुखं, अरिक्षयः आदरात् अवनिपात् अपि मानसमुन्नतिः (भवति) ॥६१॥

जन्मकालिक शुक्र यदि उपवेशनावस्था में हो तो जातक नूतन मणि, हीरा, स्वर्णाभूषणादि से सम्पन्न, नित्य सुखी एवं शत्रुञ्जयी होता है। राजा से सम्मान प्राप्त होने से उसकी प्रतिष्ठा में निरन्तर वृद्धि होती है ॥६१॥

नेत्रपाणिगते लग्नगेहे कवौ सप्तमे मानभे यस्य तस्य ध्रुवम्।
नेत्रपातो धनानामलं चान्यभे वासशाला विशाला भवेत् सर्वदा ॥६२॥

अन्वयः—यस्य कवौ नेत्रपाणिगते लग्नगेहे, सप्तमे (वा) मानभे (भवेत् तदा) तस्य ध्रुवं नेत्रपातः धनानाम् अलं (निपातश्च), अन्यभे (तदा) सर्वदा विशाला वासशाला भवेत् ॥३॥

जिसके जन्माङ्ग में शुक्र नेत्रपाणि अवस्था का होकर लग्न, सप्तम अथवा दशम भाव में स्थित हो तो उसके नेत्र नष्ट हो जाते हैं। यदि उक्त शुक्र अन्य भावों में स्थित हो तो वह विशाल गृह में निवास करता है ॥६२॥

स्वालये तुङ्गभे मित्रभे भार्गवे तुङ्गमातङ्गलीलाकलापी जनः।
भूपतेस्तुल्य एवं प्रकाशं गते काव्यविद्याकलाकौतुकी गीतवित् ॥६३॥

अन्वयः—भार्गवे स्वालये, तुङ्गभे, मित्रभे प्रकाशं गते (तदा) जनः तुङ्गमातङ्गलीलाकलापी, एवं भूपतेः तुल्यः काव्यविद्याकलाकौतुकी (तथा) गीतवित् (भवति) ॥६३॥

जन्माङ्गस्थ शुक्र यदि स्वगृही, स्वोच्च राशि अथवा मित्र राशिगत होकर प्रकाशावस्था में हो तो जातक उन्मत्त हाथियों के खेल से नित्य आनन्दित होता है तथा राजा के समान ऐश्वर्य से युक्त, काव्यशास्त्र से विनोद करने वाला एवं सङ्गीत-मर्मज्ञ होता है ॥६३॥

गमने जनने शुक्रे तस्य माता न जीवति।
अधियोगो वियोगश्च जनानामरिभीतितः ॥६४॥

अन्वयः—(यस्य) जनने शुक्रे गमने तस्य माता न जीवति, अरिभीतितः जनानां अधियोगः वियोगश्च भवति ॥६४॥

जन्मकालिक शुक्र यदि गमनावस्था का हो तो जातक की माता के लिए अरिष्टकारक होता है। शत्रुभय से जातक त्रस्त रहता है तथा वह निरन्तर स्थानपरिवर्तन करता रहता है ॥६४॥

आगमनं भृगुपुत्रे गतवति वित्तेश्वरो मनुजः।
स तु तीर्थभ्रमशाली नित्योत्साही करांघ्रिरोगी च ॥६५॥

अन्वयः—(यदा) भृगुपुत्रे आगमनं गतवति (तदा) मनुजः वित्तेश्वरः स तु तीर्थभ्रमणशाली, नित्योत्साही करांघ्रिरोगी च (भवति) ॥६५॥

जन्मकालिक शुक्र यदि आगमनावस्था में हो तो जातक धनवान, तीर्थस्थलों में यात्रा करने वाला, उत्साह से भरपूर तथा हाथ और पैरों से रोगी होता है ॥६५॥

अनायासेनालं सपदि महसा याति सहसा
प्रगल्भत्वं राज्ञः सदसि गुणविज्ञः किल कवौ ।
सभायामायाते रिपुनिवहहन्ता धनपतेः
समत्वं वा दन्तावलतुरगगन्ता नरवरः ॥६६॥

अन्वयः—(यदि) कवौ सभायाम् आयाते (तदा नरः) अनायासेन अलं सहसा प्रगल्भत्वं राज्ञः सदसि याति गुणविज्ञः, किल रिपुनिवहहन्ता, धनपतेः समत्वं वा दन्तावलतुरगगन्ता नरवरः (भवति) ॥६६॥

जन्माङ्गस्थ शुक्र यदि सभावस्था में हो तो जातक विना प्रयास के अनायास ही राजसभा में अपने चातुर्य का प्रदर्शन कर सम्मान प्राप्त करता है। वह गुणवान, शत्रु-हन्ता, कुवेर के समान धनिक, हाथी-घोड़े आदि पर चलने वाला तथा महाधनी होता है।

आगमे भार्गवे नागमो जन्मिनामर्थराशेररातेरतीवक्षतिः ।
पुत्रपातो निपातो जनानामपि व्याधिभीतिः प्रियाभोगहानिर्भवेत् ॥६७॥

अन्वयः—(यदा) भार्गवे आगमे (तदा) जन्मिनां नागमः, अरातेः अर्थराशेः अतीवक्षतिः, पुत्रपातः, जनानामपि निपातः, व्याधिभीतिः (तथा) प्रियाभोगहानिः भवेत् ॥६७॥

जन्मकालिक शुक्र यदि आगमावस्था में हो तो जातक के धनागम के स्रोत अवरुद्ध हो जाते हैं। उसे शत्रुओं से धन की हानि, सन्तान और प्रियजनों की क्षति होती है; साथ ही उसे रोगभय तथा स्त्रीभोग में भी बाधा उपस्थित होती है ॥६७॥

क्षुधातुरो व्याधिनिपीडितः स्यादनेकधारातिभयार्दितश्च ।
कवौ यदा भोजनगे युवत्या महाधनी पण्डितमण्डितश्च ॥६८॥

अन्वयः—यदा कवौ भोजनगे (तदा नरः) क्षुधातुरः व्याधिनिपीडितः अनेकधा अरातिभयार्दितः युवत्या महाधनी (तथा) पण्डितमण्डितश्च स्यात् ॥६८॥

जन्माङ्ग में शुक्र यदि भोजनावस्था में हो तो जातक नित्य क्षुधार्त्त, अनेक व्याधियों से पीड़ित, शत्रुभय से आक्रान्त, स्त्रीधन से धनी और विद्वानों की गोष्ठियों में निरत रहने वाला होता है ॥६८॥

काव्यविद्यानवद्या न हृद्या मतिः सर्वदा नृत्यलिप्सां गते भार्गवे ।
शङ्खवीणामृदङ्गादिगानध्वनिव्रातनैपुण्यमेतस्य वित्तोन्नतिः ॥६९॥

अन्वयः—(यदि) भार्गवे नृत्यलिप्सां गते (तदा) काव्यविद्यानवद्या सर्वदा च हृद्या मतिः, शंखवीणामृदङ्गादिगानध्वनिव्रातनैपुण्यं (तथा) एतस्य वित्तोन्नतिः (भवति) ॥६९॥

यदि जन्मकालिक शुक्र नृत्यलिप्सावस्थागत हो तो जातक नित नूतन विद्यानुरागी, सुन्दर बुद्धि से सम्पन्न, शङ्ख, वीणा, मृदङ्गादि वाद्ययन्त्रों का साधक होता है तथा उसके धन की निरन्तर वृद्धि होती है ।।६९।।

कौतुकभवनं गतवति शुक्रे शक्रेशत्वं सदसि महत्त्वम् ।
हृद्या विद्या भवति च पुंसः पद्मा निवसति पद्मोदरतः ।।७०।।

अन्वयः—यदि शुक्रे कौतुकभवनं गतवति तदा पुंसः शक्रेशत्वं सदसि महत्त्वं, हृद्या च भवति तथा पद्मोदरतः (त्यक्त्वा) पद्मा (तस्य गृहे) निवसति ।।७०।।

जन्माङ्गस्थ शुक्र यदि कौतुकावस्था में हो तो जातक सभा में इन्द्र के समान आदर प्राप्त करता है । विद्या उसके हृदयस्थ होती है एवं पद्मासन का परित्याग कर लक्ष्मी उसके घर में निवास करती है ।।७०।।

परसेवारतो नित्यं निद्रामुपगते कवौ ।
परनिन्दापरो वीरो वाचालो भ्रमते महीम् ।।७१।।

अन्वयः—कवौ निद्राम् उपगते (तदा नरः) परसेवारतः परनिन्दापरः वीरः वाचालः, (तथा) महीं भ्रमते ।।७१।।

यदि जन्मकालिक शुक्र निद्रावस्था में हो तो जातक परसेवारत, परनिन्दक, वाचाल और यायावर होता है ।।७१।।

शनि अवस्था-फल

क्षुत्पिपासापरिक्रान्तो विश्रान्तः शयने शनौ ।
वयसि प्रथमे रोगी ततो भाग्यवतां वरः ।।७२।।

अन्वयः—यदा शनौ शयने (तदा नरः) क्षुत्पिपासापरिक्रान्तः, विश्रान्तः, प्रथमे वयसि रोगी, ततः भाग्यवतां वरः (भवति) ।।७२।।

शयनावस्था का शनि यदि जन्माङ्गस्थ हो तो जातक प्रारम्भ में नित्य भूख और प्यास से व्याकुल, थका-हारा, रोगार्त्त एवं विकल होता है । प्रारम्भिक अवस्था के बाद उसके सुन्दर भाग्य का उदय होता है ।।७२।।

भानोः सुते चेदुपवेशनस्थे करालकारातिजनानुतप्तः ।
अपायशाली खलु दद्रुमाली नरोऽभिमानी नृपदण्डयुक्तः ।।७३।।

अन्वयः—चेत् भानुः सुते उपवेशनस्थे (तदा) नरः करालकारातिजनानुतप्तः, अपायशाली, खलु दद्रुमाली, अभिमानी तथा नृपदण्डयुक्तः भवति ।।७३।।

जन्माङ्ग में यदि सूर्यपुत्र (शनि) उपवेशनावस्था में हो तो जातक भयंकर शत्रुओं से निपीडित रहता है । उसके धन का नाश होता है तथा वह दद्रु, कण्डू जैसी व्याधियों से सन्तप्त रहता है ।।७३।।

नयनपाणिगते रविनन्दने परमया रमया परया युतः।
नृपतितो हिततो मतितोषकृद् बहुकलाकलितो विमलोक्तिकृत् ॥७४॥

अन्वयः—(यदा) रविनन्दने नयनपाणिगते (तदा नरः) परया रमया परमया युतः, नृपतितः हिततः मतितोषकृद् बहुकलाकलितः विमलोक्तिकृत् (भवति) ॥७४॥

जन्माङ्गस्थ शनि यदि नेत्रपाणि अवस्था में हो तो जातक पराये धन से धनवान होता है। राजा की कृपा से तथा स्वजनों से उसे मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होती है। साथ ही जातक अनेक कलाओं में निष्णात होता है ॥७४॥

नानागुणग्रामधनाधिशाली सदा नरो बुद्धिविनोदमाली।
प्रकाशने भानुसुते सुभानुः कृपानुरक्तो हरपादभक्तः ॥७५॥

अन्वयः—(यदा) भानुसुते प्रकाशने (तदा) नरः नानागुणग्रामधनाधिशाली, सदा बुद्धिविनोदमाली, सुभानुः, कृपानुरक्तः तथा हरपादभक्तः (स्यात्) ॥७५॥

यदि जन्मकालिक शनि प्रकाशावस्था में हो तो जातक गुणवान, ग्राम-धन-वैभवादि से सम्पन्न, बौद्धिक विनोदरती, दिव्य कान्तिमान शरीर से सम्पन्न, अति कृपालु और भगवान् शङ्कर का भक्त होता है ॥७५॥

महाधनी नन्दननन्दितः स्यादपापकारी रिपुभूमिहारी।
गमे शनौ पण्डितराजभावं धरापतेरायतने प्रयाति ॥७६॥

अन्वयः—(यदि) शनौ गमे (तदा नरः) महाधनी, नन्दननन्दितः अपापकारी, रिपुभूमिहारी स्यात्, पण्डितराजभावं धरापतेः आयतने प्रयाति ॥७६॥

यदि गमनावस्थागत शनि जन्माङ्गस्थ हो तो जातक महाधनी, सन्तानादि से सुखी, पुण्यात्मा, शत्रुओं की भूमि का हरण करने वाला, अपने गुणों से पण्डितराज पद प्राप्तकर्त्ता एवं राजसभा में समादरित होता है ॥७६॥

आगमने पदगदभययुक्तः पुत्रकलत्रसुखेन विमुक्तः।
भानुसुते भ्रमते भुवि नित्यं दीनमना विजनाश्रयभावम् ॥७७॥

अन्वयः—(यदि) भानुसुते आगमने (तदा नरः) पदगदभययुक्तः पुत्रकलत्रसुखेन विमुक्तः (तथा) नित्यं दीनमना विजनाश्रयभावं भुवि भ्रमते ॥७७॥

आगमनावस्था का शनि यदि जन्माङ्ग में स्थित हो तो जातक पैर से रोगी, भयाक्रान्त, स्त्री-पुत्रादि के सुख से हीन एवं दीन-हीन हो पृथ्वी पर निर्जन स्थानों में भ्रमण करता है ॥७७॥

रत्नावलीकाञ्चनमौक्तिकानां व्रातेन नित्यं व्रजति प्रमोदम्।
सभागते भानुसुते नितान्तं नयेन पूर्णो मनुजो महौजाः ॥७८॥

अन्वयः—(यदा) भानुसुते सभागते (तदा) मनुजः रत्नावलीकाञ्चनमौक्तिकानां व्रातेन नित्यं प्रमोदं व्रजति, नितान्तं नयेन पूर्णः (तथा) महौजाः (स्यात्) ॥७८॥

सभावस्थागत शनि यदि जन्माङ्ग के किसी भाव में स्थित हो तो जातक रत्नादि

से युक्त स्वर्णाभूषणों को धारण कर नित्य प्रसन्न होता है। अपने न्यायपूर्ण आचरण से वह अत्यन्त प्रभावशाली होता है ॥७८॥

आगमे गदसमागमो नृणामब्जबन्धुतनये यदा तदा।
मन्दमेव गमनं धरातले याचनाविरहिता मतिः सदा ॥७९॥

अन्वयः—यदा आगमे अब्जबन्धुतनये तदा नृणां गदसमागमः, गमनं मन्दमेव, (तथा) धरातले सदा याचनाविरहिता मतिः (भवति) ॥७९॥

यदि जन्माङ्गस्थ शनि आगमावस्था में हो तो जातक रोगी, मन्द गति वाला एवं किसी से याचना करने से विरत रहने वाला होता है ॥७९॥

सङ्गते जनुषि भानुनन्दने भोजने भवति भोजनं रसैः।
संयुतं नयनमन्दताऽज्ञता मोहतापपरितापिता मतिः ॥८०॥

अन्वयः—(यदि) जनुषि भानुनन्दने भोजने सङ्गते (तदा) रसैः संयुतं भोजनं भवति, नयनमन्दता, अज्ञता, मोहतापपरितापिता मतिः (च भवति) ॥८०॥

यदि जन्मकालिक शनि भोजनावस्था में हो तो जातक षड्रस का भोग करने वाला एवं नेत्ररोगी होता है तथा अज्ञानवश मोहज़ाल में फँस कर मानसिक रूप से सन्त्रस्त रहता है ॥८०॥

नृत्यलिप्सागते मन्दे धर्मात्मा वित्तपूरितः।
राजपूज्यो नरो धीरो महावीरो रणाङ्गणे ॥८१॥

अन्वयः—(यदा) मन्दे नृत्यलिप्सागते (तदा) नरः धर्मात्मा, वित्तपूरितः राजपूज्यः धीरः (तथा) रणाङ्गणे महावीरः (स्यात्) ॥८१॥

यदि जन्माङ्गस्थ शनि नृत्यलिप्सावस्था में हो तो जातक धर्मात्मा, धनवान, राजपूजित तथा रणक्षेत्र में अत्यन्त धीर और महावीर होता है ॥८१॥

भवति कौतुकभावमुपागते रविसुते वसुधावसुपूरितः।
अतिसुखी सुमुखीसुखपूरितः कवितयाऽमलया कलया नरः ॥८२॥

अन्वयः—(यदा) रविसुते कौतुकभावमुपागते (तदा) नरः वसुधावसुपूरितः अतिसुखी, सुमुखीसुखपूरितः, (तथा) कवितया अमलया कलया भवति ॥८२॥

जन्माङ्गस्थ शनि यदि कौतुकावस्था में हो तो जातक धन और भूसम्पदा से पूर्ण, अत्यन्त सुखी, स्त्रीसुख से पूर्ण तथा काव्यकला में निष्णात होता है ॥८२॥

निद्रागते वासरनाथपुत्रे धनी सदा चारुगुणैरुपेतः।
पराक्रमी चण्डविपक्षहन्ता सुवारकान्तारतिरीतिविज्ञः ॥८३॥

अन्वयः—(यदा) वासरनाथपुत्रे निद्रागते (तदा नरः) सदा धनी चारुगुणैः उपेतः, पराक्रमी, चण्डविपक्षहन्ता, सुवारकान्तारतिरीतिविज्ञः (भवति) ॥८३॥

जन्मकालिक शनि यदि निद्रावस्थागत हो तो जातक सदा धनी, सद्‌गुणों से युक्त, पराक्रमी, प्रचण्ड शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला एवं वेश्याओं के साथ रमण कला में पटु होता है ॥८३॥

राहु अवस्था-फल

गदागमो जन्मनि यस्य राहौ क्लेशाधिकत्वं शयनं प्रयाते।
वृषेऽथ युग्मेऽपि च कन्यकायामजे समाजो धनधान्यराशेः ॥८४॥

अन्वयः—यस्य जन्मनि राहौ शयनं प्रयाते (तस्य) गदागमः, क्लेशाधिकत्वं, अथ वृषे युग्मेऽपि च कन्यकायाम् अजे प्रयाते (तदा) धनधान्यराशेः समाजः (स्यात्) ॥८४॥

जिसके जन्मकाल में राहु शयनावस्था में स्थित हो, वह जातक रोगादि से पीडित होकर कष्ट पाता है। किन्तु उक्त अवस्था का राहु यदि वृष, मिथुन, कन्या या मेष राशि में स्थित हो तो जातक धन-धान्यादि से सम्पन्न होता है ॥८४॥

उपवेशनमिह गतवति राहौ दद्रुगदेन जनः परितप्तः।
राजसमाजयुतो बहुमानी वित्तसुखेन सदा रहितः स्यात् ॥८५॥

अन्वयः—(यदि) राहौ उपवेशनम् इह गतवति (तदा) जनः दद्रुगदेन परितप्तः, राजसमाजयुतः बहुमानी (तथा) सदा वित्तसुखेन रहितः स्यात् ॥८५॥

जन्माङ्गस्थ राहु यदि उपवेशनावस्था में हो तो जातक अनेक व्याधियों से सन्त्रस्त, श्रेष्ठजनों की संगति में रहने वाला एवं निर्धन होता है ॥८५॥

नेत्रपाणावगौ नेत्रे भवतो रोगपीडिते।
दुष्टव्यालारिचौराणां भयं तस्य धनक्षयः ॥८६॥

अन्वयः—अगौ नेत्रपाणौ (तदा) तस्य नेत्रे रोगपीडिते भवतः, दुष्ट-व्याला-रि-चौराणां भयं (तथा) धनक्षयः (भवति) ॥८६॥

जिसके जन्मकाल में राहु नेत्रपाणि अवस्थागत हो, वह अनेक व्याधियों से पीड़ित होता है तथा दुष्टों, सर्प, शत्रु और चोर आदि से उसके धन का विनाश होता है ॥८६॥

प्रकाशने शुभासने स्थितिः कृतिः शुभा नृणां
धनोन्नतिर्गुणोन्नतिः सदा विदामगाविह।
धराधिपाधिकारिता यशोलता ततो भवे-
न्नवीननीरदाकृतिर्विदेशतो महोन्नतिः ॥८७॥

अन्वयः—(यदि) अगौ प्रकाशने (तदा) नृणां शुभासने स्थितिः, शुभाकृतिः धनोन्नतिः गुणोन्नतिः सदा विदां धराधिपाधिकारिता यशोलता, नवीननीरदाकृतिः, ततः विदेशतः महोन्नतिः भवेत् ॥८७॥

जिसके जन्माङ्ग में राहु प्रकाशावस्था में हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है। वह सत्कर्मकर्त्ता होता है तथा उसके धन और सद्गुणों की निरन्तर वृद्धि होती है। वह विज्ञजनों में श्रेष्ठ पण्डित होता है। राजा से उसे अनेकानेक सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। उसके शरीर की कान्ति नूतन मेघ के समान होती है ॥८७॥

गमने च यदा राहौ बहुसन्तानवान्नरः।
पण्डितो धनवान्दाता राजपूज्यो नरोत्तमः ॥८८॥

अन्वयः—(यदा) राहौ गमने (तदा) नरः बहुसन्तानवान्, पण्डितः, धनवान्, दाता, राज्यपूज्यः नरोत्तमश्च भवति ॥८८॥

गमनावस्था का राहु यदि जन्माङ्गस्थ हो तो जातक की बहुत सन्तानें होती हैं। वह विद्वान्, धनवान्, राजपूजित और पुरुषों में श्रेष्ठ होता है ॥८८॥

राहावागमने क्रोधी सदा धीधनवर्जितः।
कुटिलः कृपणः कामी नरो भवति सर्वथा ॥८९॥

अन्वयः—(यदि) राहौ आगमने (तदा) नरः क्रोधी, सदा धी-धनवर्जितः कुटिलः, कृपणः (तथा) सर्वथा कामी भवति ॥८९॥

यदि जन्मकालिक राहु आगमनावस्था में हो तो जातक क्रोधी, धन और बुद्धि से हीन, कुटिल, कृपण और कामातुर होता है ॥८९॥

सभागते यदा राहौ पण्डितः कृपणो नरः।
नानागुणपरिक्रान्तो वित्तसौख्यसमन्वितः ॥९०॥

अन्वयः—यदा राहौ सभा-(अवस्था)-गते (तदा) नरः पण्डितः, कृपणः, नानागुणपरिक्रान्तः (तथा) वित्तसौख्यसमन्वितः स्यात् ॥९०॥

जन्मकालिक राहु यदि सभावस्था में हो तो जातक विद्वान्, कृपण, अनेक सद्गुणों से सम्पन्न एवं धन-धान्य से सुखी होता है ॥९०॥

चेदगावागमं यस्य याते तदा व्याकुलत्वं सदाऽरातिभीत्या महत्।
बन्धुवादो जनानां निपातो भवेद्वित्तहानिः शठत्वं कृशत्वं तथा ॥९१॥

अन्वयः—चेत् अगौ यस्य आगमं याते तदा (नरः) अरातिभीत्या सदा व्याकुलत्वं, महद्बन्धुवादः, जनानां निपातः, वित्तहानिः, शठत्वं तथा कृशत्वं भवेत् ॥९१॥

जिसका जन्मकालिक राहु आगमावस्था में हो, वह जातक सदैव व्याकुल और भयाक्रान्त रहता है। स्वजनों एवं भाइयों से कलह कर परिवार से अलग रहता है। उसके धन का नाश हो जाता है। स्वभाव से वह दुष्ट प्रकृति का और शरीर से दुर्बल होता है।

भोजने भोजनेनालं विकलो मनुजो भवेत्।
मन्दबुद्धिः क्रियाभीरुः स्त्रीपुत्रसुखवर्जितः ॥९२॥

अन्वयः—(यदि राहौ) भोजने (तदा) मनुजः भोजनेन अलं विकलं, मन्दबुद्धिः, क्रियाभीरुः (तथा) स्त्रीपुत्रसुखवर्जितः भवेत् ॥९२॥

जिसके जन्माङ्ग में राहु भोजनावस्था में हो वह व्यक्ति भोजन के लिये सदैव विकल रहता है अर्थात् उसे भोजन से सन्तुष्टि नहीं प्राप्त होती। ऐसा व्यक्ति मन्दबुद्धि, क्रियाभीरु और स्त्रीपुत्रादि के सुख से वञ्चित रहता है ॥९२॥

नृत्यलिप्सागते राहौ महाव्याधिविवर्द्धनम्।
नेत्ररोगं रिपोर्भीतिर्धनधर्मक्षयो नृणाम् ॥९३॥

अन्वयः—(यदा) राहौ नृत्यलिप्सागते (तदा) नृणां महाव्याधिविवर्द्धनं, नेत्ररोगं, रिपोः भीतिः (तथा) धनधर्मविवर्जितः (भवेत्) ॥९३॥

यदि जन्माङ्गस्थ राहु नृत्यलिप्सावस्था में हो तो जातक में महाव्याधियों की वृद्धि होती है। जातक नेत्ररोगी होता है। वह सदैव शत्रुभय से आक्रान्त रहता है तथा उसके धर्म और धन—दोनों की क्षति होती है ॥९३॥

कौतुके च यदा राहौ स्थानहीनो नरो भवेत्।
परदाररतो नित्यं परवित्तापहारकः ॥९४॥

अन्वयः—यदा राहौ कौतुके (तदा) नरः स्थानहीनः, परदाररतः (तथा) नित्यं परवित्तापहारकः भवेत् ॥९४॥

यदि राहु कौतुकावस्था में जन्माङ्गस्थ हो तो जातक गृहादि से हीन, निराश्रित, दूसरे की स्त्री में अनुरक्ति रखने वाला एवं दूसरों के धन का हरण करने वाला होता है ॥९४॥

निद्रावस्थागते राहौ गुणग्रामयुतो नरः।
कान्तासन्तानवान्धीरो गर्वितो बहुवित्तवान् ॥९५॥

अन्वयः—(यदि) राहौ निद्रावस्थागते (तदा) नरः गुणग्रामयुतः कान्तासन्तान-वान्, धीरः, गर्वितः (तथा) बहुवित्तवान् (भवेत्) ॥९५॥

यदि जन्माङ्गस्थ राहु निद्रावस्था में स्थित हो तो जातक गुणसम्पन्न, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, अति धीर, घमण्डी और अनेकशः धन से युक्त होता है ॥९५॥

केतु अवस्था-फल

मेषे वृषेऽथ वा युग्मे कन्यायां शयनं गते।
केतौ धनसमृद्धिः स्यादन्यभे रोगवर्द्धनम् ॥९६॥

अन्वयः—अथ केतौ, मेषे वृषे, युग्मे वा कन्यायां शयनं गते (तदा) धनसमृद्धिः अन्यभे रोगवर्द्धनं स्यात् ॥९६॥

शयनावस्था का केतु यदि मेष, वृष, मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो तो

जातक धनसम्पन्न होता है। अन्य राशियों में यदि उक्त केतु स्थित हो तो जातक रोगी होता है ॥९६॥

उपवेशं गते केतौ दद्रुरोगविवर्द्धनम्।
अरिव्रातनृपव्यालचौरशङ्कासमन्ततः ॥९७॥

अन्वयः—केतौ उपवेशं गते (तदा) दद्रुरोगविवर्द्धनम्, अरिव्रातनृपव्यालचौर-शङ्कासमन्ततः (भवेत्) ॥९७॥

उपवेशनावस्था का केतु यदि जन्माङ्गस्थ हो तो जातक दद्रु, कण्डू आदि व्याधियों से ग्रस्त होता है तथा शत्रु, राजा, सर्प और चोर आदि से उसे भय होता है ॥९७॥

नेत्रपाणिं गते केतौ नेत्ररोगः प्रजायते।
दुष्टसर्पादिभीतिश्च रिपुराजकुलादपि॥
वित्तं विनाशमायाति मतिश्च चपला भवेत्॥९८॥

अन्वयः—यदि केतौ नेत्रपाणिं गते (तदा) नेत्ररोगः प्रजायते दुष्टसर्पादिभीतिः, च रिपुराजकुलादपि (भीतिः), वित्तं विनाशं आयाति, (तथा) चपला मतिः भवेत् ॥९८॥

जन्माङ्गस्थ केतु यदि नेत्रपाणि अवस्था में हो तो जातक नेत्ररोगी होता है। दुष्टजनों, सर्प, शत्रु और राजदण्ड से उसके धन का नाश होता है तथा जातक स्वयं भी चञ्चल बुद्धि का होता है ॥९८॥

प्रकाशने गते केतौ धनधान्यसमुन्नतिः।
राजमानं यशोलाभं विदेशे सौख्यमाप्नुयात्॥९९॥

अन्वयः—(यदि) केतौ प्रकाशने गते (तदा नरस्य) धनधान्यसमुन्नतिः, राज्य-मानं, यशोलाभं (तथा) विदेशे सौख्यम् आप्नुयात् ॥९९॥

यदि जन्माङ्गस्थ केतु प्रकाशावस्था में हो तो जातक के धन-धान्यादि की वृद्धि होती है। राजा से सम्मान और यश का उसे लाभ होता है। ऐसा जातक परदेश में सुखी होता है ॥९९॥

गमने तु यदा केतौ पुत्रसम्पत्तिमान्नरः।
पण्डितो राजमानी च धनेन परिपूरितः॥१००॥

अन्वयः—यदा तु केतौ गमने (तदा) नरः पुत्रसम्पत्तिवान् (भवेत्) पण्डितः, राजमानी च (तथा) धनेन परिपूरितः (स्यात्) ॥१००॥

जिसका जन्मकालिक केतु गमनावस्था में हो, वह व्यक्ति धन, सन्तानादि से सुखी, विद्वान्, राजसम्मानयुक्त एवं धन-धान्य से पूर्ण होता है ॥१००॥

केतावागमने दुष्टमतिः श्रीरहितः पुमान्।
कामी धीधर्महीनश्च जायते क्रोधनः शठः॥१०१॥

अन्वयः—(यदि) केतौ आगमने (तदा) पुमान् दुष्टमतिः, श्रीरहितः, कामी, धीधर्महीनः, क्रोधनः शठश्च जायते ॥१०१॥

जन्मकाल में यदि केतु आगमनावस्था में स्थित हो तो व्यक्ति स्वभाव से दुष्ट, निर्धन, कामासक्त, बुद्धि और धर्म से च्युत, क्रोधी और धूर्त होता है ॥१०१॥

सभावस्थागते केतौ वाचालो बहुगर्वितः ।
कृपणो लम्पटश्चैव धूर्तविद्याविशारदः ॥१०२॥

अन्वयः—(यदा) केतौ सभा अवस्थागते (तदा नरः) वाचालः, बहुगर्वितः, कृपणः, लम्पटः धूर्तविद्याविशारदः च (स्यात्) ॥१०२॥

व्यक्ति के जन्म के समय यदि केतु सभावस्था में हो तो जातक वाचाल, घमण्डी, कृपण, लम्पट और धूर्तविद्या में पारङ्गत होता है ॥१०२॥

यदागमे भवेत्केतुः केतुः स्यात्पापकर्मणाम् ।
बन्धुवादरतो दुष्टो रिपुरोगनिपीडितः ॥१०३॥

अन्वयः—यदा केतुः आगमे भवेत् (तदा नरः) पापकर्मणां केतुः स्यात्, बन्धुवादरतः, दुष्टः, रिपुरोगनिपीडितः स्यात् ॥१०३॥

जन्माङ्गस्थ केतु यदि आगमावस्था का हो तो जातक पापकर्मरत, बन्धु-बान्धवों से विवादग्रस्त एवं दुष्ट स्वभाव का होता है तथा शत्रु और रोगभय से सदा ग्रस्त रहता है ॥१०३॥

भोजने तु जनो नित्यं क्षुधया परिपीडितः ।
दरिद्रो रोगसन्तप्तः केतौ भ्रमति मेदिनीम् ॥१०४॥

अन्वयः—(यदि) केतौ भोजने (तदा) जनः नित्यं क्षुधया परिपीडितः दरिद्रः रोगसन्तप्तः (तथा) मेदिनीं भ्रमति ॥१०४॥

जिसके जन्माङ्ग में केतु भोजनावस्था में हो, वह व्यक्ति नित्य क्षुधा से पीड़ित, दरिद्र, रोग एवं व्याधि से सन्तप्त होकर पृथ्वी पर भ्रमण करता रहता है ॥१०४॥

नृत्यलिप्सागते केतौ व्याधिना विकलो भवेत् ।
बुद्बुदाक्षो दुराधर्षो धूर्त्तोऽनर्थकरो नरः ॥१०५॥

अन्वयः—केतौ नृत्यलिप्सागते (तदा) नरः व्याधिना विकलः बुद्बुदाक्षः दुराधर्षः, धूर्त्तः (तथा) अनर्थकरः भवेत् ॥१०५॥

जन्माङ्गस्थ केतु यदि नृत्यलिप्सावस्था में स्थित हो वह व्यक्ति अनेक व्याधियों से विकल, बुद्बुद नेत्र, दुर्धर्ष चरित्र का, धूर्त और महा अनर्थकारी होता है ॥१०५॥

कौतुकी कौतुके केतौ नटवामारतिप्रियः ।
स्थानभ्रष्टो दुराचारो दरिद्रो भ्रमते महीम् ॥१०६॥

अन्वयः—(यदि) केतौ कौतुके (तदा नरः) कौतुकी, नटवामारतिप्रियः, स्थान-भ्रष्टः, दुराचारः, दरिद्रः महीं भ्रमते ॥१०६॥

यदि जन्मकालिक केतु कौतुकी अवस्था में हो तो जातक खेल-तमाशे आदि का प्रदर्शन कर आजीविका प्राप्त करने वाला, नट जाति की स्त्री में रति की प्रवृत्ति वाला, स्थानच्युत, दुराचारी एवं दरिद्र होकर धरती पर भ्रमण करने वाला होता है ॥१०६॥

निद्रावस्थागते केतौ धनधान्यसुखं महत्।
नानागुणविनोदेन कालो गच्छति जन्मिनाम् ॥१०७॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले ग्रहाणां शयनाद्यवस्था-विचाराध्यायः द्वादशः ॥१२॥

अन्वयः—केतौ निद्राऽवस्थागते तदा जन्मिनां धनधान्यमहत्सुखं (तथा) नानागुणविनोदेन कालं गच्छति ॥१०७॥

यदि जन्माङ्ग में निद्रावस्था का केतु हो तो जातक अनेकशः धन-धान्यादि के सुख से परिपूर्ण रहता है एवं अनेक गुणों की चर्चा में उसका समय व्यतीत होता है ॥१०७॥

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का द्वादशाध्याय समाप्त हुआ ॥१२॥

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

ग्रहस्यावस्थाविचारः

ग्रहों की बाल आदि अवस्थाएँ और उनके फल

बालो रसांशैरसमे प्रदिष्टस्ततः कुमारो हि युवाऽथ वृद्धः ।
मृतः क्रमादुत्क्रमतः समर्क्षे बालाद्यवस्थाः कथिता ग्रहाणाम् ॥१॥
फलं तु किञ्चिद्धि तनोति बालाश्चार्द्धं कुमारः प्रयतेन पुंसाम् ।
युवा समग्रं खचरोऽथ वृद्धः फलं तु दुष्टं मरणं मृताख्यः ॥२॥

अन्वयः—अथ ग्रहाणां बालाद्यवस्थाः कथिता हि असमे (विषमराशौ) क्रमात् रसांशैः बालः, (ततः) कुमारः, (ततः) युवा, (ततः) वृद्धः, (ततः) मृतः । समर्क्षे (समराशौ) उत्क्रमतः स्यात् । अथ च पुंसां खचरः बालः किञ्चित् फलं, कुमारः अर्धं फलं, तु युवा समग्रं फलं, वृद्धः दुष्टं फलं (तथा च) मृताख्यः प्रयतेन मरणं तनोति ।

विषम राशियों में ६-६ अंशों की बाल, कुमार, युवा, वृद्ध और मृत—ये पाँच अवस्थाएँ ग्रहों की होती हैं। सम राशियों में प्रथमतः मृत अवस्था से प्रारम्भ कर विपरीत क्रम से अवस्थाएँ होती हैं।

बालावस्था में अल्प फल, कुमारावस्था में आधा फल, युवावस्था में पूर्ण फल, वृद्धावस्था में अनिष्ट फल और मृतावस्था में ग्रह मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट देते हैं ॥१-२॥

विषम राशि में ०° से ६° तक यदि ग्रह स्थित हो तो वह बालावस्था में होता है और अल्प फल ही देता है। ६° से १२° के मध्यस्थ ग्रह कुमारावस्था में होता है तथा उसमें आधा फल देने का ही सामर्थ्य होता है। १२° से १८° के मध्यगत ग्रह युवा होता है और उसमें अपना पूर्ण फल देने की क्षमता होती है। १८° से २४° के मध्य का ग्रह वृद्ध होता है और शुभ फल देने का सामर्थ्य क्षीण होने से वह अनिष्ट फल ही देता है। २४° से ३०° के मध्य में स्थित ग्रह मृत होता है, जो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट देने में समर्थ होता है।

सम राशि में अवस्थाओं का क्रम इसके विपरीत होता है। स्पष्टार्थ चक्र देखिए।

विषमराशि में अवस्थाएँ	अंश	समराशि में अवस्थाएँ
बाल	०°-६°	मृत
कुमार	६°-१२°	वृद्ध
युवा	१२°-१८°	युवा
वृद्ध	१८°-२४°	कुमार
मृत	२४°-३०°	बाल

बालादि अवस्थाएँ

ग्रहों की दीप्तादि आठ अवस्थाएँ होती हैं—

१. दीप्त, २. स्वस्थ, ३. हर्षित, ४. शान्त, ५. अतिशस्त, ६. लुप्त, ७. दीन और ८. पीड़ित। इनमें प्रारम्भ की पाँच अवस्थाओं में ग्रह प्रायः शुभ फल देते हैं और बाद की लुप्तादि अवस्था में ग्रह शुभद नहीं होते।

पराशर के अनुसार ग्रहों की दीप्तादि नौ अवस्थाएँ होती हैं—

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तो दीनोऽतिदुःखितः।
विकलश्च खलः क्रोधी नवधा खेचरा भवेत्॥

निम्न श्लोकों में इन दशाओं के लक्षण आचार्य ने निरूपित किये हैं—

उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्यादधिमित्रभे।
मुदितो मित्रभे शान्तः समभे दीन उच्यते॥
शत्रुभे दुःखितः प्रोक्तो विकलः पापसंयुतः।
खलः खलगृहे ज्ञेयः क्रोधी स्यादर्कसंयुतः। (पराशर)

ग्रह कब किस अवस्था में होते हैं, इसे आगे कहते हैं—

ग्रहों की दीप्तादि अवस्थाएँ

उच्चे दीप्तः स्वभे स्वस्थो मित्रभे हर्षितो भवेत्।
शान्तः शोभनवर्गस्थोऽतिशस्तो दीप्तदीधितिः॥३॥
लुप्तोऽस्ते नीचभे दीनः पीडितः पापशत्रुभे।
एवमष्टौ नभोगानां भावा दीप्तादिभेदतः॥४॥

अन्वयः—उच्चे दीप्तः, स्वभे स्वस्थः, मित्रभे हर्षितः, शोभनवर्गस्थः शान्तः, दीप्तदीधितिः अतिशस्तः, अस्ते लुप्तः, नीचभे दीनः, पापशत्रुभे पीडितः, एवं दीप्तादिभेदतः नभोगानां अष्टौ भावाः (भवन्ति)॥३-४॥

अपनी उच्च राशि में स्थित ग्रह दीप्त होता है, यदि ग्रह अपनी राशि में स्थित हो तो स्वस्थ, मित्र की राशि में स्थित हो तो हर्षित, शुभग्रह के वर्ग में स्थित हो तो शान्त, अपने उदयकाल में ग्रह अतिशस्त, अस्त हो तो लुप्त, यदि अपनी नीच राशि में स्थित हो तो दीन एवं पापग्रह की राशि या शत्रु राशि में स्थित हो तो पीड़ित होता है। दीप्तादि भेद से ग्रहों की ये आठ अवस्थाएँ होती हैं॥३-४॥

दीप्तादि अवस्था-फल

दीप्ते मदोन्मत्तगजेन्द्रगन्ता सदारिहन्ता वरतीर्थगन्ता।
कान्तो मनस्वी नितरां यशस्वी प्रदीप्तवेषो मनुजो महीपः॥५॥

अन्वयः—दीप्ते (ग्रहे तदा) मनुजः मदोन्मत्तगजेन्द्रगन्ता, सदा अरिहन्ता,

वरतीर्थगन्ता, कान्तः मनस्वी, नितरां यशस्वी (तथा) प्रदीप्तवेषः महीपः (स्यात्) ॥५॥

दीप्त ग्रह की महादशा प्राप्त होने पर जातक मदोन्मत्त हाथियों को वाहन के रूप में प्राप्त करता है अर्थात् अनेक सुन्दर वाहनादि का उसे सुख प्राप्त होता है। उसके शत्रु विनष्ट होते हैं और तीर्थादि स्थानों की वह यात्रा करता है। उसकी स्त्री मनस्वी होती है। सुन्दर वस्त्रों से सुशोभित उस व्यक्ति का सुयश और सत्कीर्त्ति दिगन्त में व्याप्त होती है। वह सम्पूर्ण राजसुख का भोग करता है ॥५॥

स्वस्थे गुणागारजयालयानामुपार्जको वैरिविनाशकर्त्ता।
नरोऽप्युदारो नृपपूजितः स्याद्विशालकीर्तिः कमनीयमूर्तिः ॥६॥

अन्वयः—स्वस्थे (ग्रहे) तदा नरः गुणागारजयालयानाम् उपार्जकः, वैरि-विनाशकर्त्ता, उदारः, नृपपूजितः, विशालकीर्तिः, (तथा) कमनीयमूर्तिः स्यात् ॥६॥

स्वस्थ ग्रह की दशा में जातक विद्यालय, आयुधागार आदि भवनों का निर्माता, शत्रुओं का नाश करने वाला, उदारमना, राजाओं में श्रेष्ठ, विशाल कीर्ति से सम्पन्न एवं सुदर्शन व्यक्ति होता है ॥६॥

हर्षिते भवति हर्षितः सदा मित्रपुत्रपरिपूरितो मुदा।
धर्मकृन्मणिगणेन मण्डितः पण्डितः परमदैवविज्जनः ॥७॥

अन्वयः—हर्षिते जनः हर्षितः, सदा मुदा मित्रपुत्रपरिपूरितः धर्मकृत्, मणिगणेन मण्डितः (तथा) परमदैववित् जनः भवति ॥७॥

हर्षित ग्रह की महादशा में जातक हर्षोल्लास से भरपूर, मित्र और पुत्र से सुखी, धार्मिक, अनेक रत्नादि से युक्त, अदृष्ट को जानने वाला एवं ज्योतिष विद्या का मर्मज्ञ होता है ॥७॥

शान्तेऽतिशान्तो युवराजराजो जनो महौजा जनतासमेतः।
अनेकविद्यामलगद्यपद्याभ्यासानुरक्तः खलु वित्तयुक्तः ॥८॥

अन्वयः—शान्ते (ग्रहे) जनः अतिशान्तः, युवराजराजः, महौजा जनतासमेतः, अनेकविद्यामलगद्यपद्याभ्यासानुरक्तः, खलु वित्तयुक्तः (स्यात्) ॥८॥

शान्त ग्रह की दशा में जातक अत्यन्त शान्त चित्त, युवराजों में श्रेष्ठ (भविष्य में राजा होने वाला), अत्यन्त तेजस्वी, जननेता, अनेक विद्याओं—गद्य, काव्य में रुचि रखने वाला एवं सदैव धन-धान्य से परिपूर्ण रहता है ॥८॥

शस्ते विशेषाद्विदुषां प्रशस्तः प्रशस्तवेषो गतरोगसङ्घः।
विशालमालालसितोऽमलोक्त्या नरो नराणामधिपः प्रधानः ॥९॥

अन्वयः—शस्ते नरः विशेषाद् विदुषां प्रशस्तः, प्रशस्तवेषः, गतरोगसंघः, विशालमालालसितः, अमलोक्त्या नराणाम् अधिपः, प्रधानः (च भवति) ॥९॥

शस्त ग्रह की दशा में जातक विशिष्ट विद्वान्, सुदर्शन, निरोग, सुन्दर आभूषणों से युक्त, अपनी सुन्दर वाणी से दूसरों के मन को जीतने वाला एवं राजाओं में श्रेष्ठ राजा होता है ॥९॥

लुप्ते च लुप्तो गुणधर्मभावैः प्रपीडितोऽरातिकुलेन मर्त्यः ।
भवेद्विरक्तो गदजालयुक्तो प्रमादशाली खलु पापमाली ॥१०॥

अन्वयः—लुप्ते (ग्रहे तदा) मर्त्यः गुणधर्मभावैः लुप्तः अरातिकुलेन प्रपीडितः, विरक्तः, गदजालयुक्तः, प्रमादशाली खलु पापमाली भवेत् ॥१०॥

लुप्त ग्रह की दशा में जातक गुणों और धर्माचरण से हीन-अनाचारी, शत्रुपक्ष से पीड़ित, विरक्त, रोगग्रस्त, अति प्रमादी और पापात्मा होता है ॥१०॥

दीनेऽतिदीनो मतितोषहीनो जनो जनेशादिनिपीडितश्च ।
गुणेन हीनः परदारलीनः परार्थहारी च कुभूमिचारी ॥११॥

अन्वयः—दीने (ग्रहे तदा) जनः अतिदीनः मतितोषहीनः जनेशादिनिपीडितः, गुणेन हीनश्च, परदारलीनः, परार्थहारी, कुभूमिचारी च (भवति) ॥११॥

दीन ग्रह की दशा में जातक अति दीन-हीन, मानसिक सन्तुष्टि से हीन, राजा के द्वारा पीड़ित, गुणों से हीन, दूसरे की स्त्री में निरत, दूसरों के धन का अपहरण करने वाला एवं कुत्सित भूमि में भ्रमण करने वाला होता है ॥११॥

पीडिते गदनिपीडितः सदा चिन्तया च परया समन्वितः ।
व्यग्रितो बहुमदोद्धतः पुमानाधिरोगसहितो विशेषतः ॥१२॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले ग्रहस्यावस्थाविचाराध्यायः त्रयोदशः ॥१३॥

अन्वयः—पीडिते सदा गदनिपीडितः परया चिन्तया च समन्वितः, व्यग्रितः, बहुमदोद्धतः विशेषतः अधिरोगसहितः पुमान् (भवति) ॥१२॥

पीड़ित ग्रह की दशा में जातक रोगादि से ग्रस्त, चिन्ताग्रस्त, सदैव व्यग्र, मद से भरा हुआ—उद्धत एवं विशेषकर मानसिक सन्ताप से ग्रस्त होता है ॥१२॥

पराशर के अनुसार ग्रहों की नौ अवस्थाओं के फल निम्नोद्धृत हैं—

पाके प्रदीप्तस्य धराधिपत्यमुत्साहशौर्य धनवाहने च ।
स्त्रीपुत्रलाभं शुभबन्धुपूजां क्षितीश्वरान्मानमुपैति विद्याम् ॥
स्वस्थस्य खेटस्य दशाविपाके स्वास्थ्यं नृपाल्लब्धधनादिसौख्यम् ।
विद्यां यशःप्रीतिमहत्त्वभाराद्दारार्थभूम्यादिजधर्ममेति ॥
मुदान्वितस्यापि दशाविपाके वस्त्रादिकं गन्धसुतार्थधैर्यम् ।
पुराणधर्मश्रवणादिलाभं राजादियानाम्बरभूषणाप्तिम् ॥
दशाविपाके सुखधर्ममेति शान्तस्य भूपुत्रकलत्रयानम् ।
विद्याविनोदान्वितधर्मशास्त्रं बह्वर्थदेशाधिपपूज्यतां च ॥

स्थानच्युतिबन्धुविरोधिता च दीनस्य खेटस्य दशाविपाके।
जीवत्यसौ कुत्सितहीनवृत्त्या त्यक्तो जनै रोगनिपीड़ित: स्यात्॥
दु:खार्दितस्यापि दशाविपाके नानाविधं दु:खमुपैति नित्यम्।
विदेशगो बन्धुजनैर्विहीनश्चोराग्निभूपैर्भयमातनोति॥
वैकल्यखेटस्य दशाविपाके वैकल्यमायाति मनोविकारम्।
मित्रादिकानां मरणं विशेषात्स्त्रीपुत्रयानाम्बरचोरपीडाम्॥
दशाविपाके कलहं वियोगं खलस्य खेटस्य पितुर्वियोगम्।
शत्रोर्जनानां धनभूमिनाशमुपैति नित्यं स्वजनैश्च निन्दाम्॥
कोपान्वितस्यापि दशाविपाके पापा: समायान्ति बहुप्रकारै:।
विद्याधनस्त्रीसुतबन्धुनाशं पुत्रादिकृच्छ्रं त्वथ नेत्ररोगम्॥ (पराशर)

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का त्रयोदश अध्याय समाप्त हुआ॥१३॥

अथ चतुर्दशोऽध्यायः

नानायोगनिरूपणम्

मारकग्रह विचार

मारकग्रहसम्बन्धात् पापकर्त्ता शनिस्तदा।
तिरस्कृत्य ग्रहान्सर्वान्निहन्ता भवति ध्रुवम्॥१॥

अन्वयः—पापकर्त्ता शनिः मारकग्रहसम्बन्धात् सर्वान् ग्रहान् तिरस्कृत्य तदा ध्रुवं निहन्ता भवति॥१॥

मारकत्व-प्राप्त ग्रह का सम्बन्ध यदि पापग्रह शनि के साथ हो तो अन्य सभी मारक ग्रहों को हटाकर शनि स्वयं मारक हो जाता है॥१॥

त्रिकोणभवनाधिपाः शुभफलास्तु सर्वे ग्रहा-
स्त्रिवैरिभवभावपाः खलफला निरुक्ता बुधैः।
भवन्ति यदि केन्द्रपाः शुभखगा न शस्ता नृणा-
मतीवशुभदायकाः खलखचारिणो जन्मनि॥२॥

अन्वयः—जन्मनि सर्वे ग्रहाः त्रिकोणभवनाधिपाः (तदा) शुभफलाः त्रिवैरिभव-भावपाः खलफलाः बुधैः निरुक्ताः, यदि शुभखगाः केन्द्रपाः (तदा) नृणां न शस्ता भवन्ति, यदि खलखचारिणः केन्द्रपाः (तदा) अतीवशुभदायकाः भवन्ति॥२॥

त्रिकोणभवनों (५,९ वें भाव) के स्वामी होने पर सभी ग्रह (पाप अथवा शुभग्रह) शुभ फल देते हैं। तृतीय, षष्ठ और अष्टम भावों के स्वामी होकर सभी ग्रह पापफल ही देते हैं। केन्द्र (१,४,७ और दसवें भाव) के स्वामी यदि शुभ ग्रह हों तो अशुभ फल और यदि पाप ग्रह हों तो शुभ फल देते हैं॥२॥

लघुपाराशरी के अनुसार भी शुभग्रह हों अथवा पापग्रह हों, पञ्चम और नवम भाव के स्वामी होकर सभी शुभ फलदायक होते हैं—

सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफलप्रदाः।
पतयस्त्रिषडायानां यदि पापफलप्रदाः॥ (लघुपाराशरी)

ग्रह केन्द्राधिपति होने पर विपरीत फल देते हैं। अर्थात् यदि पाप ग्रह केन्द्र के अधिपति हों तो शुभ फल और यदि शुभ ग्रह केन्द्राधिपति हों तो नेष्ट फल देते हैं।

उपर्युक्त श्लोक में पाप ग्रहों के केन्द्रेश होने पर उनमें जो शुभत्व आने की बात कही गई है, वह मात्र केन्द्रेश होने से ही नहीं प्राप्त होती है। पाप ग्रह केन्द्रेश होने के साथ ही साथ यदि त्रिकोण के भी अधिपति हों, तभी उनमें शुभत्व का संचार होता है; केवल केन्द्रश होने से नहीं—

कुजस्य कर्मनेतृत्वप्रयुक्ता शुभकारिता ।
त्रिकोणस्यापि नेतृत्वे न कर्मेशमात्रतः ॥ (लघुपाराशरी)

यद्यपि इस श्लोक में कर्मेश मंगल के विषय में कहा गया है, किन्तु यह सिद्धान्त सभी पाप ग्रहों पर लागू होता है ।

यद्यद्भावगतो राहुः केतुश्च जनने नृणाम् ।
यद्यद्भावेशसंयुक्तस्तत्फलं प्रदिशेदलम् ॥३॥

अन्वयः—जनने राहुः केतुश्च यद्यद्भावगतः (तदा) यद्यद्भावेशसंयुतः तत्फलं नृणां अलं प्रदिशेत् ॥३॥

राहु और केतु जिस भाव में बैठे हों, जिस भावेश से संयुक्त हों, उसीं के अनुसार शुभाशुभ फल देते हैं ॥३॥

लघुपाराशरी में भी कहा गया है—

यद्यद्भावगतो वापि यद्यद्भावेशसंयुतौ ।
तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ ॥

मन्दश्चेत्पापसंयुक्तो मारकग्रहयोगतः ।
तिरस्कृत्य ग्रहान् सर्वान्निहन्ता पापकृद्यदा ॥४॥

अन्वयः—यदा पापकृत् मन्दः पापसंयुक्तः मारकग्रहयोगतः (तदा) सर्वान् ग्रहान् तिरस्कृत्य निहन्ता (भवति) ॥४॥

पापग्रह से युक्त शनि यदि मारकेश से सम्बन्ध करता हो तो अन्य मारकेशों को हटाकर स्वयं मारक होता है ॥४॥

अल्प-मध्यम-पूर्णायुःप्रमाणमिह योगजम् ।
विज्ञाय प्रथमं पुंसां ततो मारकचिन्तना ॥५॥

अन्वयः—प्रथमं पुंसां योगजं अल्प-मध्यम-पूर्णायुः प्रमाणम् इह (वक्ष्यमाणतः) विज्ञाय ततः मारकचिन्तना (कार्या) ॥५॥

सर्वप्रथम जातक के योगजन्य अल्पायु, मध्यमायु और दीर्घायु का विचार करने के अनन्तर मारकेश का विचार करना चाहिए ॥५॥

विंशोत्तरी दशा के अनुसार मनुष्य की परमायु १२० वर्ष मानी गई है । इस सम्पूर्ण आयु को अल्पायु, मध्यमायु और दीर्घायु—तीन खण्डों में विभक्त किया गया है । यदि कोई व्यक्ति दीर्घायु प्राप्त हो और अल्पायु या मध्यायु में मारकेश की दशा प्राप्त होती हो तो वह दशा मारक न होकर अधिक से अधिक अरिष्टकारक हो सकती है । मध्यायु गत हो जाने के बाद यदि मारकेश की दशा प्रभावी हो, तभी वह मारक हो सकती है ।

अल्प-मध्यम-दीर्घायु जानने की युक्ति जैमिनिसूत्रम् के द्वितीय अध्याय में प्रथम पाद के १ से ९ सूत्रों में बतलाई गई है—

आयुः पितृदिनेशाभ्याम् ॥२।१।१॥
प्रथमयोरुत्तरयोर्वा दीर्घम् ॥२।१।२॥
प्रथमद्वितीययोरन्तयोर्वा मध्यम् ॥२।१।३॥
मध्ययोराद्यन्तयोर्वा हीनम् ॥२।१।४॥
एवं मन्दचन्द्राभ्याम् ॥२।१।५॥
पितृकालतश्च ॥२।१।६॥
संवादात्प्रामाण्यम् ॥२।१।७॥

इन सूत्रों में राशि और भावों का सङ्केत वर्णों से कटपयादि नियमानुसार ही किया गया है। उसकी विधि निम्नवत् है—

कटपयवर्गभवैरिह पिण्डान्त्यैरक्षरैरङ्काः।
निञि च शून्यं ज्ञेयं तथा स्वरे केवले कथितम् ॥

'क'वर्ग (क वर्ण से ञ तक), 'ट'वर्ग ('ट' वर्ग से 'न' तक), 'प'वर्ग ('प' वर्ण से 'म' तक) तथा 'य' वर्ग ('य' से 'ह' तक) के वर्णों से उनके क्रमानुसार अङ्कों का ग्रहण होता है। जैसे क से १, ग से ६, म से ५ आदि अङ्क ग्रहण किए जाते हैं। संयुक्ताक्षर में अन्त्य वर्णानुसार अङ्क ग्रहण किए जाते हैं, जैसे स्व में अन्त्य अक्षर 'व' के अङ्क ४ का ग्रहण होगा। 'न' और 'ञ' वर्णों से तथा स्वर वर्णों से शून्य ग्रहण होता है। इस प्रकार संगृहीत अङ्क ग्रहण करना चाहिए। जैसे 'पितृ' शब्द में 'प' से १ और 'ऋ' से ० (पि + त् + ऋ) ग्रहण करने पर ०१ यह संख्या प्राप्त हुई, जो प्रथम भाव का द्योतक है। इसी प्रकार दिनेश = दिन + ईश में 'दि' से ८ और 'न' से ० ग्रहण करने पर ०८ या आठ संख्या होती है, जो अष्टम भाव का द्योतक है। ईश का अर्थ स्वामी है। इस प्रकार प्रथम सूत्र का अर्थ है कि आयु का विचार लग्नेश और अष्टमेश से करना चाहिए। कैसे? यह दूसरे, तीसरे और चौथे सूत्र में बतलाया गया है।

लग्नेश और अष्टमेश दोनों चर राशि में स्थित हों अथवा एक स्थिर राशि में और दूसरा द्विस्वभाव राशि में स्थित हो तो दीर्घायु; यदि दोनों द्विस्वभाव राशि में अथवा एक चरराशि में और दूसरा स्थिर राशि में स्थित हो तो मध्यायु; यदि लग्नेश और अष्टमेश दोनों स्थिर राशि में अथवा एक चर राशि में और दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो तो अल्पायु होता है।

इसी प्रकार शनि और चन्द्रमा से भी आयुष्य का विचार करना चाहिए। यह आयुष्य-विचार का दूसरा प्रकार है।

उपर्युक्त विधि से लग्न और होरालग्न से भी आयुष्य का विचार करना चाहिए। यह तीसरा प्रकार हुआ।

उक्त तीनों या दो प्रकार से यदि एक ही आयुष्य (दीर्घ-मध्यम या अल्पायु) प्राप्त हो तो वही आयुष्य ग्रहण करना चाहिए। जैसे लग्न-अष्टम भाव के स्वामियों से दीर्घायु प्राप्त हो, शनि और चन्द्रमा से अल्पायु और लग्न, होरालग्न से भी अल्पायु प्राप्त हो तो अल्पायु ही प्रामाणिक मानना चाहिए। यदि तीनों प्रकार से भिन्नायु प्राप्त हो तो लग्न और होरा लग्न पर से आगत आयु को ही प्रामाणिक मानना चाहिए। यदि लग्न या सप्तम भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो लग्न और चन्द्रमा से आगत आयु को ही प्रामाणिक समझना चाहिए। अन्यथा (लग्न या सप्तम भाव से इतर स्थान में यदि चन्द्र स्थित हो तो) शनि और चन्द्रमा से आगत आयु का ही ग्रहण करना चाहिए।

दीर्घ-मध्य-अल्पायुषों में वर्षसंख्या के निर्धारण हेतु निम्न वचन उपयोगी हैं—

दीर्घे योगत्रयेणैवं नखचन्द्रसमाब्दकाः।
योगद्वयेन वस्वाशाः योगैकेन रसकाङ्क्षाः॥
मध्ये योगत्रयेणैव खाष्टतुल्याब्दकाः स्मृताः।
द्व्यगाः योगद्वयेनात्र योगद्वयेनाब्धिषण्मिताः॥
अल्पे योगत्रयेणात्र द्वात्रिंशन्मितवत्सराः।
योगद्वयेन षट्त्रिंशद्योगैकेन च खाब्धयः॥

उपर्युक्त आयुष्य जानने की तीनों विधियों से यदि दीर्घायु प्राप्त हो तो आयुवर्ष १०८ से १२० वर्ष के मध्य होंगे। यदि दो प्रकार से दीर्घायु प्राप्त हो ९६ से १०८ वर्ष के मध्य आयुवर्ष समझना चाहिए। यदि एक ही प्रकार से दीर्घायु प्राप्त हो तो ९६ वर्ष आयुवर्ष होंगे।

यदि उक्त तीनों विधियों से मध्यम आयु प्राप्त हो तो आयुवर्ष ७२ से ८० के मध्य, दो प्रकार से मध्यम आयु प्राप्त हो तो ६४ से ७२ वर्ष और यदि एक प्रकार से मध्यायु प्राप्त हो तो ६४ वर्ष आयुवर्ष समझना चाहिए।

उक्त तीनों विधियों से अल्पायु प्राप्त हो तो ३६ से ४० वर्ष, दो प्रकार से अल्पायु होने की स्थिति में ३२ से ३६ वर्ष और एक ही प्रकार से यदि अल्पायु प्राप्त हो तो ३२ वर्ष आयुवर्ष होते हैं।

योगज आयु निर्णय

चेदङ्गपो यदि रवेररिरेव हीनं पूर्णं सुहृद्यदि समः सममायुराहुः।
बालग्रहो हितसमारिपदेऽपि पूर्णं मध्यञ्च हीनमिह जातकतत्त्वविज्ञाः॥६॥

अन्वयः—यदि चेत् अङ्गपः रवेः अरिः (तदा) हीनं, सुहृद् (तदा) पूर्णं, समः (तदा) सममायुः, (एवं) बालग्रहः हितसमारिपदेऽपि पूर्णं, मध्यं हीनं च जातकतत्त्वविज्ञाः इह आयुः आहुः॥६॥

यदि लग्न का स्वामी सूर्य का शत्रु हो तो जातक अल्पायु होता है, यदि मित्र हो तो दीर्घायु और यदि सम हो तो मध्यमायु होता है। इसी प्रकार लग्नेश मित्र ग्रह की राशि में

स्थित हो तो दीर्घायु, यदि सम ग्रह की राशि में स्थित हो तो मध्यमायु और यदि शत्रुग्रह की राशि में स्थित हो तो जातक अल्पायु होता है। ऐसा श्रेष्ठ दैवज्ञों का कथन है ॥६॥

आयुष्य और मारक स्थान

अष्टमर्क्षं तृतीयं च बुधैरायुरुदाहृतम्।
द्वितीयं सप्तमं स्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥७॥

अन्वयः—अष्टमर्क्षं तृतीयं च बुधैः आयुः उदाहृतं, द्वितीयं, सप्तमं स्थानं मारकस्थानम् उच्यते ॥७॥

लग्न से अष्टम और तृतीय भाव को आचार्यों ने आयुष्य स्थान एवं द्वितीय और सप्तम भाव को मारक स्थान कहा है—

अष्टमं ह्यायुषः स्थानं अष्टमादष्टमं च यत्।
तयोरपि व्ययस्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ (लघुपाराशरी)

अष्टम भाव आयुष्य का स्थान है। इससे अष्टम भाव (अष्टम भाव से अष्टम भाव अर्थात् तृतीय भाव) भी आयुष्य का स्थान होता है। इन दोनों आयुष्य-स्थानों से जो व्यय (द्वादश) भाव अर्थात् सप्तम और द्वितीय भाव हों वे मारक स्थान कहलाते हैं ॥७॥

मृत्युकाल-निर्णय

मारकेशदशापाके मारकस्थस्य पापिनः।
पाके पापयुजां पाके सम्भवे निधनं विशेत् ॥८॥

अन्वयः—(आयुखण्डप्राप्ते) मारकेशदशायां मारकस्थस्य पाके (अथवा) पापिनः पाके पापयुजां पाके निधनं सम्भवं विशेत् ॥८॥

मारक स्थान के स्वामी की महादशा में मारक स्थान (द्वितीय और सप्तम भाव) में स्थित पापग्रह की अन्तर्दशा प्राप्त होने पर जातक की मृत्यु सम्भव होती है अथवा पापग्रह की महादशा में पापयुक्त ग्रह की अन्तर्दशा प्राप्त होने पर मृत्यु सम्भव होती है ॥८॥

असम्भवे व्ययाधीशदशायां मरणं नृणाम्।
अभावे व्ययभावेशसम्बन्धिग्रहभुक्तिषु ॥९॥

अन्वयः—(पूर्वमारकेशाणां दशायां) असम्भवे (तदा) व्ययाधीशदशायां (अस्य) अभावे व्ययभावेशसम्बन्धिग्रहभुक्तिषु नृणां मरणं (वाच्यम्) ॥९॥

उपर्युक्त विधि से आगत आयु के समाप्तिकाल में यदि उक्त मारक दशाएँ न प्राप्त हों तो व्ययेश की दशा-अन्तर्दशा में मृत्यु सम्भव होती है। व्ययेश की दशान्तर्दशान्तर्दशा के अभाव में व्ययेश से सम्बन्ध रखने वाले ग्रह की दशान्तर्दशा में मृत्यु सम्भव होती है ॥९॥

तदभावेऽष्टमेशस्य दशायां निधनं पुनः ।
दुष्टतारापतेः पाके निर्याणं कथितं बुधैः ॥१०॥

अन्वयः—तदभावे अष्टमेशस्य दशायां, पुनः दुष्टतारापतेः पाके बुधैः निर्याणं कथितम् ॥१०॥

व्ययेश या उससे सम्बन्धित ग्रह की दशा में भी यदि मृत्यु सम्भव न हो तो अष्टमेश की दशान्तर्दशा में मृत्यु सम्भव होती है । इसके भी सम्भव न होने पर अशुभ ताराओं—विपत्, प्रत्यरि और वध ताराओं के स्वामी की दशान्तर्दशा में मृत्यु सम्भव होती है ॥१०॥

राजयोग

नवमभावपतिस्तनयालये सुतपतिर्नवमे यदि जन्मिनः ।
अतिविचित्रमणिवज्रमण्डितो वसुमतीविभुतां स नरो व्रजेत् ॥११॥

अन्वयः—यदि जन्मिनः नवमभावपतिः तनयालये, (तथा) सुतपतिः नवमे (तदा) स नरः अतिविचित्रमणिवज्रमण्डितः (तथा) वसुमतीविभुतां व्रजेत् ॥११॥

जन्माङ्ग में यदि नवम भावाधिपति पञ्चम भाव में तथा पञ्चम भावाधिपति नवम भाव में स्थित हों तो जातक अनेक सुन्दर मणियों, हीरा आदि से विभूषित पृथ्वीपति होता है ॥११॥

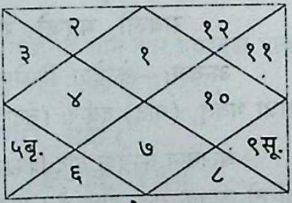

राजयोग (१)

कर्माधीशः सुतस्थाने सुतेशः कर्मगो यदा ।
त्रिकोणपतिना दृष्टो राजा भवति निश्चितम् ॥१२॥

अन्वयः—यदा कर्माधीशः सुतस्थाने, सुतेशः कर्मगः (यदा) त्रिकोणपतिना दृष्टः (तदा) निश्चितं राजा भवति ॥१२॥

यदि दशमभाव का स्वामी पञ्चम भाव में और पञ्चम भाव का स्वामी दशम भाव में स्थित हो और नवम भाव के स्वामी से दृष्ट हो तो जातक राजा होता है ॥१२॥

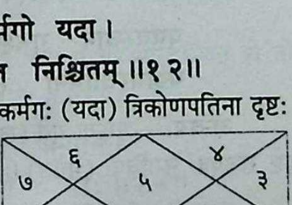

राजयोग (२)

राज्येशाङ्गपवाहनेशसुतपा धर्मालये स्वामिना
संयुक्ता यदि वीक्षिताश्च बलिनो राजा भवेन्मानवः ।
पुत्रेशो यदि धर्मपेन सहितो लग्नाधिपेनाङ्गगो
दृष्टो वा सहितः सुखेऽपि दशमे राजा भवेन्निश्चितम् ॥१३॥

अन्वयः—यदि राज्येशाङ्गपवाहनेशसुतपाः बलिनः धर्मालये स्वामिना संयुक्ताः वीक्षिताश्च (तदा) मानवः राजा भवेत् (अथवा) पुत्रेशः यदि धर्मपेन वा लग्नाधिपेन सहितः वा दृष्टः अङ्गगः (अथवा) धर्मपेन सहितः दृष्टः सुखे, दशमेऽपि निश्चितं राजा भवेत् ॥१३॥

दशमेश, लग्नेश, चतुर्थेश और पञ्चमेश बलवान हों और नवम भाव में नवमेश से संयुक्त अथवा दृष्ट हों तो जातक राजा होता है।

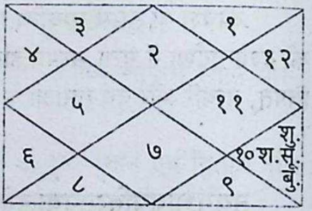

राजयोग (३)

यदि पञ्चम भाव का स्वामी नवम भाव के स्वामी के साथ लग्न में लग्नेश के साथ संयुक्त हो या उससे दृष्ट हो तो जातक राजा होता है। उक्त ग्रहस्थिति यदि चतुर्थ या दशम भाव में हो, तब भी जातक राजा होता है ॥१३॥

यत्र कुत्रापि केन्द्रेशस्त्रिकोणपतिना युतः।
सबलो मनुजो राजा दुर्बलो धनपो भवेत् ॥१४॥

अन्वयः—केन्द्रेशः त्रिकोणपतिना युतः यत्र कुत्रापि (गतः) (तदा) सबलः मनुजः राजा भवेत्, (यदि) दुर्बलः (तदा) धनपः भवेत् ॥१४॥

बलवान केन्द्रेश यदि त्रिकोण के स्वामी के साथ जन्माङ्ग के किसी भाव में संयुक्त हों तो जातक राजा होता है। यदि योगकारक ग्रह (केन्द्रश और त्रिकोणेश) निर्बल हों तो जातक धनवान होता है ॥१४॥

पुण्यस्थाने गुरुक्षेत्रे दशमे भृगुणा युते।
पञ्चमस्वामिना दृष्टे राजपुत्रो नराधिपः ॥१५॥

अन्वयः—भृगुणा युते (लग्नेशः) दशमे (वा) पुण्यस्थाने गुरुक्षेत्रे पञ्चमस्वामिना दृष्टे राजपुत्रः नराधिपः (भवेत्) ॥१५॥

बृहस्पति की राशि (धनु या मीन) का होकर लग्नेश यदि पुण्यस्थान (नवम भाव) में स्थित हो, अथवा शुक्र के साथ दशम भाव में स्थित हो और पञ्चम भाव के स्वामी से दृष्ट हो तो राजकुलोत्पन्न जातक राजा होता है ॥१५॥

धनिक योग

पञ्चमे निजभे शुक्रे लाभे रविसुते यदा।
भोक्ता मणिसुवर्णानामधिपो जायते नृणाम् ॥१६॥

अन्वयः—यदा नृणां (जन्मकाले) निजभे शुक्रे पञ्चमे (तथा) रविसुते लाभं (तदा) भोक्ता मणिसुवर्णानामधिपः जायते ॥१६॥

स्वराशि का होकर शुक्र यदि पञ्चम भाव में और एकादश भाव में शनि स्थित हो तो जातक अनेक मणि-माणिक्यादि रत्नों और स्वर्णादि धनोपकरणों के सुख को भोगने वाला राजा होता है ॥१६॥

कर्कटे तु कलानाथे पञ्चमे लाभगे शनौ।
नानाधनसमृद्धिः स्याद्धर्मवृद्धिश्च भूपता ॥१७॥

अन्वयः—(यदा) कर्कटे कलानाथे तु पञ्चमे, लाभगे शनौ (तदा) नानाधनसमृद्धिः स्यात्, धर्मवृद्धिः (तथा) भूपता (भवेत्) ॥१७॥

कर्क राशि का चन्द्रमा यदि पञ्चम भाव में और शनि एकादश भाव में स्थित हो, तो जातक धनसम्पन्न एवं धर्मानुरक्त राजा के समान होता है ॥१७॥

पञ्चमे तु मृगे कुम्भे समन्दे यस्य जन्मनि।
बुधे लाभालये तस्य सर्वतो द्रविणोन्नतिः ॥१८॥

अन्वयः—यस्य जन्मनि पञ्चमे मृगे कुम्भे समन्दे तु बुधे लाभालये, तस्य सर्वतः द्रविणोन्नतिः भवेत् ॥१८॥

यदि जन्माङ्ग के पञ्चम भाव में मकर या कुम्भ राशिगत शनि और एकादश भाव में बुध स्थित हो तो चारो ओर से जातक के धन की वृद्धि होती है ॥१८॥

पञ्चमे तु रवौ सिंहे लाभे देवगुरौ सदा।
वाहनस्वर्णरत्नानामधिपो जायते क्षणात् ॥१९॥

अन्वयः—(यदा) रवौ सिंहे पञ्चमे तु देवगुरौ लाभे (तदा) क्षणात् सदा वाहनस्वर्णरत्नानाम् अधिपः जायते ॥१९॥

यदि पञ्चम भाव में सिंहस्थ सूर्य और एकादश भाव मे बृहस्पति स्थित हो तो जातक स्वर्ण-रत्नादि के साथ वाहनसुख से सम्पन्न होता हैं ॥१९॥

पञ्चमे तु गुरुक्षेत्रे सगुरौ यदि जन्मनि।
लाभगाविन्दुभूपुत्रौ पृथ्वीपतिसमो नरः ॥२०॥

अन्वयः—यदि जन्मनि गुरुक्षेत्रे सगुरौ पञ्चमे, तु इन्दुभूपुत्रौ लाभगौ (तदा) नरः पृथ्वीपतिसमः जायते ॥२०॥

पञ्चम भाव में यदि स्वगृही बृहस्पति तथा एकादश भाव में भौम के साथ चन्द्रमा स्थित हो तो जातक राजा के समान सम्पन्न होता है ॥२०॥

रविक्षेत्रगते लग्ने रविणा संयुते सति।
गुरुभौमयुते वापि धनाधिक्यं दिने दिने ॥२१॥

अन्वयः—लग्ने रविक्षेत्रगते रविणा संयुते सति गुरुभौमयुते वापि (तदा) दिने-दिने धनाधिक्यं (जायते) ॥२१॥

स्वगृही सूर्य यदि लग्न में मंगल और बृहस्पति के साथ संयुक्त हो तो जातक के धन की दिनोदिन वृद्धि होती है ॥२१॥

कर्कभे जन्मलग्ने तु सचन्द्रे यदि जन्मनि।
संयुते जीवभौमाभ्यां स सद्यो वित्तपो भवेत् ॥२२॥

अन्वयः—यदि जन्मनि जन्मलग्ने कर्कभे सचन्द्रे तु जीवभौमाभ्यां संयुते (तदा) स सद्यः वित्तपः भवेत् ॥२२॥

कर्क राशि के लग्न में यदि चन्द्रमा, मंगल और बृहस्पति के साथ स्थित हो तो जातक धनवान होता है ॥२२॥

कुजक्षेत्रगते लग्ने सभौमे यस्य जन्मनि।
ज्ञशुक्रमन्दसंयुक्ते स धनेशसमो नरः ॥२३॥

अन्वयः—यस्य जन्मनि कुजक्षेत्रगते लग्ने सभौमे, ज्ञशुक्रमन्दसंयुक्ते (तदा) सः नरः धनेशसमः (भवति) ॥२३॥

मंगल की राशि (मेष, वृश्चिक) के लग्न में यदि मंगल के साथ बुध, शुक्र और शनि स्थित हो तो जातक धनपति होता है ॥२३॥

गुरुभे गुरुसंयुक्ते जन्मलग्नगते सति।
चन्द्राङ्गारयुतो यस्य तस्य लक्ष्मीरचञ्चला ॥२४॥

अन्वयः—यस्य गुरुभे गुरुसंयुक्ते जन्मलग्नगते चन्द्राङ्गारयुते सति (तदा) तस्य लक्ष्मीः अचञ्चला (भवति) ॥२४॥

धनु या मीन राशिगत बृहस्पति यदि चन्द्रमा और मंगल के साथ स्थित हो तो इस योग में उत्पन्न जातक का धन स्थिर होता है ॥२४॥

कन्यामिथुनयोर्लग्ने सबुधे यस्य जन्मनि।
संयुते शुक्रमन्दाभ्यां दृष्टे वा धनिको भवेत् ॥२५॥

अन्वयः—यस्य जन्मनि कन्यामिथुनयोः लग्ने सबुधे शुक्रमन्दाभ्यां संयुते वा दृष्टे (तदा) धनिकः भवेत् ॥२५॥

मिथुन या कन्या राशि के लग्न में बुध के साथ शुक्र और शनि स्थित हो अथवा उक्त बुध इनसे देखा जाता हो तो जातक धनवान होता है ॥२५॥

शुक्रराशिगते लग्ने ससिते यदि जन्मनि।
चन्द्रजादित्यजाभ्यां तु युते दृष्टे धनाधिपः ॥२६॥

अन्वयः—यदि जन्मनि ससिते शुक्रराशिगते लग्ने, तु चन्द्रजादित्यजाभ्यां युते दृष्टे (तदा) धनाधिपः स्यात् ॥२६॥

स्वराशि का शुक्र यदि जन्मलग्न में बुध और शनि के साथ स्थित हो अथवा उनसे दृष्ट हो, तो जातक धनपति होता है ॥२६॥

दारिद्र्ययोग

त्रिकोणपतिसम्बन्धी यो यो वित्तप्रदो ग्रहः।
स षडष्टव्ययाधीशैर्युतो धनविनाशकः ॥२७॥

अन्वयः—त्रिकोणपतिसम्बन्धी यः यः वित्तप्रदः ग्रहः स (यदि) षडष्टव्याधीशैः युतः (तदा) धनविनाशकः (स्यात्) ॥२७॥

धनदाता ग्रह यदि त्रिकोणेश के साथ त्रिकेश (६,८,१२ वें भाव के स्वामी) के साथ युत हों तो यह योग धन का विनाशक होता है ॥२७॥

लग्नगे निधनाधीशे निधने लग्नपे यदि।
मारकग्रहसंयुक्ते जातो भवति निर्धनः ॥२८॥

अन्वयः—यदि मारकग्रहसंयुक्ते निधनाधीशे लग्नगे (तथा) लग्नपे निधेन (गते तदा) जातः निर्धनः भवति ॥२८॥

यदि लग्नेश अष्टम भाव में और अष्टमेश लग्न में स्थित होकर मारक ग्रहों से संयुक्त हों तो जातक निर्धन होता है ॥२८॥

रिपुभावपतौ लग्ने लग्नेशे रिपुभावगे।
मारकस्वामिना दृष्टे युते वा निर्धनो भवेत् ॥२९॥

अन्वयः—रिपुभावपतौ लग्ने, लग्नेशे रिपुभावगे, मारकस्वामिना दृष्टे वा युते (तदा नरः) निर्धनो भवेत् ॥२९॥

यदि लग्नेश छठे भाव में और छठे भाव का स्वामी लग्न में स्थित हो और मारकेश से युत या दृष्ट हो तो जातक दरिद्र होता है ॥२९॥

चन्द्रादित्यौ यदा लग्ने वाङ्गपे निधनालये।
मारकेण युते दृष्टे नरो भवति निर्धनः ॥३०॥

अन्वयः—यदा चन्द्रादित्यौ लग्ने वा अङ्गपे निधनालये (तथा) मारकेण युते दृष्टे (तदा) नरः निर्धनः भवति ॥३०॥

सूर्य और चन्द्रमा यदि लग्न में स्थित हों अथवा लग्नेश अष्टम भाव में मारक ग्रह से युत या दृष्ट हो तो जातक दरिद्र होता है ॥३०॥

ऋणग्रस्तता योग

यदाङ्गनाथस्त्रिकभावनाथैर्युतेक्षितः पापयुतोऽथवा स्यात्।
पुत्रेश्वरेणापि युते विलग्ने शुभैरदृष्टे च भवेदृणी सः ॥३१॥

अन्वयः—यदाङ्गनाथः, त्रिकभावनाथैः युतेक्षितः अथवा पापयुतः शुभैः अदृष्टे च स्यात् (तदा) पुत्रेश्वरेणापि युते विलग्ने सः (नरः) ऋणी भवेत् ३१॥

यदि लग्नेश त्रिकेश से युत हो अथवा दृष्ट हो अथवा पाप ग्रहों से युत हो और शुभग्रह की दृष्टि से हीन हो तो जातक पूर्वकथित पञ्चमेश की लग्न में युति से उत्पन्न धनयोग के होने पर भी ऋणग्रस्त होता है ॥३१॥

अस्तारिनीचत्रिकभावगे वा लग्नेश्वरे मारकनाथयुक्ते ।
भाग्याधिपेनाथ शुभैरदृष्टे भवेदृणीशो मनुजेश्वरोऽपि ॥३२॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले नानायोगनिरूपणाध्यायश्चतुर्दशः ।।१४।।

अन्वयः—(यदा) मारकनाथयुक्ते भाग्याधिपेन अथवा शुभैः अदृष्टे लग्नेश्वरे अस्तारिनीचत्रिकभावगे वा (तदा) मनुजेश्वरः अपि ऋणीशो भवेत् ॥३२॥

यदि लग्नेश सूर्यसान्निध्य से अस्त हो, शत्रु या नीच राशिगत हो अथवा त्रिक् (तृतीय, षष्ठ, द्वादश) भावों में से किसी में मारकेश के साथ स्थित हो और उस पर भाग्येश अथवा शुभग्रह की दृष्टि न हो तो जातक राजा होने पर भी ऋणग्रस्त होता है ॥३२॥

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का चतुर्दश अध्याय समाप्त हुआ ॥१४॥

•

अथ पञ्चदशोऽध्यायः

भावविचारः

तनुभावविचार

अष्टारिव्ययगो यस्य लग्नस्वामी खलैर्युतः ।
सुखं निहन्ति तस्याशु सर्वभावेष्वयं विधिः ॥१॥

अन्वयः—यस्य लग्नस्वामी खलैः युतः अष्टारिव्ययगः, तस्य सुखं आशु निहन्ति, अयं विधिः सर्वभावेषु (भवन्ति) ॥१॥

दो या तीन पाप ग्रह से युक्त लग्नेश यदि छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हों, तो वे जातक के सुखों का नाश करते हैं। यह नियम जन्माङ्ग के अन्य भावों पर भी लागू होता है ॥१॥

लग्नपश्चन्द्रराशीशो नीचस्तु रिपुराशिगः ।
विना स्वर्क्षं त्रिकस्थश्चेद्बलहीनो ग्रहो भवेत् ॥२॥

अन्वयः—(यदा) लग्नपः चन्द्रराशीशः ग्रहः नीचः रिपुराशिगः (तथा) विना स्वर्क्षं त्रिकस्थश्चेत् (तदा) बलहीनः भवेत् ॥२॥

लग्न अथवा चन्द्रराशि के स्वामी यदि अपनी नीच राशि में, शत्रुराशि में, स्वराशि के अतिरिक्त अन्य किसी राशि का होकर त्रिक् (छठे, आठवें या बारहवें भाव) में स्थित हो तो वह जातक बलहीन होता है ॥२॥

दुष्टस्थानगते यस्य चन्द्रलग्नेश्वरे यदि ।
कार्श्यं गदभयं नित्यं वितनोति रिपूदयम् ॥३॥

अन्वयः—यस्य चन्द्रलग्नेश्वरे यदि दुष्टस्थानगते (तदा तस्य) नित्यं कार्श्यं गदभयं (तथा) रिपूदयं वितनोति ॥३॥

यदि लग्नेश अथवा जन्मराशीश (चन्द्रराशीश) दुष्ट स्थान (अपनी नीच राशि में, शत्रुराशि में अथवा स्वराशि से भिन्न राशि का होकर त्रिक् में अथवा सूर्य- सान्निध्य में अस्त हो) में स्थित हो तो जातक को दौर्बल्य, रोगभय और शत्रुओं की वृद्धि आदि अनिष्ट फल देता है ॥३॥

निजोच्चे निजभे वर्गे स्वकीये लग्नपे यदि ।
दीर्घायुः सुखसन्तृप्तो बली भोगी प्रजायते ॥४॥

अन्वयः—यदि लग्नपे निजोच्चे, निजभे (तथा) स्वकीये वर्गे (तदा) दीर्घायुः, सुखसन्तृप्तः, बली, भोगी प्रजायते ॥४॥

यदि लग्नेश अपनी उच्च राशि में, अपनी राशि में अथवा अपनी राशि के वर्ग में स्थित हो तो जातक दीर्घायु, सुखी, बलवान और समस्त भोगों से युक्त होता है ॥४॥

धनभाव-विचार

धनेशः शुक्रसंयुक्तोऽथवा शुक्रात्त्रिके भवेत्।
सम्बन्धो लग्ननाथेन नेत्रयोः पीडनं भवेत् ॥५॥

अन्वयः—धनेशः शुक्रसंयुक्तः अथवा शुक्रात् त्रिके (तथा) लग्ननाथेन सम्बन्धः भवेत् (तदा) नेत्रयोः पीड़नं भवेत् ॥५॥

धनभाव (द्वितीय भाव) का स्वामी यदि शुक्र के साथ युत हो, अथवा शुक्र स्थित राशि से छठी, आठवीं या बारहवीं राशि में स्थित होकर लग्नेश से सम्बन्ध करता हो तो जातक नेत्ररोगी होता है ॥५॥

चन्द्रादित्यौ धने स्यातां निशान्धो मनुजो भवेत्।
अर्कलग्नपकोशेशाः सुखाधिपतिना युताः ॥६॥
मात्रादीनां प्रकुर्वन्ति मन्दतां नेत्रयोरपि।
उच्चगो निजगेहस्थो ग्रहो नैवात्र दोषकृत् ॥७॥

अन्वयः—(यदि) धने चन्द्रादित्यौ स्यातां (तदा) मनुजः निशान्धः भवेत् (अथ च) अर्कलग्नपकोशेशाः सुखाधिपतिना युताः (तदा) मात्रादीनामपि नेत्रयोः मन्दतां प्रकुर्वन्ति, (यदोक्तः) ग्रहः उच्चगः, निजगृहस्थः (तदा) अत्र दोषकृत् नैव (भवति) ॥६-७॥

जिसके जन्माङ्ग के द्वितीय भाव में सूर्य के साथ चन्द्रमा संयुक्त हो तो वह व्यक्ति नेत्ररोगी (विशेषकर रात्र्यन्ध) होता है। सूर्य, लग्नेश और द्वितीयेश के साथ यदि चतुर्थेश संयुक्त हो तो जातक की माता नेत्ररोगी होती है। उक्त ग्रहों के साथ यदि तृतीयेश संयुक्त हों तो भाई को एवं यदि पञ्चमेश संयुक्त हो तो पुत्रों आदि को नेत्ररोग देता है। किन्तु यदि स्वराशि अथवा अपनी उच्च राशिगत होकर योगकारक ग्रह बलवान हों तो उक्त दोषकारक नहीं होते ॥६-७॥

गुरुवाग्भवनाधीशौ त्रिकस्थानगतौ यदा।
मूकतां कुरुतोऽप्येवं पितृमातृगृहेश्वरः ॥८॥
ताभ्यां युतस्त्रिकस्थाने तेषां मूकत्वमादिशेत्।
बलाबलविवेकेन जातकज्ञैर्विशेषतः ॥९॥

अन्वयः—यदा गुरुवाग्भवनाधीशौ त्रिकस्थानगतौ (तदा) मूकतां कुरुतः, एवं पितृमातृगृहेश्वरः ताभ्यां (गुरुवाग्भवनाधीशाभ्यां) युतस्त्रिकस्थाने (गतस्तदा) तेषां मूकत्वं आदिशेत्, जातकज्ञैः विशेषतः बलाबलविवेकेन (फलम्) आदिशेत् ॥८-९॥

बृहस्पति और वाग्भवनाधीश (द्वितीय भावाधिपति) यदि लग्न से छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो जातक मूक या गूँगा होता है। यह योग यदि मातृ-पितृ

आदि भावों के स्वामी के साथ हो अर्थात् दशम भाव के स्वामी यदि दशम से द्वितीय (लग्न से एकादश) भाव, दशम से अष्टम भाव (लग्न से पञ्चम भाव) अथवा दशम से द्वादश (लग्न से नवम भाव) में बृहस्पति के साथ युत हो तो पिता को; चतुर्थेश के साथ उक्त योग हो तो माता को मूकता या वाणीदोष देता है। दैवज्ञ को योगकारक ग्रहों के बलाबल के अनुसार ही फल कहना चाहिए ॥८-९॥

धनाधिपो माननवायभावे बली यदा तिष्ठति जन्मकाले।
रमा विहारालयवासिनी वा निजोच्चमित्रालयगो जनानाम् ॥१०॥

अन्वयः—जन्मकाले बली धनाधिप: माननवायभावे यदि तिष्ठति वा निजोच्च-मित्रालयग: (तदा) जनानां विहारालयवासिनी रमा (भवति) ॥१०॥

द्वितीय भाव का स्वामी यदि जन्माङ्ग में बलवान होकर दशम, नवम या एकादश भाव में स्थित हो, स्वगृह या स्वोच्च या मित्र की राशि में स्थित हो तो जातक के आवास में लक्ष्मी सदा निवास करती हैं ॥१०॥

तृतीय भाव-विचार

सहजे सहजाधीशे षडादित्रयगेऽपि वा।
सहजेऽपि विशेषेण भ्रातुः सौख्यं न जायते ॥११॥

अन्वयः—सहजाधीशे सहजे वा षडादित्रयगेऽपि (तदा) सहजेऽपि विशेषेण भ्रातु: सौख्यं न जायते ॥११॥

सहज भाव का स्वामी सहज भाव में, छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो जातक को भ्रातृसुख नहीं होता ॥११॥

कोई भी भाव यदि अपने स्वामी से युत होता है, तब उस भाव की वृद्धि आचार्यों ने कही है; किन्तु उक्त वचन इस सिद्धान्त के विपरीत लगता है। भ्रातृसुख के अभाव के दो अर्थ हो सकते हैं—१. भाइयों का अभाव और २. भाइयों के रहते हुए भी परस्पर विवाद के कारण भाइयों से सहयोग का अभाव। तृतीय भाव में तृतीयेश की स्थिति भाइयों की संख्या में वृद्धि अथवा उनके आर्थिक-सामाजिक स्थिति को समुन्नत बना सकती है; किन्तु जातक को भाइयों की अभिवृद्धि का लाभ नहीं मिल सकेगा। उक्त श्लोक का यही भाव है।

सहोत्थभावेशकुजौ सपापौ पापालये वा भवतो जनस्य।
उत्पाद्य सद्यो निहतः सहोत्थानितीरितं जातकतत्त्वविज्ञैः ॥१२॥

अन्वयः—यस्य सहोत्थभावेशकुजौ सपापौ वा पापालये भवत: (तदा) जनस्य उत्पाद्य सहोत्थान् सद्य: निहत: इति जातकतत्त्वविज्ञै: ईरितम् ॥१२॥

तृतीय भाव का स्वामी और मंगल यदि पापग्रहों से युत हो अथवा पापग्रह की राशि में स्थित हो तो जातक के भाई उत्पन्न होने के बाद तत्काल मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। ऐसा जातकतत्त्वविदों का कहना है ॥१२॥

स्त्रीखेटः सहजाधीशः शुक्रो वाथ निशाकरः ।
तत्रगो भगिनीं दत्ते भ्रातरं पुरुषग्रहः ॥१३॥

अन्वयः—सहजाधीशः स्त्रीखेटः वा शुक्रः अथ निशाकरः तत्रगः (तदा) भगिनीं दत्ते (यदि) पुरुषग्रहः सहजाधीशः (तथा पुरुषग्रहस्तत्र गतस्तदा) भ्रातरं दत्ते ॥३॥

यदि तृतीय भाव का स्वामी स्त्रीग्रह (चन्द्रमा या शुक्र) हो और तृतीय भावस्थ हो तो जातक को बहनों का सुख होता है। यदि तृतीय भावाधिपति पुरुषग्रह हो तो भाइयों का जन्म होता है ॥१३॥

चतुर्थ भाव-विचार

सुखपतिः सुखगस्तनुनाथयुग्जनयति प्रवरालयमङ्गिनाम् ।
त्रिकगतो विपरीतमिहादिभिः सुखजनुःपतिरेव तथा बुधैः ॥१४॥

अन्वयः—(यदा) सुखपतिः तनुनाथयुक् सुखगः (तदा) अङ्गिनां प्रवरालयं जनयति, (यदि) त्रिकगतः (तदा) विपरीतं तथा सुखजनुः पतिरेव इहादिभिः बुधैः (कथितम्) ॥१४॥

चतुर्थ भाव का स्वामी चतुर्थ भाव में यदि लग्नेश के साथ स्थित हो तो जातक को विशाल भवन का सुख होता है; किन्तु यदि वे दोनों छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हों तो विपरीत फल होता है। चतुर्थेश और लग्नेश के योग से ऐसा ही फल आचार्यों ने कहा है ॥१४॥

सुखाधीशे जीवे सुखनिवहचिन्ता भृगुसुते
विभूषायोषाङ्गप्रवरतुरगाणामपि बुधे ।
अगौ मन्दे नीचोद्भवसुखमतेरेव दिनपे
पितुश्चन्द्रे मातुः क्षितिनिकरचिन्ता क्षितिसुते ॥१५॥

अन्वयः—जीवे सुखाधीशे (तदा) सुखनिवहचिन्ता भृगुसुते बुधेऽपि (सुखाधीशे तदा) विभूषायोषाङ्गप्रवरतुरगाणां (चिन्ता) अगौ मन्दे (तदा) नीचोद्भवसुखमतेरेव दिनपे पितुः, चन्द्रे मातुः (तथा यदि) क्षितिसुते (सुखाधीशे तदा) क्षितिनिकरः चिन्ता (भवति) ॥१५॥

यदि चतुर्थ भाव का स्वामी बृहस्पति हो तो जातक सुख की चिन्ता से ग्रस्त होता है। यदि बुध या शुक्र चतुर्थेश हो तो आभूषण, स्त्री, शरीर और घोड़े आदि वाहन की चिन्ता से, यदि शनि या राहु चतुर्थेश हो तो नीच व्यक्तियों से सुख की, सूर्य हो तो पिता की, चन्द्रमा हो तो माता की और यदि भौम चतुर्थेश हो तो भू-भवनादि की चिन्ता से जातक ग्रस्त रहता है ॥१५॥

त्रिकोणे वाहनाधीशे केन्द्रे च बलसंयुते ।
निजोच्चादिपदे नूनं वाहनं नूतनं भवेत् ॥१६॥

अन्वयः—(यदा) बलसंयुते निजोच्चादिपदे वाहनाधीशे त्रिकोणे, केन्द्रे (गते तदा) नूतनं वाहनं नूनं भवेत् ॥१६॥

यदि चतुर्थ भाव का स्वामी बलवान होकर त्रिकोण या केन्द्रस्थ हो या स्वराशि, स्वोच्च राशि या मित्रराशि में स्थित हो तो जातक को नवीन वाहन का सुख प्राप्त होता है ॥१६॥

पञ्चम भाव-विचार

अनपत्यता योग

लग्नाधीशे कुजक्षेत्रे पुत्रभावपतावरौ।
म्रियते प्रथमापत्यं ततोऽपि न सुतोद्गमः ॥१७॥

अन्वयः—(यदा) लग्नाधीशे कुजक्षेत्रे (तथा) पुत्रभावपतौ अरौ (तदा) प्रथमापत्यं म्रियते ततोऽपि सुतोद्गमः न (भवेत्) ॥१७॥

यदि लग्न का स्वामी मंगल की राशि में और पञ्चम भाव का स्वामी षष्ठ भाव में स्थित हो तो जातक की प्रथम सन्तान उत्पन्न होकर विनष्ट हो जाती है और उसके बाद पुत्र की प्राप्ति नहीं होती ॥१७॥

काकवन्ध्या योग

षडादित्रयगे नीचे पुत्रेशे पापसंयुते।
काकवन्ध्यापतिस्तत्र केतुचन्द्रसुतौ यदा ॥१८॥

अन्वयः—(यदा) पापसंयुते पुत्रेशे षडादित्रयगे (वा) नीचे (गते तथा) तत्र केतुचन्द्रसुतौ (तदा) काकवन्ध्यापतिः (भवति) ॥१८॥

पञ्चम भाव का स्वामी यदि पापग्रहों के साथ अपनी नीच राशि में, छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तथा पञ्चम भाव बुध और केतु से आक्रान्त हो तो जातक की पत्नी काकवन्ध्या होती है ॥१८॥

तदीशो नीचगो यत्र पुत्रभावं न पश्यति।
तत्रैव बुधमन्दौ वा काकवन्ध्यापतिर्भवेत् ॥१९॥

अन्वयः—यत्र तदीशः नीचगः वा पुत्रभावं न पश्यति (तथा) बुधमन्दौ तत्रैव (गतौ तदा) काकवन्ध्यापतिः भवेत् ॥१९॥

पञ्चम भाव का स्वामी यदि नीच राशि में स्थित हो और पञ्चम भाव पर उसकी दृष्टि न पड़ती हो तथा पञ्चम भाव में यदि बुध और शनि स्थित हो तो जातक काकवन्ध्या स्त्री का पति होता है ॥१९॥

कष्ट से सन्तानलाभ योग

धर्माधीशोऽङ्गगो नीचे सुतेशो यदि जन्मनि।
केतुज्ञौ पञ्चमे स्यातां पुत्रं कष्टाद्विनिर्दिशेत् ॥२०॥

अन्वयः—जन्मनि यदि धर्माधीशोऽङ्गगः, सुतेशः नीचे (तथा) केतुज्ञौ पञ्चमे स्यातां (तदा) कष्टात् पुत्रं विनिर्दिशेत् ॥२०॥

नवम भाव का स्वामी यदि लग्न में, पञ्चम भाव का स्वामी नीच राशि में स्थित हो तथा केतु के साथ बुध पञ्चम भाव में स्थित हो तो जातक को अत्यन्त कष्ट से अर्थात् अनुष्ठानादि से पुत्रलाभ होता है ॥२०॥

सन्तान योग

पञ्चमाधिपतिः केन्द्रे त्रिकोणे वा शुभैर्युतः ।
तदा पुत्रसुखं सद्यो विलोमेन विलम्बतः ॥२१॥

अन्वयः—(यदा) शुभैर्युतः पञ्चमाधिपतिः केन्द्रे त्रिकोणे वा (गतः) तदा सद्यः पुत्रसुखं, विलोमेन विलम्बतः (भवति) ॥२१॥

यदि पञ्चमाधिपति केन्द्र या त्रिकोण भावों में शुभ ग्रहों के साथ स्थित हो अथवा दृष्ट हो तो शीघ्र सन्तानसुख होता है। इसके विपरीत रहने पर सन्तानप्राप्ति में विलम्ब होता है ॥२१॥

सन्तानभवनाधीशो जन्मलग्नाधिपस्तथा ।
नरराशौ तदा पुत्रः स्त्रीराशौ कन्यका भवेत् ॥२२॥

अन्वयः—(यदा) सन्तानभवनाधीशः, तथा जन्मलग्नाधिपः नरराशौ (गतस्तथा विषमनवांशगः) तदा पुत्रः भवेत् (यदा) स्त्रीराशौ (गतस्तदा) कन्यका भवेत् ॥२२॥

पञ्चम भाव का स्वामी और लग्नेश दोनों यदि पुरुषराशि (विषम राशि) में स्थित हों तो पुत्र और यदि स्त्रीराशि (समराशि) में स्थित हों तो कन्याओं का लाभ होता है ॥२२॥

उक्त योग में दोनों ग्रहों की मिश्रित स्थिति हो तो पुत्र और कन्या दोनों का सुख होता है।

षष्ठ भाव-विचार

रोगेशो लग्नगो यस्य निधनस्थोऽपि जन्मनि ।
व्रणोदयस्तु सर्वाङ्गे सपापो न व्रणं दिशेत् ॥२३॥

अन्वयः—यस्य जन्मनि रोगेशः लग्नगः निधनस्थोऽपि (वा तस्य) सर्वांगे व्रणोदयः, तु सपापः (तदा) न व्रणं दिशेत् ॥२३॥

जन्माङ्ग में यदि षष्ठेश लग्न में या आठवें भाव में स्थित हो तो उसका समस्त शरीर व्रणादि से भरा होता है अर्थात् व्यक्ति व्रण से पीड़ित रहता है। यदि रोगेश के साथ अष्टम भाव में कोई पापग्रह स्थित हो तो व्रणादि नहीं होते ॥२३॥

एवं तातादिभावेशास्तत्तत्कारकसंयुताः ।
व्रणाधिपयुताश्चापि षडादित्रयभावगाः ॥२४॥

तेषामपि व्रणं वाच्यं जातकज्ञैः सुकोविदैः।
कारकस्य दशाकाले व्रणमागन्तुकं दिशेत्॥२५॥

अन्वयः—एवं तातादिभावेशाः तत्तत्कारकसंयुताः व्रणाधिपयुताश्चापि षडादित्रयभावगाः (तदा) तेषामपि व्रणं जातकज्ञैः सुकोविदैः वाच्यम्, कारकस्य दशाकाले व्रणम् आगन्तुकं दिशेत्॥२४-२५॥

इसी प्रकार माता-पिता आदि भावों के स्वामी और उनके कारक ग्रह यदि रोगेश के साथ छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हों, तो श्रेष्ठ ज्योतिषी को माता, पिता आदि को व्रणपीड़ा कहनी चाहिए। योगकारक ग्रहों की महादशान्तर्दशा में व्रणोत्पत्ति होती है॥२४-२५॥

शिरोदेशे भानुर्मुखपरिसरे शीतगुरलं
धरासूनुः कण्ठे जनयति बुधो नाभिनिकटे।
गुरुर्नासामध्ये पदनयनयोरेव भृगुजः
शनी राहुः केतुर्व्रणमुदरभागे जनिमताम्॥२६॥

अन्वयः—जनिमतां (पूर्वोक्तयोगकारकः) भानुः शिरोदेशे, शीतगुः मुखपरिसरे, धरासूनुः कण्ठे, बुधः नाभिनिकटे, गुरुः नासामध्ये, भृगुजः पदनयनयोः (तथा) शनी राहुः केतुः उदरभागे अलं व्रणं जनयति॥२६॥

योगकारक ग्रह (रोगेश) यदि सूर्य हो तो शिरःप्रदेश में, चन्द्रमा हो तो मुख में, भौम षष्ठेश हो तो कण्ठ में, बुध षष्ठेश हो तो नाभिप्रदेश में, बृहस्पति षष्ठेश हो तो नासापुटों में और यदि योगकारक ग्रह शनि, राहु या केतु हों तो उदरभाग में व्रणपीड़ा होती है॥२६॥

लग्नेशो यदि भौमभे बुधयुतो रोगं मुखे जन्मिनां
रोगाङ्गाधिपती यदा कुजबुधौ चन्द्रेण वा राहुणा।
मन्देनापि युतौ प्रयच्छत इति प्रायोऽङ्गगो रात्रिपो
युक्तो वा तमसा सितं च शनिना कुष्ठं तदा श्यामलम्॥२७॥

अन्वयः—यदि जन्मिनां बुधयुतः लग्नेशः भौमभे (तदा) मुखे रोगं, यदा रोगाङ्गाधिपती कुजबुधौ, चन्द्रेण राहुणा वा मन्देनापि युतौ (तदा कुष्ठादि) रोगं प्रयच्छतः, प्रायः तमसा युक्तः रात्रिपः अङ्गगः तदा सितं कुष्ठं (यदि) शनिना युक्तः (अङ्गगः) तदा श्यामलकुष्ठमिति (ददति)॥२७॥

भौम की राशि में यदि लग्नेश बुध के साथ संयुक्त हो तो जातक के मुख में रोग उत्पन्न करते हैं। मंगल और बुध क्रमशः यदि रोगेश और लग्नेश हों तथा चन्द्रमा, राहु अथवा शनि से युक्त हों तो ये शरीर में कुष्ठ या कुष्ठ के समान व्याधि उत्पन्न करते हैं। उक्त योग में यदि लग्न में चन्द्रमा राहु से युक्त हो तो श्वेत कुष्ठ एवं यदि शनि और राहु लग्न में स्थित हो तो श्याम कुष्ठ होता है॥२७॥

सप्तम भाव-विचार

विना स्वर्क्षं कलत्रेशस्त्रिकस्थानगतो यदि ।
रोगिणीं तरुणीं दत्ते तथा तुङ्गपदं विना ॥२८॥

अन्वयः—यदि कलत्रेशः स्वर्क्षं विना तथा तुङ्गपदं विना त्रिकस्थानं गतः (तदा) रोगिणीं तरुणीं दत्ते ॥२८॥

यदि सप्तम भाव का स्वामी छठे, आठवें या बारहवें भाव में, स्वराशि से भिन्न राशि में और अपनी उच्च राशि से इतर राशि के नवमांश में हो तो जातक को रोगिणी स्त्री प्राप्त होती है ॥२८॥

जायास्थानगते शुक्रे कामी भवति मानवः ।
पापभे पापसंयुक्ते कवौ नारीसुखोज्झितः ॥२९॥

अन्वयः—(यदा) शुक्रे जायास्थानगते (तदा) मानवः कामी भवति, कवौ पापभे पापसंयुक्ते (तदा) नारीसुखोज्झितः भवति ॥२९॥

जिसके जन्माङ्ग के सप्तम भाव में शुक्र स्थित हो, वह व्यक्ति अत्यन्त कामी होता है। यदि शुक्र पापग्रह की राशि में पापग्रहों के साथ संयुक्त हो तो जातक स्त्रीसुख से वञ्चित होता है ॥२९॥

चतुर्थे महिलाधीशे लग्ने लग्नाधिपे यदा ।
कलत्रे वा कुटुम्बे वा व्यभिचारी नरो भवेत् ॥३०॥

अन्वयः—यदा महिलाधीशे चतुर्थे, लग्नाधिपे लग्ने वा कलत्रे वा कुटुम्बे (गते तदा) नरः व्यभिचारी भवेत् ॥३०॥

सप्तम भाव का स्वामी यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो तथा लग्नेश लग्न में अथवा सप्तम या द्वितीय भाव में स्थित हो तो जातक व्यभिचारी होता है ॥३०॥

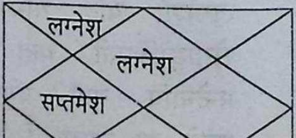

व्यभिचारी योग

यावन्तो निधने खेटा निजस्वामिसमीक्षिताः ।
तावन्तोऽपि विवाहाः स्युः प्राणिनां कथिता बुधैः ॥३१॥

अन्वयः—निजस्वामी समीक्षिता यावन्तः खेटाः निधने (स्थिताः) तावन्तोऽपि विवाहाः प्राणिनां स्युः (इति) बुधैः कथिताः ॥३१॥

अष्टमाधिपति से दृष्ट जितने ग्रह अष्टम भाव में स्थित हों, जातक के उतने ही विवाह पूर्वाचार्यों ने कहे हैं ॥३१॥

जायाधीशे निजक्षेत्रे निजोच्चे कोणकण्टके।
शुभग्रहैर्युते दृष्टे विवाहः सत्वरं भवेत्॥३२॥

अन्वयः—शुभग्रहै: युते दृष्टे जायाधीशे निजक्षेत्रे (वा) निजोच्चे कोणकण्टके (तदा) सत्वरं विवाह: भवेत्॥३२॥

स्वराशि अथवा अपनी उच्च राशि का सप्तमेश यदि त्रिकोण अथवा केन्द्रभावों में स्थित हो तो जातक का विवाह शीघ्र होता है॥३२॥

अष्टम भाव-विचार

अष्टमाधिपतिः पापैर्युतो लग्नेश्वरोऽपि चेत्।
करोत्यल्पायुषं जातं शुभेक्षणविवर्जितः॥३३॥

अन्वयः—शुभेक्षणविवर्जित: पापै: युत: अष्टमाधिपति: लग्नेश्वरोऽपि चेत् (तदा) जातं अल्पायुषं करोति॥३३॥

अष्टम भाव का स्वामी और लग्नाधिपति यदि पापग्रहों से संयुक्त हो और किसी शुभग्रह की दृष्टि उन पर न हो तो जातक अल्पायु होता है॥३३॥

तमःशनिभ्यां निधनाधिनाथः पापैर्युतो हीनबलोऽस्तगो वा।
अल्पायुषं जातकमेव सद्यः करोति नैवोच्चनिजर्क्षगश्चेत्॥३४॥

अन्वयः—चेत् निधनाधिनाथ: नैव उच्चनिजर्क्षग: तम:शनिभ्यां युत: वा पापै: युत: वा हीनबल: अस्तग: (तदा) जातकं सद्य एव अल्पायुषं करोति॥३४॥

अष्टम भाव का स्वामी यदि अपनी राशि या अपनी उच्च राशि से भिन्न राशि में राहु और शनि से या पापग्रहों से संयुक्त होकर अथवा सूर्य-सान्निध्य में अस्त होकर बलहीन हो तो जातक अल्पायु होता है॥३४॥

अष्टमस्थे रवौ वह्नेश्चन्द्रे तु जलयोगतः।
करवालात्कुजे ज्ञेयं मरणं ज्वरतो बुधे॥३५॥
गुरौ त्रिदोषतः शुक्रे क्षुधया तृषया शनौ।
चरस्थिरद्विःस्वभावैः परदेशे गृहे पथि॥३६॥

अन्वयः—रवौ अष्टमस्थे वह्नेः, तु चन्द्रे जलयोगतः, कुजे करवालात्, बुधे ज्वरतः, गुरौ त्रिदोषतः, शुक्रे क्षुधया, शनौ तृषया मरणं ज्ञेयम्, (तथैव) चरस्थिरद्विस्वभावैः परदेशे, गृहे (तथा) पथि मरणं ज्ञेयम्॥३५-३६॥

यदि अष्टम भाव में सूर्य स्थित हो तो अग्नि से, चन्द्रमा हो तो जल के योग से, मंगल स्थित हो तो तलवार अथवा शस्त्राघात से, बुध हो तो ज्वर से, बृहस्पति स्थित हो तो त्रिदोष के प्रकोप से, शुक्र स्थित हो तो भूख से और यदि शनि स्थित हो तो प्यास के कारण जातक की मृत्यु होती है। चर-स्थिर-द्विस्वभाव राशि में उपर्युक्त ग्रहों की स्थिति के अनुसार जातक की मृत्यु क्रमशः परदेश, स्वस्थान या मार्ग में होती है॥३५-३६॥

केन्द्रे कोणेऽष्टमाधीशे तुङ्गादिपदगे तदा ।
दीर्घायुरुदितं पूर्वैर्व्यत्यये हीनमङ्गिनाम् ।।३७।।

अन्वयः—(यदा) अष्टमाधीशे तुङ्गादिपदगे केन्द्रे कोणे (गते) तदा अङ्गिनां दीर्घायुः, व्यत्यये हीनं पूर्वैः उदितम् ।।३७।।

अष्टमाधिपति यदि स्वराशि या स्वोच्च में स्थित होकर केन्द्र अथवा के त्रिकोण-गत हो तो पूर्वाचार्यों के मतानुसार जातक दीर्घजीवी होता है। इससे विपरीत स्थिति में अर्थात् स्वराशि और स्वोच्च राशि से इतर राशि का अष्टमेश यदि त्रिकोण त्रिकोण-केन्द्रेतर भावों में स्थित हो तो जातक हीन या अल्पायु होता है ।।३७।।

नवम भाव-विचार

लग्नादिन्दोर्नवमभवनं भाग्यमार्यैः प्रदिष्टं
भाग्यं तस्मात्प्रथमममुतः संविचिन्त्यं प्रयत्नात् ।
युक्तं दृष्टं जननसमये स्वामिना सौम्यखेटै-
र्जन्तोर्भाग्यं प्रसरति विधोरेव शौक्लीकलेव ।।३८।।

अन्वयः—जननसमये लग्नात् इन्दोः नवमभवनं भाग्यं आर्यैः प्रदिष्टं तस्मात्-प्रथमम् अमुतः प्रयत्नात् भाग्यं संविचिन्त्यम्, (यदा भाग्यस्थानः) स्वामिना सौम्यखेटैः (च) युक्तं दृष्टं (तदा) विधोः एव शौक्ली कलेव जन्तोः भाग्यं प्रसरति ।।३८।।

लग्न और चन्द्रमा से नवम भाव को आचार्यों ने भाग्यस्थान कहा है। अतः सर्वप्रथम इस नवम भाव से भाग्य का विचार करना चाहिए।

जन्म के समय यदि नवम भाव अपने स्वामी अथवा शुभग्रहों से युत या दृष्ट हो तो उस जातक का भाग्य शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की कला के समान वृद्धि प्राप्त करता है ।।३८।।

सहोत्थपुत्राङ्गगतो ग्रहश्चेद्भाग्यं प्रपश्येद्यदि वा सवीर्यः ।
हिरण्यमाली खलु भाग्यशाली प्रसूतिकाले यदि यस्य जन्तोः ।।३९।।

अन्वयः—यस्य प्रसूतिकाले यदि सहोत्थपुत्राङ्गगतः ग्रहः सवीर्यः यदि वा भाग्यं प्रपश्येत् (तदा) जन्तोः हिरण्यमाली खलु भाग्यशाली भवेत् ।।३९।।

जिसके जन्म के समय में बलवान ग्रह यदि तृतीय, पञ्चम या लग्न में स्थित हो और भाग्यभाव को देखते हों तो वह व्यक्ति स्वर्ण की माला धारण करने वाला परम भाग्यशाली होता है ।।३९।।

निजोच्चभे पुण्यगृहे नभोगो बलिर्यदा तिष्ठति जन्मकाले ।
स पुण्यशाली नवरत्नमाली धराधिपो राजकुलप्रसूतः ।।४०।।

अन्वयः—यदा जन्मकाले निजोच्चभे पुण्यगृहे बली नभोगः तिष्ठति स पुण्य-शाली, नवरत्नमाली (स्याद्यदि) राजकुलप्रसूतः (तदा) धराधिपः (स्यात्) ।।४०।।

जिसके जन्मकाल में यदि कोई ग्रह अपनी उच्च राशि का होकर नवम भाव में स्थित हो तो जातक यदि राजकुल में उत्पन्न हुआ हो तो नवरत्नों की माला धारण करने वाला राजा होता है ।।४०।।

जीवज्ञशुक्रा नवमे बलिष्ठाः सुतेशदृष्टा यदि जन्मकाले।
स पुण्यकर्त्ता नृपतेरमात्यो नृपालजातो नरपालवर्यः ।।४१।।

अन्वयः—यदि जन्मकाले बलिष्ठाः जीवज्ञशुक्राः नवमे (तदा) स पुण्यकर्त्ता नृपतेः अमात्यः (यदि) नृपालजातः (तदा) नरपालवर्यः स्यात् ।।४१।।

जिसके जन्माङ्ग के नवम भाव में बुध, बृहस्पति और शुक्र बलवान होकर स्थित हों और उन पर पञ्चम भावाधिपति की दृष्टि हो तो ऐसा जातक पुण्यात्मा और राजमन्त्री होता है। यदि ऐसा जातक राजकुल में उत्पन्न हो तो श्रेष्ठ राजा होता है ।।४१।।

भाग्यभावाधिपो नीचे रविलुप्तकरे सति।
अरिगेहगतो वापि भाग्यहीनो नरो भवेत् ।।४२।।

अन्वयः—भाग्यभावाधिपः नीचे वा रविलुप्तकरे सति अथवा अरिगेहगतोऽपि नरः भाग्यहीनः भवेत् ।।४२।।

भाग्यस्थान का स्वामी यदि नीच राशि में अथवा शत्रुराशि में स्थित हो, अथवा सूर्यसान्निध्य में अस्त हो तो ऐसा जातक भाग्यहीन होता है ।।४२।।

दशम भाव-विचार

कर्मभावाधिपो नीचे षडादित्रयगोऽपि चेत्।
करोति कर्मवैकल्यं स्वोच्चस्वर्क्षपदं विना ।।४३।।

अन्वयः—स्वोच्चस्वर्क्षपदं विना कर्मभावाधिपः नीचे (तथा) षडादित्रयगेऽपि चेत् (तदा) कर्मवैकल्यं करोति ।।४३।।

कर्मभाव (दशम भाव) का स्वामी यदि नीच राशि में स्थित हो अथवा अपनी उच्च राशि या अपनी राशि के अतिरिक्त अन्य राशि का होकर षडादित्रय (छठे, आठवें, बारहवें) भाव में स्थित हो, तो ऐसा जातक कर्मक्षेत्र में विफल होता है ।।४३।।

कर्माधिपे केन्द्रनवात्मजर्क्षे बुधेज्यदृष्टे सबले नराणाम्।
तुरङ्गमातङ्गनवाम्बराणि भवन्ति नानाधनसंयुतानि ।।४४।।

अन्वयः—(यदा) बुधेज्यदृष्टे सबले कर्माधिपे केन्द्रनवात्मजर्क्षे (तदा) नराणां नानाधनसंयुतानि तुरङ्गमातङ्गनवाम्बराणि भवन्ति ।।४४।।

यदि कर्मेश केन्द्र (प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम) भावों में या पञ्चम, नवम भावों में स्थित होकर बुध, बृहस्पति या शुक्र से दृष्ट हो तो जातक नूतन वस्त्र, घोड़े, हाथी और अनेक धन-वैभवादि से सम्पन्न होता है ।।४४।।

कर्मपः केन्द्रकोणस्थो ज्योतिष्टोमादियज्ञकृत्।
कूपायतनकर्त्ता च देवतातिथिपूजकः ॥४५॥

अन्वयः—(यदा) कर्मपः केन्द्रकोणस्थः तदा नरः ज्योतिष्टोमादियज्ञकृत्, कूपायतनकर्त्ता (तथा) देवतातिथिपूजकश्च (स्यात्) ॥४५॥

यदि दशमेश केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित हो तो जातक ज्योतिष्टोमादि यज्ञ करने वाला, अनेक कूप-धर्मशाला आदि का निर्माण कराने वाला तथा देवता और अतिथि का सम्मान करने वाला अत्यन्त धार्मिक होता है ॥४५॥

लग्नादिन्दोर्दशमभवने जन्मकाले नराणा-
मादित्याद्यैः क्रमत उदिता जीविका खेचरेन्द्रैः।
तातान्मातुर्निजरिपुकुलान्मित्रपक्षात्सहोत्थात्
पत्न्याः पुत्रादपि बुधवरैर्जातकज्ञैर्विशेषात् ॥४६॥

अन्वयः—जन्मकाले लग्नात् इन्दोः दशमभवने आदित्याद्यैः खेचरेन्द्रैः (तदा) नराणां क्रमतः तातात् मातृः निजरिपुकुलात् मित्रपक्षात् सहोत्थात् पत्न्याः पुत्रादपि जीविका, विशेषात् जातकज्ञैः बुधवरैः उदिताः ॥४६॥

लग्न से अथवा चन्द्राधिष्ठित राशि से दशम भावस्थ सूर्यादि ग्रह जातक की आजीविका-साधन के निर्णायक होते हैं। ऐसा पूर्वाचार्यों का कथन है।

यदि लग्न या चन्द्रराशि से दशम भाव में स्थित ग्रह सूर्य हो तो पिता के सहयोग से, चन्द्रमा हो तो माता के सहयोग से, भौम हो तो अपने शत्रु के सहयोग से, बुध हो तो मित्रों के सहयोग से, बृहस्पति हो तो भाई के सहयोग से, शुक्र हो तो स्त्रीपक्ष के सहयोग से और यदि शनि दशमस्थ हो तो पुत्र के सहयोग से जातक आजीविका प्राप्त करता है ॥४६॥

रविशीतकराङ्गकर्मपानां नरवृत्तिः कथिता लवेशवृत्त्या।
कनकोर्णतृणौषधैर्दिनेशे कृषिदाराम्बुसमाश्रयाच्च चन्द्रे ॥४७॥
अथ साहसवह्निधातुशस्त्रैः क्षितिजे काव्यकलापतो ज्ञे।
लवणद्विजकाञ्चनेभदेवैर्मणिरौप्यचयैः क्रमाच्च गुर्वोः ॥४८॥
रविजे श्रमभारनीचतः स्यादिह कर्मेशभवांशनाथवृत्तिः।
हितवैरिनिजर्क्षतुङ्गसंस्थैर्हितवैरिस्ववशाद्धनाप्तिरुच्चैः ॥४९॥

अन्वयः—रविशीतकराङ्गकर्मपानां लवेशवृत्त्या नरवृत्तिः कथिता, दिनेशे कनकोर्णतृणौषधैः, चन्द्रे कृषिदाराम्बुसमाश्रयाच्च। अथ क्षितिजे साहसवह्निधातुशस्त्रैः, ज्ञे काव्यकलापतः, गुर्वोः लवणद्विजकाञ्चनेभदेवैः मणिरौप्यचयैः क्रमाच्च। रविजे श्रमभारनीचतः स्यात् इह कर्मेशभवांशनाथवृत्तिः हितवैरिनिजर्क्षतुङ्गसंस्थैः हितवैरिस्ववशात् धनाप्तिः उच्चैः (उक्तम्) ॥४७-४९॥

सूर्य और चन्द्रमा स्थित राशि से और लग्न राशि से दशम भाव के स्वामी ग्रह जिस ग्रह के नवमांश में स्थित हों उनकी वृत्ति के अनुसार जातक की आजीविका होती है। उपर्युक्त राशियों से दशम भाव के स्वामी यदि सूर्य के नवमांश में स्थित हों तो जातक की आजीविका स्वर्ण, ऊन या ऊनी वस्त्र, वनौषधियों के व्यवसाय से; यदि चन्द्रमा नवमांशेश हो तो कृषिकर्म से या कृषि उत्पाद, अन्नादि के व्यवसाय से, जल कर्म, नौपरिवहन या मत्स्यादि के व्यवसाय से या स्त्री के सहयोग से; यदि भौम नवमांश-पति हो तो अग्निकर्म से (विद्युत् से सम्बन्धित वस्तुओं के व्यवसाय से), साहसिक कार्यों के द्वारा, धातुनिर्मित वस्तुओं, शस्त्रों आदि के व्यवसाय से; यदि बुध नवमांशपति हो तो कविता, चित्रकलादि अथवा लेखनकार्य से; यदि बृहस्पति नवमांशपति हो तो नमक अथवा नमकनिर्मित पदार्थों से, स्वर्ण, हाथी आदि के व्यवसाय से अथवा मन्त्राचार-यज्ञानुष्ठानादि कर्म से; यदि शुक्र नवमांशेश हो तो मणि-रत्नादि और चाँदी के व्यवसाय से; यदि नवमांशपति शनि हो, तो श्रम (मजदूरी, दासता, नौकरी आदि), बोझ ढोने जैसे नीचकर्म के द्वारा जातक अपनी आजीविका प्राप्त करता है। उक्त नवांशपति यदि मित्रराशि में हो तो मित्र के सहयोग से, शत्रुराशि में हो तो शत्रु के माध्यम से, यदि स्वगृही हो तो अपने पुरुषार्थ से और यदि अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो अकस्मात् उच्चवर्गीय जनों के सहयोग से जातक को आजीविका प्राप्त होती है ॥४७-४९॥

एकादश भाव-विचार

लाभेशो यदि केन्द्रस्थो लाभाधिक्यं प्रजायते।
षडादित्रयभे नीचे लाभबाधा नृणां सदा ॥५०॥

अन्वयः—यदि लाभेशः केन्द्रस्थः (तदा) नृणां लाभाधिक्यं, यदि षडादित्रयगे (वा) नीचे (तदा) सदा लाभबाधा प्रजायते ॥५०॥

लाभभाव (एकादश भाव) का स्वामी यदि केन्द्र (१,४,७,१० वाँ भाव) में स्थित हो तो प्रचुर लाभ देता है। किन्तु यदि एकादशेश नीच राशि में या षडादित्रय (६,८,१२ वें भाव) में स्थित हो तो आय में बाधक होता है ॥५०॥

आदित्येन युतेक्षिते नृपकुलाल्लाभालये चौरतो
लाभो नित्यमथेन्दुना गजजलप्रोद्भूतवामाजनैः।
भूपुत्रेण विचित्रयानमणिभूस्वर्णप्रवालादिभि-
र्जन्तोश्चन्द्रसुतेन शिल्पलिखनव्यापारयोगैरलम् ॥५१॥
जीवेनापि नरेशयज्ञगजभूज्ञानक्रियाभिः सिते-
नालं वारवधूगमागमगुणव्याख्यानमुक्ताफलैः।
मन्देनापि गजव्रजव्यसनभूनीलेन्द्रलोहव्रजै-
रित्थं तत्र बहुग्रहैरभिहितो नानार्थलाभो बुधैः ॥५२॥

अन्वयः—(यदि) लाभालये आदित्येन युतेक्षिते (तदा) जन्तोः नृपकुलात् (वा)

चौरतः नित्यलाभः; अथ इन्दुना युतेक्षिते गजजलप्रोद्भूतवामाजनैः, भूपुत्रेण विचित्रयानमणिभूस्वर्णप्रवालादिभिः, चन्द्रसुतेन शिल्पलिखनव्यापारयोगैः अलम्। जीवेनापि नरेशयज्ञगजभूज्ञानक्रियाभिः, सिते वारवधूगमागमगुणव्याख्यानमुक्ताफलैः अलं, मन्देनापि गजव्रजव्यसनभूनीलेन्द्रलोहव्रजैः इत्थं तत्र (लाभस्थाने) बहुग्रहैः (युतेक्षितैः तदा) नानार्थलाभः बुधैः अभिहितः (कथितः) ॥५१-५२॥

यदि एकादश भाव सूर्य से युत या दृष्ट हो तो राजपरिवार से अथवा चोर से धन का लाभ होता है; चन्द्रमा से युत या दृष्ट हो तो हाथी से, जलकर्म या जल से उत्पन्न पदार्थों से एवं स्त्री से धन का लाभ होता है; मंगल से युत या दृष्ट हो तो वाहनादि से, मणियों, स्वर्ण, प्रवाल (मूँगा) आदि के व्यवसाय से धनलाभ होता है; बुध से युत या दृष्ट हो तो कलात्मक वस्तुओं के व्यापार, लेखन आदि से धन लाभ होता है; बृहस्पति से युत या दृष्ट हो तो राजा से, यज्ञादि कराने से, हाथी और भूमि से सम्बन्धित व्यवसाय से तथा ज्ञान-विज्ञानसम्बन्धी कर्म से धन का लाभ होता है; शुक्र से युत या दृष्ट हो तो वेश्या के माध्यम से, दुष्कर्म से, व्याख्यानादि से अथवा मोतियों के व्यवसाय से धनागम होता है; यदि शनि एकादश भाव से युत या दृष्ट हो तो हाथियों के व्यापार से, व्यसनादि (जूआघर) से, भूमि के व्यापार से, नीलम, लोहा आदि के व्यवसाय से धन का लाभ होता है। यदि एकाधिक ग्रह एकादश भाव से सम्बन्ध करते हों तो अनेक मार्ग से धन का लाभ होता है ॥५१-५२॥

६६ द्वादश भाव-विचार

शुभग्रहाः प्रयच्छन्ति व्ययस्था विपुलं धनम्।
विपरीतं खला जन्तोर्जन्मकाले विशेषतः ॥५३॥

अन्वयः—(यदि) जन्मकाले शुभग्रहाः व्ययस्थाः (तदा) जन्तोः विपुलं धनं प्रयच्छन्ति (यदा) जन्मकाले खलाः व्ययस्थाः (तदा) विशेषतः विपरीतं (नेष्टफलं प्रयच्छन्ति) ॥५३॥

जन्माङ्ग के द्वादश भाव में यदि शुभग्रह स्थित हों, तो विपुल धन जातक को देते हैं। यदि पापग्रह व्ययभावगत हों तो विपरीत फल देते हैं ॥५३॥

क्षीणेन्दुरन्त्यगो यस्य रविणा सहितो यदि।
तस्य वित्तं हरेद्राजा कुजेनापि युतेक्षितः ॥५४॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले भावविचाराध्यायः पञ्चदशः ॥१५॥

अन्वयः—यस्य रविणा सहितः यदि क्षीणेन्दुः अन्त्यगः (तथा) कुजेन युतेक्षितः अपि (इन्दुस्तदा) तस्य वित्तं राजा हरेत् ॥५४॥

जन्माङ्ग के द्वादश भाव में यदि क्षीण चन्द्रमा स्थित हो तथा उसके साथ यदि सूर्य या मंगल के साथ युति करता हो तो राजा के द्वारा जातक के धन का हरण होता है ॥५४॥

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का पञ्चदश अध्याय समाप्त हुआ ॥१५॥

अथ षोडशोऽध्यायः

दशाफलम्

रसा आशाः शैला वसुविधुमिता भूपतिमिता
नवेलाः शैलेला नगपरिमिता विंशतिमिताः ।
रवाविन्दावारे तमसि च गुरौ भानुतनये
बुधे केतौ शुक्रे क्रमत उदिताः पाकशरदः ॥१॥

अन्वयः—रवौ रसाः, इन्दौ आशाः आरे शैलाः, तमसि वसुविधुमिताः च गुरौ भूपतिमिताः, भानुतनये नवेलाः, बुधे शैलेलाः, केतौ नगपरिमिताः, शुक्रे विंशतिमिताः (एवं) क्रमतः पाकशरदः उदिताः ॥१॥

सूर्य, चन्द्रमा, भौम, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु और शुक्र—ये विंशोत्तरी मतानुसार क्रम से दशापति हैं। उक्त क्रम से ६ वर्ष, १० वर्ष, ७ वर्ष, १८ वर्ष, १६ वर्ष, १९ वर्ष, १७ वर्ष, ७ वर्ष और २० वर्ष इनके दशावर्ष होते हैं ॥१॥

सत्ताइस नक्षत्रों में कृत्तिकादि नौ-नौ नक्षत्रों की तीन आवृत्ति सम्पन्न होती है। जैसे प्रथम आवृत्ति में कृत्तिका से प्रारम्भ कर पूर्वा फाल्गुनी तक नौ नक्षत्र, द्वितीय आवृत्ति में उत्तर फाल्गुनी से पूर्वाषाढ़ा तक नौ नक्षत्र और तृतीय आवृत्ति में उत्तराषाढ़ा से रेवती-पर्यन्त नौ नक्षत्र। इस प्रकार तीन-तीन नक्षत्रों के कुल नौ समूह बनते हैं, जिनके उपर्युक्त सूर्य, चन्द्रमा, भौम, राहु आदि क्रम से स्वामी होते हैं। इसी तथ्य को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

नक्षत्रों के स्वामी और उनके दशावर्ष

	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	बृहस्पति	शनि	बुध	केतु	शुक्र
प्रथमावृत्ति	कृ.	रो.	मृग.	आर्द्रा	पुनर्वसु	पु.	श्ले.	म.	पू.फा.
द्वितीयावृत्ति	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.
तृतीयावृत्ति	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि	भरणी
दशावर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि कृत्तिका, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा—इन तीन नक्षत्रों के स्वामी सूर्य हैं और ६ वर्ष उनका दशाकाल है। उक्त तीनों नक्षत्रों में जन्म होने से सूर्य की दशा होगी। सूर्यदशा के ६ वर्ष गत हो जाने पर चन्द्रमा की दशा प्राप्त होगी, जो १० वर्ष तक रहेगी। तदनन्तर भौम की दशा ७ वर्ष, राहु की दशा १८ वर्ष आदि क्रम से सभी ग्रहों की दशाएँ होंगी।

रोहिणी, हस्त और श्रवण नक्षत्र में यदि जन्म हो तो प्रथम दशा उनके स्वामी चन्द्रमा की होगी। तदनन्तर अन्य ग्रहों की दशाएँ उक्त क्रमानुसार होंगी। इसी प्रकार मृगशिर, चित्रा और धनिष्ठा में यदि जन्म हो तो इन नक्षत्रों के स्वामी भौम की प्रथम दशा जन्मकाल में होगी तथा उस प्रथम दशा के समाप्त होने पर राहु की दशा प्रारम्भ होगी।

उपर्युक्त तथ्य को आगे के श्लोक में कहा गया है।

कृत्तिकादिस्त्रिरावृत्त्या दशा विंशोत्तरी मता।
अष्टोत्तरी न संग्राह्या मारकार्थं विचक्षणैः ॥२॥

अन्वयः—कृत्तिकादिः त्रिरावृत्त्या विंशोत्तरी दशा मता, मारकार्थं अष्टोत्तरी दशा विचक्षणैः न संग्राह्याः ॥२॥

कृत्तिकादि नव नक्षत्रों की तीन आवृत्ति करने से विंशोत्तरी मतानुसार सूर्यादि ग्रहों की दशाएँ होती हैं। समस्त विचार हेतु विंशोत्तरी दशा ग्रहण करने का निर्देश पूर्वाचार्यों ने किए हैं। अष्टोत्तरी (१०८ वर्ष) दशा ग्राह्य नहीं है। यह अष्टोत्तरी दशा विन्ध्य पर्वत से दक्षिण भाग में ग्राह्य है।

उपर्युक्त तालिका से जन्मकालिक दशा का ज्ञान करना सरल है। यदि किसी का जन्मनक्षत्र हस्त हो तो उक्त तालिका में हस्त नक्षत्र के सबसे ऊपर के कोष्ठक में नक्षत्र-पति चन्द्रमा है। अतः उक्त व्यक्ति का जन्म चन्द्रमा की महादशा के मध्य हुआ है। नीचे के कोष्ठक से चन्द्रमा के दशावर्ष का भी ज्ञान किया जा सकता है।

किसी ग्रह की सम्पूर्ण दशा के कितने वर्षादि जन्म से पूर्व बीत चुके हैं और कितना शेष है, यह जानने के लिए हमें यह जानना होगा कि जन्मकाल तक जन्मनक्षत्र की कितनी घट्यादि गत हो चुकी है। जन्मकाल से पूर्व जन्मनक्षत्र का जो भाग गत हो चुका हो उसे **भयात्** और जन्मनक्षत्र के सम्पूर्ण भोग काल को **भभोग** कहते हैं।

जन्मर्क्ष के प्रारम्भ से जन्मेष्ट काल तक गत हुआ घट्यादि ही भयात् होता है। अतः इसके परिज्ञान में दो स्थितियाँ होती हैं—

(१) जन्मनक्षत्र का प्रारम्भ पूर्व दिन ही हुआ हो। इस स्थिति में गत नक्षत्र के घट्यादि मान को ६० में ऋण करने से शेष घट्यादि सूर्योदय के पूर्व जन्मनक्षत्र का गत भाग होगा। इष शेष में जन्मेष्टकाल के घट्यादि युत कर देने से योग जन्मनक्षत्रारम्भ से जन्मेष्ट कालपर्यन्त गत काल अर्थात् भयात् होता है। इसी शेष में जन्मनक्षत्र का मान जोड़ देने से नक्षत्र का सम्पूर्ण घट्यादि मान अर्थात् भभोग होता है।

उदाहरण के लिए मान लें कि किसी का जन्म सं. २०५० पौष कृष्ण सप्तमी, मंगलवार के दिन ६।३० घट्यादि पर हुआ। उक्त दिन उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का घट्यादि भोग ११।३८ और पूर्व दिन अर्थात् सोमवार के दिन पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का घट्यादि भोगकाल १४।५८ था तथा अगले दिन (बुधवार के दिन) हस्त नक्षत्र का भोग काल घट्यादि ८।१५ था। मंगलवार के सूर्योदयपर्यन्त उत्तराफालगनी का गत घट्यादि भोगकाल

= ६०।०- १४।५८ = ४५।२ घट्यादि। इस शेष घट्यादि में जन्मेष्ट काल घट्यादि ६।३० जोड़ने से

४५।२ + ६।३० = ५१।३२ घट्यादि
= भयात् = जन्मनक्षत्रारम्भ से जन्मेष्ट काल पर्यन्त जन्मनक्षत्र का भोगकाल।

उक्त शेष घट्यादि

४५।१
+ ११।३८
= ५६।३९ घट्यादि (भभोग)।
= जन्मर्क्ष का सम्पूर्ण भोगकाल।

(२) अब यदि उक्त दिन जन्मेष्ट काल २४।२४ हो तो जन्मनक्षत्र हस्त और गत नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी होगा, क्योंकि मंगलवार के दिन घट्यादि ११।३८ के बाद हस्त नक्षत्र की प्रवृत्ति होगी। अत: जन्म नक्षत्रारम्भ से जन्मेष्टकालपर्यन्त हस्त का गत भाग अर्थात् भयात्।

भयात् = २४।२४ - ११।३८
= १२।४६ भयात्
६०।०
- ११।३८ घट्यादि गत नक्षत्रभोग
४८।२२ बुधवार के सूर्योदयपर्यन्त गत जन्मनक्षत्र का भोगकाल
+ ८।१५ बुधवार के दिन जन्मर्क्ष का भोगकाल
= ५६।३७ जन्मर्क्ष का सम्पूर्ण भोगकाल
= भभोग।

भुक्त-भोग्य दशानयन

गतर्क्षनाडी निहता दशाब्दैर्भभोगनाड्या विहृता फलं यत्।
वर्षादिकं भुक्तमिह प्रवीणैर्भोग्यं दशाब्दान्तरितं निरुक्तम् ॥३॥

अन्वय:—गतर्क्षनाडी दशाब्दै: निहता: भभोगनाड्या विहृता वर्षादिकं यत् फलं भुक्तं इह दशाब्दान्तरितं (तदा) भोग्यं प्रवीणै: निरुक्तम् ॥३॥

भयात् को दशापति के दशावर्ष से गुणा कर भभोग से भाग देने से वर्षादि दशा का भुक्तकाल होता है। इस भुक्तकाल को दशावर्ष में ऋण करने से दशा का भोग्य काल ज्ञात होता है ॥३॥

पूर्वोदाहरण में यदि २४।२४ जन्मेष्ट काल ग्रहण करें तो जन्मर्क्ष हस्त होने से जन्मकालिक चन्द्रमा की दशा होगी। जन्मेष्टकालिक सूर्य के राश्यादि भोग

८।२०।९।५४, भयात् १२।४६ घट्यादि और भभोग ५६।३७ है। चन्द्रमा का दशामान १० वर्ष है।

भयात् = १२।४६ घट्यादि　　　भभोग = ५६।३७ घट्यादि
= ७६६ पल　　　= ३३९७ पल
× १० चन्द्रदशामान

भभोग ३३९७) ७६६०(२ वर्ष
६७९४
८६६×१२
१०३९२ (३ मास
१०१९१
२०१×३०
६०३० (१ दिन
३३९७
२६३३×६०
१५७९८० (४६ घटी
१३५८८
२२१००
२०३८२
१७१८ × ६०
१०३०८० (३० पल
१०१९१
११७०

इस प्रकार चन्द्रदशा के भुक्तवर्षादि २।३।१।४६।३० हुए। इसे सम्पूर्ण दशावर्ष १० में घटाने से

१०।०।०।०।०
- २।३।१।४६।३०
७।८।२८।१३।३० चन्द्रदशा का भोग्यकाल।

अब इस चन्द्रमहादशा के भोग्यकाल में इष्ट संवत् सहित जन्मेष्टकालिक सूर्य के स्पष्ट राश्यादि भोग को जोड़ देने सें चन्द्रमहादशा का समाप्तिकाल ज्ञात होगा।

चन्द्रभोग्यदशा वर्षादि	२।३।१।४६।३०
संवत् सहित सूर्यभोग	२०५०।८।२०।९।५४
चन्द्रदशा का समाप्तिकाल	२०५२।११।२१।५६।२४

अर्थात् सं. २०५२ में जब मीन राशि का सूर्य २१°५६' २४'' पर होगा, उस दिन चन्द्रमा की महादशा समाप्त होकर भौम की महादशा प्रारम्भ होगी। इस काल में

आगे के भौम, राहु, बृहस्पति आदि ग्रहों के वर्षमान जोड़ने से तत्तद् ग्रहों की दशाओं के समाप्तिकाल ज्ञात होंगे।

प्रत्येक ग्रह की महादशावधि में उस ग्रह से प्रारम्भ कर दशाक्रमानुसार शेष सभी नौ ग्रहों की अन्तर्दशाएँ स्व-स्व दशा के अनुपात में होती हैं। जैसे भौम की दशा के सात वर्ष की अवधि में भौम से प्रारम्भ कर राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु, शुक्र, सूर्य और चन्द्रमा की अन्तर्दशाएँ होती हैं। इन अन्तर्दशापतियों के वर्षमान उनकी दशाओं की समानुपाती होते हैं। आगे के श्लोक में अन्तर्दशापतियों के वर्षमान जानने की विधि बतलाई गई है।

अन्तर्दशानयन

दशा दशाहता कार्या विहृता परमायुषा।
अन्तर्दशाक्रमादेवं विदशाऽप्यनुपातत: ॥४॥

अन्वय:—दशा दशाहता कार्या परमायुषा (१२०) विहृता क्रमात् अन्तर्दशा एवं अनुपातत: विदशाऽपि भवति ॥४॥

दशापति के वर्षमान को अन्तर्दशापति के वर्षमान से गुणा कर परमायु १२० वर्ष से गुणनफल में भाग देने से लब्ध वर्षादि अन्तर्दशापति के अन्तर्दशामान होते हैं। इसी प्रकार प्रत्यन्तर्दशापतियों के प्रत्यन्तर्दशाओं का वर्षमान लाना चाहिए ॥४॥

मान लीजिए सूर्य महादशा में सूर्यादि नवग्रहों की अन्तर्दशा के वर्षादि मान का ज्ञान करना है। सूर्यमहादशा में प्रथम सूर्य की ही अन्तर्दशा होगी। यहाँ दशापति और अन्तर्दशापति दोनों सूर्य हैं, जिसका दशावर्ष ६ वर्ष है। उपर्युक्त नियमानुसार सूर्य महादशा में सूर्यान्तर्दशा का मान—

$= \frac{६\times६}{१२०} = \frac{३}{१०}$ = ०.३ वर्षादि = ० वर्ष ३ मास १८ दिन,

चन्द्रान्तर्दशामान $= \frac{६\times१०}{१२०} = \frac{१}{२}$ = ०.५ वर्षादि = ०वर्ष ६ मास ० दिन,

भौमान्तर्दशामान $= \frac{६\times७}{१२०} = \frac{७}{२०}$ = ०.३५ = ० वर्ष ४ मास ६ दिन,

राह्वन्तर्दशामान $= \frac{६\times१८}{१२०} = \frac{१०८}{१२०}$ = ०.९ = ० वर्ष १० मास २४ दिन,

गुर्वन्तर्दशामान $= \frac{६\times१६}{१२०} = \frac{४}{५}$ = ०.८ = ० वर्ष ९ मांस १८ दिन,

शन्यन्तर्दशामान $= \frac{६\times१९}{१२०} = \frac{१९}{२०}$ = ०.९५ = ० वर्ष ११ मास १२ दिन,

बुधान्तर्दशामान $= \frac{६\times१७}{१२०} = \frac{१७}{२०}$ = ०.८५ = ० वर्ष १० मास ६ दिन,

केत्वन्तर्दशामान $= \frac{६\times७}{१२०} = \frac{७}{२०}$ = ०.३५ = ० वर्ष ४ मास ६ दिन,

शुक्रान्तर्दशामान $= \frac{६\times२०}{१२०}$ = १ वर्ष ० मास ० दिन।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों की दशा में अन्तर्दशामान का परिज्ञान करना चाहिए।

सूर्यदशा-फल

उद्वेगिता हृदि ततो परितो लतावद्दायादवाद उत वित्तवियोगयोगाः।
चिन्ता भयं नरपतेरपि पाककाले रोगागमो भवति भानुदशाप्रवेशे ॥५॥

अन्वयः—भानुदशाप्रवेशे पाककाले नरपतेः अपि परितः लतावत् हृदि उद्वेगिताः ततः दायादवादः उत वित्तवियोगयोगाः, चिन्ता भयं, (तथा) रोगागमः भवति ॥५॥

सूर्य महादशा के प्रारम्भ होते ही व्यक्ति मानसिक उद्विग्नता से वैसे ही घिर जाता है, जैसे लतायें किसी वृक्ष को घेरे रहती हैं। धन की हानि, स्वजनों, बन्धु-बान्धवों से विरोध और विवाद होता है। राजा होकर भी व्यक्ति चिन्ता से ग्रस्त एवं रोगग्रस्त रहता है ॥५॥

चन्द्रदशा-फल

सदा पाके राकेशितुरधिकृतिर्भूपतिकृता
सतां सङ्गो रङ्गोत्सवसवकृतिप्रीतिरतुला।
अलङ्कारागारो रिपुकुलमलङ्गारजसुखं
कलावत्या रत्या गम इभरथारामरमणम् ॥६॥

अन्वयः—राकेशितुः पाके सदा भूपतिकृता अधिकृतिः सतां सङ्गः रङ्गोत्सवकृतिप्रीतिरतुला, अलङ्कारागारः रिपुकुलमलङ्गारजसुखं कलावत्या रत्या गमः (तथा) इभरथारामरमणम् ॥६॥

चन्द्रमा की महादशा में व्यक्ति राजा से अधिकार प्राप्त करता है (अर्थात् राज्याधिकारी नियुक्त होता है), सज्जनों की संगति में, रागरंग एवं उत्सवादि में अभिरुचि, सुन्दर कलात्मक अलंकरणों से सुसज्जित भवन में निवास का सुख, शत्रुओं के विनाश का सुख, कलावती रमणी के साथ रमण का सुख, हाथियों और रथादि वाहनों का सुख जातक को प्राप्त होता है ॥६॥

भौमदशा-फल

अनलगरलभीतिः शस्त्रघातो नराणा-
मरिगणनृपचौरव्यालशङ्काकुलत्वम्।
क्षितिसुतपरिपाके कामिनीपुत्रकष्टं
भवति वमनमाधिर्व्याधिरर्थक्षतिश्च ॥७॥

अन्वयः—क्षितिसुतपरिपाके नराणां अनलगरलभीतिः शस्त्रघातः अरिगणनृप-

चौरव्यालशङ्काकुलत्वं, कामिनीपुत्रकष्टं, वमनं, (तथा) आधिः, व्याधिः, अर्थक्षतिश्च भवति ।।७।।

भौम की महादशा में जातक को अग्नि, विष तथा शस्त्राघात से भय होता है। वह नित्य शत्रु, राजा, चोर और सर्प आदि से सशंकित रहता है। स्त्री-पुत्रादि को कष्ट तथा वमनादि व्याधियों से जातक पीड़ित होता है तथा उसके धन का नाश होता है ।।७।।

राहुदशा-फल

राकेशारातिपाके नृपकुलवशतो द्रव्यनाशो विनाशो
मानस्यातीवरोगागमनमपि नृणां तातकष्टं विशेषात्।
कान्तापत्याकुलत्वं हितजनखलताऽरातिरायाति सद्म
व्यामोहागारमन्तः परित उत ततस्तुङ्गतातङ्कता वा ।।८।।

अन्वयः—राकेशारातिपाके नृणां नृपकुलवशतः, द्रव्यनाशः, मानस्य विनाशः, अतीव रोगागमनम् अपि विशेषात् तातकष्टं, कान्तापत्याकुलत्वं हितजनखलतः अरातिः सद्म आयाति, उत परितः व्यामोहागारमन्तः, ततः तुङ्गतातङ्कता वा भवति ।।८।।

राहु की महादशा में राजा की अकृपा से जातक के धन का नाश होता है, अप्रतिष्ठा होती है, वह अनेक व्याधियों से ग्रस्त होता है, पिता को कष्ट होता है। स्त्री-पुत्रादि को कष्ट, व्याकुलता, स्वजनों से पीड़ा, गृह पर शत्रुओं का आतंक आदि से जातक विवेकशून्य हो जाता है। वह चारो ओर से अवनति और आतंक से घिरा रहता है ।।८।।

बृहस्पतिदशा-फल

उर्वी गुर्वी समायात्यवनिपतिकुलान्नायकत्वं जनानां
कान्तादन्ताबलाग्रागम इह कमलालङ्कृता वासशाला।
मैत्री सद्भिर्महद्भिर्गुरुजनगरिमा कालिमारातिकास्ये
हृद्या विद्यानवद्या भवति च वचसामीशितुः पाककाले ।।९।।

अन्वयः—वचसाम् ईशितुः पाककाले जनानां अवनिपतिकुलात् गुर्वी उर्वी (तथा) नायकत्वं समायाति, कान्तादन्तावलाग्रागमः इह कमलालङ्कृता वासशाला, सद्भिः मैत्री, महद्भिः गुरुजनगरिमा, आरातिकास्ये कालिमा (तथा) हृद्या विद्यानवद्या च भवति ।।९।।

बृहस्पति की महादशा में जातक को राजा से भूमि और उच्च पद की प्राप्ति, सुन्दर स्त्री, उत्तम हाथी आदि वाहन एवं धन-धान्य से सम्पन्न गृह का सुख प्राप्त होता है। समाज के श्रेष्ठ और विशिष्ट जनों से मैत्री होती है और शत्रुओं के मुख कालिमायुक्त होते हैं, श्रेष्ठजनों से सम्मान प्राप्त होता है। नित्य नूतन विद्या-प्राप्ति का सुख होता है ।।९।।

शनिदशा-फल

मिथ्यावादेन तापोऽरिनरजनकृताऽऽतङ्कता रङ्कता वा
कृत्या गुप्ता प्रतप्ता मतिरपि कुजनैरर्थनाशो जनानाम्।
कान्तापत्यादिरोगो जनककनकगोवाजिदन्ताबलानां
विच्छेदो मित्रभेदो दिनपसुतदशायामनर्थो विशेषात् ॥१०॥

अन्वयः—दिनपसुतदशायां जनानां मिथ्यावादेन तापः, अरिजनकृता आतङ्कता रङ्कता वा, गुप्ताकृत्यामतिरपि प्रतप्ता, कुजनैः अर्थनाशः, कान्तापत्यादिरोगः जनककनकगोवाजिदन्ताबलानां विच्छेदः मित्रभेदः (तथा) विशेषात् अनर्थः (स्यात्) ॥१०॥

शनि की महादशा में जातक मिथ्या आरोपों से सन्त्रस्त होता है; निर्धनता होती है, गुप्त कर्मो (अभिसार, प्रेम-प्रपञ्चादि) से मानसिक सन्ताप होता है। दुष्टजनों से धन का नाश होता है। स्त्री एवं सन्तति को पीड़ा होती है। पिता, स्वर्ण, पशुधन का विनाश और मित्रों से विरोध और विवादग्रस्तता होती है। इस प्रकार शनि की महादशा में चारो ओर अनर्थ ही अनर्थ होता है ॥१०॥

बुधदशा-फल

दिव्याहारविहारयानजनतापत्यार्थमानाम्बर-
श्रेणीग्रामनवालयेन्दुवदनाल्लाभं विशेषादिह।
सद्भिः सङ्गमनङ्गमङ्गमतुलं प्रोतुङ्गमातङ्गजं
सौख्यं सन्तनुते दशा सुतयशोवृद्धिं च सिद्धिं विदः ॥११

अन्वयः—विदः दशा दिव्याहारविहारयानजनतापत्यार्थमानाम्बरश्रेणीग्रामनवालयेन्दुवदनालाभं विशेषात् इह सद्भिः सङ्गं अनङ्गमङ्गमतुलं, प्रोत्तुङ्गमातङ्गजं सौख्यं (तथा) सुतयशःवृद्धिं सिद्धिं च सन्तनुते ॥११॥

बुध की महादशा में जातक को नित्य दिव्य भोजन, विहार (मनोरंजन के साधन), वाहन, श्रेष्ठजनों की सङ्गति, पुत्र, धन, सम्मान, मनोहर वस्त्र, ग्राम, भू-सम्पदा, नवीन भवन, चन्द्रमा के समान शुभ्र कान्ति से युक्त शरीर वाली स्त्री आदि के सुख का लाभ होता है। सज्जनों से समागम, शरीर में कामवासना की अधिकता, सन्तति और यश की वृद्धि के साथ समस्त कार्यों की सिद्धि होती है ॥११॥

केतुमहादशा-फल

मनस्तापं तापं निजजनविवादं खलकृतं
सदा चन्द्रारातेरुदरभवरोगं वितनुते।
दशा पुंसामारादनुगतिमपायं निजमतेः
कृशत्वं वित्तानामवनिपतिकोपेन परितः ॥१२॥

अन्वयः—चन्द्रारातेः दशा पुंसां सदा मनस्तापं तापं, निजजनविवादं खलकृतं

(तंथा) उदरभवरोगं वितनुते आरात् अनुगतिं निजमते: (धनं) अपायं (तथा) अवनिपतिकोपेन परित: वित्तानां कृशत्वं जातम् ॥१२॥

केतु की महादशा में मनस्ताप (मानसिक तनाव), तीव्र ज्वर, स्वजनों से विरोध, विवाद के कारण कष्ट, दुष्टों से टकराव, उदरव्याधि से पीड़ा, शत्रुओं के कारण निरर्थक यात्राओं के क्रम की निरन्तरता से कष्ट, बौद्धिक स्खलन, राजकोप से धनक्षय, शारीरिक कृशता आदि फल जातक को प्राप्त होते हैं ॥१२॥

शुक्रमहादशा-फल

तुल्यत्वं धरणीधवेन महता मित्राज्जयो जन्मिनां
मारोल्लासविकास एव कमलालावण्ययुक्तं गृहम्।
दिव्यारामसुधामसामबहुला व्याख्यानगानध्वनिः
प्रज्ञासौख्यमतीव पाकसमये शाला विशाला कवेः ॥१३॥

अन्वय:—कवे: पाकसमये जन्मिनां महता धरणीधवेन तुल्यत्वं, मित्राज्जय: मारोल्लासविकास एव, गृहं कमलालावण्ययुक्तं दिव्यारामसुधामसामबहुला व्याख्यानगानध्वनि: प्रज्ञा (तथा) शाला विशाला अतीव सौख्यं (स्यात्) ॥१३॥

शुक्र की महादशा में राजकृपा से प्रतिष्ठा, हास-विलासमय उत्सवादिजन्य आनन्द की वृद्धि होती हैं, गृह में लक्ष्मी और सुन्दर रमणी का वास होता है, उत्तम बाग-बगीचे और श्रेष्ठ भवनों का निर्माण होता है तथा नित्य शास्त्रचर्चा, सङ्गीत-कथा-वार्ता से ज्ञान का सुख प्राप्त होता है ॥१३॥

उच्च राशिस्थ ग्रहदशा-फल

निजोच्चगामिनो यदा तदा तदा यशोलता
नवाम्बरादिभूषणैः सुखं वराङ्गनागमः।
उपेन्द्रतुल्यता मता गजेन्द्रवाजिराजिका
रथा वृषाश्च वैरिणः कृशा वशा दशा भवेत् ॥१४॥

अन्वय:—यदा निजोच्चगामिन: दशा भवेत्तदा (नराणां) यशोलता, नवाम्बराणि भूषणै: सुखं, वराङ्गनागम: उपेन्द्रतुल्यता मता गजेन्द्रवाजिराजिका रथ: वृषाश्च (आगम:) वैरिण: वशा कृशा दशा भवेत् ॥१४॥

अपने उच्च राशिस्थ ग्रह की महादशा में जातक का सुयश दिगन्त में विस्तृत होता है, नये वस्त्र और आभूषणादि एवं स्त्रीसुख की प्राप्ति होती है। धन, यश, कीर्ति, ऐश्वर्य आदि में वह चक्रवर्ती राजा से समता करता है तथा उसे श्रेष्ठ हाथी, घोड़े, रथ और गोधन का लाभ होता है। उसके शत्रु निर्बल होकर नतमस्तक होते हैं ॥१४॥

स्वगृही ग्रहदशा-फल

दशा निजागारगतस्य' यस्य नवाम्बरागारविहारसौख्यम्।
नवीनयोषा बहुभूमिभूषा यशो विशेषादरिवर्गहानिः ॥१५॥

अन्वयः—यस्य (नरस्य) निजागारगतस्य (ग्रहस्य) दशा (भवेत्तस्य) नवाम्बरागारविहारसौख्यम्, नवीनयोषा बहुभूमिभूषा विशेषात् यशः (तथा) अरिवर्गहानिः (भवेत्) ॥१५॥

स्वगृही ग्रह की महादशा में नवीन वस्त्रों का लाभ, विलासिता एवं विहार का सुख, नई नवेली स्त्री का सुख, अनेकानेक आभूषणों की प्राप्ति और भूसम्पदा का लाभ होता है तथा शत्रुओं की हानि (क्षय) होती है ॥१५॥

मित्रगृही ग्रहदशा-फल

कलत्रपुत्रैरपि मित्रपुत्रैरतीव सौख्यं हितराशिगस्य।
दशाविपाके वसनं नृपालाद्विशेषतो मानविवर्द्धनं स्यात् ॥१६॥

अन्वयः—हितराशिगस्य दशाविपाके कलत्रपुत्रैः मित्रपुत्रैरपि अतीव सौख्यं नृपालाद् विशेषतः वसनं (तथा) मानविवर्द्धनं स्यात् ॥१६॥

मित्रगृही ग्रह की महादशा में स्त्री-पुत्रादि से, मित्र से तथा मित्र के पुत्रों से सुख प्राप्त होता है (अर्थात् इनके सहयोग से अनेक रुद्ध कार्यों में सफलता मिलती है)। नवीन वस्त्र और राजा से सम्मान में वृद्धि होती है ॥१६॥

शत्रुराशिगत ग्रह-दशाफल

मनोजवेगो रिपुवर्गभीतिः कृशत्वमर्थक्षतिराप्तिबाधा।
दशा यदारातिगृहस्थितस्य तदा नरस्य प्रकृतिश्चला स्यात् ॥१७॥

अन्वयः—अरातिगृहस्थितस्य यदा दशा तदा नरस्य मनोजवेगः रिपुवर्गभीतिः कृशत्वम् अर्थक्षतिः आप्तिबाधा (तथा) प्रकृतिः चला स्यात् ॥१७॥

शत्रुक्षेत्रगत ग्रह की महादशा में मानसिक उद्वेग की वृद्धि, वैकल्य, शत्रुभय, शारीरिक दुर्बलता, धनक्षय, आय में अवरोध और स्वाभाविक स्थिरता का अभाव होता है ॥१७॥

रोगेशदशा-फल

रोगाधीशदशाऽबला जनकलिं रोगागमं जन्मिना-
माधिव्याधिमरिव्रजव्रणगणातङ्कं कलङ्कं खलात्।
मानध्वंसमतिक्षयं कलयति ज्ञानार्थनाशं तथा
चित्तव्याकुलता च पापवशतो धातुक्षयं प्रायशः ॥१८

अन्वयः—अबला रोगाधीशदशा जन्मिनां जनकलिं, रोगागमं, आधिव्याधिं, अरिव्रजव्रणगणातङ्कं, खलात् कलङ्कं मानध्वंसमतिक्षयं ज्ञानार्थनाशं तथा च चित्तव्याकुलता, प्रायशः पापवशतः धातुक्षयं कलयति ॥१८॥

रोगाधिपति (षष्ठेश) यदि निर्बल हो तो उसकी महादशा में स्वजनों से विवाद,

रोगों का आक्रमण, मानसिक वैकल्य, रोग, शत्रुओं और व्रणादि में वृद्धि होती है, शत्रुओं से मिथ्यापवाद, मान-सम्मान का विनाश, ज्ञान और धन का क्षय, मानसिक वैकल्य और दुष्कर्मों से धातुक्षय आदि फल जातक को प्राप्त होते हैं ॥१८॥

अष्टमभावेश दशाफल

निधनभावपतेरवनीपतेरतिभयं गदजालभयं दशा।
कलयति स्वजनस्य विनाशनं निधनतामपि वा भविनामिह ॥१९॥

अन्वयः—निधनभावपतेः दशा भविनां अवनिपतेः अतिभयं, गदजालभयं, स्वजनस्य विनाशनं, निधनतामपि वा इह कलयति ॥१९॥

अष्टमेश की महादशा में जातक को राजा से भय, रोगसंकुल से भय, स्वजनों का विनाश और स्वयं जातक की मृत्यु आदि का भय होता है ॥१९॥

व्ययेश महादशाफल

वित्तक्षतिरवनीशादाधिव्याधिर्व्ययेशपरिपाके।
कष्टं मृत्युसमानं भवति कुयानं कुसङ्गसंयोगः ॥२०॥

अन्वयः—व्ययेशपरिपाके अवनीशात् वित्तक्षतिः, आधिव्याधिः, मृत्युसमानं कष्टं, कुयानं (तथा) कुसङ्गसंयोगः भवति ॥२०॥

द्वादशेश की महादशा में राजा के द्वारा जातक के धन की क्षति, मानसिक एवं दैहिक रोगार्तता, मृत्युतुल्य कष्ट, निकृष्ट वाहन और निकृष्ट जनों के संसर्ग से कष्ट होता है ॥२०॥

सप्तमेश महादशा-फल

जायापतिपरिपाके रोगज्वाला हृदि स्थिता भवति।
रिपुजनजनिता बाधा वित्तविनाशो नरेशभीतिश्च ॥२१॥

अन्वयः—जायापतिपरिपाके रोगज्वाला हृदि स्थिता, रिपुजनजनिता बाधा, वित्तविनाशः, नरेशभीतिश्च भवति ॥२१॥

सप्तम भाव के स्वामी की दशा में रोगज्वाला जातक के उर में निवास करती है, जो समय-समय पर प्रज्ज्वलित होकर रोगादि से कष्ट देती है। शत्रुओं से कार्यावरोध, गतिरोध, धन का नाश और राजभय होता है ॥२१॥

अस्तङ्गत ग्रहदशा-फल ९६

दशाधीशे वास्तङ्गतवति विरोधे बलवता
सदा रोगागारं हृदयकुहरे वाथ जठरे।
अरेराधिव्याधिव्यसनमुत मानक्षतिरथो
विरामो वित्तानामवनिपतिकोपेन भविनाम् ॥२२॥

अन्वयः—दशाधीशे अस्तं गतवति तदा भविनां बलवता विरोधे वा सदा रोगागारं हृदयकुहरे वा जठरे, अथ अरेः आधिव्याधिव्यसनं उत मानक्षतिः, अथ अवनिपतिकोपेन वित्तानां विरामः (भवति) ॥२२॥

सूर्यसान्निध्य में अस्त ग्रह की दशा में अपने से बलवान व्यक्तियों से विरोध, हृद् रोग या उदरव्याधि से जातक पीड़ित होता है। शत्रुओं से कष्ट, मानसिक सन्ताप और रोगार्तता, व्यसनों में लिप्तता, मान-सम्मान की क्षति, राजा के कोप से धनागम में अवरोध आदि फल इस अस्तग्रह की दशा में जातक को भोगने होते हैं ॥२२॥

दशाफल के सम्बन्ध में सामान्य निर्देश

दशाप्रवेशे सबलः शशाङ्को दशाफलं शस्तमतीवजन्तोः ।
अतोऽन्यथा चेद्विपरीतमार्यैरुदीरितं चन्द्रबलानुमानात् ॥२३॥

अन्वयः—दशाप्रवेशे सबलः शशाङ्कः (तदा) जन्तोः दशाफलं अतीव शस्तं, चेद्विपरीतं अतः अन्यथा (इति) चन्द्रबलानुमानात् आर्यैः उदीरितम् ॥२३॥

दशारम्भ के समय यदि चन्द्रमा बलवान हो तो दशा का फल प्रशस्त होता है। इसके विपरीत चन्द्रमा के निर्बल होने पर दशाफल भी विपरीत होता है ॥२३॥

बलवन्तो दशाधीशा दिशन्ति सकलं फलम् ।
निर्बला नैव कुर्वन्ति मध्यं मध्यबला नृणाम् ॥२४॥

अन्वयः—दशाधीशाः बलवन्तः (तदा) नृणां सकलं फलं (दिशन्ति) निर्बलाः नैव दिशन्ति (तथा) मध्यबलाः मध्यं कुर्वन्ति ॥२४॥

यदि दशापति बलवान हो तो अपनी दशा का पूर्ण फल जातक को प्राप्त होता है। दशापति यदि निर्बल हो तो अत्यल्प फल ही प्राप्त होता है। मध्यम बली हो तो मध्यम फल मिलता है ॥२४॥

लग्नादि द्वादश भावेशों के संक्षिप्त फल

लग्नेशस्य दशाफलं बहुधनं वित्तेशितुः पञ्चतां
कष्टं वेति सहोदरालयपतेः पापं फलं प्रायशः ।
तुर्यस्वामिनी आलयं किल सुताधीशस्य विद्यासुखं
रोगागारपतेररातिजभयं जायापतेः शोकताम् ॥२५॥
मृत्युं मृत्युपतेः करोति नियतं धर्मेशितुः सुक्रियां
वित्तं राज्यपतेर्नृपाश्रयमथो लाभं हि लाभेशितुः ।
रोगं द्रव्यविनाशनं च बहुधा कष्टं व्ययेशस्य वै
पूर्वैरङ्गभृतामुदीरितमिदं तन्वादिभावेशजम् ॥२६॥

अन्वयः—लग्नेशस्य दशाफलं बहुधनं वित्तेशितुः पञ्चतां कष्टं वा इति,

सहोदरालयपते: प्रायश: पापं फलम्, तुर्यस्वामिन: आलयं (सुखं) सुताधीशस्य किल विद्यासुखं, रोगागारपते: अरातिजभयं, जायापते: शोकता (जातम्)। मृत्युपते: नियतं मृत्युं करोति, धर्मेशितु: सुक्रियां राज्यपते: वित्तं नृपाश्रयं अथ लाभेशितु: हि लाभं, व्ययेशस्य (दशायां) वै रोगं द्रव्यविनाशनं बहुधा कष्टं च इदं तन्वादिभावेशजं अङ्गभृतां पूर्वै: उदीरितम् ॥२५-२६॥

लग्नेश की महादशा में अनेक धनलाभ; द्वितीयेश की दशा में बहुत धन का लाभ, तृतीयेश की महादशा में प्राय: नेष्ट फल; चतुर्थेश की महादशा में गृहलाभ का सुख; पञ्चमेश की महादशा में विद्यानुराग और प्राप्ति का सुख; षष्ठेश की महादशा में शत्रुभय; सप्तमेश की महादशा में शोक; अष्टमेश की महादशा में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट; नवमेश की महादशा में पुण्यकर्म-यज्ञ-अनुष्ठानादि; दशमेश की महादशा में राज्याश्रय का सुख; एकादशेश की महादशा में लाभ; व्ययेश की महादशा में धनक्षय और कष्ट आदि फल जातक को प्राप्त होते हैं। इस प्रकार पूर्वाचार्यों ने तन्वादि द्वादश भावेशों की महादशा के सामान्य फल कहे हैं ॥२५-२६॥

भावाधिपो बलयुतो निजगेहगामी
तुङ्गत्रिकोणशुभवर्गगतोऽपि पूर्णम्।
जन्तो: फलं किल करोति यदारिनीच-
स्थानस्थितोऽशुभफलं विबलो विशेषात् ॥२७॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले दशाफलाध्याय: षोडश: ॥१६॥

अन्वय:—यदा भावाधिप: बलयुत:, निजगेहगामी, तुङ्गत्रिकोणशुभवर्गगतोऽपि जन्तो: किल पूर्णं फलं करोति, यदा अरि नीचस्थानस्थित: विबल: (तदा) विशेषात् अशुभफलं करोति ॥२७॥

भावेश यदि बलवान हो, स्वगृही हो, अपनी उच्च राशि, मूलत्रिकोण राशि या शुभ वर्ग में हो तो पूर्ण फल देता है। यदि शत्रुगृही या नीच राशिगत हो, निर्बल हो, तो उसकी दशा में भाव का नेष्ट फल होता है ॥२७॥

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का षोडश अध्याय समाप्त हुआ ॥१६॥

अथ सप्तदशोऽध्यायः

गर्वितादिदशाफलम्

गर्वितादि अवस्था

(पिछले १३वें अध्याय में ग्रहों की दो प्रकार की अवस्थाओं—बालादि और दीप्तादि का विचार किया गया है। इस तीसरे प्रकार की अवस्था का विचार भी उसी अध्याय के अन्तर्गत किया जाना उचित था। इस एक अवस्था के लिए अलग से नये अध्याय के सृजन का औचित्य स्पष्ट नहीं है। अस्तु।)

भास्कराचार्य ने अपने महाग्रन्थ होराशास्त्र के 'ग्रहाणामवस्थाध्यायः' में अनेक अवस्थाओं का विचार किया है। यह गर्वितादि अवस्था भी उनमें से एक है। उनके अनुसार—

लज्जितो गर्वितश्चैव क्षुधितस्तृषितस्तथा।
मुदितः क्षोभितश्चैव ग्रहावस्थाः प्रकीर्तिताः॥

कोणे तुङ्गगृहे गतो निगदितः खेटस्तदा गर्वितो
मित्रर्क्षे गुरुसंयुतोऽपि मुदितो मित्रेण युक्तेक्षितः।
पुत्रस्थानगतोऽगुभौमरविजार्कैः संयुतो लज्जितः
पापारिग्रहवीक्षितो हि रविणा संक्षोभितः कीर्तितः॥१॥

अन्वयः—(यदा) खेटः कोणे तुङ्गगृहे गतस्तदा गर्वितः, मित्रर्क्षे गुरुसंयुतः अपि मित्रेण युक्तेक्षितः मुदितः, पुत्रस्थानगतः (वा) अगुभौमरविजार्कैः संयुतः लज्जितः पापारिग्रहवीक्षितः (वा) रविणा वीक्षितः (तदा) संक्षोभितः कीर्तितः॥१॥

त्रिकोण या स्वोच्च राशि में स्थित ग्रह **गर्वित** होता है। मित्रराशि का ग्रह बृहस्पति या मित्र के साथ अथवा मित्र से दृष्ट हो तो **मुदित** कहलाता है। पञ्चम भाव में स्थित ग्रह यदि पापग्रहों (सूर्य, मंगल, शनि, राहु या केतु) से युत हो तो **लज्जित** होता है। सूर्यादि पापग्रहों या शत्रु से दृष्ट होकर ग्रह **क्षोभित** होता है॥१॥

तुङ्गस्थानगतो वापि त्रिकोणेऽपि भवेत्पुनः।
गर्वितः सोऽपि गदितो निर्विशङ्कं द्विजोत्तम॥
मित्रगेही मित्रयुक्तो मित्रेण चावलोकितः।
गुरुणा सहितो यश्च मुदितः स प्रकीर्तितः॥
पुत्रगेहगतः खेटो राहुकेतुयुतो भवेत्।
रविमन्दकुजैर्युक्तो लज्जितो ग्रह एव च॥
रविणा सहितो यश्च पापाः पश्यन्ति सर्वथा।
क्षोभितं तं विजानीयाच्छत्रुणा यदि वीक्षितः॥ (पराशर)

यो मन्दारियुतेक्षितोऽरिभगतः खेटः क्षुधापीडितो
यः पापारियुतेक्षितो न च शुभैर्दृष्टस्तृषार्तोऽम्बुभे।
गर्वाढ्यो मुदितोऽथ लज्जित इति प्रक्षोभितः कीर्तितो
विद्भिः संक्षुधितस्तृषार्त्त इह षड्भावा ग्रहाणाममी ॥२॥

अन्वयः—यः खेटः मन्दारियुतेक्षितः अरिभगतः क्षुधापीडितः, यः पापारियुतेक्षितः अम्बुभे गतः (तथा) न च शुभैः दृष्टः तृषार्त्तः अथ गर्वाढ्यः, मुदितः, लज्जितः प्रक्षोभितः, संक्षुधितः, तृषार्त्तः इति ग्रहाणां अमी षड् भावाः विद्भिः कीर्तितः ॥२॥

शत्रुगृह में कोई ग्रह यदि शनि और शत्रुग्रह से युत अथवा दृष्ट हो तो वह क्षुधापीड़ित या **क्षुधित** अवस्था में होता है। जलराशि में स्थित कोई ग्रह यदि शत्रुग्रह और पापग्रहों से युत-दृष्ट हो और किसी शुभग्रह से युत या दृष्ट न हो तो वह **तृषार्त्त** या तृषित होता है। इस प्रकार पूर्वाचार्यों ने ग्रहों के गर्वित, मुदित, लज्जित, प्रक्षोभित, संक्षुधित और तृषार्त—ये छः भाव कहे हैं ॥२॥

कतिपय विद्वानों ने इस श्लोक के द्वितीय चरण में प्रयुक्त 'अम्बुभे' से चतुर्थ भाव का ग्रहण किया है, जो असंगत है। पराशर ने तृषितावस्था के विषय में स्पष्ट लिखा है—

जलराशौ स्थितः खेटः शत्रुणा चावलोकितः।
शुभग्रहा न पश्यन्ति तृषितः स उदाहृता ॥
शत्रुगेही शत्रुयुक्तो रिपुदृष्टो भवेद्यदि।
क्षुधितो स च विज्ञेयः शनियुक्तो यथा तथा ॥

गर्वितादि अवस्था-फल

क्षुधितः क्षोभितो वापि यत्र तिष्ठति तं बलात्।
विनाशयति पुष्णाति मुदितो गर्वितो ग्रहः ॥३॥

अन्वयः—यत्र क्षुधितः क्षोभितः ग्रहः तं बलात् विनाशयति, मुदितः गर्वितः ग्रहः पुष्णाति ॥३॥

क्षुधित और क्षोभित ग्रह जिस भाव में स्थित होते हैं, उस भावफल का बलात् नाश करते हैं। इसके विपरीत मुदित और गर्वित ग्रह अधिष्ठित भाव-फल की वृद्धि करते हैं ॥३॥

कर्मभावगतो यस्य लज्जितस्तृषितोऽथवा।
क्षोभितः क्षुधितो वापि स दरिद्रो नरो भवेत् ॥४॥

अन्वयः—यस्य कर्मभावगतः लज्जितः अथवा तृषितः, क्षोभितः, क्षुधितः वापि (ग्रहः) स नरः दरिद्रः भवेत् ॥४॥

जिस व्यक्ति के कर्मभाव में लज्जित, तृषित, क्षोभित या क्षुधित ग्रह स्थित हों, वह दरिद्र तथा धनहीन होता है.।।४।।

लज्जितः पुत्रभावस्थः पुत्रनाशकरो मतः।
क्षोभितस्तृषितो यस्य सप्तमे स्त्री न जीवति ।।५।।

अन्वयः—यस्य पुत्रभावस्थः लज्जितः (ग्रहस्तस्य) पुत्रनाशकरः मतः, सप्तमे क्षोभितः (वा) तृषितः (ग्रहस्तस्य) स्त्री न जीवति ।।५।।

जिस व्यक्ति के पञ्चम भाव में लज्जित ग्रह स्थित हो, उसके पुत्र की हानि होती है तथा जिसके सप्तम भाव में क्षोभित या तृषित ग्रह स्थित हो, उसकी स्त्री जीवित नहीं रहती ।।५।।

गर्वित ग्रहदशा-फल

नवालयारामसुखं नृपत्वं कलापटुत्वं विदधाति पुंसाम्।
मदार्थलाभं व्यवहारवृद्धिं दशा विशेषादिह गर्वितस्य ।।६।।

अन्वयः—गर्वितस्य (ग्रहस्य) दशा पुंसां नवालयारामसुखं नृपत्वं, कलापटुत्वं मदार्थलाभं (तथा) विशेषात् व्यवहारवृद्धिं इह विदधाति ।।६।।

गर्वित ग्रह की दशा में नूतन गृह में निवास का सुख, राजसम वैभवादि, कला में मर्मज्ञता, मद और धनलाभ, व्यवहारादि की वृद्धि आदि फल जातक को प्राप्त होते हैं ।।६।।

मुदित ग्रहदशा-फल

भवति मुदितपाके वासशाला विशाला
विमलवसनभूषाभूमियोषासु सौख्यम्।
स्वजनजनविलासो भूमिपागारवासो
रिपुनिवहविनाशो बुद्धिविद्याविकासः ।।७।।

अन्वयः—मुदित-(ग्रह)-पाके विशाला वासशाला, विमलवसनभूषाभूमियोषासु सौख्यम् स्वजनजनविलासः भूमिपागारवासः रिपुनिवहविनाशः (तथा) बुद्धिविद्याविकासः भवति ।।७।।

मुदित ग्रह की दशा में जातक को विशाल भवन में निवास का सुख, सुन्दर वस्त्राभूषण, भूसम्पत्ति और स्त्री का सुख प्राप्त होता है। स्वजनों से हास-विलास, आमोद-प्रमोद होता है, शत्रुओं का विनाश और बौद्धिक क्षेत्र में अनेक महत्त्व की उपलब्धि प्राप्त होती है ।।७।।

लज्जित ग्रहदशा-फल

दिशति लज्जितखेटदशावशाद्रतिविराममतीवमतिक्षयम्।
सुतगदागमनं गमनं वृथा कलिकथाऽभिरुचिं न रुचिं शुभे ।।८।।

अन्वयः—लज्जितखेटदशावशात् रतिविरामं अतीव मतिक्षयम्, सुतगदागमनं, वृथा गमनं कलिकथाऽभिरुचिं (तथा) शुभे रुचिं न दिशति ॥८॥

लज्जित ग्रह की दशा में उच्चाटन (किसी भी कार्य के प्रति अनिच्छा), बौद्धिक क्षति, पुत्रों को रोगार्तता, निरर्थक यात्राएँ, अनायास कलह में रुचि तथा शुभ कार्यों के प्रति अरुचि होती है ॥८॥

क्षोभित ग्रहदशा-फल

संक्षोभितस्यापि दशाविशेषाद्दरिद्रजातं कुमतिं च कष्टम्।
करोति वित्तक्षयमंघ्रिबाधां धनाप्तिबाधामवनीशकोपात् ॥९॥

अन्वयः—संक्षोभितस्यापि दशाविशेषात् दरिद्रजातं, कुमतिं च कष्टम्, वित्तक्षयं, अंघ्रिबाधां (तथा) अवनीशकोपात् धनाप्तिबाधां करोति ॥९॥

क्षोभित ग्रह की दशा में दारिद्र्य का दुःख, दुर्मतिजन्य कष्ट, धनक्षय का क्षोभ, पैरों में रोग, राजकोप से आय भी बाधित होने का कष्ट आदि फल होता है ॥९॥

क्षुधित ग्रहदशा-फल

क्षुधितखगदशायां शोकमोहादितापः
परिजनपरितापादाधिभीत्या कृशत्वम्।
कलिरपि रिपुलोकैरर्थबाधा नराणा-
मखिलबलनिरोधो बुद्धिरोधो विशेषात् ॥१०॥

अन्वयः—क्षुधितखगदशायां नराणां शोकमोहादितापः, परिजनपरितापादाधि-भीत्या कृशत्वम्, रिपुलोकैरर्थबाधा कलिरपि, अखिलबलनिरोधः विशेषात् बुद्धिरोधः (भवति) ॥१०॥

क्षुधित ग्रह की महादशा में शोक-मोहादि जन्य परिताप, परिजनों से सन्ताप, मानसिक तनाव और भयजन्य शरीर का क्षरण, शत्रुओं से विवाद, कलह आदि फल जातक को प्राप्त होते हैं तथा जातक का सामर्थ्य कुण्ठित हो जाता है और वह अविवेकी हो जाता है ॥१०॥

तृषित ग्रहदशा-फल

तृषितखगदशायामङ्गनामङ्गमध्ये
भवति गदविकारो दुष्टकार्याधिकारः।
निजजनपरिवादादर्थहानिः कृशत्वं
खलकृतपरितापो मानहानिः सदैव ॥११॥

अन्वयः—तृषितखगदशायां अङ्गनां अङ्गमध्ये गदविकारः, दुष्टकार्याधिकारः निजजन-परिवादात् अर्थहानिः, कृशत्वं, खलकृतपरितापः (तथा) सदैव मानहानिः भवति ॥११॥

तृषित ग्रह की दशा में जातक की स्त्री रोगग्रस्ता होती है। उस जातक की दुष्कर्म में प्रवृत्ति, स्वजनों से विवाद के कारण धन का नाश, दुर्बलता, दुष्टों से सन्ताप और मानहानि होती है ॥११॥

ग्रन्थकार-परिचय

आसीच्छ्रीकरुणांकरो बुधवरो वेदाङ्गवेद्याकर-
स्तत्सूनुः क्षितिपालवन्दितपदः श्रीशम्भुनाथः कृती।
विज्ञव्रातकृतादरो गणितविज्ज्योतिर्विदां प्रीतये
चक्रे भावकुतूहलं लघुतरं श्रीजीवनाथः सुधीः ॥१२॥

इति श्रीजीवनाथकृतभावकुतूहले ग्रहाणां गर्वितादिदशा-फलाऽध्यायः सप्तदशः ॥१७॥

अन्वयः—वेदाङ्गवेद्याकरः बुधवरः श्रीकरुणाकरः आसीत् तत्सूनुः क्षितिपाल-वन्दितपदः विज्ञव्रातकृतादरः गणितविद् श्रीशम्भुनाथः कृती आसीत्, तत्सूनुः श्रीजी-वनाथः सुधीः ज्योतिर्विदां प्रीतये लघुतरं भावकुतूहलं चक्रे ॥१२॥

अपने समय के वेद-वेदाङ्ग के एक अनुपम विद्वान् श्री करुणाशङ्कर हुए, जिनके पुत्र राजाओं के द्वारा पूजित विद्वान् गणितज्ञ श्री शम्भुनाथ हुए। उनके पुत्र विद्वत्समाज-शिरोमणि श्री जीवनाथ शर्मा ने ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों के मोदार्थ इस भावकुतूहल नामक ग्रन्थ की रचना की ॥१२॥

श्रीजीवनाथकृत भावकुतूहल का सप्तदश अध्याय समाप्त हुआ ॥१७॥

।। समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।।

लघूत्तरीय प्रश्न

(१) प्रश्न— ग्रहों की शयनादि अवस्थायें कितनी होती हैं ?

उत्तर— ग्रहों की शयनादि अवस्थायें बारह होती हैं ।

(२) प्रश्न— ग्रहों की बारह अवस्थायें कौन-कौन-सी हैं ?

उत्तर— भोजन अवस्था, कौतुक अवस्था, शयन अवस्था, उपवेशन अवस्था, नेत्रपाणि अवस्था, प्रकाशन अवस्था, गमन अवस्था, मलिन अवस्था, सभा अवस्था, आगम अवस्था, नृत्य अवस्था और निद्रा अवस्था— ये बारह अवस्थायें होती हैं ।

(३) प्रश्न— शयन अवस्था के सूर्य का क्या फल है ?

उत्तर— जिसके जन्मकाल में सूर्य शयन अवस्था में हो, वह मनुष्य सर्वदा मन्दाग्नि से पीड़ित रहता है, पित्तजन्य रोग से आतङ्कित रहता है तथा भगन्दर जैसे राजरोग से आक्रान्त रहता है ।

(४) प्रश्न— सूर्य की उपवेशन अवस्था हो तो उसका क्या फल होता है ?

उत्तर— उपवेशन अवस्था का सूर्य जिसके जन्माङ्ग में हो, वह व्यक्ति दरिद्रा के साथ विहार करता है । स्वयं धनहीन होता है और कलह-प्रपञ्च में रत रहता है ।

(५) प्रश्न— किस अवस्था का सूर्य रहने पर व्यक्ति सदा सुखी, ज्ञानी, परोपकारी एवं राजसम्मानी होता है ?

उत्तर— नेत्रपाणि अवस्था का सूर्य रहने पर व्यक्ति उपरोक्त गुणों से युक्त होता है ।

(६) प्रश्न— प्रकाशन अवस्था का सूर्य हो तो क्या फल होता है ?

उत्तर— जिसके जन्माङ्ग में सूर्य प्रकाशन अवस्था में हो, वह व्यक्ति उदारचित्त, धनी, सभा में उचित वाणी बोलने वाला, विशेष पुण्य करने वाला एवं महाबली होता है ।

(७) प्रश्न— गमन अवस्था के सूर्य क्या फल देते हैं ?

उत्तर— जन्माङ्ग में गमन अवस्था का सूर्य वाला मनुष्य अनेक कष्ट भोगने वाला, सदा परदेश में रहने वाला, आलसी, बुद्धि और धन से हीन, क्रोधी तथा सदा भयभीत रहता है ।

(८) प्रश्न— मलिन सूर्य का क्या फल होता है ?

उत्तर— मलिन सूर्य वाला व्यक्ति परिवार से दूर रहने वाला एवं परस्त्रीगामी होता है ।

(९) प्रश्न— भोजन अवस्था के सूर्य जातक को क्या फल देते हैं ?

उत्तर— भोजन अवस्था का सूर्य व्यक्ति को वात-गङ्गिया का रोगी बनाता है । ऐसा व्यक्ति असत्यवादी होता है तथा निन्दित कार्यों में प्रवृत्त रहता है ।

(१०) प्रश्न— जन्माङ्गस्थ सूर्य निद्रावस्था का हो तो उसका क्या फल होता है ।

उत्तर— यदि सूर्य निद्रा में हो तो मनुष्य विशेषतया परदेश में रहना पसन्द करता है । उसकी आँखें सदा लाल रहती हैं । उसके स्त्री की हानि होती है और सञ्चित धन भी नाश होता है ।

(११) प्रश्न— कुण्डली में शयन अवस्था का चन्द्र हो तो क्या फल होता है ?

उत्तर— ऐसा मनुष्य अधिक प्रतिष्ठा का लोलुप, शीतप्रधान रोग वाला, कामातुर और सञ्चित धन का विनाश करने वाला होता है ।

(१२) प्रश्न— उपवेशन अवस्था के चन्द्रमा का क्या फल होता है ?

उत्तर— उपवेशन अवस्था का चन्द्रमा मनुष्य को रोगी, बुद्धिहीन, निर्दयी, अपव्ययी एवं पराये धन का अपहरण करने वाला बनाता है ।

(१३) प्रश्न— जन्मसमय चन्द्रमा विकास अवस्था का हो तो उसका क्या फल होता है ?

उत्तर— जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा विकास अवस्था का हो, वह व्यक्ति अपने सद्‌गुणों के विकास के प्रभाव से राजमान्य, धनी, अनेक वाहनों वाला एवं सुन्दर भवन वाला होता है ।

(१४) प्रश्न— गमन अवस्था का चन्द्रमा क्या फल देता है ?

उत्तर— जिसके जन्माङ्ग में चन्द्रमा गमनकाल का हो, वह व्यक्ति पापकर्म करने वाला, अतिक्रोधी, सदैव नेत्ररोग से पीड़ित तथा डरपोक होता है ।

(१५) प्रश्न— भोजन अवस्था के चन्द्रमा क्या फल देते हैं ?

उत्तर— जिसके जन्माङ्ग में भोजन अवस्था का चन्द्रमा हो, उस मनुष्य को सवारी की सुविधा, सेवकों की सुविधा एवं स्त्री-पुत्रादि का सुख प्राप्त होता है ।

(१६) प्रश्न— नृत्यलिप्सा अवस्था के चन्द्र का क्या फल होता है ?

उत्तर— नृत्यलिप्सा अवस्था वाला चन्द्रमा जिसके जन्माङ्ग में हो, वह मनुष्य बलवान, गीत गाने वाला एवं आयुर्वेद का ज्ञाता होता है ।

(१७) प्रश्न— निद्रावस्था का चन्द्रमा गुरु के साथ हो तो क्या फल देता है ?

उत्तर— जिसके जन्माङ्ग में निद्रावस्था का चन्द्रमा वृहस्पति के साथ हो, वह मनुष्य जीवन में सभी प्रकार के सुखों का भोग करता है ।

(१८) प्रश्न— किसी भी अवस्था का चन्द्रमा कब विपरीत फल देता है ?

उत्तर— प्रत्येक अवस्था में शुभ फल देने वाला चन्द्रमा भी यदि अपूर्ण कृष्ण पक्ष का हो तो निरन्तर अशुभ फल ही देता है ।

(१९) प्रश्न— कौतुक अवस्था का चन्द्रमा क्या फल देता है ?

उत्तर— कौतुक अवस्था का चन्द्रमा जिसके जन्माङ्ग में हो, वह व्यक्ति राजा होता है । कुबेर के समान धनवान् होता है, केलिक्रीडा में कुशल होता है और वाराङ्गनागामी होता है ।

(२०) प्रश्न— जन्मकाल में मंगल शयनावस्था में हो तो क्या फल होता है ?

उत्तर— जन्मसमय में जिसका मंगल शयन अवस्था में हो, वह मनुष्य खुजली तथा दाद रोग से पीड़ित होता है ।

(२१) प्रश्न— नेत्रपाणि अवस्था का मंगल क्या करता है ?

उत्तर— जन्मसमय में मंगल नेत्रपाणि अवस्था में हो, वह व्यक्ति सदा दरिद्र रहता है; पर इस अवस्था में मंगल द्वितीय भाव में हो तो जातक शहर का स्वामी अर्थात् छोटा राजा होता है ।

(२२) प्रश्न— प्रकाश अवस्था में मंगल क्या फल देता है ?

उत्तर— प्रकाश अवस्था का मंगल जिसके जन्माङ्ग में होता है, उस व्यक्ति में गुणों का अत्यधिक प्रकाश होता है, वह सदा परदेश में रहता है, राजा से सर्वदा आदर पाता है और अपनी स्त्री-पुत्र से विलग रहता है ।

(२३) प्रश्न— गमन अवस्था का मंगल क्या फल देता है ?

उत्तर— गमन अवस्था का मंगल जातक को नित्य सफर में रखता है । ऐसा व्यक्ति सदा फोड़ा-फुन्सी से पीड़ित करता है, स्त्री से कलह कराता है, धन का अपव्यय कराता है एवं दाद-खुजली से अधिक पीड़ित करता है ।

(२४) प्रश्न— भोजन अवस्था का मंगल क्या फल देता है ?

उत्तर— भोजन अवस्था में जन्माङ्ग का मंगल हो तो उस व्यक्ति को मधुर एवं स्वादिष्ट व्यञ्जन प्रिय होता है । वह व्यक्ति प्रेमनगरी में बँधकर अपना सम्मान, मान, धन सबकुछ खो देता है ।

(२५) प्रश्न— विकाश अवस्था का बुध क्या फल प्रदान करता है ?

उत्तर— विकाश अवस्था में बुध जिसके जन्माङ्ग में विराजमान हो, वह मनुष्य दानी, धर्मात्मा, दयासागर, अनेक विद्याओं का अद्वितीय विद्वान् एवं घमण्डियों का दमन करने वाला होता है ।

(२६) प्रश्न— सभा अवस्था का बुध क्या करता है ?

उत्तर— यदि जन्मकाल में सभा अवस्था का बुध हो तो उसका धन अनायास बढ़ जाता है, वह सदैव पुण्य कार्य में प्रवृत्त रहता है तथा कुबेर के समान धनी अथवा राजा का मन्त्री होता है ।

(२७) प्रश्न— नृत्यलिप्सा अवस्था का बुध क्या फल देता है ?

उत्तर— जिसके जन्मकाल में बुध नृत्यलिप्सा अवस्था में हो, वह मनुष्य सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर अनेक सुख-सम्पत्ति से सम्पन्न होता है तथा सवारियों, मोती, मूंगा के ढ़ेरों से अत्यन्त सुखी होता है ।

(२८) प्रश्न— गुरु जन्मकाल में उपवेशन अवस्था का हो तो फल क्या होता है ?

उत्तर— यदि वृहस्पति उपवेशन अवस्था में हो, तो वह मनुष्य चालबाज और घमण्डी होता है । वह राजकुल और शत्रुओं से कलह करने के कारण सदा दुःखी रहता है । पैर, जाँघ, मुख तथा हाथों में फोड़े-फुन्सी से भी वह पीड़ित रहता है ।

(२९) प्रश्न— नेत्रपाणि अवस्था के गुरु का फल क्या है ?

उत्तर— जिसके जन्माङ्ग में नेत्रपाणि अवस्था का गुरु विराजमान हो, वह व्यक्ति रोगी एवं सम्पत्तिहीन होता हुआ भी नाच-गान में विशेष रुचि रखने वाला तथा सदा गौराङ्ग कुलहीन प्रमदा से प्रेम करने वाला होता है ।

(३०) प्रश्न— गमन अवस्था के गुरु का फल स्पष्ट करें ?

उत्तर— जन्माङ्ग में गमन अवस्था का गुरु हो तो वह मनुष्य साहसी तथा सर्वदा स्त्री-पुत्र एवं मित्रवृन्दों से घिरा हुआ सुख से सम्पन्न होता है ।

(३१) प्रश्न— किसके घर में लक्ष्मी निरन्तर आती है ?

उत्तर— जिसके जन्मसमय में आगमन अवस्था वाले गुरु विराजमान हों, उसके घर में अनवरत लक्ष्मी का आगमन और निवास रहता है ।

(३२) प्रश्न— निद्राकाल में गुरु क्या फल देते हैं ?

उत्तर— निद्रा अवस्था के गुरु जन्माङ्ग में बैठे हों तो वह मनुष्य हर एक कार्य मूर्खता से करता है, सर्वदा दरिद्रा माता के गोद में बैठा रहता है और उसके घर से पुण्यकर्म विमुख होकर अरण्यरोदन करते हैं ।

(३३) प्रश्न— व्यक्ति महाक्रोधी कैसे होता है ?

उत्तर— जिसके जन्माङ्ग में दैत्यगुरु शुक्राचार्य शयन अवस्था में हों, वह व्यक्ति महाक्रोधी, धनहीन और वाराङ्गना-प्रेमी रहता है ।

(३४) प्रश्न— लग्न में नेत्रपाणि अवस्था के शुक्र क्या फल देते हैं ?

उत्तर— नेत्रपाणि अवस्था के शुक्र जिसके लग्न या सातवें या दशवें में बैठे हों तो वह मनुष्य अन्धा होता है और उसके धन का नाश होता है ।

(३५) प्रश्न— आगमन अवस्था के शुक्र क्या फल देते हैं ?

उत्तर— आगमन अवस्था के शुक्र जिसके जन्माङ्ग में हों, वह व्यक्ति गुणवान् एवं अत्यन्त धनाढ्य होता है । वह सदा तीर्थयात्रा करता है, सदैव प्रसन्न रहता है; पर उसके हाथ-पैरों में सदा कष्ट रहता है ।

(३६) प्रश्न— सभा अवस्था के शुक्र क्या फल देते हैं ?

उत्तर— सभा अवस्था के शुक्र जिसके जन्मसमय में हों, वह व्यक्ति विना प्रयास शीघ्र ही राजसभा में प्रवेश कर वहाँ राजसम्मान से सम्मानित होता है । वह अपने प्रबल शत्रुओं का दमन करता है और कुबेर के समान धनी होता है ।

(३७) प्रश्न— शुक्राचार्य कौतुक अवस्था में हों तो क्या फल होता है ?

उत्तर— शुक्राचार्य कौतुक अवस्था में जिसके जन्माङ्ग में विराजमान रहते हैं, वह मनुष्य स्वर्गराज इन्द्र के समान ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है एवं सभा में आदर प्राप्त करता है । उसकी विद्या बड़ी प्रगल्भ होती है एवं उसके घर में निवास करने हेतु लक्ष्मी स्वयं पदार्पण करती है ।

(३८) प्रश्न— शनिश्चर की शयन अवस्था का फल बताइये ?

उत्तर— जन्माङ्ग में शयन अवस्था के शनि विराजमान हों तो वह व्यक्ति भूख और प्यास से सदा पीड़ित रहता है । अन्न-जल से भी उसकी तृप्ति नहीं हो पाती । वह प्रथम अवस्था में रोगी रहता है और उसके बाद कुछ धनी होकर सुख भोगता है ।

(३९) प्रश्न— दूसरों की सम्पत्ति से मनुष्य कब धनाढ्य होता है ?

उत्तर— नेत्रपाणि अवस्था का शनि जन्माङ्ग में हो तो जातक पराये धन से धनी होता है ।

(४०) प्रश्न— शनिश्चर प्रकाश अवस्था में हो तो उसका फल क्या होता है ?

उत्तर— जिसके जन्मकाल में शनि प्रकाश अवस्था में हो तो वह व्यक्ति सद्गुणों से युक्त, विद्वान्, राज्य-धन से सम्पन्न, सदैव सद्विचार वाला, सुन्दर, तेजवान्, दु:खियों पर दया करने वाला एवं भगवान् शङ्कर का परम भक्त होता है ।

(४१) प्रश्न— मनुष्य सदा रोगी कैसे होता है ?

उत्तर— जिसके जन्मकाल में राहु शयन अवस्था का हो, ऐसा जातक सदैव रोगी रहता है ।

(४२) प्रश्न— किस राशि का राहु मनुष्य को धन-धान्य-ऐश्वर्यसम्पन्न बनाता है ?

उत्तर— वृष, मिथुन, कन्या, मेष राशि का राहु शयन अवस्था का भी हो तो उस व्यक्ति को धन एवं ऐश्वर्य से कुबेर के समान सम्पन्न बनाता है ।

(४३) प्रश्न— प्रकाशन अवस्था का राहु क्या फल देता है ?

उत्तर— प्रकाशन अवस्था का राहु व्यक्ति को उच्च पद पर आसीन करता है ।

(४४) प्रश्न— निद्रावस्था का राहु क्या फल देता है ?

उत्तर— यदि राहु जन्मसमय में निद्रावस्था में हो तो उस व्यक्ति को अनेकों गुणों से युक्त छोटा राजा अर्थात् सभासद बनाता है । वह जातक स्त्री-पुत्र से सम्पन्न, गम्भीर, घमण्डी तथा अधिक धन वाला होता है ।

(४५) प्रश्न— प्रकाश अवस्था का केतु मनुष्य को क्या फल प्रदान करता है ?

उत्तर— जिसके जन्मकाल में केतु प्रकाश अवस्था में विराजमान हो, उस मनुष्य के धन-धान्य की निरन्तर वृद्धि होती है । वह राजदरबार में प्रतिष्ठा पाता है और उसका यश दूर तक फैलता है ।

●

अतिलघूत्तरीय प्रश्न

(१) प्रश्न– भावकुतूहल के लेखक कौन हैं ?

उत्तर– भावकुतूहल के लेखक श्री जीवनाथ हैं ।

(२) प्रश्न– ब्रह्मा द्वारा रचित ज्योतिष का फलित भाग किसके पास गया ?

उत्तर– ब्रह्मा द्वारा रचित ज्योतिष का फलित भाग यवनाचार्य के पास गया ।

(३) प्रश्न– कुण्डली के बारह भावों के नाम क्या हैं ?

उत्तर– बारह भावों के नाम— तनु, कोश, सहोदर, बन्धु, सुत, रिपु, जाया, विनाश, शुभ, पितृ, आप्ति और अपाय हैं ।

(४) प्रश्न– राशियाँ कितनी होती हैं ।

उत्तर– राशियाँ बारह होती हैं ।

(५) प्रश्न– बारह राशियों के नाम क्या है ?

उत्तर– मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन— ये बारह राशियों के नाम हैं ।

(६) प्रश्न– बारह राशियों के स्वामी-ग्रह कौन-कौन से होते हैं ?

उत्तर– मेष और वृश्चिक का स्वामी मंगल होता है । वृष और तुला राशि का स्वामी शुक्र होता है । कन्या और मिथुन राशि का स्वामी बुध है । कर्क का स्वामी चन्द्रमा होता है । मीन और धनु राशि का स्वामी गुरु होता है । मकर और कुम्भ राशि का स्वामी शनिचर होता है । सिंह राशि का स्वामी सूर्य है ।

(७) प्रश्न– होरा किसे कहते हैं ?

उत्तर– राशि के दो भाग किये जाते हैं; उसी का नाम होरा है ।

(८) प्रश्न– होरा का ज्ञान कैसे होता है ?

उत्तर– विषम राशि हो तो सूर्य होरा प्रथम और समराशि हो तो चन्द्र होरा प्रथम— ऐसा जाना जाता है ।

(९) प्रश्न– राशियों की चरादि संज्ञायें कितनी होती हैं ?

उत्तर– चरादि संज्ञायें तीन होती हैं— चर, स्थिर, द्विस्वभाव । इसी क्रम से मेष, वृष, मिथुन हुए । आगे भी इसी क्रम से माना जाता है ।

(१०) प्रश्न– मस्तक तथा बायें कान का चिह्न कैसे देखा जाता है ?

उत्तर– जिसके जन्मलग्न में शुक्र और अष्टम भाव में राहु हो, उसके मस्तक तथा बायें कान में चिह्न होता है ।

(११) प्रश्न– सन्तान का विचार किस भाव से किया जाता है ?

उत्तर– सन्तान का विचार पञ्चम भाव से किया जाता है ।

(१२) प्रश्न– श्रीछत्र योग कब बनता है ?

उत्तर– जन्मलग्नपत्र में समस्त ग्रह लग्न, व्यय, सप्तम और धनभावों में हो तो वह व्यक्ति **श्रीछत्र योग** वाला होता है ।

(१३) प्रश्न– सूर्य के मित्र ग्रह कौन-कौन हैं ?
उत्तर– सूर्य के मित्र ग्रह चन्द्रमा, गुरु और मङ्गल हैं ।

(१४) प्रश्न– स्त्री के हाथ में स्वस्तिक रेखा हो तो उसका फल क्या होता है ?
उत्तर– स्त्री के हाथ में स्वस्तिक रेखा हो तो वह पुत्रवती होती है ।

(१५) प्रश्न– बृहस्पति के मित्र ग्रह कौन-कौन हैं ?
उत्तर– बृहस्पति के मित्र ग्रह मङ्गल, सूर्य और चन्द्रमा हैं ।

(१६) प्रश्न– मंगल, गुरु, शुक्र और शनि किसके समग्रह हैं ?
उत्तर– मङ्गल, गुरु, शुक्र, और शनि चन्द्रमा के समग्रह हैं ।

(१७) प्रश्न– बुध का शत्रु कौन है ?
उत्तर– बुध का शत्रु ग्रह चन्द्रमा है ।

(१८) प्रश्न– चन्द्रमा का शत्रु कौन है ?
उत्तर– चन्द्रमा का शत्रु कोई नहीं है ।

(१९) प्रश्न– शनि के शत्रु कौन हैं ?
उत्तर– शनि के शत्रु सूर्य, चन्द्रमा और मङ्गल हैं ।

(२०) प्रश्न– शुक्र और शनिश्चर किसके सम हैं ?
उत्तर– शुक्र और शनिश्चर मङ्गल के सम हैं ।

(२१) प्रश्न– चन्द्रमा के मित्र कौन-कौन हैं ?
उत्तर– चन्द्रमा के मित्र सूर्य और बुध हैं ।

(२२) प्रश्न– बुध और शनि किसके मित्र हैं ?
उत्तर– बुध और शनि शुक्र के मित्र हैं ।

(२३) प्रश्न– सूर्य का परम उच्च कौन राशि है ?
उत्तर– सूर्य का परम उच्च मेष राशि का १० अंश तक है ।

(२४) प्रश्न– राहु का परम उच्च क्या है ?
उत्तर– राहु का परम उच्च मिथुन का प्रथम अंश तक है ।

(२५) प्रश्न– किस राशि का बुध परम उच्च का होता है ?
उत्तर– १५ अंश तक कन्या राशि का बुध परम उच्च का होता है ।

(२६) प्रश्न– कर्क के ५ अंश तक कौन ग्रह परम उच्च का होता है ?
उत्तर– कर्क के ५ अंश तक गुरु परम उच्च का होता है ।

(२७) प्रश्न– मङ्गल ग्रह किन-किन राशियों का स्वामी है ?
उत्तर– मङ्गल मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी है ।

(२८) प्रश्न– वृष और तुला राशि का स्वामी कौन है ?
उत्तर– वृष और तुला राशि का स्वामी शुक्राचार्य है ।

(२९) प्रश्न– कर्क राशि का स्वामी कौन है ?
उत्तर– कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा है ।

(३०) प्रश्न– मीन और धनु राशि का स्वामी कौन है ?
उत्तर– मीन और धनु राशि का स्वामी गुरु (बृहस्पति) है ।

(३१) प्रश्न– शनि किन राशियों का स्वामी है ?
उत्तर– शनि मकर और कुम्भ राशियों का स्वामी है ।

(३२) प्रश्न– सिंह राशि का अधिपति कौन है ?
उत्तर– सिंह राशि का अधिपति सूर्य है ।

(३३) प्रश्न– सूर्य का रंग कैसा है ?
उत्तर– सूर्य का रंग लाल है ।

(३४) प्रश्न– पीला रंग किस ग्रह का है ?
उत्तर– पीला रंग गुरु ग्रह का है ।

(३५) प्रश्न– बुध ग्रह का रंग क्या है ?
उत्तर– बुध ग्रह का रंग हरा है ।

(३६) प्रश्न– शनिश्चर का रंग कैसा है ?
उत्तर– शनिश्चर का रंग काला है ।

(३७) प्रश्न– केतु का रंग कैसा है ?
उत्तर– केतु का रंग धूम्रवर्ण है ।

(३८) प्रश्न– सफेद रंग किन-किन ग्रहों का है ?
उत्तर– सफेद रंग शुक्र और चन्द्रमा का है ।

(३९) प्रश्न– सूर्य ग्रह के देवता कौन हैं ?
उत्तर– सूर्य ग्रह के देवता अग्नि हैं ।

(४०) प्रश्न– चन्द्र के देवता कौन हैं ?
उत्तर– चन्द्र के देवता जल हैं ।

(४१) प्रश्न– मङ्गल के देवता कौन हैं ?
उत्तर– मङ्गल के देवता अश्विनीकुमार हैं ।

(४२) प्रश्न– विष्णु किस ग्रह के देवता हैं ?
उत्तर– विष्णु बुध ग्रह के देवता हैं ।

(४३) प्रश्न– बृहस्पति के देवता कौन हैं ?
उत्तर– बृहस्पति के देवता चन्द्रमा हैं ।

(४४) प्रश्न– इन्द्राणी किस ग्रह की अधिष्ठात्री हैं ?
उत्तर– इन्द्राणी शुक्र ग्रह की अधिष्ठात्री हैं ।

(४५) प्रश्न– शनिश्चर के अधिष्ठाता देव कौन हैं ?
उत्तर– शनिश्चर के अधिष्ठाता देव ब्रह्मा हैं ।

(४६) प्रश्न– राक्षस किस ग्रह के देवता हैं ?

उत्तर– राक्षस राहु और केतु ग्रह के देवता हैं ।

(४७) प्रश्न– साङ्ग वर्ष के बाद पुत्रसुख किसको प्राप्त होता है ?

उत्तर– जिसकी जन्मकुण्डली में कर्क राशि में चन्द्रमा पाप ग्रहों से दृष्ट हो तथा सूर्य पर शनि की दृष्टि हो तो उसको साङ्ग वर्ष के बाद पुत्रसुख होता है ।

(४८) प्रश्न– एक नवमांश कितने समय का होता है ?

उत्तर– एक नवमांश ३ अंश २० कला का होता है ।

(४९) प्रश्न– मेष, सिंह, धनु राशि या लग्न का नवांश कहाँ से गिनना चाहिए ?

उत्तर– मेष, सिंह, धनु राशि या लग्न का नवांश मेष से गिनना चाहिए ।

(५०) प्रश्न– अनफा योग कब बनता है ?

उत्तर– जिस कुण्डली में चन्द्रमा से बारहवें स्थान में सूर्य के अतिरिक्त कोई भी ग्रह बैङ्गता है, तो अनफा योग बनता है ।

(५१) प्रश्न– अनफा योग का फल क्या होता है ?

उत्तर– अनफा योग वाला जातक स्त्री-पुत्र से सम्पन्न, विद्या-बुद्धि में निपुण एवं सर्वसुख-सम्पन्न होता है ।

(५२) प्रश्न– केमद्रुम योग कैसे बनता है ?

उत्तर– जिस कुण्डली में चन्द्रमा से दूसरे और बारहवें घर में कोई ग्रह न हो तो केमद्रुम योग बनता है ।

(५३) प्रश्न– केमद्रुम योग का फल क्या है ?

उत्तर– केमद्रुम योग वाला व्यक्ति अत्यधिक दुःखी होता है ।

(५४) प्रश्न– राजयोग नष्ट कैसे होता है ?

उत्तर– जिसके जन्माङ्ग में जन्म के समय भद्रा व्यतिपात केतु तारा का उदय होता है, उसका राजयोग भी भङ्ग हो जाता है ।

(५५) प्रश्न– जन्मसमय-चक्र के विना राजयोग का कैसे पता चलता है ?

उत्तर– बालक के हाथ व चरण में स्थित मणिबन्ध आदि रेखायें राजयोग को सूचित करती हैं ।

(५६) प्रश्न– यशस्वी अपने वंश का भूषण कैसे जाना जाता है ?

उत्तर– जिसके हाथ के अंगूङ्के पर यव का चिह्न हो, वह परम यशस्वी होता है ।

(५७) प्रश्न– हाथ, पैरों में किस स्थान का तिल शुभ होता है ?

उत्तर– हथेली में अथवा पादतल में तिल हो तो जातक सम्पत्ति और वाहनसुख से सम्पन्न होता है ।

(५८) प्रश्न– स्त्रीजातक के सातवें भाव में तीन शुभ ग्रहों की पूर्ण दृष्टि हो तो क्या फल होता है ?

उत्तर– तीन शुभ ग्रह की दृष्टि स्त्रीजातक के सातवें भाव में हो तो वह भूमिपति की पत्नी बनती है ।

(५९) प्रश्न– स्त्री के परम सौभाग्यवती होने के क्या लक्षण हैं ?

उत्तर– जिसकी जन्मपत्री में सातवें स्थान में शुक्र दो शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, वह स्त्री परम सौभाग्यवती होती है।

(६०) प्रश्न– स्त्रीजातक की कुण्डली में मीन राशि का शुक्र कहाँ हो तो युवती पतिप्रिया होती है ?

उत्तर– स्त्रीजातक की कुण्डली में मीन राशि का शुक्र सप्तम भाव में हो तो ऐसी स्त्री अपने पति की प्रियतमा होती है।

(६१) प्रश्न– अष्टम भाव में स्थित गुरु का फल क्या होता है ?

उत्तर– अष्टमस्थ गुरु स्त्री के गर्भ को बार-बार नष्ट करता है।

(६२) प्रश्न– अष्टमस्थ चन्द्र का क्या फल होता है ?

उत्तर– अष्टम में चन्द्र हो तो उस स्त्री को पतिसुख नहीं मिलता है।

(६३) प्रश्न– अष्टम स्थान में शनि हो तो क्या फल होता है ?

उत्तर– अष्टम स्थान में शनि हो तो उस स्त्री का पति रोगी होता है।

(६४) प्रश्न– वैधव्य योग की शान्ति कैसे होती है ?

उत्तर– वैधव्य योग हो तो विवाह से पूर्व विष्णु की प्रतिमा के साथ विवाह करके बाद में वर के साथ विवाह करने से उसकी शान्ति होती है।

(६५) प्रश्न– भावकुतूहल में कितने अध्याय हैं ?

उत्तर– भावकुतूहल में सत्रह अध्याय हैं।

(६६) प्रश्न– भावकुतूहल के किस अध्याय में सर्वाधिक विषय हैं ?

उत्तर– भावकुतूहल के दशवें अध्याय में सर्वाधिक विषय हैं।

(६७) प्रश्न– सामुद्रिक विचार भावकुतूहल के किस अध्याय में है ?

उत्तर– सामुद्रिक विचार भावकुतूहल के आठवें अध्याय में है।

(६८) प्रश्न– राशि के अनुसार त्रिंशांश-फल किस अध्याय में वर्णित है ?

उत्तर– राशि के अनुसार त्रिंशांश फल नवम अध्याय में वर्णित है।

(६९) प्रश्न– भावकुतूहल के बारहवें अध्याय में कितने विषय हैं ?

उत्तर– भावकुतूहल के बारहवें अध्याय में नौ विषय हैं।

(७०) प्रश्न– स्त्रीजातक के अङ्ग-प्रत्यङ्ग-लक्षण भावकुतूहल के किस अध्याय में हैं ?

उत्तर– स्त्रीजातक के अङ्ग-प्रत्यङ्ग-लक्षण भावकुतूहल के दशवें अध्याय में हैं।

(७१) प्रश्न– अनफादि योग भावकुतूहल के किस अध्याय में हैं ?

उत्तर– अनफादि योग भावकुतूहल के सातवें अध्याय में हैं।

(७२) प्रश्न– अरिष्ट-विचार भावकुतूहल के किस अध्याय में किया गया है ?

उत्तर– अरिष्ट-विचार भावकुतूहल के चौथे अध्याय में किया गया है।

(७३) प्रश्न– सन्तानहानि योग किस अध्याय में दिखाया गया है ?

उत्तर– सन्तानहानि योग द्वितीय अध्याय में दिखाया गया है ।

(७४) प्रश्न– भावकुतूहल के प्रथम अध्याय में कितने विषय हैं ?

उत्तर– भावकुतूहल के प्रथम अध्याय में नौ विषय हैं ।

(७५) प्रश्न– आँखों में कष्ट कैसे होता है ?

उत्तर– जिस जातक की कुण्डल के दूसरे घर का स्वामी शुक्र हो या शुक्र के साथ हो अथवा शुक्र से ६,८,१२वें स्थान में बैठा हो तो उसकी आँखों में कष्ट होता है ।

(७६) प्रश्न– दशा के स्वामी ग्रह के अस्त होने पर क्या फल होता है ?

उत्तर– दशा के स्वामी ग्रह के अस्त होने पर भयङ्कर शत्रुबाधा होती है ।

(७७) प्रश्न– शत्रुबाधा के अतिरिक्त अस्त ग्रह की स्वामी-दशा क्या करती है ?

उत्तर– शरीर को रोग का घर ही बना देती है, जातक स्वस्थ नहीं रहता ।

(७८) प्रश्न– आयुस्थान कौन-कौन से कहलाते हैं ?

उत्तर– जन्मलग्न से तीसरा और आठवाँ स्थान आयुस्थान होता है ।

(७९) प्रश्न– मारक स्थान कौन-कौन हैं ?

उत्तर– जन्मलग्न से दूसरा और सातवाँ स्थान मारक स्थान कहलाता है ।

(८०) प्रश्न– सर्वाधिक अशुभ मारकेश किस ग्रह का होता है ?

उत्तर– सर्वाधिक अशुभ मारकेश शनि का कहा गया है ।

(८१) प्रश्न– क्या शनि का अन्य मारकेश ग्रहों से सम्बन्ध होने पर भी मारकेश होता है ?

उत्तर– यदि पापी शनैश्चर पापग्रह, अष्टमेश, द्वितीयेश, सप्तमेश के साथ या सम्बन्धित हो तो प्रबल मारकेश होता है ।

(८२) प्रश्न–मारकेश-दशा का विचार विशेषकर किस अध्याय में किया गया है ?

उत्तर– मारकेश-दशा का विचार भावकुतूहल के चौदहवें अध्याय में विशेष रूप से किया गया है ।

(८३) प्रश्न– ग्रहों की अवस्थाओं का नाम क्या है ?

उत्तर– दीप्त, स्वस्थ, हर्षित, शान्त, अतिशस्त, लुप्त, दीन और पीड़ित— ये आठ अवस्थायें ग्रहों की होती हैं ।

(८४) प्रश्न– ग्रह दीप्त अवस्था में कब होता है ?

उत्तर– ग्रह जब अपने उच्च स्थान में बैठा हो तो वह 'दीप्त' होता है ।

(८५) प्रश्न– हर्षित अवस्था में कब होता है ग्रह ?

उत्तर– ग्रह जब अपने मित्र की राशि में रहता है तो उसकी 'हर्ष' अवस्था होती है ।

(८६) प्रश्न– शान्त अवस्था ग्रह की कब होती है ?

उत्तर– ग्रह शुभ ग्रहों के घर में बैठता है तो उसकी अवस्था 'शान्त' होती है ।

(८७) प्रश्न– ग्रहों की दीन अवस्था कब होती है ?

उत्तर– ग्रह जब नीच राशि में होता है तो उसकी 'दीन' दशा होती है ।

(८८) प्रश्न– ग्रहों की पीड़ित अवस्था कब होती है ?

उत्तर– ग्रह शत्रु-राशि में रहता है तो उसकी 'पीड़ित' अवस्था होती है ।

(८९) प्रश्न– भावकुतूहल ग्रन्थ में ग्रहों की आङ्ग अवस्थायें किस अध्याय में दर्शायी गई हैं ?

उत्तर– भावकुतूहल ग्रन्थ में ग्रहों की आङ्ग अवस्थायें तेरहवें अध्याय में दर्शायी गई हैं ।

(९०) प्रश्न– ग्रहों की बाल आदि अवस्थायें कितनी होती हैं ?

उत्तर– ग्रहों की बाल आदि अवस्थायें पाँच होती हैं ।

(९१) प्रश्न– ग्रहों की बाल आदि अवस्थाओं के नाम क्या हैं ?

उत्तर– ग्रहों की बाल अवस्था, कुमार अवस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था और मृत अवस्था होती है ।

(९२) प्रश्न– ग्रह की बाल अवस्था कब होती हैं ?

उत्तर– ग्रह जब विषम राशियों में रहें तो प्रारम्भ से छः अंश पर्यन्त उनकी बाल अवस्था होती है ।

(९३) प्रश्न– ग्रहों की कब तक कुमार अवस्था होती है ?

उत्तर– विषम राशि में ७ से १२ अंश तक ग्रह की कुमार अवस्था होती है ।

(९४) प्रश्न– ग्रहों की युवावस्था कब होती है ?

उत्तर– विषम राशि में १३ अंश से १८ अंश तक ग्रह की युवा अवस्था होती है ।

(९५) प्रश्न– ग्रहों की वृद्धावस्था कब होती है ?

उत्तर– १९ अंश से २४ अंश तक में ग्रहों की वृद्धावस्था होती है ।

(९६) प्रश्न– २५ से ३० अंश में ग्रहों की अवस्था क्या होती है ?

उत्तर– २५ से ३० अंश तक ग्रह मृत अवस्था में होते हैं या निष्क्रिय होते हैं ।

(९७) प्रश्न– समराशियों में ग्रह की अवस्था कैसे जाननी चाहिये ?

उत्तर– सम राशि में प्रथम ६ अंश तक मृत, ७ से १२ अंश तक वृद्ध, १३ से १८ अंश तक युवा, १९ से २४ अंश तक कुमार और २५ से ३० अंश तक बाल अवस्था समझनी चाहिये ।

(९८) प्रश्न– ग्रहों के फल इन अवस्थाओं में किस प्रकार होते हैं ?

उत्तर– बाल अवस्था में शुभाशुभ फल स्वल्प होता है । कुमार अवस्था में आधा फल होता है । युवावस्था वाले ग्रह पूर्ण फल देते हैं । वृद्धावस्था वाले ग्रह अनिष्ट फल देते हैं तथा मृत अवस्था वाले ग्रह अत्यन्त अशुभ मृत्युतुल्य फल देते हैं ।

(९९) प्रश्न– ग्रहों की सभी निद्रादि अवस्थाओं का फल किस अध्याय में दर्शाया गया है ?

उत्तर– ग्रहो के निद्रादि अवस्थाओं का फल भावकुतूहल के ग्यारहवें अध्याय में विस्तृत रूप से दर्शाया गया है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(१) प्रश्नः- भावकुतूहल ज्योतिषशास्त्र का किस प्रकार का ग्रन्थ है ?
(क) गणित ज्योतिष का (ग) सूर्यसिद्धान्त ज्योतिष का
(ख) खगोल ज्योतिष का (घ) फलादेश ज्योतिष का

(२) प्रश्नः- भावकुतूहल ग्रन्थ के लेखक कौन हैं ?
(क) शोमनाथ (ग) जीवनाथ
(ख) महीधर (घ) वराहमिहिर

(३) प्रश्नः- फलादेश वाले भावकुतूहल ग्रन्थ में कुल कितने अध्याय हैं ?
(क) पन्द्रह (ग) चौदह
(ख) बारह (घ) सोलह

(४) प्रश्नः- भावकुतूहल के किस अध्याय में स्त्रियों का फलादेश है ?
(क) पञ्चम अध्याय में (ग) दशम अध्याय में
(ख) सप्तम अध्याय में (घ) नवम अध्याय में

(५) प्रश्नः- भावकुतूहल शब्द के 'भाव' शब्द से क्या अर्थ लिया जायगा ?
(क) भावपदार्थ (ग) भाव संज्ञावाचक
(ख) वस्तु का रहना (घ) लग्नकुण्डलीगत भाव

(६) प्रश्नः- कुण्डली में कितने भाव होते हैं ?
(क) नौ भाव (ग) सात भाव
(ख) ग्यारह भाव (घ) बारह भाव

(७) प्रश्नः- तनु भाव कौन माना जाता है ?
(क) प्रथम भाव (ग) पञ्चम भाव
(ख) चतुर्थ भाव (घ) अष्टम भाव

(८) प्रश्नः- सन्तानभाव किस भाव का नाम है ?
(क) चतुर्थ भाव का (ग) द्वितीय भाव का
(ख) तृतीय भाव का (घ) पञ्चम भाव का

(९) प्रश्नः- जन्मकुण्डली में किस भाव का नाम 'पाताल' है ?
(क) द्वितीय भाव का (ग) षष्ठ भाव का
(ख) तृतीय भाव का (घ) चतुर्थ भाव का

(१०) प्रश्नः- धर्म का विचार कुण्डली के किस भाव से किया जाता है ?
(क) पञ्चम भाव से (ग) अष्टम भाव से
(ख) सप्तम भाव से (घ) नवम भाव से

(११) प्रश्नः- लग्नचक्र में किस भाव को कर्मस्थान माना जाता है ?
(क) अष्टम भाव को (ग) नवम भाव को
(ख) चतुर्थ भाव को (घ) दशम भाव को

(१२) प्रश्नः– कुण्डली में धन-भाव कौन कहलाता है ?

(क) द्वितीय भाव (ग) चतुर्थ भाव
(ख) तृतीय भाव (घ) पञ्चम भाव

(१३) प्रश्नः– मृत्यु का विचार किस भाव से करते हैं ?

(क) अष्टम भाव से (ग) चतुर्थ भाव से
(ख) सप्तम भाव से (घ) पञ्चम भाव से

(१४) प्रश्नः– भावकुतूहल के प्रथम अध्याय में कितने विषय हैं ?

(क) नौ विषय (ग) छः विषय
(ख) सात विषय (घ) आठ विषय

(१५) प्रश्नः– भावकुतूहल में ग्रहों की चरादि संज्ञा-कथन किस अध्याय में है ?

(क) प्रथम अध्याय में (ग) तृतीय अध्याय में
(ख) द्वितीय अध्याय में (घ) चतुर्थ अध्याय में

(१६) प्रश्नः– भावकुतूहल में षड्वर्ग-साधन किस अध्याय में है ?

(क) द्वितीय अध्याय में (ग) पञ्चम अध्याय में
(ख) चतुर्थ अध्याय में (घ) प्रथम अध्याय में

(१७) प्रश्नः– भावकुतूहल में मामा के लिए कष्ट किस अध्याय में दिखाया है ?

(क) द्वितीय अध्याय में (ग) चतुर्थ अध्याय में
(ख) तृतीय अध्याय में (घ) प्रथम अध्याय में

(१८) प्रश्नः– द्वितीय अध्याय में भावकुतूहल के कितने विषय दिखाये गये हैं ?

(क) चार विषय (ग) छः विषय
(ख) पाँच विषय (घ) सात विषय

(१९) प्रश्नः– सन्तानहानि योग भावकुतूहल के किस अध्याय में है ?

(क) तृतीय अध्याय में (ग) पञ्चम अध्याय में
(ख) चतुर्थ अध्याय में (घ) द्वितीय अध्याय में

(२०) प्रश्नः– भावकुतूहल के किस अध्याय में अरिष्टविचार बताया है ?

(क) चतुर्थ अध्याय में (ग) द्वितीय अध्याय में
(ख) पञ्चम अध्याय में (घ) तृतीय अध्याय में

(२१) प्रश्नः– भावकुतूहल के किस अध्याय में भ्रातृ-मातृनाश योग पर विचार है ?

(क) पञ्चम अध्याय में (ग) द्वितीय अध्याय में
(ख) चतुर्थ अध्याय में (घ) तृतीय अध्याय में

(२२) प्रश्नः– भावकुतूहल ग्रन्थ के कौन-से अध्याय में अरिष्टभंग योग का विचार है ?

(क) चतुर्थ अध्याय में (ग) तृतीय अध्याय में
(ख) द्वितीय अध्याय में (घ) पञ्चम अध्याय में

(२३) प्रश्नः– अरिष्ट का विचार कुण्डली में किस भाव से किया जाता है ?

(क) द्वितीय भाव से (ग) चतुर्थ भाव से
(ख) तृतीय भाव से (घ) पञ्चम भाव से

(२४) प्रश्नः– भावकुतूहल के किस अध्याय में सन्तानभाव का विचार है ?

(क) चतुर्थ अध्याय में (ग) द्वितीय अध्याय में

(ख) पञ्चम अध्याय में (घ) छट्ठे अध्याय में

(२५) प्रश्नः– सन्तानसंख्या का विचार कुण्डली के किस भाव से होता है ?

(क) तृतीय भाव से (ग) द्वितीय भाव से

(ख) चतुर्थ भाव से (घ) पञ्चम भाव से

(२६) प्रश्नः– भावकुतूहल के किस अध्याय में पुत्र-अभाव योग दिखाया गया है ?

(क) षष्ठ अध्याय में (ग) द्वितीय अध्याय में

(ख) पञ्चम अध्याय में (घ) चतुर्थ अध्याय में

(२७) प्रश्नः– भावकुतूहल के किस अध्याय में व्यक्ति को तीस वर्ष बाद पुत्र-प्राप्ति योग बताया गया है ?

(क) चतुर्थ अध्याय में (ग) षष्ठ अध्याय में

(ख) पञ्चम अध्याय में (घ) सप्तम अध्याय में

(२८) प्रश्नः– भावकुतूहल के छट्ठवें अध्याय में कितने विषय दर्शाये गये हैं ?

(क) आठ विषय (ग) छः विषय

(ख) सात विषय (घ) चार विषय

(२९) प्रश्नः– साधारण राजयोग कु. ...ी में किस भाव से विचारा जाता है ?

(क) तृतीय भाव से (ग) पञ्चम भाव से

(ख) चतुर्थ भाव से (घ) षष्ठ भाव से

(३०) प्रश्नः– शत्रुनाशक योग किस भाव से देखना चाहिए ?

(क) पञ्चम भाव से (ग) सप्तम भाव से

(ख) षष्ठ भाव से (घ) चतुर्थ भाव से

(३१) प्रश्नः– एकावली योग भावकुतूहल के किस अध्याय में दर्शाया गया है ?

(क) पञ्चम अध्याय में (ग) सप्तम अध्याय में

(ख) षष्ठ अध्याय में (घ) अष्टम अध्याय में

(३२) प्रश्नः– भावकुतूहल के सप्तम अध्याय में कितने विषय दर्शाये गये हैं ?

(क) पच्चीस विषय (ग) छब्बीस विषय

(ख) चौबीस विषय (घ) सत्ताईस विषय

(३३) प्रश्नः– छत्रयोग भावकुतूहल के किस अध्याय में दृष्टिगोचर होता है ?

(क) सप्तम अध्याय में (ग) तृतीय अध्याय में

(ख) पञ्चम अध्याय में (घ) अष्टम अध्याय में

(३४) प्रश्नः–भावकुतूहल के सातावें अध्याय में कितने अनफादि योग बताय हैं ?

(क) ग्यारह (ग) चौदह

(ख) सोलह (घ) बारह

(३५) प्रश्नः- भावकुतूहल के आङ्गवें अध्याय में कितने विषय हैं ?

(क) चार (ग) आङ्ग

(ख) तीन (घ) दो

(३६) प्रश्नः- भावकुतूहल में सामुद्रिक (हस्तरेखा) विषय किस अध्याय में दर्शाया गया है ?

(क) अष्टम अध्याय में (ग) पञ्चम अध्याय में

(ख) सप्तम अध्याय में (घ) चतुर्थ अध्याय में

(३७) प्रश्नः- यव-चिह्नफल किस अध्याय में है ?

(क) अष्टम अध्याय में (ग) पञ्चम अध्याय में

(ख) सप्तम अध्याय में (घ) षष्ठ अध्याय में

(३८) प्रश्नः- भावकुतूहल में हुताशन योग किस अध्याय में पड़ता है ?

(क) सप्तम अध्याय में (ग) षष्ठ अध्याय में

(ख) अष्टम अध्याय में (घ) दशम अध्याय में

(३९) प्रश्नः- भावकुतूहल में पतिव्रता योग कौन-से अध्याय में है ?

(क) नवम अध्याय में (ग) पाँचवें अध्याय में

(ख) दशवें अध्याय में (घ) चौथे अध्याय में

(४०) प्रश्नः- भावकुतूहल के किस अध्याय में अष्टम भाव (स्त्री जातक) का विचार है ?

(क) सप्तम अध्याय में (ग) नवम अध्याय में

(ख) अष्टम अध्याय में (घ) दशम अध्याय में

(४१) प्रश्नः- स्त्रीजातक के पञ्चम भाव का विचार भावकुतूहल के किस अध्याय में है ?

(क) सप्तम अध्याय में (ग) नवम अध्याय में

(ख) अष्टम अध्याय में (घ) पञ्चम अध्याय में

(४२) प्रश्नः- भावकुतूहल के किस अध्याय में राशि के अनुसार त्रिंशांश फल दर्शाया गया है ?

(क) नवम अध्याय में (ग) एकादश अध्याय में

(ख) अष्टम अध्याय में (घ) सप्तम अध्याय में

(४३) प्रश्नः- भावकुतूहल में स्त्रियों के सर्वाङ्ग-लक्षण का निरूपण किस अध्याय में किया गया है ?

(क) दशम अध्याय में (ग) अष्टम अध्याय में

(ख) नवम अध्याय में (घ) सप्तम अध्याय में

(४४) प्रश्नः- भावकुतूहल के किस अध्याय में सर्वाधिक विषय हैं ?

(क) दशम अध्याय में (ग) चतुर्थ अध्याय में

(ख) नवम अध्याय में (घ) पञ्चम अध्याय में

(४५) प्रश्नः- भावकुतूहल में स्त्रियों के नाखून के लक्षण कौन-से अध्याय में वर्णित हैं ?

(क) नवम अध्याय में (ग) सप्तम अध्याय में

(ख) एकादश अध्याय में (घ) दशम अध्याय में

(४६) प्रश्नः- भावकुतूहल में कुम्भविवाह-विधि किस अध्याय में है ?

(क) दशम अध्यय में (ग) एकादश अध्याय में

(ख) नवम अध्यय में (घ) अष्टम अध्याय में

(४७) प्रश्नः- भावकुतूहल के किस अध्याय में ग्रहों की अवस्था का फल दिखाया गया है ?

(क) एकादश अध्याय में (ग) बारहवें अध्याय में

(ख) दशम अधाय में (घ) आठवें अध्याय में

(४८) प्रश्नः- ग्रहों की अवस्थका फल भावकुतूहल के किस अध्याय में है ।

(क) ग्यारहवें अध्याय में (ग) आठवें अध्याय में

(ख) दशवें अघाय में (घ) सातवें अध्याय में

(४९) प्रश्नः- तीर्थक्षेत्रलाभ या भावकुतूहल के किस अध्याय में दर्शाया गया है ?

(क) एकादशअध्याय में (ग) दशम अध्याय में

(ख) द्वादश अध्याय में (घ) नवम अध्याय में

(५०) प्रश्नः- ग्रहों की अवसयें कितनी होती हैं ?

(क) दस (ग) नौ

(ख) ग्याह (घ) बारह

(५१) प्रश्नः- ग्रहों की अवसा काफल भावकुतूहल के किस अध्याय में है ?

(क) बारवें अध्यारमें (ग) दशवें अध्याय में

(ख) गहवें अध्यय में (घ) तेरहवें अध्याय में

(५२) प्रश्नः- भावकुल के तेरवें अध्याय में कितने विषय हैं ?

(क)न (ग) पाँच

(खार (घ) दो

(५३) प्रश्नः- मारगृह का विचार भावकुतूहल के किस अध्याय में है ?

(ग्यारहवें अध्याय में (ग) तेरहवें अध्याय में

) बारहवें अध्याय में (घ) चौदहवें अध्याय में

(५४) प्रश्नः- कुतूहल के चौदहवें अध्याय में कितने विषय हैं ?

) सात (ग) नौ

ख) आठ (घ) दस

(५५) प्रश्न-रणीयोग भावकुतूहल के कौन-से अध्याय में है ?

(क) चौदहवें अध्याय में (ग) ग्यारहवें अध्याय में

(ख) बारहवें अध्याय में (घ) दशवे अध्याय में

(५६) प्रश्नः– बारह भावों में आंयुस्थान कौन-से भाव को कहते हैं ?

(क) सातवें भाव को (ग) नवें भाव को

(ख) आङ्गवें भाव को (घ) पाँचवें भाव को

(५७) प्रश्नः– भावकुतूहल में बारह भावों का विचार किस अध्याय में है ?

(क) ग्यारहवें अध्याय में (ग) तेरहवें अध्याय में

(ख) बारहवें अध्याय में (घ) पन्द्रहवें अध्याय में

(५८) प्रश्नः– शत्रुभाव कौन-से भाव को कहाजाता है ?

(क) पञ्चम भाव को (ग) अष्टम भाव को

(ख) सप्तम भाव को (घ) षष्ठ भाव को

(५९) प्रश्नः– सहजभाव किस भाव का नाम है?

(क) तृतीय भाव का (ग) पञ्चम भाव का

(ख) चतुर्थ भाव का (घ) षष्ठ भाव का

(६०) प्रश्नः– धन-सम्पत्ति का विचार किस भा से किया जाता है ?

(क) द्वितीय भाव से (ग) चतुर्थ भाव से

(ख) तृतीय भाव से (घ) प्रथम भाव से

(६१) प्रश्नः– आमदनी का विचार किस भाव सेहोता है ?

(क) ग्यारहवें भाव से (ग) पाँचवें भाव से

(ख) चौथे भाव से (घ) दशवें भाव से

(६२) प्रश्नः– पत्नी का विचार किस भाव से होत है ?

(क) सप्तम भाव से (ग) द्वितीय भाव से

(ख) प्रथम भाव से (घ) षष्ठ भाव से

(६३) प्रश्नः– सूर्यादि दशाओं का वर्षनिश्चय भावकुतूहल के किस अध्याय से होता है ?

(क) सोलहवें अध्याय से (ग) चौदहवें अध्याय से

(ख) पन्द्रहवें अध्याय से (घ) तेरहवें अध्याय से

(६४) प्रश्नः– ग्रहों का दशाफल भावकुतूहल के किस अध्याय में विस्तार से बताया गया है ?

(क) पन्द्रहवें अध्याय में (ग) बारहवें अध्याय में

(ख) चौदहवें अध्याय में (घ) सोलहवें अध्याय में

(६५) प्रश्नः– भावकुतूहल के पन्द्रहवें अध्याय में कितने विषय हैं ?

(क) बारह (ग) तेरह

(ख) ग्यारह (घ) चौदह

(६६) प्रश्नः– भावकुतूहल के सोलहवें अध्याय में कितने विषय हैं ?

(क) २० (ग) २३

(ख) २२ (घ) २४

(६७) प्रश्नः – शत्रु राशिस्थ ग्रहदशा-फल भावकुतूहल के किस अध्याय में है ?

(क) तेरहवें अध्याय में (ग) पन्द्रहवें अध्याय में

(ख) चौदहवें अध्याय में (घ) सोलहवें अध्याय में

(६८) प्रश्नः – भावाधीशों का संक्षिप्त फल किस अध्याय में है ?

(क) दशवें अध्याय में (ग) पन्द्रहवें अध्याय में

(ख) बारहवें अध्याय में (घ) सोलहवें अध्याय में

(६९) प्रश्नः – भावकुतूहल के सत्रहवें समाप्ति के अध्याय में कितने विषय हैं ?

(क) ९ (ग) ११

(ख) १० (घ) १२

(७०) प्रश्नः – भावकुतूहल के किस अध्याय में मुदित ग्रहदशा-फल है ?

(क) सत्रहवें अध्याय में (ग) चौदहवें अध्याय में

(ख) पन्द्रहवें अध्याय में (घ) सोलहवें अध्याय में

(७१) प्रश्नः – सिंहासन योग भावकुतूहल के किस अध्याय में है ?

(क) सप्तम अध्याय में (ग) दशम अध्याय में

(ख) अष्टम अध्याय में (घ) नवम अध्याय में

(७२) प्रश्नः – जातक के चिह्न का ज्ञान भावकुतूहल के किस अध्याय से होता है ?

(क) द्वितीय अध्याय से (ग) चतुर्थ अध्याय से

(ख) तृतीय अध्याय से (घ) पञ्चम अध्याय से

उत्तरमाला

१. घ	१९. घ	३७. क	५५. क
२. ग	२०. क	३८. क	५६. ख
३. क	२१. ग	३९. क	५७. घ
४. घ	२२. घ	४०. ग	५८. घ
५. घ	२३. ग	४१. ग	५९. क
६. घ	२४. घ	४२. क	६०. क
७. क	२५. घ	४३. क	६१. क
८. घ	२६. क	४४. क	६२. क
९. घ	२७. ग	४५. घ	६३. क
१०. घ	२८. क	४६. क	६४. घ
११. घ	२९. घ	४७. क	६५. क
१२. क	३०. ख	४८. क	६६. घ
१३. क	३१. ग	४९. क	६७. घ
१४. क	३२. घ	५०. घ	६८. घ
१५. क	३३. क	५१. क	६९. ख
१६. घ	३४. क	५२. घ	७०. क
१७. क	३५. घ	५३. घ	७१. क
१८. ख	३६. क	५४. घ	७२. ख

द. नं. 30905

ज्योतिष-वास्तुशास्त्रग्रन्थाः

(सफल) अंक ज्योतिष । डॉ. अल्पना वत्स

केशवीयजातकपद्धति । संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित । हिन्दी टीकाकार-डॉ. सुरकान्त झा

खेटकौतुकम् । हिन्दी टीका । श्रीनारायणदास

गुरुज्ञान । (जन्मकुण्डली कैसे बनाएँ एवं फलादेश) । पं. दिवाकर शास्त्री

गृहवास्तुप्रदीपः । (गृहवास्तु से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण विषयों का प्रामाणिक विवेचन । डॉ. (श्रीमती) शैलजा पाण्डेय

जन्मकुण्डली हो न हो । पं. दिवाकर शास्त्री भृगुसंहिताचार्य

जातकपारिजात । हिन्दी टीका सहित । डॉ. हरिशंकर पाठक

जातकतत्त्वम् । हिन्दी टीका सहित । डॉ. हरिशंकर पाठक

ज्योतिषरत्नमाला । हिन्दी टीका सहित । पं. सीताराम झा

दशाफलदर्पणः । हिन्दी टीका सहित । डॉ. हरिशंकर पाठक

फलदीपिका । हिन्दी टीका सहित । डॉ. हरिशंकर पाठक

बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् । हिन्दी टीका सहित । डॉ. पद्मनाभ मिश्र

बृहत्संहिता । हिन्दी टीका सहित ।

बृहद्वास्तुमाला । पं. रामनिहोरद्विवेदी कृत हिन्दी टीका सहित

भावकुतूहलम् । हिन्दी टीका सहित । डॉ. हरिशंकर पाठक

मकरन्दप्रकाशः । हिन्दी व्याख्या सहित । आचार्य लखनलाल झा

मानसागरी । हिन्दी व्याख्या सहित । पं. मधुकान्त झा

मुहूर्तचिन्तामणिः । संस्कृत एवं हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार-श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी

मुहूर्तपारिजात (ज्योतिषकल्पद्रुम) । पं. सोहनलाल व्यास । सम्पा.-पं. सीताराम झा

राजवल्लभमण्डनम् । हिन्दी व्याख्योपेतम् । डॉ. (श्रीमती) शैलजा पाण्डेय

लघुपाराशरी-मध्यपाराशरी । संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । पं. रामयत्न ओझा एवं डॉ. सुरकान्त झा

वास्तुमाणिक्यरत्नाकरः । भाषाटीका सहित । पं. रामतेज पाण्डेय

सुलभज्यौतिषज्ञान । (जन्मकुण्डली-सार) । डॉ. विष्णु शर्मा

सूर्यसिद्धान्त । संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय

हस्तरेखाशास्त्र (एक प्रामाणिक अध्ययन) । श्रीसोमनाथ एवं श्री राजेन्द्रमिश्र

होराशास्त्रम् । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । डॉ. सत्येन्द्र मिश्र